1932 से संकलित समाचारों की प्रथम किश्त

समाचार पत्रों की नजरों में मोती बी.ए.

समाचार पत्रों द्वारा छापे गये अब तक के समाचारों का संकलन

संकलनकर्ता-
अंजनीकुमारउपाध्याय

web-www.sampadanews24.blogspot.com

समाचार पत्रों की नजरों में मोती बीए

(1932 से संकलित समाचारों की प्रथम किश्त)

Title: SAMACHAR PATRO KI NAJRON ME MOTI BA
Author's name: ANJANI KUMAR UPADHYAY
Published by : Self Published
Publisher's Address-
MOTI BA NIWAS, NANDANA WARD WEST
BARHAJ DEORIA

Printer's Details-
Faiz & Jaish Publishing Team
Nandana Pashchimi
Barhaj Deoria
U.P. 274601

Edition Details - I st Edition
ISBN: 978-93-5659-689-4

Copyright © Anjani Kumar Upadhyay-Author

Email-

editorsampadanews@gmail.com

anjanikumarupadhyaya@gmail.com

editorsampada@sampadanews.in

Website

www.sampadanews24.blogspot.com

www.sampadanews.in

समर्पण

''उन सभी पत्रकार बन्धुओं को, समाचार पत्रों को, उनके सम्पादकों को जिन्होंने एक लम्बे समय तक श्री मोती बीए के सम्मान को ज्योतिर्मान रखने के लिये अपनी ऊर्जा अनवरत व्यय की'', को यह कृति समर्पित करता हूँ।

–अंजनीकुमारउपाध्याय

पुत्र-श्री मोती बीए, बरहज, देवरिया

समाचार पत्रों के नजरों में मोती बी.ए

हम उन सभी मित्रों, शुभचिन्तकों, पिता श्री मोती बी.ए के सम्पर्क में रहकर विचारों का आदान-प्रदान करने वाले व्यक्तित्वों, सभी पाठको के आशीर्वाद से आज एक ऐसे कार्य का सम्पादन करने जा रहे है जिसकी कल्पना भी करना कठिन है। कितना सफल होऊँगा ये तो आपका प्रेम और ईश्वर ही जानता है पर जब निकल पड़े इस विशाल संकलन के लिए तो फिर माँ सरस्वती और श्री गणेश की वन्दना के साथ मैं आज आगे बढ़ रहा हूँ।

'समाचार पत्रों के नजरों में मोती बीए' जब इस सन्दर्भ को लेकर विचार करता हूँ तो एक विशाल सागर उमड़ता दिखाई देता है। स्थानीय स्तर पर, अन्य प्रान्तीय क्षेत्रों में, राष्ट्रीय स्तर पर हमेशा कोई न कोई समाचार सामने आता रहता है। दूरदर्शन के नेशनल चैनल के प्रारम्भ होने पर दूरदर्शन केन्द्र गोरखपुर, दिल्ली दूरदर्शन से भी श्री मोती बी.ए के कार्यक्रम मिले। अकाशवाणी गोरखपुर, वराणसी, लखनऊ, विविध भारती, पटना रेडियो सीलोन, बीबीसी लंदन, वायस आफ अमेरिका, इत्यादि स्थानो से भी श्री मोती बी.ए के कार्यक्रम देखने सुनने को मिले।

इसे एक व्यवस्थित रूप प्रदान करने के लिए यह आवश्यक हो गया कि इसको एक श्रृंखला बद्ध रूप से प्रस्तुत किया जाय, इसके लिए मैने कई पहलुओं से श्री मोती बीए से सम्बन्धित समाचारों को संकलित करने का कार्य प्रारम्भ किया जिसमें निम्नलिखित तथ्य को केन्द्र बिन्दु माना।

1- जिन अखबारों में श्री मोती बी.ए की रचनाएं छपती रहीं।

2- जिन अखबारों ने मोती बी.ए पर अपने विचार दिये।

3- आकाशवाणी और दूरदर्शन के कार्यक्रम।

समाचार पत्रों से श्री मोती बीए बहुत पहले से ही जुड़ गए थे। इन्होंने प्रारंभिक समय में हिंदी के प्रेमचंद जी, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, महादेवी वर्मा, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला के संपर्क में आ चुके थे।

पहली बार श्री मोती बीए जी शचीन्द्र नाथ सान्याल के साथ अग्रगामी में कार्य किये, जहां इनको सहायक संपादक के रूप में रखा गया था और 25 मासिक वेतन मिलते थे। वहां से कुछ दिनों बाद यह आज में जुड़े, और श्री बलदेव दास जी गुप्त के सानिध्य में सहायक सम्पादक का कार्य करना शुरू कर दिया। आज में भी इन्हें लगभग वही धनराशि मिलती थी। लेकिन वहां पर रात्रि को 9:00 बजे से लेकर सुबह भोर में 4:00 बजे तक कार्य करते थे। दिन में पढ़ते थे। इस कार्य में शंभू नाथ सिंह जी का विशेष योगदान रहा। रांची में सेवाश्रम तिरिल में नियुक्त होकर समाज सेवा का कार्य किया। लौटने पर पटना में आर्यावर्त में कार्य किया जिसमें लंगड़ शास्त्री सम्पादक, विद्या भास्कर जी, दूधनाथ सिंह उनके साथ थे। अन्य साथियों में दिनेश दत्त झा, भवेश दत्त झा, जयकान्त और मुरली नाथ भी इनके साथ थे। पत्रिकारिता इनके रग-रग में व्याप्त था। बलदेव प्रसाद गुप्त जी ने एक नया अखबार निकालना शुरू किया 'संसार' वो इनकी सेवा में लग गयें। ये कई अखबारों से जुड़े। इस प्रकार उन्होंने अपने जीवन में आज, आर्यावर्त, अग्रगामी, संसार, इत्यादि अखबारों में सहायक सम्पादन का कार्य जोरदार ढंग से किया। श्री मोती बीए जी को भारत रक्षा कानून के अंतर्गत जेल हुई और 2 माह की सजा काटकर बाहर आये।

हम श्री मोती बीए जी के समाचारों को चार हिस्सों में बांट रहे हैं। पहला भाग "जब उनके दिवंगत होने के बाद भारत के लगभग अधिकांश समाचार पत्रों ने उन पर विशेषांक निकाला, उनके प्रति लोगों की संवेदनाओं को प्रस्तुत किया और समाजसेवियों ने अपनी श्रद्धांजलि दी।" दूसरा भाग, "जो श्री मोती बीए केबारे में लोगों के लिखे गए विचार हैं।" तीसरा भाग, "श्री मोती बीए ने अखबारों में जो लिखा।" चौथा भाग, "वो जो हमें भूले बिसरे समाचार पत्रों द्वारा प्राप्त हुए।" इन सभी का संकलन हम यहां कर रहे हैं, "समाचार पत्रों की नजरों में मोती बीए"

मुझे इतना याद है की श्री मोती बीए पर विविध भारती ने कई कार्यक्रम पेश किए हैं । एक बार तो रासलीला और लोक संगीतिका के कार्यक्रमों को पेश किया गया, लेकिन उसका मेरे पास कोई प्रमाण ना होने से मैं प्रस्तुत नहीं कर पा रहा हूं। लाख प्रयास के बावजूद भी मुझे इसका प्रमाण नहीं मिल पाया, क्योंकि बात बहुत पुरानी है। इसके अतिरिक्त

पहली बार जब दूरदर्शन चालू हुआ तो दिल्ली में श्री मोती बीए को बुलाकर के कविता पाठ दूरदर्शन ने कराया था। इसका भी प्रमाण मेरे पास नहीं है पर हमने इसे देखा और सुना भी देखा है। आकाशवाणी गोरखपुर से इनके कई कार्यक्रम प्रसारित हुए। दूरदर्शन केंद्र गोरखपुर से इनके कई कार्यक्रम प्रसारित हुए । दूरदर्शन केंद्र गोरखपुर ने इनपर एक वृत्तचित्र बनाया था, जिसको हमने प्राप्त करने का बहुत प्रयास किया, लेकिन मुझे सफलता नही मिल पायी।

श्री मोती बी ए के कार्यक्रम आकाशवाणी लखनऊ, आकाशवाणी वाराणसी, आकाशवाणी गोरखपुर, आकाशवाणी दिल्ली से प्रस्तुत किये गए। इस कार्यक्रम की भी पूरी सूची मेरे पास उपलब्ध नहीं हो पाई । इस प्रकार प्रकाशित समाचारों की बहुत बड़ी संख्या दिखाई पड़ रही है, लेकिन उसके प्रमाण नहीं मिल पा रहे हैं। भविष्य में यदि मिलता है तो उसे हम अवश्य प्रस्तुत करेंगे। दूरदर्शन केंद्र दिल्ली पर उन्होंने कार्यक्रम पेश किया था, कविता थी "वह भी कोई प्राणी है, जो ना देश है अभिमानी है।" इस कार्यक्रम को पूरी दुनिया ने देखा था लेकिन इसका भी कोई प्रमाण नहीं है क्योंकि यह घटना **1975** के आसपास की है। हम प्रयास कर रहे हैं अधिक से अधिक प्रमाण आपको दे सकें। यह एक विशाल कार्य है जिसमें हमें कितनी सफलता मिल पा रही है इसका फैसला हम नहीं आप ही करेंगे। दूसरा कोई नहीं, फिर भी अपना कार्य हैं जो आप के सहयोग से हम इस कार्य को संपादित कर रहे हैं, इसके लिए हम आप के आभारी है।

यह एक पुस्तक की रचना नहीं, बल्कि एक यज्ञ है, ऐसा मुझे महसूस हुआ। विशाल कार्य था, ये तो मैं जानता था कि मेरे लाख प्रयास पर भी ये कार्य सम्भव नही था, इसके बावजूद भी ये पुस्तक आपके सामने प्रस्तुत है। अभी इसके बहुत से और समाचार मिलेंगे और हम इसके लिए प्रयत्नशील भी रहेंगे, जब मेरे पास कुछ और समाचार, समाचार पत्रो के रूप में मिल जाएंगे तो हम इसका दूसरा भाग "समाचार पत्रों के नजरों में श्री मोती बीए" प्रकाशित करेंगे। सम्पदा न्यूज के वेबसाइट पर इसे प्रस्तुत करके हमें बड़ी प्रसन्नता हो रही है । इस कार्य के लिए हम अपने उन मित्रों के आभारी हैं, जिनकी प्रेरणा से यह कार्य संपन्न हुआ । इसमें सर्वप्रथम मैं प्राचार्य डॉ.अजय कुमार मिश्रा एवं वरिष्ठ पत्रकार एन डी देहाती जी, सच्चिदानन्द पांडे, अजय पांडे, विवेकानन्द मिश्र, सत्य प्रकाश

पांडे, अरविन्द त्रिपाठी और वरिष्ठ पत्रकार श्रवण गुप्त, जे.पी. श्रीवास्तव, राम बिलास प्रजापति, राकेश श्रीवास्तव, मोनिका त्यागी राणा सहित कई अन्य मित्रों, सहयोगियों, परिवार के वरिष्ठ सदस्य भालचन्द्र उपाध्याय, जवाहरलाल उपाध्याय, माण्डवी द्विवेदी, मीनी और वर्तिका उपाध्याय सहित समस्त परिवेश का भी आभारी हूँ। इसके प्रथम भाग को प्रस्तुत करके अपने आपको हम भग्यशाली महसूस कर रहे हैं। हम इसे अपने मित्रों के आशीर्वाद और सहयोग का परिणाम मानते है।

इस पुस्तक को संपदा न्यूज और श्री मोती लाल वेलफेयर सेवा ट्रस्ट द्वारा संग्रहित किया जा रहा है। इसे संपदा की वेबसाइट पर हम प्रस्तुत करते हुए अपार हर्ष का अनुभव कर रहे हैं और अपने समस्त मित्र बंधुओं को जिन्होंने मुझे योगदान दिया है, उनका हम आभार प्रकट करते हैं। आशा है कि हमारा यह प्रयास आपको पसंद आएगा।

धन्यवाद ।

निवेदक-

अंजनी कुमार उपाध्याय

निवास -

श्री मोती बीए निवास, नंदना पश्चिमी, बरहज,

देवरिया, उत्तर प्रदेश 274001

www.sampadanews24.blogspot.com

www.facebook.com/anjaniupadhyay

www.pinterest.com/sampadanews

www.twitter.com/anjanikumarupadhyay

www.linkedin.com/anjaniupadhyay

email-editorsampadanews@gmail.com

mo.8299015136

नाम - अंजनी कुमार उपाध्याय

जन्म - **16** जनवरी **1963**

जन्म स्थान - बरहज, देवरिया, उत्तर प्रदेश

पिता का नाम - श्री मोती बीए

माता का नाम - श्रीमती लक्ष्मी देवी उपाध्याय ।

प्रारंभिक शिक्षा - श्रीकृष्ण इंटरमीडिएट कालेज आश्रम, बरहज, देवरिया ।

स्नातक - बुद्ध पोस्ट ग्रेजुएट कॉलेज कुशीनगर ।

पोस्ट ग्रेजुएट - फिरोज गांधी डिग्री कॉलेज, रायबरेली से हिन्दी में परास्नातक ।

बुद्ध पोस्ट ग्रैजुएट कॉलेज कुशीनगर से मनोविज्ञान में परास्नातक ।

1982 से लेकर के उन्नीस सौ अट्ठासी तक राजकीय निर्माण कार्य में सहायक। **1989** में सम्पदा का संपादन, बाबा नागार्जुन, डॉ. क्षेमचंद सुमन, डाक्टर शंभू नाथ सिंह, डॉ.त्रिलोचन शास्त्री, सत्येंद्र शर्मा, रामदरश मिश्र एवं पिता श्री मोती बीए के देख रेख में सहायक संपादक का कार्य । साथ ही साथ ज्योतिषाचार्य का कार्य।

अवैतनिक शिक्षक के रूप में शिक्षण कार्य, अग्रसेन इंटर कॉलेज लखनऊ, मदन मोहन मालवीय इंटरमीडिएट कॉलेज, गोरखपुर, सरोजनी कन्या उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, बरहज । विश्वनाथ त्रिपाठी शिक्षण संस्थान में अध्यापन कार्य ।

श्री कृष्ण इंटरमीडिएट कॉलेज आश्रम, बरहज, देवरिया में अध्यापन। प्रधानाचार्य, बाबा बैद्यनाथ उच्चतर माध्यमिक विद्यालय जिगनी सोंहौली। श्री मोती बीए के साथ फिल्मों में निर्माण कार्य, "ठकुराइन, चंपा चमेली और गजब भईले रामा" में फिल्म निर्माता के पी शुक्ला, राकेश पांडे, सुजीत कुमार, पद्मा खन्ना, रवींन्द्र जैन के साथ कला और संस्कृति पर कार्य। श्री मोती बी.ए. की फिल्म मातृमंदिर, और 'प्रेम प्रेम है' के निर्माण का कार्य जारी।

श्री मोती बीए वेलफेयर सोसाइटी द्वारा पुस्तक के प्रकाशन में सहयोग और उपाध्यक्ष के पद पर कार्यरत। श्री मोतीलाल वेलफेयर सेवा ट्रस्ट के ट्रस्टी। जवाहर प्रकाशन बरहज देवरिया के स्थापना में बहुमूल्य योगदान तथा उसके पदाधिकारी । श्री मोती बीए पुस्तकालय के अध्यक्ष।

श्री मोती बीए द्वारा स्थापित सम्पदा न्यूज के संचालक एवम संपादक प्रमुख। सम्पदा न्यूज चैनल के एडिटर इन चीफ। रेडियो मोती के प्रमुख डायरेक्टर । पत्रकारिता में, "जुल्म से जंग, हम वतन, न्यूज एक्सप्रेस चैनल" में प्रमुख रूप से रिपोर्टिंग, महाखबर, स्वतंत्र चेतना एवं अन्य दैनिक समाचार पत्र में भी सक्रिय पत्रकारिता। स्वतंत्र रूप से लेखन कार्य । कविता, कहानी, आलोचना, समालोचना, संस्मरण, ऐतिहासिकता और धार्मिक स्थलों के खोज पर विस्तृत रिपोर्ट कार्य ।

सम्पदा न्यूज के वेबसाइट के ओनर। श्री मोती बीए के समस्त फिल्मों और गीतों के संकलन कर्ता। सम्पदा के वेबसाइट पर श्री मोती बीए. की पुस्तकों का प्रकाशनकर्ता।

निवास -

श्री मोती बीए निवास, नंदना पश्चिमी, बरहज,

देवरिया, उत्तर प्रदेश 274001

www.sampadanews24.blogspot.com

www.facebook.com/anjaniupadhyay

www.pinterest.com/sampadanews

www.twitter.com/anjanikumarupadhyay

www.linkedin.com/anjaniupadhyay

email-editorsampadanews@gmail.com

mo.8299015136

मोती बीए का संक्षिप्त जीवन परिचय

जन्मतिथि	-01 अगस्त 1919 पुण्यतिथि : 18 जनवरी 2009
जन्मस्थान	-ग्राम-बरेजी, डाकघर-तेलिया कला, जिला-देवरिया (उ.प्र.)
निवास स्थान	-लक्ष्मी निवास, नन्दना पश्चिमी, बरहज, देवरिया (उ.प्र)
परिवार	-पिता श्री राधाकृष्ण उपाध्याय,
माता	-श्रीमती कौशल्या देवी,
सहोदर भ्राता	-श्री जगदीश नारायण मालवीय, डॉ परमानन्द उपाध्याय,
बहनें	-सुश्री शान्ती देवी, कान्ती देवी,
पत्नी	-श्रीमती लक्ष्मी देवी उपाध्याय,
पुत्र	-जवाहर लाल उपाध्याय, भालचन्द्र उपाध्याय, अंजनी कुमार उपाध्याय,
पुत्रियाँ	-उर्मिला देवी, शारदा देवी।
शिक्षा एवं शैक्षणिक उपाधियाँ	-बरहज से हाई स्कूल, गोरखपुर से इण्टर मीडिएट तथा वाराणसी, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से एम.ए.(इतिहास), बी.टी. साहित्यरत्न।
सर्जनात्मक लेखन	-1936 से 2000 तक हिन्दी, भोजपुरी, उर्दू तथा अंग्रेजी में गीत, गजल, कविता, निबन्ध, अनुवाद, आत्मकथ्य इत्यादि प्रकाशित/ अप्रकाशित कुल मिलाकर पचास से अधिक रचनाएँ।
पत्रकारिता	-1939 से 1943 तक अग्रगामी, आज, संसार, आर्यावर्त समाचार पत्रों के सम्पादकीय विभाग में मूर्धन्य पत्रकार बाबूराव विष्णु पराड़कर तथा सुप्रसिद्ध क्रान्तिकारी शचीन्द्रनाथ सान्याल के साथ सम्पादकीय विभाग में सहायक के रूप में कार्य।
स्वाधीनता सेनानी	-1943 में वाराणसी में चेतगंज थाना तथा सेण्ट्रल जेल में भारत रक्षा कानून के अन्तर्गत नजरबन्द।

सिने गीतकार एवं कलाकार -**1944** से लेकर **1951** तक पंचोली आर्ट्स पिक्चर्स लाहौर, फिल्मिस्तान लिमिटेड बम्बई, प्रकाश पिक्चर्स, बम्बई, के गीतकार के रूप में 'नदिया के पार' (पुरानी दिलीप कुमार, कामिनी कौशल) 'कैसे कहूँ', 'साजन', 'सिन्दूर', 'रिमझिम', 'सुभद्रा', 'वीर-घटोत्कच उर्फ सुरेखा हरन', 'निर्मल', 'राम विवाह', 'ममता', 'राम बाण', 'काफिला', 'भक्त ध्रुव', 'किसी की याद', 'राजपूत', 'हिप-हिप हुर्रे उर्फ चौबे जी', 'इन्तजार के बाद', 'अमर-आशा', 'चम्पा-चमेली', 'ठकुराईन', ('एक कदम', 'गजब भईलें रामा'-अप्रदर्शित) इत्यादि लगभग **50** फिल्मों में गीत लेखन। फिल्म 'साजन' का प्रसिद्ध गीत 'हमको तुम्हारा ही आसरा, तुम हमारे हो न हो' तथा 'नदिया के पार' के सभी गीतों का भोजपुरी में सर्वप्रथम लेखन-'कठवा के नइया बनइहे मलहवा', 'मोरे राजा हो, ले चल नदिया के पार' इत्यादि गीतों के अतिरिक्त प्रथम फिल्मों में जोगीरा **1951** में फिल्म 'राजपूत' में लिखने का श्रेय फिल्मों में भोजपुरी भाषा के प्रवर्तक। पुनः **1984-85** में भोजपुरी फिल्म 'गजब भइलें रामा' 'चम्पा चमेली', 'ठकुराइन' इत्यादि में गीत लेखन एवं अभिनय। कुल मिलाकर पचास से अधिक फिल्मों में गीत लेखन।

आकाशवाणी तथा दूरदर्शन -बम्बई, इलाहाबाद, लखनऊ, गोरखपुर से काव्य पाठ तथा अनेक स्वरचित लोक संगीतिकाओं का प्रसारण। अनेक कवि गोष्ठियों, कवि सम्मेलनों आयोजनों के माध्यम से काव्य पाठ एवं साहित्यिक रचनाओं का प्रचार प्रसार।

अध्यापन -**1952** से **1980** तक श्रीकृष्ण इण्टर कालेज, बरहज में इतिहास, अंग्रेजी एवं तर्क शास्त्र के प्रवक्ता के रूप में प्रतिष्ठित। वर्ष **1978** में उत्तर प्रदेश शासन (शिक्षा विभाग) द्वारा 'आदर्श अध्यापक' पुरस्कार से सम्मानित। अध्यापन काल में विद्यार्थियों के लाभार्थ हाई स्कूल/ जूनियर हाई स्कूल पोइट्री तथा अन्य अंग्रेजी कविताओं का हिन्दी में पद्यानुवाद।

साहित्यिक रचनाएँ -हिन्दी कविता में तेइस प्रकाशित तथा सात अप्रकाशित कविता पुस्तकें, हिन्दी गद्य में 'इतिहास का दर्द', निबन्ध एवं आत्मकथ्य का लेखन, भोजपुरी में पाँच प्रकाशित एवं दो अप्रकाशित पुस्तकें। उर्दू में

पाँच प्रकाशित तथा एक अप्रकाशित पुस्तक, अंग्रेजी में दो प्रकाशित तथा एक अप्रकाशित कविता पुस्तक तथा अंग्रेजी में शेक्सपीयर के सानेट्स तथा पाँच अन्य लम्बी अंग्रेजी कविताओं तथा कई अन्य छोटी अंग्रेजी कविताओं का हिन्दी एवं भोजपुरी में पद्यानुवाद। अब्राहम लिंकन (अंग्रेजी नाटक) का भोजपुरी में अनुवाद, कालिदास कृत 'मेघदूत' (संस्कृत) का भोजपुरी में पद्यानुवाद। इस प्रकार पचास से अधिक पुस्तकों का लेखन और अनुवाद। कुछ अन्य अप्रकाशित निबन्ध एवं कविताएँ अभी छपने के लिए शेष। भोजपुरी में सॉनेट एवं हाइकू विधा में लिखने वाले सर्वप्रथम रचनाकार।

सम्मान एवं पुरस्कार -दो दर्जन से अधिक सम्मान एवं पुरस्कार प्राप्त, जिसमें से कुछ प्रमुख हैं- उत्तर प्रदेश शासन द्वारा 'समिधा' पुस्तक के लिए राज्य साहित्यिक पुरस्कार (**1973-74**), उत्तर प्रदेश राज्य सरकार द्वारा 'आदर्श अध्यापक' पुरस्कार (**1978**), उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान लखनऊ द्वारा राहुल सांस्कृत्यायन पुरस्कार (**1984**), हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग द्वारा 'भोजपुरी रत्न' उपाधि (**1992**), 'श्रुतिकीर्ति' सम्मान (**1997**), विश्व भोजपुरी सम्मेलन,भोपाल द्वारा 'सेतु' सम्मान (**1998**), साहित्य अकादमी नई दिल्ली द्वारा भोजपुरी के लिए प्रथम 'भाषा सम्मान' (**2001-02**), 'किसलय' सम्मान (**2005**), 'सरयूरत्न' सम्मान (**2005**), सांस्कृतिक संस्थान गोरखपुर द्वारा **1986** में 'संस्कार भारती' सम्मान, हिन्दी साहित्य सम्मेलन द्वारा **1992** में 'भोजपुरी रत्न अलंकरण' की उपाधि, अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य परिषद द्वारा **1993** में 'कवि रत्न' की उपाधि, विक्रमशिला हिन्दी विद्यापीठ, भागलपुर द्वारा **1984** में 'विद्या सागर सम्मान', संस्कृति संस्थान भाटपाररानी द्वारा **1987** में 'कवि कुल चूड़ामणि' की उपाधि एवं प्रशस्ति, पूर्वांचल साहित्य परिषद, सलेमपुर द्वारा **1995** में 'पूर्वांचल श्री' की उपाधि तथा 'सरस्वती स्मृति चिन्ह, श्रुतिकीर्ति स्मृति संस्थान, बरहज द्वारा **1993** और **1997** में 'श्रुतिकीर्ति सम्मान', श्री महावीर प्रसाद केडिया हिन्दी साहित्य एवं सांस्कृतिक संस्थान देवरिया से **1993-94** में 'आनन्द सम्मान', संस्था काव्यलोक जमशेदपुर, बिहार द्वारा श्रेष्ठ साहित्य साधना हेतु **1991** में काव्य भूषण की उपाधि ।

अकादमिक/साहित्यिक स्वीकृति, अभिमत एवं मान्यताएँ -देश-विदेश की अनेक लब्ध प्रतिष्ठ

पत्रिकाओं में परिचय एवं रचनाएँ प्रकाशित। विभिन्न प्रयोजनों हेतु सम्पादित अनेक पुस्तकों में रचनाएँ सम्मिलित एवं प्रकाशित। कई विश्वविद्यालयों के भोजपुरी लोक साहित्य विषयक पाठ्यक्रम में रचनाएँ सम्मिलित। विश्वविद्यालयों में मोती बीए के साहित्य पर पी-एचडी. उपाधि हेतु कई शोध प्रबन्ध स्वीकृत। वर्ष **1999** में डॉ शैलेन्द्र कुमार त्रिपाठी (शान्ति निकेतन) द्वारा मोती बी. ए. की प्रतिनिधि कविताओं का सम्पादन 'आग और अनुराग' पुस्तक के नाम से रामकृष्ण प्रकाशन, विदिशा (मध्य प्रदेश) द्वारा प्रकाशित। अखिल भारतीय विक्रम परिषद काशी द्वारा वर्ष **1972** में प्रकाशित एवं आचार्य सीताराम चतुर्वेदी द्वारा सम्पादित 'तुलसी ग्रन्थावली' (द्वितीय खण्ड) के व्यवस्थापक मण्डल के सदस्य रूप में कार्य। प्रसिद्ध साहित्यकार सर्वश्री हजारी प्रसाद द्विवेदी, हरवंश राय 'बच्चन', विशम्भर 'मानव', रामबली पाण्डेय, श्याम नारायण पाण्डेय, डॉ रामचन्द्र तिवारी, डॉ प्रताप सिंह तथा कई अन्य साहित्यकारों द्वारा रचनाएँ समालोचित, प्रशंसित एवं सम्मानित।

*

भोजपुरी के महानायक, उर्दू के अजीमुश्शान शायर, हिन्दी के कवि, अंग्रजी के रूपान्तकार, रचनाकार, गीतकार श्री मोती बीए के स्वर्गवास दिनाँक 18-01-2009 को जिन अखबारों/श्रद्धालु जनों ने/संस्थाओं ने श्रद्धाँजलि व्यक्त कर आत्मा की शान्ति के लिए प्रार्थना की, सम्पदा न्यूज, रेडियो मोती, मोती लाल वेलफेयर सेवा ट्रस्ट सहित हम उनका आभार प्रकट करते है। उन्हे हम समाचार पत्रों के साथ प्रस्तुत कर रहे हैं।

श्री मोती बीए के अर्थी को कन्धा देते अनिल निषाद, सुशील उपाध्याय, डॉ. रवि, देवाशीष उपाध्याय अरविन्द त्रिपाठी

राष्ट्रीय

सहारा

सच्ची पूर्ण सत्य

भोजपुरी के हस्ताक्षर मोती बी.ए. नहीं रहे

आज दिनांक 19-01-09 तदनुसार दिन सोमवार को आज विद्यालय में प्रात:कालीन प्रार्थना के उपरान्त आश्रम के पीठाधीश्वर पूज्य चरण श्री आन्जनेय दास जी महराज की अध्यक्षता में भोजपुरी के पुरोधा, एवं बहुमुखी प्रतिभा के धनी महान साहित्यकार, गीतकार, निबन्धकार, इतिहासकार, फिल्म-अभिनेता, एवं कुशल प्राध्यापक श्री मोती बी.ए. के निधन पर एक शोक सभा आयोजित हुई। उनके इस निधन को साहित्य जगत की अपूर्णीय क्षति बतायी गयी। इनके निधन से समस्त आश्रम परिवार मर्माहत है। प्रधानाचार्य डॉ. अक्षयवर पाण्डेय सहित समस्त शिक्षक एवं शिक्षणेत्तर कर्मचारी गण शोक प्रस्ताव के माध्यम से दिवंगत आत्मा की शान्ति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करते है तथा शोक संतप्त परिवार के लिए अपनी संवेदना व्यक्त करते हैं।

डॉ. अक्षयवर पान्डेय, एवं समस्त आश्रम परिवार

भारत माँ के सपूत पूर्वान्चल के गौरव परमहंस बाबा राघवदास एवं परमहंस सत्यव्रत जी महराज के कृपा-पात्र परम श्रद्धेय पं. मोती लाल उपाध्याय के स्वर्गवास पर हम सभी आश्रमवासी दुःखी एवं शोकाकुल है। पं. मोती बी.ए. भोजपुरी भाषा एवं साहित्य के एक सख्त हस्ताक्षर थे। उनका व्यक्तित्व एवं कृतित्व आने वाले पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का श्रोत बना रहेगा, वह अपनी रचनाओं में सदा जीवित रहेगें। -आन्जनेय दास

19 जनवरी 2009 को राष्ट्रीय सहारा समाचार पत्र ने श्री मोती बीए की याद में विशेषांक निकाला।

हवा तू उनसे जाकर कह दे इक दीवाना आया है,
तेरी सूरत पे मरनेवाला इक परवाना आया है
जब से मतवाली आंखों से आंखे हुई हैं चार
तुमको देखे बिना न तब से मिलता हमे करार
यही अफसाना लाया है, तेरा दीवाना आया है
हमको तुमसे तुमको हमसे, दिल को दिल से काम,
दिलवालों के लब पे रहता है दिलवर का नाम

अजब मस्ताना आया है, तेरा दीवाना आया है
मिल जाए दीदार मुझे मैं हो जाऊं कुरबान
एक झलक दिखला दो रानी दे दूं अपनी जान
यही नजराना लाया है, तेरा दीवाना आया है

रिमझिम- 1949
गायक- मु. रफी एवं रमोला
गीतकार : मोती बी.ए.
संगीतकार : खेमचंद प्रकाश

सर्वोदय आंदोलन से भी जुड़े थे मोती बीए

रमाशंकर राव

भोजपुरी के सपूत मोती बी.ए. का काव्य साधना पर तो पूरा अधिकार था ही वे किशोरावस्था में सर्वोदय नेता स्व. जयप्रकाश नारायण के सर्वोदय आन्दोलन से भी जुड़ गये थे। मोती बी.ए. एम.ए. की शिक्षा ग्रहण करने के बाद सर्वोदय आन्दोलन में कूदे। 1942 के 'अंग्रेजों भारत छोड़ो' आन्दोलन में मोती बी.ए. डा. स्वामीनाथ सिंह व त्रिलोचन शास्त्री के साथ भारत रक्षा कानून में गिरफ्तार कर 15 दिनों तक चेतगंज (वाराणसी) हवालात में नजरबंद रखा गया था। अंग्रेजी हुकूमत उनके खिलाफ पर्याप्त सबूत एकत्र नहीं कर पायी इसलिए उन्हें रिहा कर दिया।

उन दिनों मोती बी.ए. राष्ट्रीय चेतना उभारने वाले गीत लिखते थे। तकली काटना, चरखा चलाना और आजादी के गीत गाना उनके नियमित के कार्यक्रमों में शामिल थे। उन दिनों मोती बी.ए. का प्रमुख गीत था-

'झंडा तिरंगा लहराए अपने देश में
हां-हां रे अपने देश में।'

आजाद भारत में मोती बी.ए. सिद्धान्तविहीन राजनीतिक दलों पर तीखा व्यंग्य अपनी कविताओं के माध्यम से करते थे। मोती जी की यह रचना मशहूर है-

कइसे चली नाइ,
ई तऽ नइए में छेद बा
पछिम कांग्रेसी जे बा,
पूरब सोशलिस्ट बा।
रहनि जनसंघी बाटे,
चलन कम्युनिस्ट बा,
लाल बा लगोंटा एकर,
टोपिए सफेद बा।।

राष्ट्रीयता से ओतप्रोत मोती बी.ए. भारतीयता में रंगे बसे थे। यह उनकी कविता **'अब कैसी लाचारी, गद्दारी, सवारी, बेकारी, मुर्दाबाद, राशन के दुकान, 15 अगस्त आ छब्बीस जनवरी में** कही गयी बातों से प्रमाणित है।

भोजपुरी गीतों के माध्यम से अध्यात्म दर्शन व प्रकृति चित्रण की स्वस्थ परम्परा की शुरुआत करने के लिए मोती बी.ए. युगों-युगों तक जाने जायेंगे। सम्पूर्ण भोजपुरी काव्य का केन्द्रीय व्यक्तित्व उनमें रहा। मोती बी.ए. भोजपुरिया इलाके के लोगों की आन-बान और शान को अन्य सभी से ऊपर मानते थे। उनका कहना था कि भोजपुरिया इलाके के लोगों से किसी मायने में कोई जीत नहीं सकता। उनकी यह कविता काफी पुरानी है पर महाराष्ट्र के मनसे नेता राज ठाकरे का उत्तर भारतीय विरोधी अभियान हो या भोजपुरियों पर अन्य कोई हमला उसका करारा जवाब देने के लिए सामयिक भी है-

''भोजपुरियन के हे भैया
का कहेलऽ,
खुलि के आवऽ
अखाड़ा लड़ा दीहें सँ।
तोहे चरखा पढ़वला में
का धइल बा,
तोहके सगरो पहाड़ा
पढ़ा दीहें सँ।

इसी के साथ स्व. मोती जी को शत-शत नमन्!

श्रद्धेय मोती बी.ए. का निधन भोजपुरी साहित्य के लिए अपूर्णीय क्षति है जिसकी पूर्ति संभव नही है।

-ब्रजराज रावत

राष्ट्रीय सहारा, गोरखपुर, सोमवार, 19 जनवरी 2009

अलविदा

जन्म - 1 अगस्त 1910
अवसान - 18 जनवरी 2009

मोती लाल उपाध्याय उर्फ मोती बीए

रचनाओं में रहस्य विसंगतियों का सजीव वर्णन

« डा. अजय कुमार मिश्र »

मोती जी की रचनाओं में रहस्य, अध्यात्म, रोमांस, विरह, प्रकृति वर्णन तथा राष्ट्रीयता से लेकर वर्तमान सामाजिक तथा राजनीतिक जीवन की विसंगतियों का सजीव वर्णन है। इसके बावजूद वियोग, श्रृंगार तथा प्रकृति के महारथी रचनाकार है। प्रकृति की सजीवता उनकी रचनाओं में सर्वत्र दिखाई देती है।

कठवा के नइया बनइहें रे मलहवा, नदिया के पार दे उतार।
मोरे राजा हो ले चल नदिया के पार, मोरी रानी हो तु ही मोरे प्राणधार।।

संसार की असारता को दृष्टान्त के माध्यम से सहज भाव से प्रस्तुत करने में मोती जी का कोई जोड़ नही रहा। जीवन की सच्चाई तथा संसार की असारता का चित्रण करते हुए मोती जी ने कहा था-

सुगना सेमर के फूले का एतना लपटाइल बाड़ड़।
सगरे ज्ञान भुलाइल बाड़ड़ हो।
हमहुं देखनी एगों एईसन फूल फुलाइल बा।
सगरे लोग मोहाइल बा।

भौतिकता तथा सांसारिकता के भावचक्र में फंसे मनुष्य को लक्ष्य की तरफ बढ़ने की प्रेरणा हेतु मोती जी ने अपनी प्रसिद्ध रचना में कहा था :-

तनी अउरी दउरड़ हिरना पा जइब किनारा।
दउरे ल अनेर तु पहुंचले में देर बा।
बुझिल वचन इ समुझला का फेर बा।

वसन्त ऋतु में छायी मादकता का चित्रण सजीव ढंग से "महुआबारी" में करते हुए उन्होंने कहा था कि-

आसो आइल महुआबारी में बहार सजनी।
कोचवा मातल, भुइंया छुवे, महुआ रसे रसे चुये।
जबसे बहे भिनुसार के बयार सजनी।

मोती जी भोजपुरी के मोती थे जो सदैव चमकते रहेंगे। भोजपुरी के सशक्त हस्ताक्षर मोती जी इधर काफी दिनों से अस्वस्थ हो गये थे लेकिन उनकी रचना धर्मिता में कोई कमी नही आयी थी। जिसका आभास दिलाती हुयी उनकी अन्तिम रचना है :-

पंगु बधिर अर्धान्ध मूक हूं, पीर कलेजे दबी हूक हूं।
कहने को हूं एक इकाई, टुकड़े-टुकड़े टूक-टूक हूं।

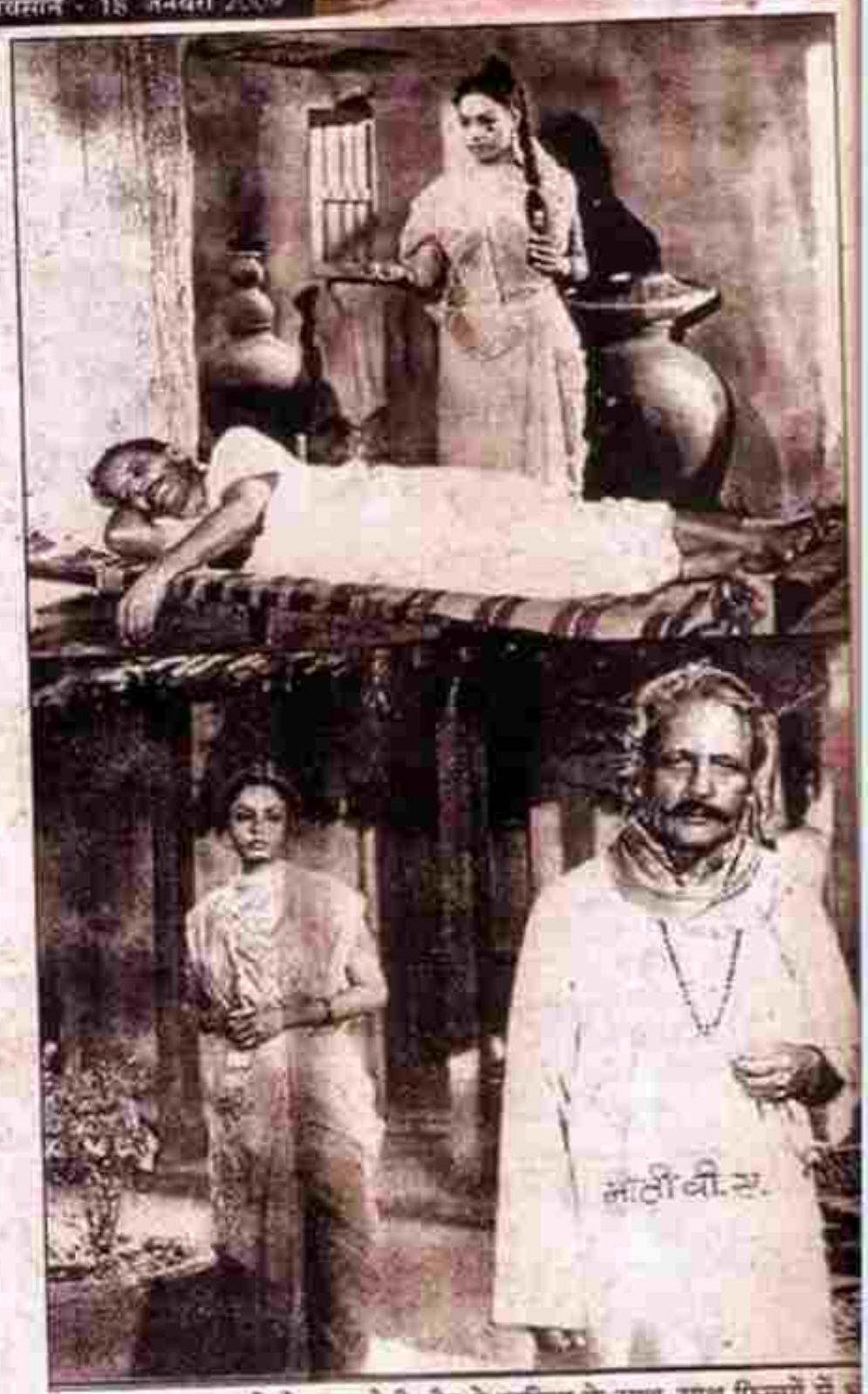

शानदार अभिनेता : मोती बीए ने साहित्य के साथ-साथ फिल्मों में भी हाथ आजमाया और कहना न होगा कि वो इसमें खासे सफल रहे। पहली तस्वीर में मोती बीए के साथ अपने जमाने की विख्यात अदाकारा पद्मा खन्ना दिख रही हैं तो दूसरी तस्वीर भोजपुरी फिल्म गजब भइले रामा के एक दृश्य में वो नवोदित अभिनेत्री के साथ दिख रहे हैं।

आदरणीय श्री मोती बी.ए. जी के प्रति मैं अपनी श्रद्धा अर्पित करता हूँ। -आशुतोष पाण्डेय

भोजपुरी का मार्तण्ड अस्ताचल को पयान कर गया। हम सभी स्तब्ध है। -सुरेन्द्र मिश्र

श्री मोती बीए की अर्थी को कांधा देते लोग

पुरस्कार एवं सम्मान

- 1973-74 में उत्तर प्रदेश शासन के शिक्षा विभाग द्वारा "सविधा" पुस्तक हेतु "राज्य साहित्यिक पुरस्कार"
- 1978 में उत्तर प्रदेश राज्य सरकार द्वारा आदर्श अध्यापक पुरस्कार।
- 1984 में उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान लखनऊ द्वारा भोजपुरी की आजीवन सेवा हेतु "राहुल सांकृत्यायन पुरस्कार"
- 1992 में हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग द्वारा "भोजपुरी रत्न अलंकरण"।
- 1993 में अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य परिषद, उत्तर प्रदेश द्वारा कवि रत्न उपाधि।
- 1998 में विश्व भोजपुरी सम्मेलन- अन्तर्राष्ट्रीय भोजपुरी सचिवालय द्वारा भोपाल में "सेतु सम्मान"
- मातबर प्रसाद केडिया हिन्दी साहित्य एवं संस्कृति सम्मान द्वारा "आनन्द सम्मान"
- "मोती जी को भोजपुरी का प्रथम साहित्य अकादमी पुरस्कार।

आज दिनांक 19-01-2009 को महाविद्यालय परिसर में प्रबंधसमिति के सदस्यों, शिक्षकों, कर्मचारियों, छात्र-छात्राओं की शोक सभा महाविद्यालय प्रबंधसमिति के मंत्री पीठाधीश्वर श्री आन्जनेय दास की अध्यक्षता में हुई। दिनांक 18-01-2009 को प्रख्यात कवि साहित्यकार श्री मोती बी.ए. के निधन पर शोक व्यक्त किया गया। उनकी आत्मा की शान्ति एवं परिवार जनों को इस दुःख के सहन करने की क्षमता प्रदान करने के लिए दो मिनट मौन रहकर ईश्वर से प्रार्थना कर मृतात्मा के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करने के उपरांत आज महाविद्यालय बंद करा दिया गया। -आन्जनेय दास

आदरणीय मोती बी.ए. जी साहित्यकार के ध्रुव रुप में प्रतिष्ठित हैं। आज भौतिक शरीर से हमारे बीच न होते हुए भी भौतिक रूप मे हमारे बीच मे हमेशा मौजूद रहेगें। -डॉ. अक्षयवर पान्डेय

महान गीतकार, कवि, भाषाविद एवं शिक्षक माननीय मोती बी.ए. जी का देहावसान, साहित्य,शिक्षा एवं लेखन जगत की अपूर्णीय क्षति है। उनकी शिक्षाएं सदैव हमें मार्गदर्शन देती रहेगी। उनके श्रीचरणों में शतःशत नमन। -सुग्रीव पाण्डेय

कोई मुझे भोजपुरी वाला मोती बीए कहता है तो गौरवान्वित मानता हूं

मुझे अपनी फिल्मी गतिविधियों से पर्याप्त संतोष है। सभी बड़े-बड़े गायकों ने मेरे गीतों को स्वर प्रदान किया जिनकी धुनें तत्कालीन प्रतिष्ठित संगीतकारों ने बनाई थीं।

◀ अतुल श्रीवास्तव ▶

कलम न होती जिन्दा तो, कभी का मर गया होता,
पहुंचने के लिए घर पर खुदा के घर गया होता।

एक अगस्त 1919 को ग्राम बरेजी पो. तेलियाकलां जिला देवरिया में जन्मे मोती लाल उपाध्याय उर्फ मोती बी.ए. ने आज 18 जनवरी 2009 को हमेशा के लिए आंखे मूंद ली। भोजपुरी साहित्य के पितामह को मेरा सलाम।

मोती बी.ए. ने काशी विश्वविद्यालय से सन 1938 में बी.ए. एवं 1941 में एम.ए. की परीक्षाएं उत्तीर्ण की। बी.टी. एवं साहित्य रत्न की डिग्रियां हासिल करने के साथ-साथ मोती बी.ए. पत्रकारिता से भी जुड़ गये थे तथा दैनिक पत्रों अग्रगामी, आज, संसार एवं आर्यावर्त को अपना संपादकीय सहयोग प्रदान करते रहे। जीवन के गाढ़े दिनों में आपने पत्रकारिता का अवलंबन लिया। साहित्यिक प्रतिभा के धनी मोती बी.ए. की कविताएं उन दिनों आज (वाराणसी) के मुख्य पृष्ठ पर छपा करती थी। वाराणसी में रहते हुए आपका परिचय मुंशी प्रेमचंद, पं. रामचंद्र शुक्ल, हरिऔध जी, श्याम सुंदर दास, पं. श्याम नारायण पांडेय, अमृत राय, पं. सीताराम चतुर्वेदी, पं. हजारी प्रसाद द्विवेदी जैसे दिग्गज मनीषियों से होता रहा।

रचना सृजन होता रहा और साहित्य की खेती फलती-फूलती रही।

हमको तुम्हारा ही आसरा, तुम हमारे हो न हो ....

हिन्दी फिल्म संगीत प्रेमी उक्त गीत को अभी तक भूले नहीं है जिसे फिल्मिस्तानकृत सजन (1947) के लिए मो. रफी एवं ललिता देउलकर ने गाया था। हिंदी फिल्म नदिया के पार (1948) के लिए भोजपुरी भाषा में लिखे एक युगल गीत : *मोरे राजा हो ले चल नदिया के पार...* (मोहम्मद रफी, ललिता देउलकर) के बोल तथा उसकी धुन आज भी मन मोह लेती है। मगर क्या आपको उस गीतकार की भी याद है जिसकी कलम से वर्षों पूर्व निकला यह गीत आज भी याद किया जाता है? उस भूले-बिसरे गीतकार का नाम था मोती बी.ए.।

वर्षों पूर्व दिए गये साक्षात्कार में भोजपुरी साहित्य के पितामह मोती बी.ए. ने कहा था : मेरे साहित्य जीवन पर फिल्मी रंग कभी हावी नहीं होने पाया। वैसे मैंने पचासों हिन्दी व भोजपुरी फिल्मों में गीत लिखे हैं, सफलता के साथ-साथ नाम-यश भी अर्जित किया है। मुझे अपनी फिल्मी गतिविधियों से पर्याप्त संतोष है। सभी बड़े-बड़े गायकों ने मेरे गीतों को स्वर प्रदान किया जिनकी धुनें तत्कालीन प्रतिष्ठित संगीतकारों ने बनाई थीं।

अपने संस्मरणों को याद करते हुए मोती साहब ने कहा था: फिल्म संसार को प्रेमचंद, भगवती चरण वर्मा, अमृत लाल नागर, नरेन्द्र शर्मा, उपेन्द्र नाथ अश्क, सुमित्रानंदन पंत, हरिवंश राय बच्चन, भगवती प्रसाद वाजपेयी, सआदत हसन मंटो, राही मासूम रजा, साहिर लुधियानवी, कैफी आजमी, नीरज वगैरह नामचीन साहित्यकारों ने विभूषित किया है मगर अपने-अपने ढंग से, कोई मुझे भोजपुरी वाला मोती बी.ए. कहता है तो मैं अपने को गौरवान्वित मानता हूं।

श्री मोती बीए पर 19 जनवरी 2009 के राष्ट्रीय सहारा समाचार पत्र का विशेष अंक -साभार

पूज्य गुरुवर मोती बी.ए. के प्रति अपनी श्रद्धांजलि समर्पित करता हूँ। -नगेन्द्र मिश्र
(प्रवक्ता इतिहास-एस.के.इण्टर कालेज)

आदरणीय मोती बी.ए. जी के प्रति मैं श्रद्धा सुमन अर्पित करता हूँ। -ध्रुवदेव दुबे
(प्रवक्ता गणित-एस.के.इण्टर कालेज)

कुछ मूल्यवान सम्मत्तियां

▸ मुझे इस बात का दुख है कि आपको जैसा सम्मान मिलना चाहिए, वैसा नहीं मिला। पर इससे हताश होने की कोई जरूरत नहीं । 'कालोह्यं निरवधिर्विपुला च पृथ्वी।'

हजारी प्रसाद द्विवेदी

▸ आप सरल शैली के मास्टर हैं। इस शैली ने और कुछ भी किया हो या न, आपको सरल बना दिया है। सरलता बड़ी साधना की देन है। आपको संतुष्ट होना चाहिए।

हरिवंश राय बच्चन

▸ आपके गीतों में काव्यगत सौंदर्य के साथ अद्भुत आकर्षण है जो अन्यत्र दुर्लभ है। आप भाषा के प्रयोग में भी कुशल हैं। आपकी समर्थ लेखनी का चमत्कार सर्वत्र रसानंद से ओतप्रोत है।

श्यामनारायण पांडेय

▸ श्री मोती बी.ए. हिन्दी के प्रमुख केंद्रों से जब-तब दूर रहकर 30 वर्ष से काव्य की साधना कर रहे हैं। जीवन, साहित्य और प्रेम में उनका अटूट विश्वास, अनास्था, संदेह और कुंठा के इस युग में भी बना हुआ है, यह कम महत्व की बात नहीं है।

विश्वम्भर, 'मानव'

▸ ... और अब जब भी श्री मोती बी.ए. की अनेक रचनाएं एक साथ प्रकाशित हुई हैं हम यह अनुभव करते हैं कि यह एक ऐसे नाविक की नौका में सुरक्षित रत्नराशि है जो धारा से कट कर कहीं जलावर्त में भटक गया था। कभी तो कोई समान-धर्मा उत्पन्न होगा जो इन रत्नों को परखेगा।

आचार्य रामचंद्र तिवारी

▸ कवि फैशन के लिए ग्रामीण जीवन का चित्र अंकित करना नहीं चाहता। वह जिस जीवन से जूझ रहा है, उसी को मार्मिक स्वर देने में अपने कवि धर्म की चरितार्थता को मानता है। कवि की वाणी में जो शक्ति है उसे वह पहचान गया है। **'सेमर के फूल'** के लिए मोती जी को बधाई।

रामबली पांडेय

▸ 'समिधा' में व्यक्त 'तुम' समग्र सृष्टि का नियामक है, तभी तो कवि के आह्वान में क्या-क्या नहीं छिपा है? ठीक वैसे ही जैसे स्वयं वह छिप कर गुमनाम कवि की भांति अपना जीवन-यापन करने में सक्षम हो चुका है।

माता प्रसाद त्रिपाठी

▸ मोती जी ने गांव की आत्मा को पहचाना है, उसके कोने-अतरे में छिपे हुए सौंदर्य को अपनी रचना प्रक्रिया से जोड़कर देखने का प्रयास किया है। उनकी **'महुआबारी'** कविता हमारे जीवन का सार्थक रूपक है। कालीन पर खड़े होकर समकालीन की बात करने वाले उन साहित्यकारों से जो रचना को सुविधा से जोड़कर देखते हैं। मोती जी का कवि व्यक्तित्व अपनी सहजता के कारण इमानदार रचनाधर्मिता का साक्षी बन गया है।

अरुणोश नीरज

- शेक्सपीयर के सानेट का हिन्दी पद्यानुवाद।
- काव्य रूपक-'कवि-भावना-मानव'।
- स्फुट रचना संग्रह-'प्रतिबिम्बनी'।
- हिन्दी की नई शैली में रचित कविताएं-'अश्वमेध यज्ञ'।
- 'समिधा' (गीतांजली)।
- गीतपाठ-'कवि और कविता'
- तड़पते हुए गीत-'मृगतृष्णा'।
- आत्मा की तड़पन 'पायल छम-छम बाजे'।
- पावस की बूंदों और ज्योति मालाओं से घिरे गीत-'बादलिका'।
- सजल कण्ठ और भरे नयन के गीत-'आंसू डूबे गीत'।
- निराला जी को समर्पित पांच बड़ी कविताएं।
- 'हर सिंगार के फूल'।
- भोजपुरी कविता संग्रह-'सेमर के फूल'।
- 'मोती के मुक्तक'। 150-150 भोजपुरी, हिन्दी तथा उर्दू के मुक्तक।
- लोक संगीतिका संग्रह 'बन बन बोले ले कोइलिया'।
- 'मेघदूत' भोजपुरी पद्यानुवाद।
- 'भोजपुरी सानेट'। 'तुलसी रामायन' भोजपुरी।
- व्यंग्य रचना-'राशन की दुकान'।
- हिन्दी उर्दू मजल 'दर्दे गुहर'।
- 'मांझी की पुकार' 'पुकार की रूपसी'। अंग्रेजी से हिन्दी पद्यानुवाद।
- राजनीतिक कविताओं का संग्रह-'रांची से राजघाट'।
- निबंध संग्रह-'इतिहास का दर्द'।

उर्दू रचना-'रश्के गुहर'। 'एक शायर' उर्दू नज्म।

- 'लव एण्ड ब्यूटी' (मोती के सानेट्स) तथा राबर्ट ब्राउनिंग की सर्वश्रेष्ठ कविताओं को गीतमय रूपान्तर-'रबि बेन एजरा'।

प्रकाशित रचनाएं

हिन्दी

1-कवि- भावना मानव (काव्य)
2-प्रतिबिम्बिनी (फुटकर कविताओं/गीतों का संग्रह)
3-अश्वमेध यज्ञ (नयी कविता संकलन)
4-समिधा (काव्य)
5-कवि और कविता (काव्य)
6-मधु तृष्णा (काव्य)
7-पायल छम छम बाजे (काव्य)
8-बादलिका (काव्य)
9-आंसू डूबे गीत (गीतों का संकलन)
10-गति के चरण(नयी कविता संकलन)
11-कुछ गीत कुछ कविता
12-लाहौर की नहर (काव्य)
13-लाचारी (लम्बी कविता),
14-आत्म काव्य
15-तुलसी रसायन

भोजपुरी

3-बन बन बोलेले कोइलिया (लोक-संगीतिकाओं को संग्रह)

उर्दू

1- तिनका तिनका शबनम शबनम

अंग्रेजी

2-लव एण्ड ब्यूटी

अनुवाद

1-अब्राहम लिंकन (जान ड्रिंकवाटर की अंग्रेजी नाट्य कृति का भोजपुरी रूपान्तर)
2-हाईस्कूल पोयट्री की कविताओं का हिन्दी रूपान्तर
3-रबी बेन एजरा
4-प्यार की रूपसी (डी.जी.रॉसेटी की लम्बी कविता-ब्लेस्ड डेमेजल का हिन्दी पद्यानुवाद
5-मेघदूत
6-प्राचीन नाविक (कालरिज की लम्बी कविता का हिन्दी पद्यानुवाद)

संकलन - डा. अजय

आदरणीय स्व. मोती जी भोजपुरी साहित्य के सम्राट थे। उनकी कृतियाँ, रचनाएं जन्म-जन्म तक आलोक बिखेरती रहेगा।

जे.पी. श्रीवास्तव
पत्रकार, अमर उजाला

भोजपुरी जगत के शेक्सपियर मोती बीए नहीं रहे

सरयू तट पर की गई अंत्येष्टि

● अमर उजाला ब्यूरो

बरहज। महुआवारी के हिलकोरों में मादक बहार तथा सेमर के फूल की देव दुर्लभ पर अपने बेजोड़ फन का जादू बिखेरने वाले भोजपुरी जगत के इतिहास पुरुष पंडित मोतीलाल उपाध्याय (मोती बीए) का रविवार की भोर में 5 बजे देहावसान हो गया। उनके निधन की खबर सुनते ही नगर सहित साहित्य प्रेमियों, समाजसेवियों में शोक की लहर दौड़ गई।

निधन

नंदना वार्ड के लक्ष्मी निवास पर उनके अंतिम दर्शन के लिए लोगों का तांता लग गया। एक अगस्त 1919 को बरहज के बरेजी गांव में जन्मे मोती बीए ने 90 वर्ष की अवस्था को पार कर अपनी रचना और शरीर यात्रा के अंतिम पड़ाव को पूरा किया। एक माह से उनकी वाक शक्ति बंद हो गई थी। एक सप्ताह से अन्न भी त्याग दिए थे। वे अपने पीछे भरा पूरा परिवार छोड़ गए हैं। तीन पुत्र जवाहर लाल उपाध्याय, भालचन्द उपाध्याय, अंजनी उपाध्याय और दो पुत्रियां हैं। वर्ष 1955 से स्थानीय श्रीकृष्ण इंटर कालेज में प्राध्यापक थे और 1980 मे सेवानिवृत्त हो गए थे। 1947 से 1955 तक फिल्म इंडस्ट्रीज में काम किया। उनका अंतिम संस्कार सरयू तट पर किया गया। मुखाग्नि उनके छोटे पुत्र अंजनी ने दी। इस दौरान आन्जनेय दास जी महाराज, पूर्व मंत्री पं. दुर्गा प्रसाद मिश्र, दिवाकर त्रिपाठी, अरविंद त्रिपाठी, विजय गुप्ता, बालकृष्ण पांडेय डा. केपी सिंह, डा. एसपी सिंह, आनन्द कन्द पांडेय, प्रदीप गुप्त, अजीत जायसवाल, अनिल निषाद, अजय प्रताप सिंह, एसएन मल्ल, प्रदीप जायसवाल मौजूद रहे।

स्मृति शेष पेज 8 पर ▸▸

श्री मोती बीए पर 19 जनवरी 2009 के अमर उजाला समाचार पत्र का विशेष अंक

आदरणीय स्व. मोती जी भोजपुरी साहित्य के शहंशाह थे। भोजपुरी साहित्य के लिए उनका योगदान साहित्य जगत को प्रेरणा के रूप में सदैव प्राप्त होता रहेगा। इनकी रचनाएं सूखी हुई लकड़ी में भी ममत्व की भावना पैदा करती रहेंगी।

-रविकान्त उपाध्याय
पत्रकार, हिन्दुस्तान

भोजपुरी के असली ध्वज वाहक थे मोती बीए

रेडियो आर्टिस्ट और साहित्यकार जुगानी भाई बोले माटी के लाल थे मोती

अमर उजाला ब्यूरो

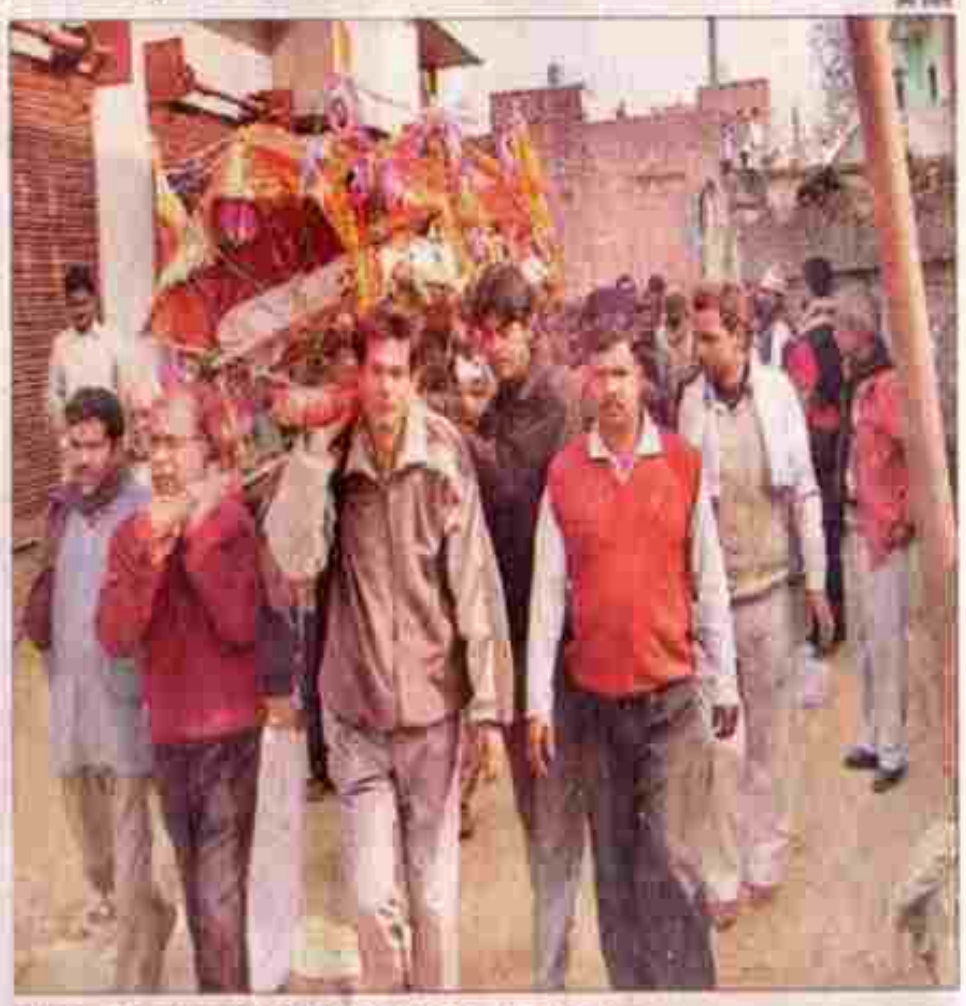

अंतिम यात्रा : कवि सम्मेलन मोती बीए की अर्थी को कंधा देने वालों का तांता लगा था।

श्री मोती बीए की चिता को अग्नि देते उनके सबसे छोटे पुत्र एवं सम्पदा सम्पादक अंजनी उपाध्याय

आदरणीय मोती जी भोजपुरी के सम्राट थे। उनकी रचनाएं हम लोग पढ़ते हैं तो बहुत ही आनन्द आता था।

-सुखदेव सिंह
पुराना बरहज

...सदियों दिलों की याद में गूंजा करेंगे हम

बरहज। 'ये मौत ने आके खामोश कर दिया, सदियों दिलों की याद में गूंजा करेंगे हम।' हिंदू, उर्दू, अंग्रेजी और भोजपुरी में समान अधिकार के साथ लिखने वाले भोजपुरी के शेक्सपीयर मोती बीए की भोजपुरी में सानेट और हाइकू का हिंदी में अनुवाद के साथ ही महुआवाली, सेमर के फूल, मोती के मुक्तक, कन-कन कोने रे कंसंत्रिया, सबके गुरु के अलावा रचनाकार के रूप में प्रतिष्ठित रहे हैं। वे कवि थे।

गीतकार, स्क्रिप्टराइटर और गायक भी थे। मोती बीए के अंग्रेजी कविताओं के काव्य के अनुवाद, भोजपुरी कविताओं के अनेक संग्रह समय-समय पर प्रकाशित होते रहे हैं। उनकी कविताएं कवि सम्मेलन में धूम मचाती थीं। 'अबकी आइल महुआवाली में खाए सजनी' और 'सनी औरी टरा लिया पा लईबा किनारा' जैसे गीत उनके पहचान बन गए। बिहार विश्वविद्यालय ने भोजपुरी को भाषा के रूप में मान्यता दी है। पाठ्यक्रम के लिए कविता पढ़ाए जाने के लिए मोती जी की 'मूर दुनिया' को शामिल किया गया है। अनूदित रचनाओं में लोगों की पुकार, प्यार की लपटें, शेक्सपीयर के सानेट्स और मौलिक की है।

लोक कवि को मिले सम्मान

मोती बीए को साहित्य सेवा के लिए राज्य साहित्य पुरस्कार, राहुल सांकृत्यायन पुरस्कार, आनंद सम्मान सहित पचासों पुरस्कारों से नवाजा जा चुका है।

हिंदी फिल्मों में भोजपुरी का लहराया परचम

बरहज। मोती बीए का फिल्मों में योगदान महत्वपूर्ण है। हिंदी फिल्मों में भोजपुरी गीतों को प्रतिष्ठापित करने का श्रेय उन्हीं को है। उन्होंने गीतों और अभिनय में उच्चांशेष प्रदान की। लोक धुनों के बड़े सम्मोहक थे। उन्हें मुम्बई की चकाचौंध नहीं भाई और 1955 में वापस अपनी माटी बरहज चले आए। चलचित्र जगत में अपने गीतों को लेकर काफी चर्चित रहे।

प्रफुल्ल पिक्चर्स की फिल्म सुभद्रा जो 1946 में रिलीज हुई, में कमल दासगुप्ता के संगीत के निर्देशन में लता मंगेशकर और शांता आप्टे ने इनके तीन गीतों को स्वर दिया। ये गीत थे गोकुल के कृष्ण कैसे इतने बदल गए, चारों ओर अंधेरा, मैं खिली-खिली फुलवारी। 1947 में प्रकाश पिक्चर्स की भजन ध्रुव रिलीज हुई। उसमें इनके दो गीत लिए गए- 'प्रभु अपनी झलक दिखाओ, और सूनना झूमे मेरे प्यारे लला रे...' 1948 में इसी बैनर की राम बान रिलीज हुई, जिसमें मोती के गीत को लता ताम ने स्वर दिया। 1947 में फिल्मीस्तान लिमिटेड के बैनर तले सिंदूर के लिए तुम बिन जिया न लागे और फिल्म सावन के लिए हम बंजारे, हमको तुमसे है आसरा, और तुम हमारे हो न हो को लिया गया। दो गाने को मो. रफी ने स्वर दिया था। फिल्म नदिया के पार में कठवा के नाव बनाइले रे मलाहवा, नदिया के पार दे उतार, मोरे राजा ने चल नदिया के पार..लोगों की जुबान पर थी। 1949 में प्रेम अदीब राम की राम विवाह,

अतीत की यादें : नायक उदित नारायण, संगीतकार विश्वजीत और उनके संगीतकार के साथ मोती बीए।

1952 में निर्माता फिल्म की ममता, 1984 में राजेश फिल्मस की ठकुराइन, उनकी वर्ष के साहेब की गजब भइले राम और अगले वर्ष गिरी फिल्मस की बना चमेली के लिए गीत लिखे। नदिया के पार को सबसे ज्यादा सफलता मिली, जिसमें ट्रेजडी किंग दिलीप कुमार ने चन्दन की भूमिका निभाई थी। मोती जी के गीतों को मन्ना डे, मुकेश, मुहम्मद रफी, उदित नारायण, सचिन और गीता दत्त, दिलराज कौर और अल्का याज्ञिक ने अपना स्वर दिया।

मोती के मुक्तक

- देखि के जवन सूरत न मन डोलि जा, ओ के सुन्दर जो कहीं त कहल करीं। दर्द से ऊ करेजा न टीसल करे, ओके सुन्दर जो कहीं तक कहल करीं॥
- जवने खुटवा बछरुआ बन्हा गइल बा, घुमचक्कर से का फरियाये के बा, पुरि के फेकि दिहलीस त का हो गइल, फिर ओकरा के ओही में बन्हाए के बा।

नमन : प्रो रामदेव शुक्ल मोती बीए को श्रद्धांजलि देते हुए कहते हैं कि साहित्य के प्रति उनका उल्लेखनीय योगदान है। उन्होंने बताया कि उनके संपूर्ण रचनाओं की एक रचनावली प्रकाशित करने की योजना है।

Nobody will fulfill the gap of departed soul of shri Moti B.A the verstile BHOJPURI writer.

Mithilesh tiwari
Barhaj

मोती के गीतों से स्टार बने दिलीप कुमार

● महेन्द्र तिवारी

गोरखपुर। भोजपुरी साहित्य के शलाका पुरुष के रूप में प्रतिष्ठित मोती बीए जब गोरखपुर आते थे तो विश्वविद्यालय में प्राचीन इतिहास विभाग के पूर्व हेड प्रो. माता प्रसाद त्रिपाठी के घर जरूर ठहरते थे। आज जब प्रो. त्रिपाठी ने उनके निधन की खबर सुनी तो वह स्तब्ध होकर रह गए।

अमर उजाला से बातचीत में उन्होंने मोती के साथ बिताए पलों की चरचा करते हुए कहा कि वह जीवट व्यक्तित्व थे। निरंतर प्रसन्न रहते थे। 1944 से 1952 तक वह फिल्मों में रहे। दिलीप कुमार सही अर्थों में उनके गीतों से ही स्टार बने। नदिया के पार फिल्म के अलावा साजन में उनकी गजल : हमको तुम्हारा ही आसरा तुम हमारे हो न हो, ने दिलीप को नायक बना दिया। प्रसिद्ध फिल्म संगीतकार सी रामचंद्रन से उनकी अच्छी निकटता थी। रफी और ललिता देवलेकर ने इनके गीत गाए। प्रो. त्रिपाठी कहते हैं कि मोती ने आज जिसे आधुनिक गीत कहते हैं उससे मिलते गीत भी लिखे मगर उनमें बिंब देखने लायक है : ले के भागा, दगा दे के भागा/ ऐसे बेदरदी से जिया मोरा लागा। इन लाइनों में भी भोजपुरी की आत्मा बसती है। वह बताते हैं कि मोती ने अपनी रचनाओं के प्रकाशन के लिए खुद का प्रकाशन कार्य शुरू किया। अपने पुत्र जवाहर के नाम से उन्होंने जवाहर प्रकाशन की स्थापना की। इससे उन्होंने 30 से अधिक कृतियां छापी। मेघदूत की रचना भोजपुरी में की। पत्नी की याद में भी पुस्तकें लिखीं। अश्वमेध यज्ञ, समिधा, छम दम पायल बाजे आदि उनकी चर्चित कृतियां हैं। गोरखपुर में नौकायन संस्था की ओर से उनका एक बार सम्मान किया गया। उनके सम्मान में लोग घंटो बैठे रहे। भोजपुरी काव्य की दुनिया में मोती का कोई सानी नहीं है। आज उनका कोई विकल्प नहीं है। यदि वह अपनी माटी के लिए मुंबई से बरहज न आते तो आज कवि फिल्मी दुनिया के कवि प्रदीप, नीरज और शकील जैसे लोगों से कम न होते। उनका नज्मों का संग्रह रश्के गुहार काफी चरचा में रहा।

आज उनके निधन से उदास है उनकी अमराई, उनकी महुआरी। अपनी विलक्षण काव्य वेदना से कविवर मोती ने अपनी मातृभूमि के कितने ही बिंबों को शाश्वत संदेश बना दिया। तनी अउरी दउरा हिरना या जइब किनारा गाते हुए कवि को आज किनारा मिल गया।

कृतियां

अश्वमेध यज्ञ, समिधा, छम दम पायल बाजे चर्चित कृतियां हैं

भोजपुरी काव्य की दुनिया में मोती का कोई सानी नहीं

मोती बीए को सांसद ने दी श्रद्धांजलि

देवरिया। सांसद मोहन सिंह ने भोजपुरी के उच्च दराज साहित्यकार मोती बीए के निधन पर गहरा दुख व्यक्त किया है। उन्होंने अपने बयान में कहा है कि मोती जी दर्जा आठ से लेकर 12वीं तक उनके अध्यापक थे और हिन्दी अंग्रेजी तथा इतिहास पढ़ाया था। वे प्रखर प्रतिभा के धनी थे। उनके अंसवारी व लाचारी क्रांतिकारी गीत थे। उन्होंने अपनी साहित्यिक साधना भोजपुरी में समर्पित कर दिया था। महुआ वाणी व मृगतृष्णा भोजपुरी की अतुलनीय निधि है।

वह पैसे के लालच में कवि सम्मेलन में नहीं जाते थे। सांसद मोहन सिंह ने अपनी श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि मोती जी अनुशासित शिक्षक, शानदार कवि एवं प्रतिभावान साहित्यकार के रूप में सदैव प्रेरणीय रहेंगे। उनकी कालजयी रचनाओं से भोजपुरी समाज को अनंत काल तक रोशनी मिलती रहेगी। सांसद के अलावा बजरंगी सिंह, नरेन्द्र तिवारी, चंद्रकांत मणि, व्यास यादव, राजन सिंह, हृदय नारायण जायसवाल आदि ने भी अपनी श्रद्धांजलि अर्पित किया।

बाबूजी की गुनगुनाहट को तरसेंगे हम : भालचंद

बरहज। बाबू जी एकांत में बैठकर अपनी लेखनी चलाते रहते थे। गुनगुनाकर लिखना उनको पसंद था। कभी चाटुकारिता भरी रचना नहीं की। हमने उन्हें अभिनय और कुशल निर्देशन करते देखा। जीवन की भाग दौड़ पारिवारिक जिम्मेदारी का निर्वहन करते हुए आधी रात और भोर में भी वह कलम चलाते थे।

सरयू नदी के कुटी घाट पर मोती बीए के अंतिम संस्कार के समय गमगीन माहौल में पिता की यादों को बयां करते समय दूसरे पुत्र भालचंद्र उपाध्याय फफक पड़े।

उन्होंने बताया कि विगत पांच वर्षों से वह बिस्तर पर पड़े थे। पर उनकी लेखनी अविरल चलती थी। उनका कुछ न कह पाना बराबर दिलों को सालता रहता था। बाबूजी भोजपुरी सिनेमा और गीत में आई अश्लीलता से वे बेहद दुखी थे। उन्होंने रुंधे गले से कहा कि बाबू जी ने आज, आर्यावर्त और अग्रगामी आदि समाचार पत्रों में लेखन कार्य किया। उन्हें पचासों पुरस्कार मिले। लेकिन दुख इस बात का है कि वह पांच साल से बिस्तर पर पड़े रहे, लेकिन किसी ने भी उनकी सुधि नहीं ली। मुझे उनकी एक रचना की कुछ पंक्तियां 'लहर को टिनोपाल छिपाएगा कब तलक, बापू का नाम तुमको बचाएगा कब तलक' याद आती है। उनके व्यक्तित्व में विविधता थी। जैसे कभी मूछें बढ़ी तो कभी छोटी। कभी पनी तो क्लीन शेव हो जाते थे। कभी सूट-बूट तो कभी कुर्ता पायजामा पहनते थे। शायद एक अभिनेता का रूप उनमें अंदर से था। लेकिन जीवन के अंतिम समय में उन्होंने धोती कुर्ता ही पहना।

जीवंत

विविधता उनके व्यक्तित्व में साफ झलकती थी

आदरणीय पूज्य चरण गुरुवर श्री मोती बी.ए. जी के निधन के बाद भोजपुरी साहित्य की जो क्षति हुई है उसकी पूर्ति संभव नही है। मैं परमपिता से बारम्बार प्रार्थना करता हूँ कि उनकी दिवंगत आत्मा भी शांति प्रदान करें। साथ ही उनके पूरे परिवार का इस बहुत बड़े दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

-रामबड़ाई यादव
(प्राधानाचार्य, एस. के. इण्टर कालेज, आश्रम, बरहज)

अपनी कृतियों में जिंदा रहेंगे मोती बीए

बरहज। भोजपुरी के पुरोधा मोती बीए के निधन पर साहित्य जगत में शोक की लहर व्याप्त है। मर्माहत साहित्यकारों ने मोती जी को अपनी श्रद्धांजलि देते हुए उनके निधन को साहित्य के एक युग का अंत बताया।

अरुणेश नीरन कहते हैं कि कविता के प्रति परंपरा मोती बीए की कविताओं में प्रकट होती थी। इसको मुख्य धारा में लाने का श्रेय मोती जी को जाता है। वे भोजपुरी के इतिहास पुरुष थे, वैसे ही जैसे हिंदी के मैथिलीशरण गुप्त।

पंडित दुर्गा प्रसाद मिश्र का कहना है कि मोती बीए के निधन से भोजपुरी के शेक्सपीयर और हिंदी के एक युग का समापन हो गया। इनकी कमी पूरी नहीं की जा सकती है। आन्जनेय दास जी महाराज कहते हैं कि मोती जी को बाबा राघव दास और सत्यव्रत जी महाराज का आशीर्वाद प्राप्त था। वह भोजपुरी साहित्य और अपनी रचनाएं में सदा जीवित रहेंगे। डा. महेंद्र नाथ पांडेय का कहना है कि किसी भी शब्द साधक का देहावसान होता है वह अपने कृतियों के रूप में सदैव वर्तमान रहता है। उनके अनुयायियों को मोती जी की इच्छा की पूर्ति का प्रबंध करना चाहिए।

भोजपुरी गीतों का सम्राट, साहित्यकार एवं कवि आदरणीय गुरुवर मोती बी.ए. के निधन से भोजपुरी साहित्य की अपूर्णीय क्षति हुई है जिसकी पूर्ति दैवी चमत्कार से ही सम्भव है। बाबा राघवदास के बाद ये बरहज की पहचान रहे है। इनके दिवंगत होने से बरहज का पूरा समाज हतप्रभ है। मैं इनकी दिवंगत आत्मा हेतु एवं इनके शोक संतप्त परिवार को इस दुःख सहन करने हेतु ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ।

-सूर्यदेव उपाध्याय

महान साहित्यकार, भोजपुरी साहित्य के पुरोधा एवं यशस्वी कवि परमादरणीय मोती बी.ए. जी के निधन से साहित्य जगत की अपूर्णीय क्षति हुई है। वे हिन्दी- भोजपुरी साहित्याकाश के देदीप्यमान नक्षत्र थे। आपके दिवंगत होने से समस्त बरहज क्षेत्र मर्माहत है। मैं इनकी दिवंगत आत्मा के शान्ति के लिए परमपिता परमेश्वर से प्रार्थना करता हूँ। -रामाश्रय यादव

जीवन राग की तान सुनाने वाले कवि थे मोती

स्मृति शेष

विश्वविद्यालय के रीडर डा. अनिल राय की नजर में मोती बीए

गोरखपुर। भोजपुरी गीतों के आधुनिक इतिहास में मोती बीए दो अतियों से पृथक एक सुंदर संतुलित सृजन की तरह उपस्थित थे। वैराग्य और कुरुचि, इन दोनों की ही प्रवृत्तिगत धाराओं से भिन्न सहज जीवन राग के इस अनोखे गीतकार को हमेशा स्मरण किया जाता रहेगा।

दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग में रीडर और लोकसाहित्य के अध्येता डा. अनिल राय कहते हैं कि इसके पहले भोजपुरी काव्य प्रायः भजन और निरगुन के आध्यात्मिक राग गाता रहा है। मोती बीए उन महत्वपूर्ण कवियों में से एक रहे हैं जिन्होंने उसमें हंसती गाती रोती, बिसूरती जिंदगी की लौकिक सांसारिक आत्मा प्रतिष्ठित की थी। वह वैराग्य के नहीं, जीवन राग की तान सुनाने वाले कवि थे। एक ऐसे समय में जब भोजपुरी के लोक प्रिय काव्य को कुरुचि और अश्लीलता ने अपना उपनिवेश बना लिया हो, मोती बीए का जाना उस मशाल का बुझ जाना है जो एक ओर भोजपुरी गीतों के बाजारीकरण के विरुद्ध प्रतिरोध की रोशनी देती रही है तो दूसरी ओर काव्य और जीवन के स्वस्थ सुरुचि पूर्ण संबंधों में आस्था रखने वाले भोजपुरी के कवियों को काव्य शास्त्र की एक नैतिक दृष्टि। काव्य तत्व की रक्षा करते हुए अपनी निरंतर प्रयोगशीलता से भोजपुरी को एक नया शिल्प संस्कार देने में उनकी जा`भूमिका रही है नई संवेदना और नई चेतना के साथ उसे जोड़ने में उससे कम नहीं।

भोजपुरी में सॉनिट और अंग्रेजी कविताओं के अनुवाद का अपना ऐतिहासिक महत्व है जिसे कभी आने वाले दिनों में इस काव्य भाषा के विकास का इतिहास लिखने वाले जरूर रेखांकित करेंगे।

परम आदरणीय श्री मोती बी.ए. के अनेक बात देखनें और सुननें का सुअवसर मिला भोजपुरी , हिन्दी और अंग्रेजी की उनकी रचनाएँ एवं अनुवाद उनकी प्रतिभा और विद्वता भी परिचायक है। मेघदूत का भोजपुरी अनुवाद पढ़कर मैं आश्चर्य में पड़ गया। उनका साहित्य कार्य और श्रेय की अपेक्षा रखता है। उनके व्यक्तित्व के अन्य भी अनेक पक्ष थें उनका अन्वेषण भी किया जाना चाहिए। मैं उनकी आत्मा के शान्ति के लिए ईश्वर से प्रार्थना करता हूँ।

-डा विनोद कुमार दीक्षित

वर्ष 1984 मे बनी भोजपुरी फिल्म गजब भइले रामा में अभिनेत्री पद्मा खन्ना के साथ मोती बीए ।

संगीतकार रविन्द्र जैन के साथ मोती बीए और हेमलता ।

भोजपुरी साहित्य के प्राण आदरणीय पूज्य स्व. मोती बी.ए. जी का साहित्यिक धरोहर, उनकी गीत व कविता जीवन मे उतारने एवं शोध करने योग्य होता है। -नायब हुसैन नियाजी सभासद

भोजपुरी गीतों के शहंशाह मोती बीए नहीं रहे

कपरवार (देवरिया)। भोजपुरी गीतों के शहंशाह और प्रथम भोजपुरी साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित मोतीलाल उपाध्याय (मोती बीए) का रविवार को प्रातः पाँच बजे निधन हो गया। मोती बीए ने बरहज स्थित अपने लक्ष्मी निवास में आखिरी साँस ली। वे 90 वर्ष के थे। एक दशक से वे बीमार चल रहे थे। वे अपने पीछे तीन पुत्रों, दो पुत्रियों समेत भरा पूरा परिवार छोड़ गए। उनके निधन की खबर से साहित्य जगत, समाजसेवी एवं भोजपुरी भाषा को प्रवाह देने वालों में शोक की लहर दौड़ गई। उनका अंतिम संस्कार सरयू तट पर हुआ। मुखाग्नि उनके छोटे पुत्र ने दी।

एक अगस्त 1919 को बरहज तहसील के ग्राम बरेजी में पं. राधाकृष्ण उपाध्याय के पुत्र के रूप में जन्मे मोती बीए ने आर्थिक कठिनाइयों को झेलते हुए 1939 में बीएचयू से स्नातक की परीक्षा पास की। 1940 में काशी के हिन्दी दैनिक 'अग्रगामी' और पटना के हिन्दी दैनिक 'आर्यावर्त' के सम्पादकीय विभाग में सहायक सम्पादक रहे मोती बीए ने अंग्रेजी, हिन्दी, उर्दू, भोजपुरी में विपुल साहित्य रचा।1935 में महज 16 साल की उम्र में प्रथम काव्य कृति 'लतिका' की रचना की। मोती जी ने हिन्दी में 20 मौलिक, भोजपुरी में छह, कालिदास के मेघदूत का भोजपुरी अनुवाद तथा शेक्सपियर के सॉनेट को हिन्दी सॉनेट के रूप में लिखा। 1944 में पंचोली आर्ट पिक्चर लाहौर, प्रकाश पिक्चर्स बम्बई में बतौर गीतकार रूप मे दस्तक दी। 'नदिया के पार' में मोती जी द्वारा लिखे तीन गीत लोगों की जुबान पर चढ़ गए। इसके अलावा उन्होंने 'सुभद्रा', 'भक्त ध्रुव', 'सिन्दूर', 'साजन', 'राम विवाह', 'सुरेखा हरण', 'ममता', 'ठकुराईन', 'गजब भइले रामा' तथा 'चम्पा चमेली' फिल्मों में अपने गीत दिए। ।

मोती जी आकाशवाणी के बम्बई, प्रयाग, लखनऊ व गोरखपुर केन्द्र के कलाकार रहे। उनके साहित्यिक योगदान के लिए उन्हें 2001 में प्रथम भोजपुरी साहित्य अकादमी पुरस्कार दिया गया। 1973-74 में उप्र शासन के शिक्षा विभाग द्वारा 'समिधा' पुस्तक के लिए 'राज्य साहित्य पुरस्कार', 1978 में 'आदर्श अध्यापक पुरस्कार', 1984 में उप्र हिन्दी संस्थान लखनऊ द्वारा 'राहुल सांकृत्यान पुरस्कार' 1993 में अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य परिषद उप्र द्वारा 'कवि रत्न' और 1998 में विश्व भोजपुरी सम्मेलन में 'सेतु' सम्मान मिला।(हिसं.)

मिल गया भोजपुरी हिरना को किनारा

गोरखपुर। आज कोई अपने नाम के आगे बीए लगाए तो उसका मजाक ही उड़ेगा मगर मोतीलाल उपाध्याय ने जब अपने नाम के आगे 'बीए' जोड़ा तो लोगों ने उनका मजाक नहीं उड़ाया बल्कि उन्हें और सम्मान दिया। छह दशकों तक अपनी माई- भोजपुरी की गूँज विश्व तक पहुँचाने वाले उसके बटोही बेटे को अपनों के बेगानेपन का दंश भी झेलना पड़ा। एक दशक से अस्वस्थ चल रहा भोजपुरी हिरना अपनों के प्यार-दुलार के लिए खूब तरसा। आखिर किनारे के लिए दौड़ रहे भोजपुरी के इस हिरना को भी किनारा मिल गया। अभी पाँच जनवरी को हिन्दी के पुरोधा आचार्य रामचंद्र तिवारी का देहावसान हुआ। दो हफ्ते बाद ही उस मोती बीए का निधन हो गया जो आचार्य तिवारी की नजर में भोजुपरी काव्य के पुरोधा रहे। 'तब बीए करने का महत्व था। आज मोती बीए के न होने का विशेष अर्थ है।' गोरखपुर विवि के प्राचीन इतिहास विभाग के अध्यक्ष प्रो. माता प्रसाद त्रिपाठी जब ऐसा कहते हैं तो गलत नहीं कहते। प्रो. त्रिपाठी मोती बीए की कविता *'तनी अउरी दउरा हिरना, पा जइबा किनारा'* को ही गुनगुना रहे होते हैं। भोजपुरी, हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू में लिखने वाले मोती बीए सोचते भोजपुरी में ही थे। यही वजह है कि उनके न होने पर उनकी अमराई, उनकी महुआरी, सब उदास हो गई है। (हिसं.)

श्री मोती बीए के दिवंगत होने पर19 जनवरी 2009 के समाचार पत्र 'हिन्दुस्तान' की प्रतिक्रिया

परम आदरणीय श्री मोती बी.ए. के निधन से मेरा परिवार मर्माहत है। आदरणीय मोती जी मेरे पिता के अभिन्न मित्र थे। भोजपुरी साहित्य अपने अनमोल रत्न को खोकर आज रिक्तता को अनुभव करेगा, इनके स्थान को भर पाना असम्भव है।

-विवेकानन्द पाण्डेय
भड़सरा, बरहज

भोजपुरी के सपूत मोती बी.ए. नहीं रहे

स्टाफ रिपोर्टर, बरहज/देवरिया: भोजपुरी के सपूत महान कवि, गीतकार, फिल्म अभिनेता व स्वतंत्रता संग्राम सेनानी 90 वर्षीय मोती लाल उपाध्याय 'मोती बी ए' नहीं रहे। रविवार की सुबह 4 बजे बरहज स्थित आवास लक्ष्मी निवास में उनका निधन हो गया। वह काफी दिनों से अस्वस्थ थे। दोपहर बाद सरयू तट पर उनका दाह संस्कार किया गया। उनके छोटे पुत्र अंजनी कुमार उपाध्याय ने मुखाग्नि दी। मोती बी ए तीन पुत्रों जवाहर लाल उपाध्याय, भाल चन्द उपाध्याय, अंजनी कुमार उपाध्याय ,दो पुत्रियों, प्रपौत्र व प्रपौत्रियों का भरा पूरा परिवार छोड़ गए हैं।

विशेष सामग्री पेज 3 पर

मोती बी ए का जन्म 1 अगस्त 1919 को ग्राम बरेजी में राधाकृष्ण उपाध्याय के घर हुआ था। बरहज के किंग जार्ज से प्रारंभिक शिक्षा के बाद काशी हिन्दू विश्वविद्यालय बनारस में उच्च शिक्षा ग्रहण की। उन्होंने 1939 से 1943 तक अग्रगामी 'संसार' तथा 'आर्यावर्त' जैसे प्रमुख समाचार पत्रों के सम्पादकीय विभाग में कार्य किया। राष्ट्रीय विचारों एवं उससे जुड़े लेखन के चलते भारत रक्षा कानून के तहत कई बार उन्हें जेल की यातना भुगतनी पड़ी।

हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी और भोजपुरी पर समान अधिकार रखने वाले मोती बी ए भोजपुरी साहित्य में योगदान के लिए विशेष चर्चित हुए। बालीवुड में भी अपने गीतों से उन्होंने धूम मचाई। मुम्बई इन्हें बहुत दिनों तक रोक नहीं पाई और माटी से विशेष अनुराग के वे कुछ ही वर्षों में गांव वापस आ गये। यहां श्रीकृष्ण इण्टर कालेज बरहज में शिक्षक हो गये। साथ ही साहित्य सृजन का भी काम चलता रहा। रविवार को उनकी शव यात्रा में पूर्व मंत्री दुर्गा प्रसाद मिश्र, परमहंस आश्रम के पीठाधीश्वर आंञ्जनेय ■ शेष पृष्ठ 15 पर

श्री मोती बीए के दिवंगत होने पर 19जनवरी 2009 के समाचार पत्र 'दैनिक जागरण' की प्रतिक्रिया

मौत चील की तरह आयी और झपट्टा मारकर गुरू जी को उठा ले गयी। गुरू जी चले गये हमारे सामने जो विनम्रता का रेगिस्तान छोड़ गये उसे हरा भरा होने मे शायद सदियाँ खप जायें। गुरुजी की पावनस्मृति को शत्-शत् नमन।

मनमोहन मिश्र

एक भोजपुरी फिल्म में पद्मा खन्ना व मोती बी.ए.।

भोजपुरी सिनेमा के महानायक थे मोती बी.ए.

महेन्द्र कुमार त्रिपाठी, देवरिया:

स्व. मोती बी ए को भोजपुरी सिनेमा के महानायक के बतौर जाना जाता है। बहुमुखी प्रतिभा के धनी मोती बीए ने फिल्मों की पटकथा से लेकर गीत तक लिखे। भोजपुरी फिल्मों में अभिनय भी किया। उनके गीत आज भी भोजपुरी क्षेत्र के लोगों की स्मृति में ताजा हैं। कहते हैं कि उन्होंने भोजपुरी फिल्म निर्माण को बालीवुड में एक मजबूत जमीन दी।

भोजपुरी सिनेमा को एक मुकाम तक ले जाने वाले मोती बी.ए. ब्रिटिश हुकूमत से ही भोजपुरी सिनेमा में अभिरुचि रखने लगे और 1945 तक मुम्बई में पंचोली आर्टस पिक्चर की बन रही फिल्म कैसे कहूं तथा सुभद्रा, एक कदम, काटे न कटे रे मोरा दिनवा भोजपुरी गीत फिल्म में खूब चला। इसके बाद 1947 में फिल्म साजन तथा 1948 में दिलीप कुमार और कामिनी कौशल की फिल्म नदिया के पार फिल्मों के उनके लिखे गीत सुपर डुपर हिट रहे। इन फिल्मों के गीतों से ही मोती बी ए को नयी पहचान मिली। मोती जी ने 1984 में ठकुराईन तथा गजब भइले रामा एवं 1987 में चम्पा चमेली के शेष पृष्ठ 4 पर

कभी महफिल सजाता था, आज मजबूर हूं....

धर्मेन्द्र कुमार पाण्डेय, गोरखपुर:

रविवार की सुबह जब खबर मिली कि भोजपुरी के महाकवि और महान समाजवादी मोती बी.ए. नहीं रहे तो पुरानी मुलाकात यादों में उमड़ने घुमड़ने लगी। मोती बी. ए. पर एक परिशिष्ट निकालने के लिए जागरण की टीम मई 2002 में उनके बरहज स्थित निवास पर पहुंची थी। मोती बी. ए. से बातचीत करने की बात आयी तो उनके पुत्र ने विनम्रतापूर्वक कहा कि पिता जी की तबियत बातचीत करने लायक नहीं है। गुस्सा होते हैं.....स्वभाव चिड़चिड़ा हो गया है। मैंने कहा कि मुझे एक बार उनसे (मोती.बी.ए.) आग्रह कर लेने दीजिए,यदि वे बातचीत के लिए तैयार हो जायेंगे तो ठीक है वरना हम सभी वापस चले जायेंगे।

मैंने मोती जी के कान में उनके अभिन्न मित्र राज टाकीज गोरखपुर के मालिक सीताराम टेकड़ीवाल का नाम लिया। सीताराम जी का नाम सुनते ही उनका चेहरा खिल उठा.वे अतीत में खो गये और जब वार्ता शुरु हुई तो देर तक होती रही।

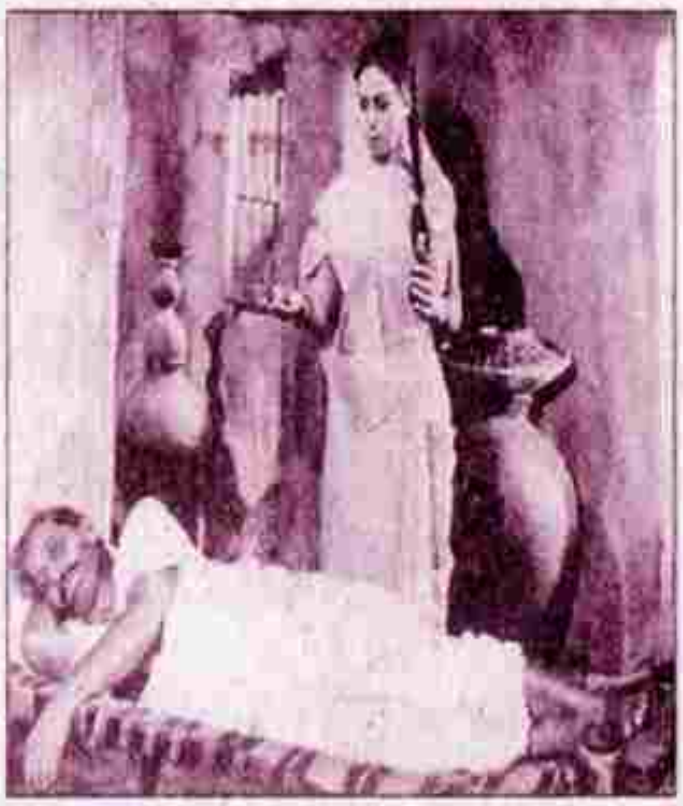

गजब भईले रामा में पद्मा खन्ना व मोती बी.ए.।

फिल्मों से लेकर उनके जीवन के विभिन्न पहलुओं पर वार्ता हुई। हंसी और आंसू के बीच उन्होंने कई दिलचस्प बातें बताई। बुढ़ापे के कारण याददाश्त कमजोर होने तथा पूरी बात न कह सकने का दर्द उन्हें बार-बार टीसता था। बातचीत में कहने लगे कि...तीन चार साल पहले मिले होते तो सारी बात बताता... गीतों को गा कर सुनाता.... कभी पूरी महफिल सजाता था.... लेकिन आज मजबूर हूं। अपनी इस मजबूरी और बेबसी पर मोती बी.ए. कभी हंसते थे तो कभी उनकी आंखे भर जाती थी। जब मैंने उनसे कहा कि आप से समय से न मिलना हम लोगों का दुर्भाग्य है तो उन्होंने झट भोजपुरी में कहा कि..... 'हमरे कवन सौभाग्य बा'। शेष पृष्ठ 4 पर

आदरणीय, भोजपुरी के साहित्यकार, रचनाकार एवं फिल्मी गीतकार, अध्यापक, एवं सहयोगी आत्मा को सतत नमन।

विजय बहादुर
विज्ञान गीतकार, बरहज

भोजपुरी सिनेता के

पृष्ठ 3 का शेष

लिए भी गीत लिखे। उन्होंने 1984 में गजब भइले रामा में अभिनय भी किया।

भोजपुरी सिनेमा के साथ ही हिन्दी साहित्य में उनकी रचनाएं मृगतृष्णा में तनी अउरि दउर हिरना पा जइब किनारा काफी चर्चित रही। इसके अलावा छम- छम पायल बाजे, अश्वमेघ यज्ञ, हरश्रृंगार के फूल, समिधा भी लोगों के बीच चर्चित हुई। इसके अलावा सेमर के फूल, वन वन बोले ले कोइलिया के साथ ही उर्दू साहित्य के रश्के- गुहर, दर्द ए गुहर ने भी साहित्य प्रेमियों के बीच अपनी जगह बनाई। 1973- 74 में उत्तर प्रदेश सरकार ने राज्य साहित्यिक पुरस्कार ,1984 में उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान ने राहुल सांस्कृत्यायन पुरस्कार से मोती बी.ए. को अलंकृत किया। इसी वर्ष बिहार के विक्रमशिला हिन्दी विद्यापीठ भागलपुर ने उन्हें विद्या सागर सम्मान दिया। 1998 में विश्व भोजपुरी सम्मेलन भोपाल द्वारा सेतु सम्मान एवं 2001 में साहित्य अकादमी नई दिल्ली द्वारा भाषा सम्मान से मोती बी.ए. को नवाजा गया था।

कभी महफिल

अनमोल हैं मोती के गीत

गोरखपुर : मोती बी.ए. के अभिन्न मित्र रहे राज टाकीज के मालिक स्व. सीता राम टेकड़ीवाल अक्सर उनकी चर्चा किया करते थे। एक बार अपनी तिजोरी खोल कर उन्होंने 9 फिल्मी गीतों को मुझे दिखाया और बताया कि मैं एक भोजपुरी फिल्म बनाने वाला था उसी के लिए इन गीतों को मोती बी.ए. से लिखवाया था। लेकिन दुर्भाग्य से फिल्म बन न सकीं। कई लोगों ने इन गीतों को मांगा लेकिन मैंने कहा कि ये गीत मोती की अमानत है, और मेरे लिए अनमोल, किसी कीमत पर मैं इन्हें नहीं दूंगा।

पूर्वांचल की गरीबी से मर्माहत थे मोती बी.ए.

गोरखपुर: पूर्वांचल की गरीबी और बेकारी से मोती बीए काफी मर्माहत रहते थे। यह पीड़ा उनकी रचनाओं में झलकती है-जिस राज्य में पढ़े लिखे बेकार रहेंगे उस राज्य को धिक्कार सौ-सौ बार कहेंगे। यही नहीं भूखे नंगे गरीबों के प्रति उनके मन में असह्य पीड़ा थी। वह लिखते हैं-भूखा हुआ इंसान जो बेमौत मरेगा,वह तख्त उलटने के लिए क्या न करेगा।

गुरूजी,

गुरूजी रउआ गइला से सुन भइल बरहज के माटी।
दुखः के कारण हमनी के कुछु में नाही बाटीं।

धनश्याम भारती (गिरिबाबा)

भोजपुरी के सपूत मोती बी.ए....

दास जी महाराज, पीजी कालेज के प्राचार्य डा. एच.एन. सिंह, डा.परमानन्द उपाध्याय, पूर्व प्राचार्य डा. उपेन्द्र प्रसाद, डा.ओमप्रकाश शुक्ल, बालकृष्ण पाण्डेय, रमेश तिवारी अंजान, शिवदास त्रिपाठी, एडवोकेट विरेन्द्र त्रिपाठी, श्रीनिवास विश्वकर्मा, अरविन्द त्रिपाठी, राकेश त्रिपाठी, विजय नेता, डा.पी एन तिवारी, डा.एस पी सिंह, रामेश्वर यादव, सूर्यनाथ यादव आदि प्रमुख लोग शामिल हुए ।

मोती बीए के निधन पर दी गयी श्रद्धांजलि

स्टाफ रिपोर्टर, बरहज (देवरिया):

पूर्व मंत्री दुर्गा प्रसाद मिश्र ने जारी प्रेस विज्ञप्ति में कहा कि मोती जी का निधन साहित्य एवं फिल्म जगत की अपूरणीय क्षति है। इनके जैसे लोग बिरले पैदा होते हैं।

इसी क्रम में विधायक रामप्रसाद जायसवाल ने कहा कि मोती जी के निधन से एक रिक्तता आ गयी है। हमने एक अभिभावक खो दिया है। पी.जी. कालेज के प्राचार्य डा. एच.एन. सिंह ने कहा कि बाबा राघवदास के बाद मोती जी बरहज की पहचान रहे हैं। इनके स्थान की पूर्ति होना संभव नहीं है। रीडर डा. शैलेन्द्र कुमार त्रिपाठी ने कहा कि मोती बीए का हमारे बीच से चले जाना , एक ऐसे साहित्य सेवी का चला जाना है,जिसने साहित्य की विभिन्न विधाओं में जीवन पर्यन्त काम किया है।पीठाधीश्वर आंजनेयदास जी ने कहा कि मोती जी का आश्रम परिवार से गहरा लगा रहा है। डा. महेन्द्र नाथ पाण्डेय, डा. दिवाकर प्रसाद तिवारी, पूर्व विधान परिषद सदस्य जयप्रकाश जायसवाल, नपाध्यक्ष वीरेन्द्र गुप्त, डा. ओ.पी. शुक्ल, डा. उपेन्द्र प्रसाद, डा. अक्षैबर नाथ पाण्डेय, डा. एस.वी. सिंह आदि ने भी अपनी संवेदना दी है।उधर संसदीय कृषि स्टैंडिंग कमेटी के चेयरमैन एवं सदर सांसद मोहन सिंह ने कहा कि मोती बीए के निधन से हिन्दी सहित भोजपुरी जगत की अपूरणीय क्षति हुई है। भोजपुरी जगत के एक महान पुरोधा हमारे बीच नहीं रहे। बजरंग बहादुर सिंह, नरेन्द्र तिवारी, चन्द्रकांत मणि, व्यास यादव, राजन सिंह श्रीनेत, हृदयनारायण जायसवाल आदि ने भी श्रद्धा सुमन अर्पित किया।

20 जनवरी 2009 के समाचार

मौत चील की तरह आयी और झपट्टा मारकर गुरू जी को उठा ले गयी। गुरू जी चले गये हमारे सामने जो रिक्तता का रेगिस्तान छोड़ गये उसे हरा भरा होने मे शायद सदियाँ खप जायें। गुरूजी की पावनस्मृति को शत्-शत् नमन।

-मनमोहन मिश्र
क्षेत्रीय वन अधिकारी, वराणसी

मोती बीए के निधन पर दी गयी श्रद्धांजलि

जागरण टीम, देवरिया: भोजपुरी फिल्मों के महानायक मोती बीए के निधन पर सोमवार को विभिन्न संगठनों ने शोकसभा कर श्रद्धा सुमन अर्पित किया।

इलेक्ट्रानिक मीडिया एसोसिएशन के शोकसभा में अध्यक्ष संजय सिंह, धनंजय मणि, श्री चन्द गोरे, सुधाकर पाण्डेय, शम्भूनाथ श्रीवास्तव, डा. सत्येन्द्र तिवारी, त्रिपुरेश पति त्रिपाठी, राजी शुक्ला, संजीव जायसी, विनोद धर द्विवेदी आदि मौजूद रहे।

दीनानाथ पाण्डेय राजकीय महिला पी.जी. कालेज के प्राचीन विभाग के उपाचार्य दिवाकर प्रसाद तिवारी ने जारी विज्ञप्ति में कहा है कि छायावादोत्तर काव्य धारा तथा आधुनिक काव्य के श्रेष्ठ रचनाकार कवि एवं गीतकार मोती बीए भोजपुरी, खड़ीबोली, अंग्रेजी एवं उर्दू भाषाओं के समर्थ कवि थे। मोती बीए के संपूर्ण साहित्य का आठ खण्डों में डा.रामदेव शुक्ल द्वारा संपादन का कार्य किया जा रहा है।

सलेमपुर में श्रद्धांजलि सभा को सम्बोधित करते नगर पंचायत अध्यक्ष सुधाकर गुप्ता। जागरण

जैम देवरिया में ए. जे.एन.यू. सेवा संस्थान ने मोती बीए के निधन पर शोकसभा की। इस दौरान डा. सजन कुमार अग्रवाल, डा.मंजु अग्रवाल, राजेन्द्र कुमार, नरेन्द्र उपाध्याय, राकेश शर्मा, सुजीत सक्सेना, रविपाल, अशोक दीक्षित, जहीर अहमद, शाहिद खां, जाहिद खां, ए.एस.रिजवी, जगन्नाथ श्रीवास्तव, दिनेश गुप्ता मौजूद रहे।

नेशनल सोकहिन्द पार्टी ने अंजुमन इस्लामिया स्कूल परिसर में जिलाध्यक्ष मो. रशीफ खां की अध्यक्षता में सभा कर श्रद्धांजलि दी। इस अवसर पर प्रदेश उपाध्यक्ष अभयनन्दन बरनवाल, खुर्शीद अंसारी, जितेन्द्र सिंह, मेकर अनुराग चन्द भारती, हकीम प्रधान एकरामुद्दीन आदि मौजूद रहे। जनता इंटर कालेज परसिया बरहीहा में प्रधानाचार्य इंद्र कुमार दीक्षित, उमाशंकर पाठक, शेष मणि त्रिपाठी, जगदम्बा प्रसाद श्रीवास्तव, रामबहादुर यादव, वीरबहादुर प्रसाद, रामकृपाल तिवारी, उस्मान गनी अंसारी, संतोष कुमार श्रीवास्तव, शेषनाथ पाण्डेय, चन्द्रशेखर मिश्र, शिवभूषण, मुखलाल यादव आदि ने श्रद्धांजलि दी। संचालन सुरेन्द्र नाथ तिवारी ने किया।

सलेमपुर संवाददाता के अनुसार स्थानीय रेलवे स्टेशन परिसर में महान कवि मोती बी.ए. के निधन पर श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। सभा में पूर्व विधायक सुरेश यादव, पूर्व विधायक स्वामीनाथ यादव, नगर पंचायत अध्यक्ष सुधाकर गुप्ता, डी.पी. यादव, डा. धर्मेन्द्र कुमार पाण्डेय, अशोक पाण्डेय, श्याम लाल यादव, हरेराम यादव, सुरेन्द्र यादव, उमेश यादव प्रमुख रूप से मौजूद रहे। अध्यक्षता कवि गिरधर करुण व संचालन स्वानन्द गुप्ता रमन ने किया।

उधर क्रय विक्रय समिति के सभीप श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। श्रद्धांजलि सभा में डा.धर्मेन्द्र पाण्डेय, डा.सुमेश्वर प्रसाद, मोहन प्रसाद, हंसनाथ गोड़, हंसनाथ तिवारी, केशव सिंह, ब्रह्म तिवारी, दीन दयाल प्रसाद, गोपाल यादव, लालन गुप्त, सी.बी. पाण्डेय, दिनेश सिंह, संतोष मिश्र, चन्द मोहन पाण्डेय, उमेश मिश्र, लाल सोहब यादव, दीन दयाल यादव, मनोज पाण्डेय, छेदी मिश्र, सोमेश्वर सिंह, सुकेदार सिंह, शीश कुमार मिश्र प्रमुख रूप से मौजूद रहे।

मोती बीए के निधन से एक युग का अन्तःनीरन

साहित्यकारों में शोक की लहर

हिन्दुस्तान संवाद देवरिया

भोजपुरी के प्रख्यात कवि मोतीलाल उपाध्याय उर्फ मोती बीए के निधन को साहित्यकारों व विभिन्न वर्गों से जुड़े लोगों ने एक युग का अन्त माना है। इस दुनिया से उनका जाना भोजपुरी की गंभीर अवधारणा का एक प्रकार से अस्त हो जाना है। साहित्यकारों के अनुसार मोती बीए का जीवन कभी न रुकने का एक अद्वितीय उदाहरण है।

साहित्यकार डॉ. अरुणेश नीरन ने मोती बीए के निधन को भोजपुरी के एक युग का अन्त बताते हुए कहा कि जब लोकभाषा के रूप में लोग भोजपुरी की उपेक्षा कर रहे थे, उस समय मोती जी ने फिल्मों में भोजपुरी के गीत लिखकर भोजपुरी के शब्द और अर्थ की लय को पूरे भारत में प्रसारित किया। भारतीय साहित्य को भोजपुरी की ताकत से परिचित कराने का कार्य मोती बीए ने किया। प्रधानाचार्य डॉ. अजय मणि त्रिपाठी का मानना है कि मोती जी के जाने से भोजपुरी की गंभीर अवधारणा का ही एक प्रकार से अन्त हो गया। बीआरडी पीजी कॉलेज की हिन्दी विभागाध्यक्ष प्रेमशीला शुक्ला ने मोती जी के जीवन को जिजीविषा, प्रयास व कभी न थकने का अद्वितीय उदाहरण बताते हुए कहा कि उन्होंने हिन्दी व भोजपुरी को साथ लेकर साहित्य वृद्धि की। मोती बीए ने यह कभी नहीं माना कि भोजपुरी के उत्थान से हिन्दी का नुकसान होगा।

साहित्यिक पत्रिका अंचल भारती के सम्पादक डॉ. जयनाथ मणि त्रिपाठी ने मोती बीए को प्रयोगधर्मी रचनाकर बताते हुए कहा कि अंग्रेजी के सॉनेट छन्द का हिन्दी व भोजपुरी में सबसे पहले प्रयोग मोती बीए ने ही किया। संत विनोबा स्नातकोत्तर महाविद्यालय के पूर्व प्राचार्य डॉ. बीडी मिश्र ने कहा कि भोजपुरी साहित्य की उन्होंने अप्रतिम सेवा की। उनके निधन पर सांसद मोहन सिंह, पूर्व सांसद श्रीप्रकाश मणि, विधायक रामप्रसाद जायसवाल, बसपा प्रत्याशी गोरख प्रसाद, पूर्व एमएलसी जेपी जायसवाल, प्राचार्य डॉ. उपेन्द्र प्रसाद, डॉ. आमोद नाथ त्रिपाठी, डॉ. ओम प्रकाश तिवारी, डॉ. दामोदर पाण्डेय, रमेश चन्द्र सिंह, केडी त्रिपाठी सहित विभिन्न संगठनों के लोगों ने शोक व्यक्त किया।

बाबूजी का स्थान बहुत महत्वपूर्ण रहा है और आगे भी रहेगा। भोजपुरी के प्रथम पवर्तक थे इतना महान व्यक्तित्व होते हुए भी उन्होंनें अपने रिश्तों को बहुत प्यार दिया। इन्सान की अन्तर्भावना को कविता में प्रस्तुत कर झकझोर देते थे। ''तनी औरु दौर हिरना पा जइब किनारा''। कविता एकबार पढ़ने के बाद बार-बार पढ़ने इच्छा जागती है। मेरी यह अभिलाशा है कि उनकी कृतियों को यादों की धरोहर बनाऊ और यही उनके लिय मेरी सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

-किरण वाजपेयी (बहू)

मोती बीए के निधन पर शोक सभाओं का तांता

देवरिया, 19 जनवरी (एसएनबी)। भोजपुरी के महान कवि, साहित्यकार, गीतकार एवं स्वतंत्रता संग्राम सेनानी 90 वर्षीय मोती बीए के आकस्मिक निधन पर आज पत्रकारों, जनप्रतिनिधियों सहित अनेक संगठनों ने भावभीनी श्रद्धांजलि दी। इलेक्ट्रानिक मीडिया एसोसिएशन एवं प्रिंट मीडिया के पत्रकारों ने एक शोक सभा कर दो मिनट मौन रखकर स्व. मोती बीए को श्रद्धांजलि अर्पित की।

इस अवसर पर संजय सिंह, सुधाकर पाण्डेय, शम्भूनाथ श्रीवास्तव, श्रीचन्द गोरे, डा. सत्येन्द्र तिवारी, धनंजय मणि, महेन्द्र त्रिपाठी, त्रिपुरेश त्रिपाठी, रावी शुक्ला, संजीत शाही, विनोद धर द्विवेदी, शत्रुजीत त्रिपाठी, पिंटू श्रीवास्तव आदि उपस्थित थे।

उधर जनता इ.का. परसिया बरडीहा में प्रधानाचार्य इन्द्र कुमार दीक्षित की अध्यक्षता में एक शोक सभा हुई जिसमें स्व. मोती बीए की दिवंगत आत्मा की शांति के लिए दो मिनट मौन रखकर श्रद्धांजलि अर्पित की गयी। जे.एन.यू. सेवा संस्थान ने एक शोकसभा कर स्व. मोती बीए की दिवंगत आत्मा की शांति के लिए दो मिनट मौन रहकर श्रद्धांजलि अर्पित की। इस अवसर पर सज्जन अग्रवाल, राजेन्द्र सांकृत्यायन, राजेन्द्र कुमार, रवि पाल आदि उपस्थित थे। नेशनल लोकहिंद के कार्यकर्ताओं ने अंजुमन इस्लामिया कालेज के प्रांगण में बैठक कर पूर्वांचल के गौरव मोती बीए के निधन पर गहरा शोक व्यक्त किया व पुष्पांजलि अर्पित की। इस अवसर पर अभयनन्दन वैश्य, जितेन्द्र सिंह, अनुराग भारती, हकीम प्रधान, वीरेन्द्र सिंह आदि उपस्थित थे।

बरहज तहसील कार्यालय के अनुसार मोती बी.ए. के निधन से बरहज क्षेत्र में शोक की लहर दौड़ गयी। नगर क्षेत्र के प्राइमरी से लेकर स्नातकोत्तर महाविद्यालय तक शोक में बंद रहे और जगह-जगह शोक सभाएं आयोजित की गई। प्रेसक्लब की शोक सभा में वक्ताओं ने कहा कि उनकी रचनाओं में ठहराव की जगह विविधता, लौकिकता की जगह शास्त्रीयता तथा काव्यांश के स्थान पर रसज्ञता झलकती है। भोजपुरी के विकास के लिए उनके मन में पीड़ा रही। शोक सभा में डा. अजय मिश्र, श्रवण गुप्त, आर.बी.प्रजापति, विवेकानन्द मिश्र, सदानन्द पाण्डेय, रविन्द्र प्रताप सिंह, बृजेश कुमार जायसवाल, जे.पी.श्रीवास्तव, जगदीश जायसवाल आदि ने श्रद्धांजलि दी। एस.के. इंटर कालेज में डा. अक्षयवर पाण्डेय की अध्यक्षता में देवेन्द्र सिंह, रामाश्रय यादव, रामबड़ाई यादव, प्रेमशंकर पाठक तथा अशोक शुक्ल आदि ने उन्हें मूर्धन्य गीतकार, साहित्यकार और कलाकार मानते हुए श्रद्धांजलि दी। पी.जी.कालेज आश्रम में डा. एच.एन. सिंह की अध्यक्षता में जे.पी.मिश्र, डा. एस. बी. सिंह, डा.वी.पी. पाण्डेय, डा.वी.पी. उपाध्याय आदि ने उनके निधन को आश्रम परिवार की व्यक्तिगत क्षति बताया। महिला महाविद्यालय आश्रम में प्राचार्या डा.किरन पाठक, रूमा मिश्रा, अमृता मिश्र तथा सेराज अहमद आदि ने उन्हें संरक्षक बताते हुए उनके निधन को अपूरणीय क्षति माना। पं0 विश्वनाथ त्रिपाठी शिक्षण संस्थान में अरविन्द त्रिपाठी सरयू विद्या पीठ में रमेश तिवारी अन्जान तथा श्री चन्द जी लघु माध्यमिक विद्यालय में रामेश्वर यादव की अध्यक्षता में शोक सभा का आयोजन कर श्रद्धांजलि दी गयी। भोजपुरी भाषा के इस महारथी को श्रद्धांजलि अर्पित करने उनके भतीजे वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी रवीन्द्र नाथ उपाध्याय, देवरिया के सांसद मोहन सिंह, पूर्व प्रधानाचार्य सुधाकर त्रिपाठी भी नन्दना वार्ड के लक्ष्मी निवास पहुंचे।

सलेमपुर कार्यालय के अनुसार मोती बी.ए. के निधन पर आज स्थानीय रेलवे स्टेशन पर एक शोक सभा का आयोजन किया गया। जिसमें पूर्व विधायक कवि, बुद्धिजीवी, नेता एवं समाजसेवी भाग लिए। शोक सभा को संबोधित करते हुए पूर्व विधायक सुरेश यादव ने कहा कि स्व. मोती बी.ए. अपने भोजपुरी गीतों व रचनाओं के माध्यम से जहां जिले को गौरवान्वित किया वहीं भोजपुरी विधा को उंचाइयों पर पहुंचाया। पूर्व विधायक स्वामी नाथ यादव, नगर पंचायत अध्यक्ष सुधाकर गुप्त ने कहा कि मोती बी.ए. ने भोजपुरी गीत कविता एवं फिल्मों के माध्यम से इस क्षेत्र का नाम जिन उचाइयों पर पहुंचाया था, शायद ही उनका स्थान कोई ले पाये। शोकसभा में श्यामलाल यादव, अशोक पाण्डेय, डा. वी.वी. तिवारी, उमेश यादव, के.पी.गुप्ता, जितेन्द्र नाथ पाण्डेय, देश दीपक, पवन कुमार मिश्र, आनंद प्रकाश उपाध्याय आदि ने संबोधित किया। अंत में दो मिनट का मौन व्रत रहकर उन्हे श्रद्धांजलि अर्पित की गयी। शोक सभा की अध्यक्षता प्रख्यात गीतकार गिरिधर करुण व संचालन रामानन्द गुप्त ने किया।

शोक में बंद रहे बरहज के विद्यालय

आसान बना दिया था कि हम लोग छोटी उमर मे उत्कृष्ट कविताओं आसानी से समझते थे। हम लोगों एवं सभी सर्वसाधारण से गुरू एवं पिता जैसा व्यवहार करते थे। अभी भी ऐसा लगता है कि हम लोगें के बीच है और वैसे ही अपनी नयी कविता सुना रहे है। उनके मरणोपरान्त भी वे बरहज क्षेत्र वासियों के मन मंदिर मे निरन्तर वे जीवित रहेंगे एवं प्रेरणा देते रहेंगे। ऐसे महान व्यक्तित्व को सतत् प्रणाम।

विजय शंकर पाण्डेय

स्व. महेन्द्र शास्त्री

शैर-

जाने वाले जाऐंगें ही
कौन यहाँ रुकनें वाला है।
प्रेम सहित कर थाम अगर वो
दो पल और ठहर जायेंगे।।

-रामदेनी

अनेक संगठनों ने मोती को दी श्रद्धांजलि

आज ब्यूरो

देवरिया। जाने माने साहित्यकार एवं गीतकार मोती बीए को सांसद मोहन सिंह ने श्रद्धांजलि दी है। प्रेस विज्ञप्ति के माध्यम से श्री सिंह ने कहा है कि इण्टरमीडिएट तक की परीक्षा हमने मोती बीए के निर्देशन में ही दिया है। प्रखर प्रतिभा के धनी श्री बीए खड़ी बोली की अनेक रचनाये की और उनके गीतो में क्रांति का पुट झलकता था। उनके द्वारा की गयी रचानाये मसलन महुआबारी और मृगतृष्णा भोजपुरी की अमूल्य निधि है। श्री सिह ने कहा कि मोती बीए ने अंग्रेजी के महान कवि शेक्सपीयर के सीनेट का हिन्दी में काव्यमय अनुवाद किया। उनके न रहने से प्रकृति ने देवरिया से एक मूल्यवान निधि छीन ली। बीए की तुलना महाकवि निराला से करते हुये मोहन सिह ने कहा कि मीती बीए स्वाभिमानी व्यक्ति थे। उन्होने रूपये की खातिर कभी कोई कवि सम्मेन नही किया। एक शिक्षक के रूप में उनका काल बहुत ही अनुशासित था। उनकी कालजयी रचनाओं से भोजपुरी समाज को अनन्त तक रोशनी मिलती रहेगी। मोती बीए को बजरंग बहादुर सिंह, नरेन्द्र तिवारी, हृदयनरायन जायसवाल, चंद्रकांत मणि, व्यास यादव, राजन सिंह श्रीनेत आदि ने भी श्रद्धांजलि दी है।इलेक्ट्रानिक मीडिया एसो. की बैठक में भी मोती बीए को श्रद्धांजलि दी है। अध्यक्षीय संबोधन में एसो. के अध्यक्ष संजय सिंह, सुधाकर पाण्डेय, शम्भूनाथ श्रीवास्तव, श्रीचंद्र गोरे, सत्येन्द्र तिवारी, धनंजय मणि, महेन्द्र त्रिपाठी, त्रिपुरेशपति त्रिपाठी, राबी शुक्ला, संजीत शाही, विनोदधर द्विवेदी, शत्रुजीत त्रिपाठी, ओपी श्रीवास्तव, राजेश राय, शिवदत्त दूबे

परम आदरणीय श्री मोती बी.ए. जी से हमारे पिता जी के परिवारिक संबंध रहे है। साहित्य के मामले मे इनके लेख हम लोग पढ़ते थे तथा शिक्षा लेते थे। इनका व्यक्तित्व बड़ा ही आदर्श रहा है। इन्होनें अपनी लेखनी से समाज को नई दिशा दिया है।

इनके न रहने पर बरहज ही नही पूरा पूर्वान्चल मे इनका स्थान लेने वाला कोई नही है। इनके आदर्शो पर ही चलना ही सच्ची श्राद्धॉजलि होगी।

देवेश चंद्र सिंह

मृत्यु अवश्यभ्यावी है, पर मन हृदय स्वीकार करने को तैयार नहीं होता है। महान आत्माओं मानवीयों का गमन समाज, राष्ट्र की गहरी व अपूर्णीय क्षति होती है जिसकी भरपाई होने में सदियों लगते हैं। फिर भी वह व्यक्तित्व नही आ पाता। परन्तु, निराला प्रसाद, गोस्वामी तुलसीदास आदि जैसे पथ प्रदर्शक सदियों बीतने बाद भी कहाँ अवतरित हो पा रहे है?

मैं अकिंचन क्या कह सकता? मेरे जैसे हजारों, लाखों ने गुरू जी से प्रेरणा ली और अदृश्य, अनजान स्थानों पर हैं। गुरूजी का न रहना इस समाज व राष्ट्र की बड़ी क्षति है। काश इस बरहज में पुनः ऐसे प्रतिभावन का जन्म हो पाता। बहुत दुःख है, बरहज उदास है, शब्द रुक रहे हैं। लेखनी चल नहीं पा रही है।

स्मृतियाँ शेष बच गयी हैं, हम लोग धन्य हैं जिन्हें गुरूजी का सानिध्य व आशीर्वाद प्राप्त रहा।

ओम शान्ति

-अखिलेश तिवारी ,कान्त कुटीर,बरहज, जिलाधिकरी, सुल्तानपुर

21 जनवरी 2009 के समाचार

आदरणीय गुरूवर मोती बी.ए. के चरणों मे मैं श्रद्धा सुमन अर्पीत करता हूँ।

- श्री राम जी यादव
प्रवक्ता आश्रम, बरहज

श्रद्धांजलि का क्रम जारी

देवरिया, 20 जनवरी। भोजपुरी के अमिट हस्ताक्षर कवि मोती बीए के निधन पर शहर के सरस्वती संगीत स्नाकोत्तर महाविद्यालय न्यू कालोनी के प्रांगण में संस्था के प्रबंधक सौदागर सिंह के द्वारा पूर्वांचल संगीत महाविद्यालय उमानगर देवरिया के संस्थापक प्राचार्य बद्री प्रसाद उपाध्याय की अध्यक्षता में एक श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया, जिसमें मोती जी की आत्मा की शांति के लिए दो मिनट का मौन धारण कर परम पिता परमेश्वर से प्रार्थना की गयी।

सभा में नगर के गणमान्य नागरिक, विद्वान, बुद्धिजीवी, समाजसेवी, कवि, रचनाकार, गीतकार, साहित्यकार, अधिवक्ता, प्रवक्ता, गायक तथा रंगकर्मी कलाकारों आदि ने भाग लिया। श्रद्धांजलि सभा में भाग लेने वालों में नर्वदा तिवारी, दिनेश तिवारी, इन्द्रजीत प्रसाद (सेवानिवृत्त लेखाधिकारी), मोहन शर्मा, नित्यानन्द यादव, रवीन्द्र प्रताप सिंह, आर.पी.सिंह, मुकेश कुमार बैरागी, जे.पी.मणि, भारतभूषण, नायाब हुसैन, हनुमान जी उपाध्याय, वरिष्ठ अधिवक्ता लोकनाथ पाण्डेय, बाबू श्रीवास्तव एडवोकेट, कैप्टन मनन्न जी यादव, सुदामा तिवारी (सेवानिवृत्त व्यापार कर संयुक्त आयुक्त) डा. यू.एन. खरे, मुकुल मणि, महन्थ परमात्मादास, डा. प्रेमशीला शुक्ल, मनीष श्रीवास्तव, विनीता कुशवाहा, अनीता शाही, अजिता बरनवाल, सुभाष बरनवाल, धनंजय सिंह एडवोकेट,, ब्रजेश कुमार सिंह, महेन्द्र सिंह चंदेल आदि के अतिरिक्त संगीत महाविद्यालय परिवार के अन्य छात्र/छात्राएं शामिल थे। संचालन सौदागर सिंह ने किया।

उधर टाइगर फिल्म क्रिएशन के बैनर तले एक आपातकालीन बैठक अबूबकरनगर कार्यालय पर हुई, जिसमें मोती बीए के आकस्मिक निधन पर गहरा शोक प्रकट किया। भोजपुरी के युवा गायक टाइगर बाबू ने कहा कि उनके निधन से भोजपुरी समाज की अपूर्णीय क्षति हुई है। बैठक में नदीम खान, अन्नू बाबू, मन्टू चौरसिया, इरफान (मामा), शिब्बू, परमानन्द, प्रमिल पाण्डेय, जावेद अहमद, पप्पू परदेशी, संतोष पाठक, संजय सिंह, धीरू भाई, गुल्लू भाई, के.पी. गौतम, जगदीश शर्मा, ओ.पी. विश्वकर्मा, फिरोज खान, पंकज भाई, चन्दन, रफत खान, प्रभुनाथ शर्मा व कवि दीपक आदि मौजूद थे।

बरहज तहसील कार्यालय के अनुसार मोती बी.ए. के निधन पर समाजवादी पार्टी ने एक श्रद्धांजलि सभा आयोजित कर उनके निधन पर अपनी श्रद्धांजलि अर्पित की है। समाजवादी पार्टी के जिलाध्यक्ष गेंदालाल यादव ने मोती बी.ए. को साहित्य से समाज के अन्दर व्याप्त कुरीतियों पर जोरदार कलम चलाने वाला बताया।

सपा के पूर्व जिला प्रवक्ता चन्द्रभूषण सिंह यादव ने कहा कि भोजपुरी भाषा को मोती बी.ए. ने जो मुकाम दिया है वह भोजपुरी साहित्य के लिए मील का पत्थर साबित होगी। सपा के जिला कोषाध्यक्ष श्रीनिवास विश्वकर्मा ने कहा कि बरहज की धरती को पूरे देश के पैमाने पर मोती बी.ए. जी ने अपनी लेखनी से जो सम्मान दिलाया वह हम सबके लिए सम्मानजनक है। श्रद्धांजलि बैठक की अध्यक्षता सपा नगर अध्यक्ष पारस यादव एवं संचालन श्रीनिवास विश्वकर्मा ने किया। उ क्त अवसर पर उपस्थित वीरेन्द्र कुमार यादव, सुवाष चन्द्र गुप्त, रामअधार यादव, जावेद अख्तर, महेन्द्र पटेल, अजय मिश्र, रामाश्रय यादव, इरफान अहमद, जयराम यादव आदि ने मोती बी.ए. के निधन पर शोक व्यक्त करते हुए श्रद्धाञ्जलि अर्पित की।

सतरांव प्रतिनिधि के अनुसार सतरांव में आयोजित श्रद्धांजलि सभा में अखिलेश यादव, रामबहाल यादव, भागवत सिंह, अवधेश यादव, हंसनाथ मिश्र, अक्षयवर नाथ पाण्डेय, रविशंकर मिश्र तथा राजेन्द्र यादव ने शोक व्यक्त किया।

भोजपुरी सम्राट स्व. मोती बी.ए के साथ आकाशवाणी गोरखपुर कार्यक्रम सलाहकार कमेटी मे काम करने का अवसर प्राप्त हुआ था। संबन्धित कमेटी ने सर्वदा भोजपुरी के उत्थान और उसके उत्कर्ष के लिए उनकी मीमॉशा से परिचित हुआ था। बहुत कुरेदने पर मुसकुराते हुए कुछ पंक्तिया भी सुननें का अवसर प्राप्त हुआ। उनके सुपुत्र श्री भालचंद्र जी मेरे एम. ए. के सहपाठी भी है। ऐसे व्यक्तित्व कभी कभार अवतरित होते है। मेरी हार्दिक श्रद्धांजलि।

-राजबहादुर सिंह
सदस्य जिला पंचायत

परमादरणीय गुरूदेव श्री मोती बी.ए. जी का देहावसान भोजपुरी जगत के लिए एक अपूर्णीय क्षति हैं, इनके चरणों मे मेरा कोटि-कोटि नमन। आप को समर्पीत दो पंक्तिं-

बगियन में जवन-जवन सुन्दर फूल होला।
माली ओही के चुनि-चुनि कर भर लेला झोला।।

-डा. संकर्षण मिश्र, कवि, बेलडॉड़

मोती बीए के निधन पर शोक की लहर

स्टाफ रिपोर्टर, बरहज/देवरिया: भोजपुरी के महानायक, कवि, लेखक मोती बीए के निधन पर पूरे क्षेत्र में शोक की लहर है। जगह-जगह श्रद्धांजलि सभाओं का आयोजन कर उन्हे श्रद्धांजलि दी गयी।

बीआरडीबीडीपीजी कालेज में आयोजित श्रद्धांजलि सभा में पीठाधीश्वर आंञ्जनेय दास ने कहा कि मोती जी जैसे बहुआयामी व्यक्तित्व का निधन साहित्य जगत की अपूरणीय क्षति है। प्राचार्य डा.एच.एन.सिंह, डा. ओ.पी. शुक्ल, डा.एस बी सिंह, डा. हेमन्त चोपड़ा, डा.अमरेश त्रिपाठी, डा. अमरेश सिंह, डा.अरविन्द पाण्डेय व शांति निकेतन में प्रो. शैलेन्द्र त्रिपाठी व नायब तहसीलदार गोरखपुर अजय त्रिपाठी ने भी अपनी श्रद्धांजलि दी।

सपा कार्यालय पर श्रद्धांजलि सभा में जिलाध्यक्ष गेंदालाल यादव, श्रीनिवास विश्वकर्मा, चन्द्रभूषण सिंह, पारस यादव, विरेन्द्र यादव, सुभाष चन्द्र गुप्त, रामअधार यादव, जावेद अख्तर, इरफान अहमद, रामाश्रय यादव आदि उपस्थित रहे। बीआरडीबीडी महिला महाविद्यालय में प्राचार्या डा. किरन पाठक, रूमा मिश्रा, अमृता तिवारी, दिव्या यादव, सिराज अंसारी, राधेश्याम तिवारी आदि ने श्रद्धांजलि दी। हर्षचन्द्र इण्टर कालेज में प्रधानाचार्य सुरेन्द्र प्रताप तिवारी, विद्याधर तिवारी, अक्षैबर सिंह, इन्द्रजीत उपाध्याय, संजय राय, महेश्वर पाण्डेय आदि ने श्रद्धांजलि दी।

प्रेस क्लब द्वारा आयोजित श्रद्धांजलि सभा में रामबिलास प्रजापति, इन्द्रजीत उपाध्याय, डा. अजय मिश्र, विवेकानन्द मिश्र, जगदीश जायसवाल, श्रवण कुमार गुप्त, जेपी श्रीवास्तव, सत्य प्रकाश पाण्डेय, रविकांत उपाध्याय, सदानन्द पाण्डेय, राजीव कुमार, राकेश श्रीवास्तव, धनन्जय कुमार सिंह, पंकज गौंड़, रवीन्द्र प्रताप सिंह, आशीष सिंह, विनोद सिंह, गंगा प्रसाद पाण्डेय बृजेश जायसवाल ने श्रद्धांजलि दी। भाजपा नेता अंगद तिवारी, अमरेन्द्रगुप्त, समाजसेवी बिजेश्वरी सिंह, बसपा नेता जयप्रकाश मिश्र ने भी श्रद्धांजलि दी।

हमारे भाटपार रानी कार्यालय के अनुसार महाकवि मोती बी.ए.के निधन से शोक की लहर दौड़ गयी है। सोमवार को उपनगर स्थित बी. आर. डी. इण्टर कालेज परिसर में सभा कवि पं. कुबेरनाथ मिश्र विचित्र की अध्यक्षता में हुई। इस दौरान वक्ताओं ने मोती बी. ए. के निधन को समाज के लिए अपूरणीय क्षति बताया। इस अवसर पर शिक्षक घनश्याम तिवारी, आनन्द बर्द्धन तिवारी, गणेश शंकर, अजय आर्य, डा.मोतीलाल, अशोक कुमार गुप्त, पप्पू जायसवाल, डा.श्री निवास मिश्र, विपुल कुमार, रुदल बागी, रामदरश गुप्त आदि उपस्थित रहे।

आदरणीय स्व. मोती बी.ए. (गुरूजी) हमारे मार्गदर्शक रहें हैं। उनकी कृपा से हम आज अध्यापक के पद को सुशोभित कर रहा हूँ। इनके अन्दर अपने पराए का लेश मात्र की भाव नही था। उनकी कृपा से उनके बताए गए रास्ते पर चलकर अपना जीवन करता हूँ।

अनाम

मोती के निधन से अनेक लोग दुःखी

पटहेरवा (कुशीनगर)। भोजपुरी जगत के अनन्य साधक, हिन्दी संस्थान लखनऊ (उ.प्र.) से सम्मानित जाने माने साहित्यकार मोती बी.ए. की असामयिक निधन से भोजपुरी भाषा भाषियों एवं साहित्यकारों में शोक की लहर दौड़ गयी है।

पूर्वांचल भोजपुरी साहित्य परिषद कुशीनगर के संस्थापक अध्यक्ष भोजपुरी कवि डा. रामानन्द राय 'गंवार' के पटहेरवा गंवार कुटीर स्थित भोजपुरी भवन पर एक शोकसभा का आयोजन कर मृत आत्मा की शांति के लिए शोक प्रकट किया गया।

डा.रामानन्द राय 'गंवार' ने माती बी.ए. से सम्बन्धित तमाम संस्मरणों को सुनाते हुए कहा कि मोती बी.ए. एक साधारण व्यक्तित्व के धनी एवं उच्च कोटि के भोजपुरी साधक थे। उन्होंने कहा कि उनकी तमाम पुस्तकें समाज को दिशा दिखाने का कार्यकर रही है।

कई फिल्मों में अपनी भोजपुरी माटी की सुगन्ध को महकाने में वे राष्ट्रीय स्तर पर अपनी अमिट छाप छोड़ी।

उक्त अवसर पर रामसागर सिंह 'सागर पावापुरी' दीपराज गुप्त 'दीपक' अवध किशोर यादव 'अवधू', मनंजय तिवारी, रामपति रसिया, सुदामा कुशवाहा, सुदामा शर्मा, सुदामा सिंह, बेयाला आदि साहित्यकारों ने उपस्थित होकर उन्हें भावभीनी संवेदना प्रकट की।

दैनिक जागरण समाचार पत्र की प्रतिक्रिया

याद किए जाएंगे भोजपुरी के सपूत मोती बी.ए.

जागरण टीम, देवरिया : भोजपुरी फिल्मों के महानायक मोती बीए को श्रद्धांजलि देने का क्रम मंगलवार को भी जारी रहा। विभिन्न संगठनों ने अपनी संवेदना व्यक्त की है। एस.एस.बी.एल.इण्टर कालेज में प्रधानाचार्य डा. अजय मणि त्रिपाठी, वी.डी.पाण्डेय, उमाशंकर लाल श्रीवास्तव, आर. वी. पाल, रमाशंकर सिंह आदि, सरस्वती संगीत स्नातकोत्तर महाविद्यालय नई कालोनी में बद्री प्रसाद उपाध्याय, सौदागर सिंह, नर्वदा तिवारी , दिनेश तिवारी, इन्द्रजीत प्रसाद, मोहन शर्मा, नित्यानंद यादव आदि, कलाकार नदीम खान, अन्नू बाबा, मन्टू चौरसिया, इरफान, शिब्बू, परमानंद, प्रमिल , हिन्दू जागरण मंच के विश्वजीत बाजपेई, शिव कुमार गौड़, डा. पी.सी.मिश्र, रामानन्द गुप्त आदि, यू.पी. जर्नलिस्ट एसोसिएशन के अध्यक्ष अरुण कुमार राव, डा. शशिधर मिश्र, ब्रजेश शर्मा, राजेश राय, राकेश तिवारी, धर्मेन्द्र, अखिलेश पाण्डेय आदि ने श्रद्धांजलि दी। रुद्रपुर संवाददाता के अनुसार बस स्टेशन चौराहा के निकट साहित्यकार मोती बी.ए. को श्रद्धांजलि दी गई। इस दौरान शोक सभा में इंका नेता सत्यनारायण पाण्डेय, भाजपा नेता दिग्विजय नाथ पाण्डेय, वरिष्ठ अधिवक्ता ओमप्रकाश मणि, मृत्युंजय प्रसाद विशारद, विजय शंकर, महेन्द्र प्रताप यादव, कृपा नारायण यादव, शंभूनाथ यादव, राम बदन त्रिपाठी, बी.एन.सिंह, कैप्टन वीरेन्द्र सिंह, संचालन सभासद मोहन उपाध्याय ने श्रद्धासुमन अर्पित किया।

शोक

देवरिया: बुधवार को सर्वमंगला आश्रम पर मोती बीए के निधन पर शोक सभा आयोजित की गयी। इस दौरान संजय कानोडिया से दूरभाष पर पद्मभूषण डा. गोपाल दास नीरज ने कहा कि मोती बीए के सानिध्य में प्रकृति को महसूस करने का मौका मिला। उनकी रचना लोगों को सदा प्रेरणा देती रहेगी। इस अवसर पर डा. अरुणेश नीरन, विश्वनाथ कानोडिया, राजीव खेतान, स्वामी विजय, लक्ष्मीकांत, सत्यमेधा, अशोक बजाज, विजय अग्रवाल, विवेक गोयल, नीरज मणि ने श्रद्धांजलि अर्पित की।

नंदना बरहज के लक्ष्मी-निवास में अनेक बार आने का सुयोग रहा है। इस निवास के प्रवर्तक महाकवि श्री मोती बी.ए. अब स्मृति शेष है- आज यहाँ बैठे हुए उनके प्राँगण में घण्टों से उनके स्वजनों के बीच विश्वास ही नही होता कि वे नहीं है। उनसे जुड़ी चार दशकों की स्मृतियाँ और उनका विपुल साहित्य, मेरी दृष्टि में, उनके आत्मीय जनों और सकल साहित्य जगत के लिए, निश्चय ही पाथेय हैं। उस विलक्षण महाकवि को मेरी और मेरे साथ यहाँ पधारे लोगों की हार्दिक श्रद्धाँजलि।

मातप्रसाद त्रिपाठी
पूर्व विभागाध्यक्ष, प्राचीन इतिहास -विभाग
दी.द.उ गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर

ध्यानेन्द्र नारायण
शम्भुनाथ तिवारी

परिजनों को बधाया ढांढस

बरहज/देवरिया: पं.दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय गोरखपुर के प्राचीन इतिहास विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो. माता प्रसाद त्रिपाठी के अलावा अन्य लोगों ने बुधवार को स्व. मोती बी.ए. के घर पहुंचकर उनके परिजनों को ढांढस बंधाया इस दौरान प्रो. त्रिपाठी ने कहा कि मोती जी सहृदय, कोमल विचारों वाले संवेदनशील कवि थे। उनका निधन बहुत बड़ी क्षति है।

नगर पालिका परिषद गौरा बरहज के पूर्व उपाध्यक्ष उमाशंकर उर्फ उमेश सिंह, समाजसेवी तेजबहादुर सिंह, प्रधानाचार्य बलवंत सिंह, विजय कुमार सिंह, प्रधानाचार्य रमेश तिवारी अंजान, पत्रकार प्रेमचंद्र मिश्र, सुरेश पाण्डेय, अम्बिका प्रसाद चौरसिया आदि ने भी ढांढस बंधाया।

फोटो : एसएनबी

बरहज (देवरिया) : मोती बीए के परिजनों से मिलकर संवेदना प्रकट करते प्रोफेसर माता प्रसाद त्रिपाठी।

आदरणीय पूज्य श्री मोती बी.ए. जी को मै आश्रम परिवार मे सन 1988 मे अध्यापक रुप मे अधिभार ग्रहण करने के पूर्व से ही जानता हूँ। इस क्षेत्र के समस्त नागरिक उनकी भाषा की मधुरवाणी और उच्चत्व से पूर्ण रूपेण परिचित हैं। उनका अभाव हम सबको हमेशा संतप्त करता रहेगा। मै परमपिता परमेश्वर से बारम्बार प्रार्थना करता हूँ कि उनकी दिवंगत आत्मा को शान्ति प्रदान करें। साथ ही उनके पूरे परिवार को इस बड़े दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करे।

डा. आर. के. तिवारी
स.अ. आश्रम, बरहज

आदरणीय गुरू जी का मैं छात्र रहा हूँ। सन 1952 में गरू जी की श्री कृष्ण इन्टर कालेज मे बतौर प्रवक्ता कार्यरत रहे। इनकी मधुर वाणी से सभी लोग प्रभावित थे। इन्होनें भोजपुरी मे बहुत ही मार्मिक कविताओं की रचना की है। भोजपुरी साहित्य में इनकी रचनाएँ अमर रहेंगी। गुरू जी के निधन से बड़ी क्षति हुई। मैं भगवान से प्रार्थना करता हूँ कि उनकी आत्मा को शान्ति प्रदान करें तथा इस दुःख को सहन करने की शक्ति प्रदान करें।

-सुरेष प्रसाद षुक्ल, स.अ.

बूझ गया चिराग

देवरिया जनपद के बरहज कस्बे के रहने वाले मोती बी.ए. एक ऐसा नाम है जो अपने जनपद में ही नहीं प्रदेश व देश स्तर पर छाये रहे। मोती बी.ए. आज अपने बीच में तो नहीं है परंतु उनकी कृतियां हमारे पास है। उन्होंने अपने प्रतिभा का लोहा बम्बई जैसी महानगरी में भी मनवाया था। उनके कृतियों को साहित्यकार आचार्य हजारी

पाठकनामा

प्रसाद द्विवेदी व प्रसिद्ध कवि हरिवंश राय बच्चन ने भी तारीफ की थी। मोती बी.ए. अनेक पुरानी फिल्मों में भी गीतकार की भूमिका निभाई थी। आज वह हमारे बीच नहीं हैं पर उनके द्वारा भोजपुरी में लिखे गये गीतों को लोग गाकर उन्हें याद कर रहे हैं। उन्होंने पूरे देश में भोजपुरी जैसी भाषा को अपने लिखे गये गीतों के माध्यम से एक पहचान दिलाई थी। उन्हें आज अपना पूरा पूर्वांचल याद कर गौरवान्वित हो रहा है।

विजय जायसवाल, बरहज, देवरिया

कवि रचनाकार, तथा उनकी कृतियाँ सभी काल जयी होते है तथा हमेशा समाज के लिए प्रासांगिक होता है। ऐसे ही एक साहित्यिक पुरोधा थे परमादरणीय गुरू जी ''श्री मोती बी.ए.'' मोती जी को भोजपुरी भाषा को विश्व पटल पर ले जाने का एक मात्र श्रेय प्राप्त है। मोती जी सरलता, सुगमता, तथा स्वभाविकता के प्रतिमूर्ति थे। उनके रचनाओं में चाहे प्रकृति हो, अध्यापक हो सौन्दर्य हो तथा गरीबी-अमीरी का विश्रण हो सभी की सजीवता झलकती है। वो बहु आयामी व्यक्तित्व के धनी थे। उनका व्यक्तित्व, कृतित्व एवं साहित्यिक जीवन शैली सभी लोगों के लिए अनुकरणीय है। वह इस भौतिक जगत में आज नही है, लेकिन उनका अमरत्व हम सभी लोगों को बराबर प्रेरणा देता रहेगा। यही मेरी उनके प्रति सच्ची श्रद्धाँजलि है। ''साहित्य के पुरोधा हवें देश के मोती, जगमग करें जैसे चन्दा के जोति।''

अत: मैं उनके एक शेर से मैं इसका उपसंहार कर रहा हूँ-

''उन्हें खोकर दुखें दिल की दुआँऐ और क्या मांगू।

कवि मंचों के श्रृंगार थे मोती बीए

सहारा न्यूज ब्यूरो
बरहज/सलेमपुर (देवरिया), 21 जनवरी।

दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के वरिष्ठ आचार्य प्रो. माता प्रसाद त्रिपाठी ने भोजपुरी के सशक्त हस्ताक्षर रहे मोती बी.ए. के निधन को अपने लिए गहरा आघात बताते हुए नन्दना स्थित उनके निवास पर पहुंचकर श्रद्धांजलि अर्पित की।

प्राचीन इतिहास, पुरातत्व एवं संस्कृति विभाग के पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो.त्रिपाठी ने शोक संवेदना व्यक्त करते हुए कहा कि मोती बी.ए. यह नाम पहले काशी कोशल क्षेत्र के कवि मंचों का श्रृंगार हुआ करता था, पुन: सन 1947 से 1952 तक हिन्दी फिल्म जगत में चमका तो कवि के अन्तर्मन में जाने क्या हुआ कि फिल्मी चकाचौंध छोड़कर बरहज आए और यहां के होकर रह गये। भोजपुरी माटी से सम्यक उनका कवि कर्म ने उन्हें पत्रकारिता और मंचों से जोड़ा तो हिन्दी फिल्मों से जुड़कर 'साजन' और नदिया के पार जैसी सफल फिल्मों के गीत लिखकर उन्होंने अपने नाम मोती बी.ए. को एक आभा प्रदान किया। निश्चित रूप से कुछ ऐसी बात जरूर रही जो उन्हें अपनी धरती से उड़ने के बजाय निरन्तर जुड़े रहने की प्रेरणा देती रही। जिन्दगी के आखिरी क्षणों में मोती जी का बेचैन हिरना आकुल रह प्यासा रहा। अर्थात भोजपुरी के पुरोधा की पानी की तलाश कभी खत्म नहीं हुई और वे संसार छोड़कर चले गये ऐसे मनीषी को शत-शत नमन।

कपरवार प्रतिनिधि के अनुसार विलक्षण प्रतिभा के धनी भोजपुरी सम्राट मोती बी.ए. के निधन पर महर्षि वा.शि. संस्थान खोड़ा के प्रांगण में श्रद्धांजलि सभा आयोजित की गयी, जिसमें बतौर मुख्य अतिथि ब्राह्मण महासभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष राजेन्द्र नाथ त्रिपाठी ने अपने उद्गार में कहा कि मोती बी.ए. सरल स्वभाव व बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। इस अवसर पर पंकज शुक्ल, डा.रामजी मिश्र, अनिल मणि त्रिपाठी, राकेश त्रिपाठी, राधारमण पाण्डेय, रमेश मिश्र, मनोज मिश्र, सुनील, राजन शुक्ल, श्रीमती विमला त्रिपाठी, मुन्नी पाठक सहित आदि सदस्य उपस्थित थे। अध्यक्षता राममिलन यादव तथा संचालन विनोद गिरी ने किया।

करूअना प्रतिनिधि के अनुसार सहकारी क्रय विक्रय समिति पर अंगद तिवारी की अध्यक्षता में सम्पन्न बैठक में प्रेमचन्द मिश्र, रवीन्द्र मिश्र, संजीव दूबे, मुन्ना सिंह, गिरीश चन्द मिश्र तथा राजीव मिश्र ने मोती जी को उच्च कोटि का साहित्य साधक बताते हुए उन्हें श्रद्धांजलि दी। **सलेमपुर तहसील कार्यालय** के अनुसार स्थानीय क्रय-विक्रय समिति के सामने एक बैठक हुई। बैठक में वक्ताओं ने मोती बी.ए. के निधन पर शोक व्यक्त करते हुए कहा कि प्रकृति ने एक मूल्यवान निधि को हमसे छीन लिया। शोक प्रकट करने वालों में प्रमुख रूप से डा. धर्मेन्द्र पाण्डेय, डा. सुमेश्वर प्रसाद, मोहन प्रसाद, हंसनाथ गौड़, हंसनाथ तिवारी, केशव सिंह, ब्रम्हा तिवारी, सी.बी.पाण्डेय, दिनेश सिंह, दीनदयाल प्रसाद, संतोष मिश्र, चन्द्रमोहन पाण्डेय, उमेश मिश्र, लाल साहब यादव, दीनदयाल यादव, मनोज पाण्डेय, प्रेमचन्द्र वर्मा, सोमेश्वर सिंह, छेदी मिश्र आदि प्रमुख रहे। अध्यक्षता सूबेदार सिंह व संचालन पं. शीत कुमार मिश्र ने किया। कार्यक्रम के अंत में दो मिनट का मौन रखा गया।

कि मै हैरान हूँ, आज अपनी
वफा से क्या मांगू।
मेरी बर्बादियों की दास्ता उन
तक पहुँच जाये।
सिवा इसके मुहब्बत के खुदा
से और क्या माँगू।

सौदागर सिंह

गुरूवर,

रउरी गइला से टूअर हो गइलें कुबेर
अब त दुनिया में रहल हमार बा अनेर
केहू केतनों रोकी बाकी रुकब नाहीं
हमहूँ आवते बानी तनि अबेर भा सबेर

कुबेर नाथ मिश्र
'विचित्र'

परम आदरणीय एवं परम स्नेही श्री मोती बी.ए. जी आप के दिवंगत होने का समाचार सुनकर मुझे ऐसा लगा कि एक बना बनाया संसार यानी भोजपुरी भाषा अपने परिलुप्तता की कगार पर चली गयी। मेरे मित्र मण्डलों का सूर्य अस्त हो गया। उसी समय मुझे वह मुक्तक जो बराबर सुनाया करते थे। स्मरण हो आया।

''जवना खुटवा बछरुआ बन्हा गईल बा,
हुमचवला से का फरियाये के बा,
तुरी के फेकि दिहलसि त का हो गईल,
फेनु ओहि में ओकरा बन्हाये के बा।''

बारबार आप का दर्शन आप का मुस्कान मेरे लिए स्वप्न जैसा हो गया। भगवान आप की आत्मा को अपने मे अंगीभूत कर ले। यही मेरी आप के प्रति सच्ची श्रद्धाँजलि है।

-जंग बहादुर सिंह

मोती बीए को शोक संवेदनाओं का तांता

देवरिया। भोजपुरी समाज के जाने माने हस्ती व गीतकार मोती बीए के आकस्मिक निधन पर जिले में चौथे दिन भी शोक की लहर छायी रही। बुधवार को विभिन्न संगठनों ने अलग अलग बैठक कर मोती बीए के निधन को भोजपुरी समाज की अपूर्णनीय क्षति बताते हुए उन्हें श्रद्धांजलि अर्पित की।

टाइगर फिल्म क्रिएशन के बैनर तले अबूबकर नगर कार्यालय पर हुई बैठक में नदीम खान, अन्नु बाबा, मनटू चौरसिया, इरफान, शिब्बू, परमानन्द, प्रमिल पाण्डेय, जावेद अहमद, पप्पू परदेशी, संतोष पाठक, संजय सिंह, श्रीकृष्ण भाई, गुल्लू भाई, केपी गौतम, जगदीश शर्मा, ओपी विश्वकर्मा, फिरोज खान, पंकज भाई, चन्दन, रफत खान, प्रभुनाथ शर्मा व कवि दीपक ने दो मिनट मौन रह कर श्रद्धा सुमन अर्पित किया। हिन्दू जागरण मंच द्वारा आयोजित शोक सभा में विश्वजीत बाजपेयी, शिव कुमार गौड़, पीसी मिश्र, रामानन्द गुप्ता ने शोक व्यक्त किया। यूपी जर्नलिस्ट्स एसोसिएशन की बैठक में जिलाध्यक्ष अरुण कुमार राय, डा.शशिधर मिश्र, बृजेश चन्द्र शर्मा, राजेश कुमार राय, राकेश तिवारी, धर्मेन्द्र कुमार उपाध्याय, अखिलेश पाण्डेय, विवेक कमानी, मनोज सहाय, दुर्गा पाण्डेय, ज्योति पाठक, तरुण मणि, मनोज मिश्र, विशाल मिश्र, विश्व दीपक त्रिपाठी ने शोक जताया।

मोती बीए को श्रद्धांजलि

तरकुलवा। भोजपुरी जगत के महान कवि मोती बीए के निधन पर कस्बा के हनुमान मंदिर परिसर में प्रधान संघ के अध्यक्ष रविशंकर छोटे सिंह की अध्यक्षता में श्रद्धांजलि सभा आयोजित की गयी। जिसमें ओम प्रकाश राय, राम कृपाल तिवारी, भोलो यादव, राज वल्लभ कुशवाहा, गोरख मिश्र, संतोष पति त्रिपाठी, डा.प्रदीप राय, राम प्रताप मद्देशिया ने शोक संवेदना व्यक्त कर श्रद्धांजलि दी।

23 जनवरी 2009 के समाचार

वरिष्ठ पत्रकार विवेकानन्द मिश्र के विचार दैनिक जागरण से

रचना व अभिनय से मिला मोती बीए को मुकाम

विवेकानन्द मिश्र/बरहज, देवरिया:

'मेरा जीवन दीपशिखा सम, जल जायें छू जिसे अंधेरा' गाने वाला ज्योति निर्भर 90 वर्ष की अवस्था में 18 जनवरी को महाप्रयाण कर गया। एक अगस्त 1919 में बरहज तहसील के ग्राम बरेजी में जन्मे मोती लाल उपाध्याय 'मोती बीए' ने अपनी रचनाओं एवं अभिनय से जो मुकाम हासिल किया वह विरलों को ही मिलता है।

बरहज के किंग जार्ज कालेज से 1936 में इण्टरमीडिएट, काशी हिन्दू विश्व विद्यालय से 1938 में स्नातक, 1941 में एम.ए., बी.टी.एवं साहित्य रत्न करने के बाद भी वह मात्र मोती होकर रह गये। अपने परिचय में उन्होंने स्वयं ही लिखा है कि 'कहने को एम.ए., बी.टी., साहित्य रत्न, सदनाम लेकिन पहली की डिग्री पर दुनिया में बदनाम'।

मोती जी के साथ उनकी शैक्षिक उपाधि इस प्रकार जुड़ी कि उनके नाम का अंग होकर रह गयी और मोतीलाल मोती बीए हो गये। शिक्षा ग्रहण करने के बाद मोती बीए पत्रकारिता से जुड़ गये और अग्रगामी, संसार एवं आर्यावर्त समाचार पत्रों में कार्य किये।

राष्ट्रीय विचारों के चलते सर्वोदय आन्दोलन से जुड़ गये उन्हें भारत रक्षा कानून के तहत 1942 में स्वामीनाथ सिंह, व त्रिलोचन शास्त्री के साथ जेल भी जाना पड़ा। उन दिनों मोती बीए राष्ट्रीय चेतना उभारने वाले गीत लिखा करते थे। उन दिनों उनका प्रमुख गीत था झंडा तिरंगा लहरा अपने देश में, हां हां रे अपने देश में। मोती बीए के अधिकांश गीत छायावादोत्तर गीतिकाव्य की मनोभूमि पर विचरण करते हैं

'जिससे मिलने की आशा थी, वह पहले ही टूट गयी। जीवन की प्याली अधरों को, छूते ही छूते टूट गयी।।

मिल गये धूलि के जो मधुकण, बस उन्हें उठाता लाया हूं। जो कुछ भी गाता आया हूं.....

इस तरह के गीतों के गायक की जो छवि बननी चाहिए थी, हिन्दी के आलोचकों के केन्द्रोमुखी होने के कारण वह नहीं बन पायी। मोती जी के गीतों की चर्चा जरूर होती रही। लेकिन मोती जी की वे कविताएं सबसे अधिक चर्चा में रही जो कवि सम्मेलन में धूम मचाती रहीं उसमें महुआ बारी में आइल बा बहार सजनी और तनी अदरी दउरउ हिरना, पा जाइबउ किनारा जैसे गीत मोती बीए की पहचान बन गये। हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी व भोजपुरी पर समान अधिकार रखने वाले मोती बीए ने शेक्सपीयर, राबर्ट ब्राउनिंग जैसे महान कवियों की रचनाओं का प्रभाव शाली अनुवाद किया। लेखन के अलावा बालीवुड से भी मोती जी का गहरा लगाव रहा। नदिया के पार फिल्म में भोजपुरी का जो पुट मोती जी ने दिया वह चलचित्र जगत के लिए सर्वथा नया प्रयोग था। लगभग दो दर्जन हिन्दी/भोजपुरी फिल्मों गीत लिखने एवं अभिनय करने के बावजूद कभी अपने पर फिल्मी रंग हावी नहीं होने दिया। एक साक्षात्कार में भोजपुरी साहित्य के पितामह ने कहा था-मेरे साहित्य जीवन पर फिल्मी रंग कभी हावी नहीं होने पाया वैसे मैंने बहुत से फिल्मों में गीत लिखे हैं। सफलता असफलता के साथ-साथ नाम यश भी अर्जित किया है। मुझे अपने फिल्मी गतिविधियों से संतोष है। सभी बड़े गायकों ने मेरे गीतों को स्वर प्रदान किया।

उनका स्पष्ट मानना था कि जीवन के छलावों तथा भटकावों में अगर कहीं तिनके का सहारा है तो वह सिर्फ गीत ही है। मोती जी जब यह कहते हैं कि - जीवित रह कर सह न सकूंगा, मैं जीवन की पीर, दुःख अब इतना मन भायेगा, एक दिवस ऐसा आयेगा। द्वार खड़ा सुख पछतायेगा, उदासीन आंखों में बैठा मौन बना गम्भीर। इसी के साथ स्वर्गीय मोती जी को शत् शत् नमन.....।

सर सैयद कालेज आफ कामर्स एण्ड मैनेजमेण्ट औरंगाबाद के प्रांगण में मोती बीए के निधन पर शोक जताया गया

मोती बी ए के निधन पर शोक जताया

सलेमपुर। प्रख्यात भोजपुरी कवि मोती बी ए के निधन पर सर सैयद कालेज आफ कामर्स एंड मैनेजमेंट औरंगाबाद के प्रांगण में बुधवार को उनके साहित्यिक योगदान की चरचा करते हुए भावभीनी श्रद्धांजलि दी गई। कालेज के प्रबंधक एवं शायर मूसा मजरूह ने कहा कि मोती बी ए साहब सहजता और सरलता के प्रतिमूर्ति थे। उनके निधन से भोजपुरी साहित्य की अपूर्णनीय क्षति हुई है। इस मौके पर कालेज की प्रवक्ता सुश्री निधि सिंह, कपिलदेव गुप्त, जुल्फिकार मजरूह, प्रमोद कुशवाहा, कवि राजेश्वर द्विवेदी, अरुण शर्मा आदि शामिल रहे।

दिनाँक 24 जनवरी 2009 के समाचार

मूर्ति और संग्रहालय की स्थापना हो

बरहज। जिनके वाणी में सरस्वती का वास था। महान शिल्पकार, गीतकार, साहित्यकार एवं कवि सम्राट थे। मोती बीए के आदर्शों को आने वाली पीढ़ी जान सके इस हेतु मूर्ति एवं कृतियों का संग्रहालय की स्थापना होनी चाहिए। उक्त बातें अखिल भारतीय ब्राह्मण महासभा (रा) के महान अध्यक्ष पंडित रामजी मिश्र ने कैम्प कार्यालय पर आयोजित श्रद्धांजलि सभा में कही। उन्होंने कहा कि भोजपुरी को एक मुकाम देने वाले महाकवि की मूर्ति स्थापना कराने का निर्णय महासभा ने लिया है। उनकी कृतियों को सहेजा जाएगा। संग्रहालय में मोती जी की किस्मों की सीडी और रचनाओं को रखा जाएगा ताकि आने वाली पीढ़ी उनके आदर्शों पर चलकर भूमिपुत्र का नाम रोशन कर सके। इस मौके पर राधामन्त्र, अनिल मणि, राकेश तिवारी, सत्यप्रकाश पांडेय, शर्म पांडेय, राजन तिवारी, अमित तिवारी, शिवशंकर मिश्र, दुर्गेश तिवारी मौजूद रहे। अध्यक्षता बालकृष्ण ने किया।

शोक

तरकुलवा (देवरिया): भोजपुरी कवि मोती बीए के निधन पर स्थानीय कस्बा स्थित हनुमान मंदिर परिसर में प्रधान संघ अध्यक्ष रविशंकर सिंह की उपस्थिति में श्रद्धांजलि अर्पित किया गया।

नागरी प्रचारिणी सभा में मोती बीए को दी गयी श्रद्धांजलि

मोती बी.ए. को दी गयी श्रद्धांजलि

निज संवाददाता, देवरिया : नागरी प्रचारिणी सभा में शोकसभा का आयोजन डा. प्रेमशीला शुक्ला की अध्यक्षता में किया गया। इस दौरान वक्ताओं ने स्वर्गीय मोती लाल उपाध्याय उर्फ मोती बीए को श्रद्धा सुमन अर्पित किया ।

डा.श्रीमती शुक्ला ने कहा कि उन्होंने भोजपुरी कविता की सभी जरूरतों को पूर्ण किया और अपने भीतर के प्रकृति तलों को निकालकर उसे जन माध्यम बनाया। सरोज पाण्डेय ने उनकी कुछ अविस्मरणीय पंक्तियां सुनायी। इसी प्रकार बालकृष्ण पाण्डेय ने कहा स्व. मोती बीए एक शिक्षक के रूप में छात्र के प्रतिभाओं को कैसे उभार लेते थे। सौदागर सिंह ने कहा कि स्व. मोती बीए के स्नेह की चर्चा तथा उन पर अपनी केन्द्रित रचना जगमग करे जैसे चन्दा की ज्योति सुनाई। इस अवसर पर पूर्वांचल संगीत विद्यालय के संस्थापक बद्री प्रसाद उपाध्याय, इंद्र कुमार दीक्षित, योगेन्द्र नारायण वियोगी, चतुरानन मिश्र, मुकेश वैरागी आदि ने स्वर्गीय मोती बीए को श्रद्धांजलि अर्पित की। दूसरी तरफ सामाजिक साहित्यिक एवं सांस्कृतिक नाट्य संस्था रंगभूमि द्वारा आर्य समाज मंदिर मालवीय रोड में भोजपुरी के सम्राट स्व. मोती बीए को भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की गयी। इस दौरान वक्ताओं ने कहा कि उनकी भरपाई कर पाना संभव नहीं है।

इस अवसर वीरेन्द्र प्रताप, विनोद भारती, ओमप्रकाश शर्मा, जगन्नाथ श्रीवास्तव, श्रीमती सुनीता सिंह, कृपाशंकर मालवीय, ब्रह्मानन्द जायसवाल, आशुतोष सोनकर, शाहिर, श्रीमती मनोरमा सिंह, आर.पी.सिंह, किरण मणि सिंह, कामना शर्मा, कुमारी दीपिका त्रिपाठी, रंजना, डा.बी.के. श्रीवास्तव, संतोष पटवा आदि ने स्व. मोती बीए को श्रद्धांजलि अर्पित की। इसी क्रम में संत विनोबा स्नातकोत्तर महाविद्यालय परिसर में भोजपुरी के साहित्य रत्न मोती बीए के निधन पर शोक संवेदना व्यक्त किया गया। इस दौरान श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। मोती बीए को डा. मकसूदन मिश्र, डा.सुधांशु शुक्ल, डा.रोजश कुमार मिश्र, डा.मंशा देवी आदि ने श्रद्धा सुमन अर्पित किया।

रंजन कुमार शुक्ला के विचार

भाग-01

मोती बीए को श्रद्धांजलि

सम्मानित पत्र के माध्यम से भोजपुरी के सशक्त हस्ताक्षर मोती लाल उपाध्याय उर्फ मोती बीए को हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करता हूं। नदिया के पार जैसी समकालीन हिंदी फिल्म के लिए गीत 'कठवा के नइया बनइहे रे मलहवा, नदिया पार दे उतार, साथ ही असो आइल महुआ बारी में बहार सजनी जैसे

भाग-02

गीत के जरिए बसंत का सजीव चित्रण करके मोती बीए ने हिंदी फिल्मों के लिए भोजपुरी गीत लिखकर भोजपुरी भाषा को फिल्मी दुनिया में प्रत्यारोपित करने श्रेय भी खुद हासिल किया और 1947 से लेकर 1955 तक फिल्मी दुनिया के लिए 50 से अधिक भोजपुरी गीत लिखा।

माटी के लगाव ने उन्हें फिर अपनी धरती की तरफ वापस बुला लिया। तभी तो हरिवंश राय बच्चन ने भी उनको खूब सराहा और पं. हजारी प्रसाद द्विवेदी ने दुःख भरे स्वर में उनसे यह कहा था कि आपको जैसा सम्मान मिलना चाहिए वैसा नहीं मिल सका। फिर भी आपको हताश होने की जरूरत नहीं। मोती जी ने पद्मा खन्ना जैसे अमिनेत्री और रवीन्द्र जैन जैसे कलाकर के साथ फिल्मों में काम किया और इनके लिखे गीतों को मोहम्मद रफी और ललिता देडलकर जैसे सशक्त गायकों ने गाया। अगस्त 1919 को तेलियांकलां के बरेजी गांव में पैदा हुए मोती जी 18 जनवरी 2009 में बरहज में सरयू के पावन तट पर हमेशा-हमेशा के लिए मां की गोद में सो गए।

रंजन कुमार शुक्ला
राजा बाजार, खड्डा, कुशीनगर

दिनाँक 24 जनवरी 2009 के समाचार

फाजिलनगर के साहित्य प्रेमियों ने दी श्रद्धांजलि

भोजपुरी रचनाकारों में मोती बी.ए. का अप्रतिम स्थान

फाजिलनगर (कुशीनगर)। भोजपुरी भाषा के रचनाकारों में मोती बी.ए. का अप्रतिम स्थान है। वे एक साथ कवि थे, रचनाकार थे, पत्रकार थे, यद्यपि उससे बढ़कर भोजपुरी भाषा के लिए शास्त्र चिन्ताओं के अन्वेषी थे, 'तुलसी रसायन' और 'भोजपुरी मेघदूत' 'सेमर के फूल' इसके उदाहरण हैं।

यह बातें बरहज की माटी में जन्मे भोजपुरी के शेक्सपियर मोती लाल उपाध्याय के मृत्यु शोक पर शोकाकुल श्री भगवान महावीर स्नातकोत्तर महाविद्यालय पावानगर फाजिलनगर कुशीनगर के हिन्दी विभाग में आयोजित शोक सभा में हिन्दी विभागाध्यक्ष डा. ब्रजभूषण मणि त्रिपाठी ने सभा की अध्यक्षता करते हुए कही।

सभा को संचालित करते हुए हिन्दी विभाग के वरिष्ठ प्राध्यापक डा. मुन्ना तिवारी ने कहा कि जब कभी भोजपुरी साहित्य का इतिहास रखा जायेगा तो मोती बी.ए. का नाम बड़े आदर के साथ लिया जायेगा। भोजपुरी लोकरंजन के कंकड़-किंकिड़ ध्वनि से उपजे लोक ध्वनि के प्रतिमूर्ति थे जिनमें लोक की सुरभित गंध थी। 'वन-वन बोल कोयलिया' और 'महुवारी' 'मृगतृष्णा' इसके सर्वोत्तम उदाहरण हैं।

सभा को गति और दिशा प्रदान करते हुए हिन्दी विभाग के प्राध्यापक डा. प्रभाकर मिश्र ने डा. मोती बी.ए. के निधन को भोजपुरी साहित्य का एक अपूर्णीय क्षति बताया और कहा कि मोती बी.ए. प्रकृति के सौन्दर्य के गहन अन्वेषी थे, प्रकृति के साथ आत्म साक्षात्कार को लोक भूमि में आत्मप्लावित करने वाले लोक कवियों में भोजपुरी जगत के महानायक थे, जिन्होंने भोजपुरी साहित्य को अंचल की परिधि से बाहर कर सिनेमा की बागडोर से बांधकर विस्तीर्ण आकाश में गुंजायमान किया। 'साजन' और 'नदिया के पार' की लोक संगीत में मोती बी.ए. की आत्मा का प्रतिदर्श प्रदर्शित होता है।

❖शोक सभा का आयोजन

सभा का समाहार करते हुए समाजशास्त्र विभागाध्यक्ष और भोजपुरी गीतकार डा. इन्द्रजीत मिश्र ने कहा कि अंग्रेजी साहित्य का सानेट 'आन हिज ब्लाइंडनेस' रचकर साहित्यिक फलक का जो विस्तार 'जान मिल्टन' ने किया। भोजपुरी साहित्य का वही विस्तार मोती बी.ए. ने किया।

इसी समाहार की कड़ी में स्थानीय सेन्ट्रल बैंक के प्रबंधक श्री आर.के. त्रिपाठी ने कहा कि मोती बी.ए. सच्चे अर्थों में भोजपुरी के शिरोमणि थे।

'सरयूतीर' पत्रिका के संपादक का दायित्व संभाले थे तबसे मैं मोती बी.ए. को जानता हूं। उनका जीवन आदर्श प्रस्तुत करता है जिससे हमें सीख लेनी चाहिए।

सभा का संचालन डा. मुन्ना तिवारी ने किया। आभार सिरजेश मिश्र ने व्यक्त किया। सभा में शीला श्रीवास्तव, डा. विवेक पाण्डेय, डा. राणा प्रताप तिवारी डा. आर.के. सिंह, पवन कुमार मिश्र, सुरेन्द्र नाथ शुक्ल, देवेन्द्र नारायण तिवारी, डा. जय प्रकाश, शमीम राइन, ममता मणि त्रिपाठी आदि उपस्थित रहे।

बोदरवार (कुशीनगर) प्रतिनिधि के अनुसार भोजपुरी के महान सपूत, कवि, प्रसिद्ध गीतकार, फिल्मकार, अभिनेता व स्वतंत्रता संग्राम सेनानी ९० वर्षीय सम्मानित जाने माने साहित्यकार मोती बी.ए. के निधन पर प्रभात काव्य संस्था द्वारा डा. नर्वदा सिंह 'अकेला' के आवास पर शोक सभा आयोजित कर श्रद्धांजलि अर्पित किया गया।

बोदरवार स्थित वरिष्ठ पत्रकार, साहित्यकार, कवि व मंच कलाकार डा. नर्वदा सिंह अकेला के आवास पर क्षेत्रीय पत्रकारों और सुप्रसिद्ध प्रभात काव्य संस्था के पदाधिकारियों और सदस्यों द्वारा शोक सभा का आयोजन किया गया।

दिनाँक 25 जनवरी 2020 के समाचार

मोती बी.ए. के नाम पर संग्रहालय एवं मूर्ति स्थापना की मांग

बरहज, (देवरिया)। जिनके वाणी में सरस्वती का वास था जो महान फिल्मकार गीतकार साहित्कार एवं कवि सम्राट थे जिनका कोई सानी नहीं था वैसे रत्न कानाम मोती बी.ए. हमें असहाय छोड़कर अन्तिम पड़ाव सिधारे हैं उन्हें नमन करते हुए उनके आदर्श को अपनाने के साथ ही जब तक उनके मूर्ति की स्थापना एवं उनके कृतियों की संग्रहालय की निर्माण कराने के बाद ही चैन लेगें।

उक्त उद्गार अखिल भारतीय ब्राह्मण महासभा (रा) गोरखपुर के मण्डल अध्यक्ष डा. रामजी मिश्र ने व्यक्त की मिश्र ने कहा कि स्व. मोती.बी.ए. को श्रद्धांजलि मीठी-मीठी बाते एवं मुहावरे के कहने से ही श्रद्धांजलि नहीं होगी हमे रचनात्मक कार्यों को करना होगा तभी सच्ची श्रद्धांजलि होगी श्री मिश्र ने कहा ब्राह्मण महासभा (रा) यह निश्चय किया है कि पूर्वांचल के इस सपूत ने भोजपुरी भाषा फिल्म के माध्यम से एवं अपनी साहित्य के बल अपनी मोती बिखेरी थी आज आवश्यकता है उनके साहित्यों की कृतियों को सजोने की और उनकी मूर्ति लगाने की ताकि साहित्य जगत उनसे हमेशा प्रेरणा लेती रहे। बैठक में राधारमण पाण्डेय, पंकज शुक्ल, परशुराम सेना के प्रदेशीय उपाध्यक्ष, एस.पी. पाण्डेय, अनिल निषाद, विश्वामित्र, दुर्गेश तिवारी, ने भी सम्बोधित किया श्रद्धांजलि सभाकी अध्यक्षता बालकृष्ण पाण्डेय एवं संचालन पंकज शुक्ल ने किया।

मोती बीए की मूर्ति व संग्रहालय स्थापित हो

स्टाफ रिपोर्टर, बरहज/देवरिया: अखिल भारतीय ब्राह्मण महासभा के मंडल अध्यक्ष पं. रामजी मिश्र की अध्यक्षता में नगर स्थित कैंप कार्यालय पर श्रद्धांजलि सभा हुई।

इसमें कवि मोती बी.ए. की मूर्ति एवं संग्रहालय की स्थापना पर जोर दिया गया। पं. राम जी मिश्र ने कहा कि मोती बी.ए. की सच्ची श्रद्धांजलि तभी होगी जब उनके रचनात्मक कार्यों को आने वाली पीढ़ी भी जानकर उससे लाभान्वित हो।

इसके लिए इनकी मूर्ति एवं संग्रहालय की स्थापना की जानी चाहिए। महासभा ने एक प्रस्ताव पारित कर यह निर्णय लिया कि सन 1946 से 1984 तक की मोती बी.ए. की रचनाओं को संग्रहित कर संग्रहालय में रखा जाएगा ताकि आने वाली पीढ़ी इस महान विभूति के बारे में जाने तथा उनके आदर्शों पर चलकर पूर्वांचल का नाम रोशन कर सकें।

अध्यक्षता बालकृष्ण पाण्डेय एवं संचालन पंकज शुक्ल ने किया। इस अवसर पर राधारमण पांडे, पंकज शुक्ल, अनिल मणि, राकेश तिवारी, सत्यप्रकाश पाण्डेय, हर्ष पाण्डेय, राजन तिवारी, अनिल निषाद, विश्वामित्र मिश्र, दुर्गेश तिवारी आदि उपस्थित रहे।

दिनाँक 25 जनवरी 2009 के समाचार

डॉ. माता प्रसाद त्रिपाठी की श्रद्धांजलि

याद किये जायेंगे भोजपुरी साहित्य के महानायक

बरहज (देवरिया)। भोजपुरी साहित्य के महानायक के घर मंगलवार को श्रद्धांजलि देने वालों का सिलसिला जारी रहा पं. दीनदयाल उपाध्याय गोरखपुर विश्वविद्यालय के प्राचीन इतिहास विभाग के पूर्व अध्यक्ष प्रो. माता प्रसाद त्रिपाठी के अलावा अन्य लोगों ने प्रो. मोती बी.ए. के घर पहुंचकर उनके परिजनों को ढांढस बंधाया और अपनी शोक सान्तवना दी।

इस दौरान ही प्रो. माता प्रसाद त्रिपाठी ने अपनी उद्गार में कहा कि मोती जी सहृदय कोमल विचारों के कवि थे। उनके निधन से साहित्य जगत में अपूर्णीय क्षति हुई है उनके बिना भोजपुरी साहित्य के कवियों को याद हमेशा खलेगी और एक कोना सूना हो गया मोती जी के निधन पर साहित्य जगत के चौथे स्तम्भ के रूप में पत्रकार बन्धुओं की एक बैठक हुई जिसमें प्रेस क्लब के नव निर्वाचित अध्यक्ष जे.पी. श्रीवास्तव ने कहा कि मोती जी के जीवन के एक-एक छड़ से साहित्य जगत को सीख मिलती रहेगी और जब भी भोजपुरी की बात होगी मोती जी याद आते रहेंगे। पूर्वांचल में जब भी भोजपुरी साहित्य की कवि गोष्ठी होती है तो मोती जी की पंक्ति जरूर सुनने को मिलती है प्रोफेसर अजय कुमार मिश्र कहते हैं कि मोती जी साहित्य जगत के अखण्ड ज्योति थे उनके साहित्य से निकली एक एक प्रकाश पुंज साहित्य जगत को रोशनी देगा बैठक में इन्द्रजीत उपाध्याय, जगदीश जायसवाल, सत्य प्रकाश पाण्डे, विवेकानन्द मिश्र, श्रवण कुमार गुप्त, राजीव कुमार, आशीष सिंह, ओंकार नाथ सिंह, अम्बिका चौरसिया ने भी शोक संवेदना व्यक्त किया।

दिनाँक 30 जनवरी 2009 के समाचार

राष्ट्रीय सहारा ने कई दिनों तक श्री मोती बीए के समाचारों को लगातार प्रकाशित किया।

साहित्य के क्षेत्र में अमर रहेंगे मोती बीए

सहारा न्यूज ब्यूरो

बरहज (देवरिया) 29 जनवरी।

अपनी सशक्त रचनाओं के चलते मोती जी ने साहित्य जगत में जो मुकाम अर्जित किया वह बहुत कम लोगों को नसीब होता है। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भोजपुरी भाषा और पूर्वांचल की जो छवि मोती जी ने अपनी रचनाओं के चलते स्थापित किया भोजपुरी भाषा-भाषी सदैव उनके ऋणी रहेंगे।

साहित्य प्रेमियों के लिए अपनी रचनाओं के माध्यम से मोती जी सदैव अमर रहेंगे। नगर के नन्दना वार्ड स्थित लक्ष्मी निवास में भोजपुरी के सशक्त हस्ताक्षर रहे मोती बी.ए. की श्रद्धांजलि सभा को सम्बोधित करते हुए उक्त उद्गार आश्रम पीठाधीश्वर आञ्जनेय दास जी महाराज ने व्यक्त किया।

श्रद्धांजलि सभा को पूर्व प्रधानाचार्य बालकृष्ण पाण्डेय, प्रधानाचार्य डा.अक्षयवर पाण्डेय, मुहम्मद मुस्तफा, कुबेरनाथ मिश्र, अरविन्द त्रिपाठी प्रधानाचार्य, रामाश्रय यादव, प्रशासनिक अधिकारी रविन्द्रनाथ उपाध्याय, डा. परमानन्द उपाध्याय, जवाहर लाल उपाध्याय तथा सुशील कुमार उपाध्याय आदि ने सम्बोधित करते हुए मोती जी के अवसान को एक युग का अन्त बताया। वक्ताओं ने मोती जी की कविताओं को भोजपुरी कविता के पिंगल शास्त्र को नयी दिशा प्रदान करने वाला बताया। अपनी रचना में जब वे कहते है कि सत्य सत्य है उस पर कोई रंग नहीं चढ़ता और न ही तोड़ने-फोड़ने से उसकी स्थिति पर कोई असर पड़ता है जैसे कंचन का टुकड़ा चाहे घर की तिजोरी में रहे या कीचड़ में सदैव चमकता रहेगा। तुरि के फेंकी द चाहे मिसऽ मलऽ, तोहरे खातिर करेजा डहकते रही।चाहे आन्हीं बहो चाहे बिजली गिरो, फूल हऽत बगइचा महकबे करी। श्रद्धांजलि सभा की अध्यक्षता भोजपुरी कवि कुबेरनाथ मिश्र 'विचित्र' तथा संचालन वीरेन्द्र त्रिपाठी एडवोकेट ने किया।

दिनाँक 30 जनवरी 2009 के समाचार

स्थानीय प्रियजनों ने महीनों तक मोती जी को याद किया

साहित्य और भोजपुरी के पुरोधा थे मोती बी.ए.

स्टाफ रिपोर्टर, बरहज/ देवरिया: साहित्यकार मोती बीए के ब्रह्मभोज पर नगर के नंदना वार्ड स्थित दक्षिणी निवास पर श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। जिसमें वक्ताओं ने उन्हें साहित्य और भोजपुरी का पुरोधा बताया। पीठाधीश्वर आञ्जनेय दास जी ने कहा कि अपनी सशक्त रचनाओं के चलते मोती जी ने साहित्य जगत में जो मुकाम हासिल किया वह बहुत कम लोगों को मिलता है। अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर भोजपुरी भाषा और पूर्वांचल की जो छवि मोती जी ने अपनी रचनाओं के चलते स्थापित किया, भोजपुरी भाषा भाषी सदैव उनके ऋणी रहेंगे। आचार्य ज्वाला प्रसाद पाण्डेय ने कहा कि मोती जी वस्तुतः भोजपुरी भाषा के पितामह थे लेकिन उनकी हिंदी अंग्रेजी उर्दु संस्कृत और अरबी भाषा पर भी मजबूत पकड़ थी।

दिनाँक 06 फरवरी 2009 के समाचार

फोटो : एसएनबी

बरहज (देवरिया) : कार्यक्रम प्रस्तुत करते नायाब हुसैन निवाजी व उपस्थित दर्शक।

आकाशवाणी के कलाकारों ने दी श्रद्धांजलि

स्वर लहरियों से श्रोता मंत्रमुग्ध

बरहज (देवरिया), 5 फरवरी (एसएनबी)। भोजपुरी के पुरोधा मोती बी.ए. की स्मृतियों को जीवन्त बनाये रखने हेतु आकाशवाणी एवं दूरदर्शन के ख्यातिलब्ध गायक कलाकारों ने नगर में एक शाम मोती बी.ए. के नाम आयोजित कर अपनी स्वर लहरियों से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया।

समारोह का शुभारम्भ आराधना संगीत महाविद्यालय के संचालक नायाब हुसैन निषाजी तथा मोती जी के चित्र पर माल्यार्पण तथा दीप प्रज्वलन से हुआ। मधुर धुनों पर बृजेन्द्र सिंह ने सरस्वती वन्दना प्रस्तुत किया। तत्पश्चात प्रसिद्ध गायक नायाब हुसैन निषाजी ने 'चलो रे मन गंगा यमुना तीर' प्रस्तुत कर श्रोताओं की खूब वाहवाही बटोरी। भटनी से पधारे श्यामसुन्दर शर्मा और भलुअनी के अशोक चौरसिया और सुनील सिंह द्वारा प्रस्तुत कर्णप्रिय गीतों को दर्शकों ने खूब सराहा। मोती जी को केन्द्रित कर मनोज तिवारी सज्जन द्वारा प्रस्तुत गीत ने लोगों को झकझोर दिया। सौदागर सिंह की प्रस्तुति 'मोहे लागी लगन गुरू चरण में' तथा शरद तिवारी अन्टू की शानदार प्रस्तुति 'कहिया अइबे ये परदेशी कवले दीया जइबे हम' पर दर्शकों को ताली बजाने हेतु विवश कर दिया।

एक शाम मोती बीए के नाम

श्याम जी ने 'ससुरा के चुनरी नैहर में मईल का लेके जइबे गवनवा हो राम' प्रस्तुत कर आयोजन को ऊंचाई प्रदान किया। इसके बाद रामेश्वर यादव प्रधानाचार्य, रमेश तिवारी अन्जान ने अपनी स्वरचित रचना और डा. एस.पी.सिंह ने मोती जी की रचना प्रस्तुत किया।

अपने अध्यक्षीय सम्बोधन में आश्रम पीठाधीश्वर परमहंस आञ्जनेयदास जी महाराज ने ऐसे आयोजनों की प्रशंसा करते हुए कहा कि मोती जी सच्चे अर्थों में महामानव थे। उन्होंने हर विधा में जमकर लेखनी चलायी और समाज का चित्र उकेरा।

समारोह में मुख्य रूप से अजीत कुमार जायसवाल, अरविन्द त्रिपाठी, शिव सहाय बरनवाल, भालचन्द्र उपाध्याय, गौतम सिंह डेका, सुशील उपाध्याय, अमरेन्द्र गुप्त, रामेश्वर यादव, डा. अशोक सिंह, हसमत हुसैन, मुहम्मद हुसैन मंसूरी आदि उपस्थित रहे।

कलाकारों ने दी मोती बीए को श्रद्धांजलि

देवरिया। कलाकार एसो. द्वारा वैद्य मिथिलेश शुक्ल की अध्यक्षता में अंसारी रोड में आयोजित मासिक काव्य गोष्ठी 'काव्य तरंग' में प्रख्यात साहित्यकार मोती बीए को श्रद्धांजलि दी गयी। कार्यक्रम का शुभारम्भ कुमार जितेन्द्र की सरस्वती वंदना 'जय हो माँ भवानी' से हुई। इस मौके पर कवि दुर्गानाथ त्रिपाठी ने अपनी रचना ' नमन उस मोती महान को जो मोती नाम पा गया, नमन उसी अनन्त को जो अनन्त में समा गया' से मोती को भावभी श्रद्धांजलि दी। संत शरण करूणेश की 'तुम न आये आ गया मधुमास' तथा इन्द्रकुमार दीक्षित की रचना ' गाँव गलिया विरानी हो गयी' पर श्रोता ताली बजाने को मजबूर हो गये। गोष्ठी में जिन लोगो ने मोती को श्रद्धांजलि दी। उनमें विद्या प्रसाद गाफिल, नित्यानन्द यादव, रीना श्रीवास्तव,योगेन्द्र वियोगी आदि प्रमुख थे। इस मौके पर मोती बीए के काफी निकट रहे कवि आर पी तिवारी मोती बीए द्वारा फिल्म 'महल' के लिये रचित गीत ' हम चले लम्बे सफर को अलविदा ऐ दोस्तो, मौजे दरिया में बहो तुम अलविदा ऐ दोस्तो' सुनाकर मोती बीए को व्यक्तित्व तथा कृतित्व पर विस्तार से प्रकाश डाला। कार्यक्रम में महेन्द्र जायसवाल, सरोज बाबू, प्रमोद जायसवाल, सुरेश जी, राकेश कुशवाहा, रामपुर बुजुर्ग तथा बृजेन्द्र मिश्र ने खास हाथ बटाया।

दिनाँक 07 फरवरी 2009 के समाचार

एक शाम मोती बीए के नाम कार्यक्रम

याद रखना तुमको बहुत याद आऊंगा....

बरहज कार्यालय, देवरिया: भोजपुरी के पुरोधा स्व. मोती बी.ए. की याद में गुरूवार की शाम नगर स्थित जायसवाल अतिथि भवन में एक शाम मोती बीए के नाम कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमें दूरदर्शन एवं आकाशवाणी के कलाकारों द्वारा अपने गीतों एवं गजलों के माध्यम से उन्हें श्रद्धांजलि दी गयी। कार्यक्रम की शुरूआत परमहंसाश्रम पीठाधीश्वर आञ्जनेय दास ने मोती बीए के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्वलित कर किया। उसके बाद विजेन्द्र सिंह ने 'जय-जय हे वीणा वादिनी जय कल्यानी' गीत द्वारा सरस्वती का आह्वान कर संगीत का क्रम शुरू किया। इसके बाद प्रख्यात शहनाई वादक एवं गायक नायाब हुसैन नियाजी ने 'चलो मन गंगा यमुन के तीर' गीत के माध्यम से मोती जी को याद किया। तत्पश्चात 'तुमसे मैं जब दूर चला जाऊंगा, याद रखना कि तुझे याद बहुत आऊंगा' गजल प्रस्तुत कर वाहवाही बटोरी। सौदागर सिंह ने 'मोहे लागी लगन गुरू चरन' की प्रस्तुति की। शरद तिवारी अंटू ने 'कहिया अइब ए परदेसी कबले दिया जराईब हम' गीत के माध्यम से मोती जी की याद ताजा की। श्यामजी तिवारी, श्याम सुंदर, सुनील सिंह, अशोक चौरसिया, रामेश्वर यादव, रमेश तिवारी अंजान, आनंद कंद पाण्डेय, मुकेश बैरागी आदि कवि/गायकों ने अपने गीतों एवं कविताओं के माध्यम से स्व. मोती बीए जी को श्रद्धांजलि दी। संचालन रमेश सिंह दीपक ने किया। इस अवसर पर हनुमान उपाध्याय, दुलाल दादा, डा. एस.पी. सिंह, अमरेन्द्र गुप्त, अरविंद त्रिपाठी, अजीत जायसवाल, सुशील उपाध्याय, भालचंद उपाध्याय, प्रदीप चंचल, गौतम सिंह डेका, संजय कुमार बरनवाल, विनय कुमार मिश्र, आनंद तिवारी आदि उपस्थित रहे।

दिनाँक 18 जनवरी 2009 के समाचार

नमन उस महान को जो 'मोती बीए' नाम पा गया

कवि तरंग गोष्ठी

रचनाओं के जरिये कवियों ने दी भोजपुरी गीतकार को श्रद्धांजलि

देवरिया। कलाकार वेलफेयर एसोसिएशन के तत्वावधान में काव्य कवि तरंग गोष्ठी का आयोजन अंसारी रोड पर किया गया। इसमें गीतकार और साहित्यकार मोती बीए को श्रद्धांजलि दी गयी।

कार्यक्रम का शुभारम्भ कुमार जितेंद्र ने सरस्वती वंदना जय हे मात भवानी से प्रारम्भ किया। कवि पं. दुर्गानाथ त्रिपाठी ने अपनी रचना नमन उसी मोती महान को जो मोती बीए नाम पा गया, पढ़ी, इन्द्र कुमार दीक्षित ने गांव की गलियां विरानी हो गयी है, पढ़कर लोगों को गंभीर बना दिया। सरोज पांडेय ने 'तो हम फागुन है आये है, तुम होरी गावों जी' कविता सुनाकर सभी को रस आनंदित कर दिया। नित्यानन्द यादव, रीना श्रीवास्तव ने अपना गीत 'आपन गंऊआ आपन यार' को पेश किया। श्रद्धांजलि सभा में एसोसिएशन के अध्यक्ष तथा मोती बीए गीत रत्न से सम्मानित शायर कुमार जितेंद्र ने कहा कि मोती बीए की रचनाएं प्रकाश स्तंभ की तरह रोशनी देती रहेगी। उन्होंने कहा कि मोती बीए जितने अच्छे कवि थे, उतने ही अच्छे इंसान भी थे। श्रद्धांजलि सभा में शंत शरण, मिथिलेश वैद्य, महेंद्र जायसवाल, गिरिजेंद्र, सरोज, प्रमोद, सुरेश, राकेश कशवाहा, बृजेंद्र मिश्र आदि कवियों ने भी रचनाएं प्रस्तुत की।

दिनाँक 19 फरवरी 2009 के समाचार

मोती बीए की याद में भोजपुरी पत्रिका का विमोचन

भोजपुरी पत्रिका का विमोचन 22 को

प्रतापपुर। बनकटा क्षेत्र के ग्राम मिश्रौली स्थित श्री मुन्नीलाल बालिका विद्यालय के प्रांगण में 22 फरवरी को भोजपुरी के मूर्धन्य विद्वान मोती बीए विषयक संगोष्ठी एवं भोजपुरिया अमन पत्रिका का लोकार्पण किया जाएगा। इसमें मुख्य अतिथि डा भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय मुजफ्फरपुर बिहार के कुलपति डा राजदेव सिंह और विशिष्ट अतिथि पूर्व मंत्री पं. दुर्गा प्रसाद मिश्र होंगे।

दिनाँक 20 फरवरी 2009 के समाचार

कल तक वह जाने महफिल थे, तस्वीर बन गये

❖गीतों के सशक्त हस्ताक्षर मोती बी.ए. को समर्पित काव्य गोष्ठी

कसया (कुशीनगर)। अदबी तंजीम 'बज्मे अदब' की ४८ वीं शेरी नशिस्त आजाद नेशनल हाई स्कूल रामकोला रोड कसया में एडवोकेट इर्शाद अहमद 'कामिल' की सदारत एवं तौकीर अहमद 'फेगार' देवरियावी की निजामत में सम्पन्न हुई। नशिस्त का आगाज 'कामिल' के मतला कलाम से हुआ- 'फैला हर सिम्त अन्धेरा था मिटाने आये। इन्हे आदम को गुनाहों से बचाने आये॥'

सत्यप्रकाश रामसागर सिंह पावापुरी ने भजन सुनाया- 'रिश्ता है पाक प्रभु तेरा और मेरा। योनि-योनि भटके कई जन्मों का फेरा॥' शैलेन्द्र कुमार पाण्डेय 'अमोघ' की गजल का मतला यूं था- 'कल तक वो जाने महफिल थे तस्वीर बन गये। उजड़े हुए कसब की जागीर बन गये॥' अब्दुल हमीद 'आरजू' ने अपनी गजल में सुनाया- 'मन मेरे चल गीत मेरा हो जहां। मरमरीं शामों-सवेरा हो जहां॥' डा. महमूद 'हमराही' ने अपनी रचना में दहेज को अभिशाप करार देते हुए कहा- 'जहां पर मालोजर की कोई गुंजाईश नहीं होती। वहां पर चांद को दुल्हन बनाने कौन आता है ?' फेगार देवरियावी ने अपनी गजल में जीवन के यथार्थ का बोध कराया- 'फूल कांटों के बीच में खिलकर। दुख में जीना हमें सीखता है॥' देवीशरण त्रिपाठी 'भास्कर' ने अपनी गजल में यूं कहा- 'नवाजिश हुई दिल में चाहत की ऐसी। गुनाहों से पहले सजा पा गया॥'

इस क्रम को आगे बढ़ाते हुए इर्शाद अहमद 'कामिल' ने सुनाया- 'मिल रही है वह कैसी सजा इन दिनों॥' नन्दलाल 'विद्रोही' ने कहा- 'ऐलान आज है अम्बर से अमर शहीद पुकारें। अब तो मरकर भी आतंकी को हम मारें॥' मुरारी यादव ने सुनाया- 'पहरा पर शासन-प्रशासन बिकाला। सोचा कानून कांटे उल्टा लिखाला॥' शिलोकी त्रिपाठी 'चंचरीक' ने पाक साक्षात करते हुए कहा- 'जनि धमाका पाक चुता जइबऽ। गाजे की नाई सथा जइबऽ॥' दहेज की लानत करते हुए रवीन्द्र मिश्र ने अपनी रचना में सुनाया- 'हर बाप के अब बेटी बिकाहल ई केतना बड़ा पहाड़ भईल। बेटिया के दालि गलत नइखे चौथे में दहेजवा ठाढ़ भईल॥' इसके अतिरिक्त डा. अब्दुल मजीद 'अब्द', शम्सुद्दीन 'नूरी', अलीहसन 'आसी', डा. शम्स गोरखपुरी, डा. घनश्याम तिवारी, जसलाल निजामी, दिनेश तिवारी, राजेश 'राही', रामरावण तिवारी 'सुबोध' ने भी अपनी रचनायें प्रस्तुत करके गोष्ठी को सफल बनाया।

कार्यक्रम के अन्त में पूर्वांचल के महान कवि मोती बी.ए. के निधन पर शोक प्रकट किया गया। संस्था के सचिव डा. महमूद 'हमराही' ने मोती बी.ए. को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि भोजपुरी, हिन्दी, उर्दू और अंग्रेजी में दो दर्जन से अधिक अमर कृतियों और 'असो आइल महुआवारी में बहार सजनी', तनि अउरी दउर हिरना पा जइब किनारा, कवना के नइया धनइहें रे मलहवा, नदिया के पार दे उतार, 'सुगना सेमर के फूले का एतना लपटाइल बाड़' जैसी कालजयी रचनाओं के रचयिता मोती बी.ए. का काव्य साधना पर तो पूरा अधिकार था ही वे फिल्मों में अभिनय के क्षेत्र में भी सफल रहे।

एम.ए. की शिक्षा पूर्ण करने के बाद 'अंग्रेजो भारत छोड़ो' आन्दोलन में सक्रिय भागीदारी के कारण मोती बी.ए. को जेल में नजरबन्द भी रहना पड़ा था। उन दिनों मोती बी.ए. राष्ट्रीय चेतना उभारने वाले गीत तो लिखते ही थे। परन्तु भोजपुरी गीतों के माध्यम से अध्यात्म, दर्शन व प्रकृति चित्रण को स्वस्थ परम्परा की शुरूआत करने के लिए मोती बी.ए. युगों तक याद किये जाते रहेंगे।

दिनाँक 23 फरवरी 2009 के समाचार

भाटपारानी में मोती बीए पर किया गया संगोष्ठी

भोजपुरी भाषा में संस्कृति और सभ्यता विद्यमान

भाटपाररानी। क्षेत्र के मुन्नीलाल बालिका विद्यालय मिश्रौली में रविवार को भोजपुरी क्षेत्र पूर्वांचल की भोजपुरी पत्रिका का लोकार्पण मुजफ्फरपुर विश्वविद्यालय के कुलपति डा. राजदेव सिंह ने किया। इस दौरान भोजपुरी के सोन्ह महक अउर मोती बीए विषय पर आयोजित गोष्ठी को संबोधित करते हुए कुलपति डा. सिंह ने कहा कि भोजपुरी हमारे उत्तरी भारत की संस्कृति और सभ्यता है। इसमें क्षेत्र की परम्पराओं को देखने और सुनने को मिलता है। इसको भाषा के रूप में संविधान की आठवीं अनुसूची में दर्जा दिलाने का जरूरत है।

विशिष्ट अतिथि पूर्व मंत्री पं. दुर्गा प्रसाद मिश्र ने कहा कि भोजपुरी एक पवित्र भाषा है। इसकी मर्यादा को कायम रखना होगा। भोजपुरी भाषा और बोली के प्रचार और फैलाव की जरूरत है। भोजपुरी किसी दया की पात्र नहीं है। समारोह को पूर्व विधायक सुरेश यादव, आयोजक डा जर्नादन कुशवाहा, श्रीमती मालती त्रिपाठी, बिन्दा कुशवाहा, जयप्रकाश यादव, दिनेश द्विवेदी, बृजकिशोर सिंह, उमेश पांडेय, सत्येन्द्र सिंह, उमेश, श्याम देव, सरदार दिलावर सिंह, मुक्तिनाथ उपाध्याय, राज कुमार शाही, रामकृपाल सिंह आदि ने संबोधित किया। अध्यक्षता डा टीपी सिंह व संचालन कवि लल्लन सिंह ललित ने किया।

गोष्ठी

भोजपुरिया अमर पत्रिका का हुआ लोकार्पण

ब्रह्मलीन हो गए कवीश्वर मोती बीए बरहज वासी

बरहज में प्रारम्भिक शिक्षा
काशी से ली शिक्षा दीक्षा
उनतालिस सें तैतालिस तक
अखबारों मे हुई परीक्षा

चौवालिस में फिल्म सँवारा
पंचोली लाहौरा पधारा
फिल्म बम्बई में आकर के
गीतों का कर दिया पसारा

शिक्षक बनकर बरहज आए
कई ग्रन्थ ये रचे छपाये
पुरस्कार की झड़ी लग गई
कौन गिनाये कितने पाए

कवि सम्मेलन के मंचो पर
चमके जैसे पुरनमासी
ब्रह्मलीन हो गये कवीश्वर
मोती बीए बरहज बासी

जन्मग्राम का नाम बरेजी
भोजपुरी हिन्दी अंग्रेजी
उर्दू की सेवा करके वे
गए कौन थी इतनी तेजी?

सन् उन्नीस सौ उनइस आया
जिसने था उनको जनमाया
दो हजार नौ सन् आते ही
स्वर्ग लोक का मान बढ़ाया

गूँजी इसकी नभ मे वाणी

दर्शन किए दूर के प्राणी
राजकुमार रहे गीतों के
पूजित सरस्वती कल्याणी

बरहज का ये वार्ड नन्दना
आकर करते सभी वन्दना
ब्रह्मभोंज में भागलिए सब
शान्ति हेतु सब किए क्रन्दना

जबतक सूरज चाँद गगन में
गूँजित रचनायें अविनाशी
ब्रह्मलीन हो गए कवीश्वर
मोती बीए बरहज वासी

रचयिता-
कुबेर नाथ मिश्र 'विचित्र'
अध्यक्ष 'साहित्य-मिलन'
भाटपार रानी, देवरिया

ब्रह्मभोज तिथि. 29-01-2009

दिनाँक 29 जनवरी 2009 के समाचार

श्री मोती बीए के अन्तिम बिदाई (ब्रह्मभोज) के दिन राष्ट्रीय सहारा में डॉ. अजय कुमार मिश्र की श्रद्धांजलि

भोजपुरी के लिए जीवन होम किया

मन में अजब मिठास, हृदय में शीतलता तथा गजब का अपनापन उत्पन्न करने वाली भाषा है भोजपुरी। भोजपुरी भाषा का गौरवशाली अतीत गवाह है कि भोजपुरिया क्षेत्र के लोगों ने अपने पराक्रम के साथ-साथ कलम से भी भारतीय इतिहास को नई ऊंचाई प्रदान किया। इस सत्य को अब्राहम गीर्यसन ने भी स्वीकारा है।

भोजपुरी भाषा एवं संस्कृति एक विशिष्ट जीवन शैली है, जिसने जिस मात्रा में इसे आत्मसात किया वह आनन्द सागर में उतनी ही गहराई तक डूबता चला गया। भोजपुरी की विशिष्ट शैली तथा समृद्ध विरासत का उपयोग कर अनेक मूर्धन्य साहित्यकारों, कवियों, रचनाकारों तथा कलाकारों ने राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्धि पायी है। ऐसे ही स्वनाम धन्य व्यक्तित्व के धनी भोजपुरी के शेक्सपीयर के रूप में ख्याति प्राप्त भोजपुरी के पुरोधा मोती बीए किसी पहचान के मोहताज नहीं है बल्कि भोजपुरी आकाश के देदीप्यमान नक्षत्र रहे। मोती बीए की तेरही आज 29 जनवरी को है। इस अवसर पर उनका व्यक्तित्व बरबस याद आ जाता है।

01 अगस्त 1919 को पूर्वांचल के दो प्रमुख सन्तों पूज्य बाबा राघवदास तथा ब्रह्मलीन योगिराज देवरहा बाबा की तपोस्थली के मध्य बरेजी गांव में जन्म लेने वाला जिज्ञासु तथा साहित्य सुधी बालक ही आज अपनी सशक्त लेखनी तथा विलक्षण प्रतिभा के बल पर मोती बीए नाम से

जो भी कविता मिल जाती उसे कंठस्थ कर लेते तथा हर समय उसे अपनी सुरीली तथा मीठी आवाज में गाया करते और यह मानसिकता अन्त तक सजीव रही। 16 वर्ष की आयु में प्रथम रचना- अरि सखी घूँघट के पट खोल! कलि अभी प्रस्फूटित नहीं है। मन्द समीर डोल रहा है, रस पराग युत राग-सुरभि। बिखरा दो ना अनमोल। अरि सखि घूँघट के पटखोल

ब्रह्मभोज आज

ख्याति लब्ध है। इनके अन्दर कवियों के प्रति सहज और स्वाभाविक आकर्षण बाल्यावस्था से ही रहा। जो भी कविता मिल जाती उसे कंठस्थ कर लेते तथा हर समय उसे अपनी सुरीली तथा मीठी आवाज में गाया करते और यह मानसिकता अन्त तक सजीव रही। 16 वर्ष की आयु में प्रथम रचना- अरि सखी घूँघट के पट खोल! कलि अभी प्रस्फूटित नहीं है।

मन्द समीर डोल रहा है, रस पराग युत राग-सुरभि।

बिखरा दो ना अनमोल। अरि सखि घूँघट के पटखोल...एक हिन्दी दैनिक में प्रकाशित हुई। इसके बाद तो ऐसी अजस्रधारा चली जो निर्बाध गति से अन्तिम समय तक जारी रही। स्वनाम धन्य मोती जी हिन्दी और भोजपुरी के पुरोधा रहे। अंग्रेजी तथा उर्दू में उन्होंने साधिकार रचनाएं की थी। जब हिन्दी में मूर्धन्य कवि एवं गीतकारों का वर्चस्व रहा तब भोजपुरी के लिए मोती जी ने अपने जीवन का होम कर इसके उत्थान का उस समय संकल्प लिया जब भोजपुरी का नाम भोजपुरी क्षेत्र में ही कम लोग जानते तथा बोलते थे। मोती जी के व्यक्तित्व में हिमालय की ऊंचाई, पाण्डित्य में समुद्र की गहराई और विचार में गगन की तरह निर्लिप्त विस्तार रहा तो संकल्प में गंगा की पवित्रता की छाप रही। ऐसे मनीषी को शत-शत नमन।

डा. अजय कुमार मिश्र

दिनाँक 20 जनवरी 2009 के समाचार

सम्मान में बन्द रहें शिक्षण संस्थान

नम आंखों से याद किए गए भोजपुरी के पुरोधा 'मोती बीए'

सम्मान में बंद रहे शिक्षण संस्थान, श्रद्धांजलियों का तांता

विचार : मोती बीए के जन्मदिन पर गोरेज पुस्तकालय में इकट्ठा हुए लोग विचार मंथन करते लोग।

दिनाँक 18 जनवरी 2010 का समाचार

भोजपुरी सिनेमा के महानायक व कवि मोती बी.ए.

विवेकानन्द मिश्र/बरहज, देवरिया

मोती बी.ए. की प्रथम पुण्यतिथि पर विशेष

मेरा जीवन दीपशिखा सम, जल जाए छू जिसे अंधेरा गाने वाला ज्योति निर्झर 90 वर्ष की अवस्था में 18 जनवरी को महाप्रयाण कर गया। एक अगस्त 1919 में बरहज तहसील के ग्राम बरंजी में जन्मे मोती लाल उपाध्याय मोती बी.ए. ने अपनी रचनाओं एवं अभिनय से जो मुकाम हासिल किया वह फिल्मों की ही मिलता है। बरहज के किंग जार्ज कालेज से 1936 में इण्टरमीडिएट, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से 1938 में स्नातक, 1941 में एम.ए., बी.टी. एवं साहित्य रत्न करने के बाद भी वह मात्र मोती होकर रह गए। अपने परिचय में उन्होंने स्वयं ही लिखा है कि कहने को एम.ए., बी.टी., साहित्य रत्न सदनाम लेकिन पहली ही डिग्री पर दुनिया में बदनाम। मोती जी के साथ उनकी शैक्षिक उपाधि इस प्रकार जुड़ी कि उनके नाम का अंग होकर रह गयी और मोतीलाल मोती बी.ए. हो गए।

शिक्षा ग्रहण करने के बाद मोती बी.ए. पत्रकारिता से जुड़ गए और अग्रगामी, आज, संसार, आपांगत समाचार पत्रों के सम्पादकीय विभाग में कार्य किया। राष्ट्रीय विचारों के चलते सर्वोदय आन्दोलन से जुड़ गए। उन्हें भारत रक्षा कानून के तहत 1942 में स्वामी नाथ सिंह व त्रिलोचन शास्त्री के साथ जेल भी जाना पड़ा। उन दिनों मोती बी.ए. राष्ट्रीय चेतना उभारने वाले गीत लिखा करते थे। उन दिनों उनका प्रमुख गीत था-झण्डा तिरंगा लहराए अपने देश में, हां हां रे अपने देश में...मोती बी.ए. के अधिकांश गीत छायावादोत्तर गीतिकाव्य की मनोभूमि पर विचरण करते हैं। जिससे मिलने की आशा भी वह पहले ही टूट गयी।

जीवन की प्याली अभरे, छूते ही छूते टूट गयी। मिल गए धूलि के जो मधु कण, रस उन्हें उठाता लाया हूं। जो कुछ भी गाता आया हूं-इस तरह के गीतों के गायक की जो छवि बनती चाहिए थी, हिन्दी आलोचकों के केन्द्रोमुखी होने के कारण वह नहीं बन पायी। मोती जी के गीतों की चर्चा जरूर होती रही। लेकिन मोती जी की ये कविताएं सबसे अधिक चर्चा में रही जो कवि सम्मेलनों में धूम मचाती रही-महुआ बारी में आइल बा बहार सजनी औरसनी अउरी डउरअ हिरना, पा जइबअ किनारा, जैसे गीत मोती बी.ए. की पहचान बन गए। लेखन के अलावा बालीवुड से भी मोती जी का गहरा लगाव रहा। नदिया के पार फिल्म में भोजपुरी का जो पुट मोती जी ने दिया वह चलचित्र जगत के लिए सर्वथा नया प्रयोग था।

लगभग दो दर्जन हिन्दी/भोजपुरी फिल्मों गीत लिखने एवं अभिनय करने के बावजूद कभी अपने पर फिल्मी रंग हावी नहीं होने दिया। एक साक्षात्कार में उन्होंने भोजपुरी साहित्य के पितामह ने कहा था मेरे साहित्य जीवन पर फिल्मी रंग कभी हावी नहीं होने पाया वैसे मैंने बहुत से फिल्मों में गीत लिखे हैं। सफलता असफलता के साथ-साथ नाम यश भी अर्जित किया है। मुझे अपने फिल्मी गतिविधियों से संतोष है। सभी बड़े गायकों ने मेरे गीतों को स्वर प्रदान किया।

मोती का स्पष्ट मानना था कि जीवन झंझावातों तथा भटकावों में अगर कहीं तिनके का सहारा है तो वह सिर्फ गीत ही है। मोती जी जब यह कहते है कि -जीवित रहकर सह न सकूंगा, मैं जीवन की पीर, दुःख अब इतना मन भायेगा, एक दिवस ऐसा आयेगा।

दिनाँक 18 जनवरी 2010 के समाचार

मोती बीए की प्रथम पुण्यतिथि पर डॉ. अजय कुमार मिश्र के विचार

मोती बीए : जिन्हें नहीं भूल पाते साहित्य प्रेमी

डा. अजय कुमार मिश्र

बरहज। भोजपुरी के शेक्सपीयर तथा भोजपुरी गीतों के सागर के मोती के नाम से साहित्य जगत में प्रसिद्ध भोजपुरी साहित्य के अपनी श्रेष्ठतम रचनाओं द्वारा अभूतपूर्व ऊंचाइयों पर ले जाने वाले भोजपुरी के पुरोधा मोती बीए के निधन के एक वर्ष बाद भी साहित्य सुधी पाठकों के मन से मोती जी की स्मृतियां ओझल नहीं हो पायी हैं। वास्तव में मोती जी के निधन से हिन्दी के एक युग का समापन हो गया और भोजपुरी साहित्य की अपूरणीय क्षति हुई। जिस मोती पर पूर्वांचलवासी गर्व करते थे उनके निधन से साहित्यिक जगत में जो शून्य उत्पन्न हुआ उसे भर पाना आसान कार्य नहीं है।

मोती जी अब हम लोगों के बीच नहीं रहे लेकिन उनकी कृतियों को पढ़कर ऐसा सहसा विश्वास नहीं होता कि भोजपुरी को अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित कराने वाले सशक्त रचनाकार के निधन के एक वर्ष पूर्ण हो गये। मोती जी ने शुरू में खड़ी बोली की रचनाएं की और उनकी राजेन्द्र बाबू की "असवारी तथा लाचारी" जैसे गीत क्रान्तिकारियों को समर्पित रहे लेकिन इसके बाद उन्होंने अपनी पूरी जवानी भोजपुरी के उत्थान को समर्पित कर दी। मोती जी की **महुआबारी** और **मृगतृष्णा** जैसी रचनाएं भोजपुरी साहित्य की अमूल्य धरोहर है। उनके द्वारा अंग्रेजी के महान साहित्यकार शेक्सपीयर रचित सानेट का हिन्दी अनुवाद एक शानदार रचना है। उनके द्वारा रचित सरस्वती निराला जी की रचनाओं की याद दिलाती है। मोती जी ने कभी स्वाभिमान के साथ समझौता नहीं किया वह एक अनुशासित शिक्षक और सृजन के प्रति संवेदना रखने वाले एक सशक्त रचनाकार रहे। उनकी कालजयी रचनाओं से भोजपुरी जगत को अनन्तकाल तक रोशनी मिलती रहेगी। हिन्दी साहित्य में भारतेन्दु हरिश्चन्द और आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने भाषा के निखार और स्थिरता के लिए जो कार्य किया वही भोजपुरी भाषा के लिए बरहज की सोंधी मिट्टी की सुगन्ध मोती बीए ने किया। बाबा राघवदास के बाद मोती बीए के नाम से बरहज की पहचान रही। मोती जी के बहुआयामी व्यक्तित्व में हिमालय की ऊंचाई रही तो पाण्डित्य में समुद्र की गहराई, विचार में गगन की तरह निर्लिप्त विस्तार और संकल्प में गंगा की तरह पावनता की छाप रही। ऐसे कालजयी रचनाकार की प्रथम पुण्यतिथि पर शत्-शत् नमन।

विचार गोष्ठी आज

बरहज (एसएनबी)। भोजपुरी के पुरोधा मोती बीए के निधन के एक वर्ष पूर्ण होने पर 18 जनवरी को नगर के नन्दना पश्चिमी स्थित लक्ष्मी निवास पर एक विचार गोष्ठी का आयोजन दिन में 11 बजे से किया गया है जिसमें अनेक ख्यातिलब्ध विद्वान अपने विचार रखेंगे। इस आशय की जानकारी गोष्ठी के आयोजक भालचन्द उपाध्याय ने विज्ञप्ति में दी।

दिनाँक 19 जनवरी 2010 के समाचार

मोती बीए का प्रथम स्मरण पर्व पर उनके व्यक्तित्व पर आयोजित गोष्ठी में बोले वक्ता

मोती बीए जैसे कवि थे वैसे ही मनुष्य : आन्जनेय दास

मोती बीए का प्रथम स्मरण पर्व पर उनके व्यक्तित्व और रचनाओं पर आयोजित गोष्ठी में बोले वक्ता

बरहज। साहित्यकार कवि मोती बीए के प्रथम पुण्य तिथि पर मोती बीए मेमोरियल सोसाइटी के तत्वावधान में विचार एवं काव्य गोष्ठी का आयोजन कर श्रद्धांजलि दी गयी। वक्ताओं ने उनके व्यक्तित्व और रचनाओं पर प्रकाश डालते हुए कहा कि ऐसे जन्म ही लेते होते है जो अपने जीवन में कथा बन जाते है और लोग उनके बारे में जानने को उत्सुक होते है। मोती जी उनमें से एक थे।

अध्यक्षता करते हुए आन्जनेय पीताम्बरेश्वर ने कहा कि मोती जी के जाने से साहित्य जगत की अपूरणीय क्षति हुई है उसकी भरपाई असम्भव नहीं है। कवि साहित्य का सृजन होता है। वे जैसे पूर्ण कवि थे वैसे ही मनुष्य। डा. दिवाकर राय त्रिपाठी ने कहा कि मोतीजी की कविताओं का मूल्यांकन निरंतर जारी है। उन्होंने एक नहीं चार वक्ताओं ने स्मरण की। कहा कि जिस प्रकार उन्होंने गद्य लिखा है उसके मूल्यांकन की कसौटी को ढूंढना पड़ेगा। सूर्यराज रावत ने कहा कि मोती जी को साहित्य प्रेमी कभी भूल नहीं पायेंगे। वे महामानव थे।

अभिवक्ता विनोद त्रिपाठी ने कहा कि उनकी कविता में भारत की संस्कृति फूट फूट कर निकली है। पीताम्बर का जोरदार विरोध किया। मोती जी की रचना राजन को सुनाने का उपक्रम करते हुए कहा कि बहुत से रचनाकार सत्ता के दमन से सहमे हैं लेकिन उनकी कलम कुंठित नहीं हुई। इस मौके पर पूर्व प्रधान रामनारायण पाठक, डा. कृष्ण नारायण मिश्र, प्रधानाचार्य गणेश सिंह, अवधेश पांडेय, रामधनी चौबे ने भी अपने विचार व्यक्त किए।

इस अवसर पर कृष्णमोहन पाठक, राकेश श्रीवास्तव, नीरज सिंह डेकर, भालचन्द उपाध्याय, अजयी उपाध्याय, डा. पंकज मिश्र, भोला मुखी आदि मौजूद रहे। इस दौरान सोसाइटी ने कवियों को सम्मान भी किया।

आयोजन : कवि मोती बीए के स्मृति में आयोजित गोष्ठी और कवि सम्मेलन में उपस्थित लोग तथा अपनी रचना पढ़ते रमेश जी आजाद।

ऐसा न हो गद्दारों से गद्दार कहे जाए

बरहज। मोती बीए की प्रथम पुण्य तिथि पर आयोजित गोष्ठी का आयोजन कर साहित्य जगत के लोगों ने अपनी रचना को पढ़ कर उन्हें श्रद्धांजलि दी। गोष्ठी का शुभारंभ डा. [illegible] सिंह ने मोती जी की [illegible] वंदना, [illegible] से सरस्वती वन्दना, गोद लिया से जाम [illegible] के लिए प्रार्थना, से किया। इसके बाद गोपाल त्रिपाठी ने मोती जी की [illegible] पर प्रकाश डाला [illegible] ऐसा न हो गद्दारों से गद्दार कहे जाएं, हम इसलिए भूल है कि गद्दार कहे जाएं। कृष्णमोहन त्रिपाठी ने अपनी कविता के माध्यम से स्मरण करते हुए मोती जी को पूर्वांचल की माटी से जुड़े रचना [illegible] [illegible] अपने [illegible] में भूला [illegible] [illegible] [illegible]

दिनाँक 19 जनवरी 2010 के समाचार

मोती बीए के प्रथम पुण्यतिथि पर समाचार पत्र 'दैनिक जागरण' की प्रतिक्रिया

मोती बीए ने भोजपुरी भाषा को दी नई पहचान

गरीबों को वस्त्र देते पीठाधीश्वर आंञ्जनेय दास।

स्टाफ रिपोर्टर, बरहज/देवरिया: भोजपुरी के पुरोधा मोती लाल उपाध्याय उर्फ मोती बी.ए. की प्रथम पुण्य तिथि पर सोमवार को नन्दना वार्ड स्थित लक्ष्मी निवास पर एक विचार गोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें वक्ताओं ने कहा कि मोती जी भोजपुरी भाषा से नही बल्कि भोजपुरी भाषा मोती जी के द्वारा पहचान का पर्याय बन गयी। वे अन्य भाषाओं पर भी समान अधिकार रखते हुए अपने जीवन काल में ही इतिहास बन गए।

परमहंसाश्रम के पीठाधीश्वर आंञ्जनेय दास ने कहा कि प्रारम्भ में मोती जी के गीत क्रान्तिकारियों को समर्पित रहे लेकिन बाद में अपना पूरा जीवन भोजपुरी को समर्पित कर दिया। उनकी महुआबारी, मृगतृष्णा, मेघदूत, सेमर के फूल, शेक्सपीयर के सानेट्स जैसी कृतियां भोजपुरी की अमुल्य धरोहर हैं। पी.जी.कालेज के पूर्व प्राचार्य राजनरायन पाठक ने कहा कि मोती जी सृजन के प्रति संवेदना रखने वाले सशक्त रचनाकार रहे। उनकी कालजयी रचनाओं से भोजपुरी जगत को अनन्त काल तक रोशनी मिलती रहेगी। राजकीय महिला महाविद्यालय देवरिया के प्रवक्ता डा. दिवाकर प्रसाद तिवारी ने कहा कि जो व्यक्ति अपने जीवनकाल में ही इतिहास बन जाय तो उसका व्यक्तित्व पार्थिव व्यक्तित्व से बहुत विशाल बन जाता है। एड्वोकेट विरेन्द्र त्रिपाठी ने कहा कि एक समग्र कवि के रूप में अनेक भाषाओं की समग्रता की पहचान के साथ उनका मुल्यांकन होना चाहिए। गोष्ठी को श्रीकृष्ण इण्टर कालेज के प्रधानाचार्य डा. अक्षैबर पाण्डेय, आचार्य कृपानरायन मिश्र, प्रधानाचार्य गणेश मिश्र, डा. पी.एन. तिवारी, रामधनी गौंड़, भालचन्द उपाध्याय, डा. ओ.पी.शुक्ल, शिवदास तिवारी, बृजराज रावत, कृष्णमोहन पाठक, विवेकानन्द पाण्डेय, सुशील उपाध्याय, अंजनी उपाध्याय आदि ने भी सम्बोधित किया। संचालन सरोज पाण्डेय ने किया। इस अवसर पर गरीबों को वस्त्र भी प्रदान किए गए। मोती जी के ज्येष्ट पुत्र जवाहर लाल ने आभार व्यक्त किया।

मोती बीए की पुण्यतिथि पर आयोजित विचार गोष्ठी को सम्बोधित करते वरिष्ठ अधिवक्ता वीरेन्द्र त्रिपाठी

बरहज : मोती बीए की पुण्यतिथि पर आयोजित विचार गोष्ठी को सम्बोधित करते वरिष्ठ अधिवक्ता वीरेन्द्र त्रिपाठी।

मोती की रचनाओं में गांव का सौन्दर्य

बरहज (एसएनबी)। मोती जी ने गांव की आत्मा को पहचाना था उनके कोने अतरे में छिपे हुए सौन्दर्य को अपनी रचना प्रक्रिया से जोड़कर देखने का प्रयास किया। उनकी महुआवारी कविता मानव जीवन का सार्थक रूपक है। मोती जी अकेले ऐसे कवि है जिन्होंने हलचलों से दूर रहकर अपनी रचनाओं में छायावाद की नयी व्याख्या दी। उनकी रचनाओं में रोमांस, अध्यात्म, रहस्य, बिरह, राष्ट्रीयता तथा प्रकृति वर्णन से लेकर सामाजिक और राजनीतिक जीवन की विसंगतियों का सजीव चित्रण है। प्रकृति की सजीवता उनकी रचनाओं में सर्वत्र दिखायी देता है। आज मोती जी की महत्वपूर्ण पंक्ति याद आ रही है-

"डूबना था गये डूब हम, चाहे जो भी हो गहराईयां। बुलबुले बनके तैरा करे, अब हमारी ये परछाईयां।।" भोजपुरी के पुरोधा और साहित्य जगत के सशक्त हस्ताक्षर रहे मोती बीए के प्रथम पुण्य तिथि पर नगर के नन्दना वार्ड में स्थित विचार गोष्ठी में उक्त उद्गार वक्ताओं ने व्यक्त करते हुए मोती जी के विराट व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला। मुख्य अतिथि आश्रम पीठाधीश्वर आञ्जनेय दास जी महाराज ने कहा कि शरीर रूप में मोती जी भले न विद्यमान हो लेकिन अपनी कृतियों द्वारा वह आज भी विद्यमान है। अधिवक्ता वीरेन्द्र त्रिपाठी ने कहा कि मोती जी कहा करते थे कि जो निझर गया वो दरख्त हूं मैं, जो गुजर गया वो वक्त हूं मैं, जो मिटे न मिटाये जबरदस्त हूं मैं, पानी की बूंद बहुत सख्त हूं मैं। उनकी ये पंक्तियां उनकी दृढ़ इच्छाशक्ति का संकेत देती है। डा. दिवाकर त्रिपाठी ने कहा कि मोती जी का रचना संसार अत्यन्त समृद्ध रहा। यह सही है कि उन्हें समृद्धि भोजपुरी के माध्यम से मिली लेकिन उन्होंने हिन्दी और अंग्रेजी में भी खूब लेखनी चलायी। आशावादिता उनमें कूट-कूट कर भरी थी जिसे उन्होंने स्वयं अपनी रचना- **मेरा जीवन दीप शिखासम जल जाये छू जिसे अंधेरा, संध्या की निशिपलकों में लो देखो हंसता सुभग सवेरा।।** के माध्यम से प्रस्तुत किया। विचार गोष्ठी को पूर्व प्राचार्य डा. राजनारायण पाठक, डा. अक्षयवर पाण्डेय, ख्यातिलब्ध सरोज पाण्डेय, रमेश तिवारी अन्जान, बालकृष्ण पाण्डेय, रवि प्रकाश तिवारी, बृजराज रावत, आचार्य कृपानारायण मिश्र, रामेश्वर यादव, डा.एस.पी.सिंह, रामधनी प्रसाद तथा भालचन्द उपाध्याय आदि ने सम्बोधित करते हुए उन्हें कालजयी रचनाकार बताया। आगन्तुकों का स्वागत मोती जी के पुत्र भालचन्द उपाध्याय तथा आभार प्रदर्शन जवाहर लाल उपाध्याय ने किया।इस अवसर पर मोती बीए वेलफेयर सोसाइटी के तरफ से गरीब महिलाओं को ऊनी वस्त्र वितरित किया गया। इस अवसर पर मुख्य रूप से सुशील उपाध्याय, अंजनी उपाध्याय, माण्डवी उपाध्याय, ओमप्रकाश दीक्षित, जय गोविन्द गिरी, कैलाश पाण्डेय, डा. पी.एन.तिवारी आदि उपस्थित रहें।

मोती बीए की पुण्यतिथि पर आयोजित विचार गोष्ठी

दिनाँक 20 जनवरी 2010 के समाचार

मोती बीए की प्रथम पुण्यतिथि पर काव्य गोष्ठी

कविता पाठ करते कवि व उपस्थित श्रोता।

जागरण

रचनाओं के माध्यम से व्यक्तित्व पर डाला प्रकाश

स्टाफ रिपोर्टर, बरहज (देवरिया) : मोती बी.ए. की प्रथम पुण्य तिथि पर मोती बी. ए. वेलफेयर सोसाइटी के तत्वावधान में लक्ष्मी निवास पर सोमवार शाम को कवि गोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसमें रचनाकारों ने अपनी कविताओं के माध्यम से मोती जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला।

शुरूआत डा. एस.पी. सिंह ने मोती जी रचित सरस्वती वन्दना से की। इसके बाद मंच पर आए कवि रमेश तिवारी अंजान ने चिरई कतहुं उड़-उड़ जइबू...। प्रस्तुत किया। कैलाश नाथ पाण्डेय ने गवई रहन सहन को रेखांकित करती जहां पग-पग पिरीतिया के छांव .....प्रस्तुत किया।

मोती जी के द्वितीय पुत्र भालचन्द उपाध्याय ने ऐसा न हो गद्दारों से गद्दार कहे जाय, हम इस लिए चुप हैं कि वफादार कहे जाय.... प्रस्तुत किया।

अध्यक्षता कर रहे कुबेरनाथ विचित्र ने अपनी रचना बरहज में बस दो हुए मोती राघवदास इक्यावन दोनों रहे बाकी सब उन्नचास...। संचालन सरोज पाण्डेय ने किया। इसके पूर्व मुख्य अतिथि पी.जी. कालेज के पूर्व प्राचार्य राजनरायन पाठक ने मोती जी के चित्र पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्जवलित कर कार्यक्रम की औपचारिक शुरूआत की। प्रधानाचार्य रामेश्वर यादव,

मोती बी.ए. की प्रथम पुण्य तिथि पर काव्य गोष्ठी

बालकृष्ण पाण्डेय, डा.दिवाकर तिवारी ने भी अपनी रचनाएं प्रस्तुत की।

इस अवसर पर आचार्य कृपानरायन मिश्र, डा. अक्षैबर पाण्डेय, विरेन्द्र त्रिपाठी, अंजनी उपाध्याय, ओमप्रकाश दीक्षित, जय गोविन्द गिरी, जवाहरलाल उपाध्याय, माण्डवी उपाध्याय, सुशील उपाध्याय, राकेश त्रिपाठी, डा. पी.एन. तिवारी, रविप्रकाश तिवारी आदि उपस्थित रहे।

दिनाँक 16 फरवरी 2011 के समाचार

भोजपुरी सिनेमा के पचास साल होने पूरे होने पर मोती बीए पर समाचार पत्र 'अमर उजाला' की प्रतिक्रिया

मोती बीए के गीतों में समाया भोजपुरी का विशाल फलक

भोजपुरी सिनेमा के पचास साल के इतिहास में मोती जी का अप्रितम रहा है योगदान

● अजय कुमार शुक्ल

बलिया। भोजपुरी सिनेमा के पचास साल पूरे होने जा रहे हैं। आधी सदी के इस विशाल कलाखंड में भोजपुरी सिनेमा ने शून्य से शिखर तक की यात्रा की है। अब यह किसी परिचय का मोहताज नहीं है। अंतर्राष्ट्रीय फलक पर भोजपुरी सिनेमा का परचम लहरा रहा है। पर यह उपलब्धि प्रख्यात कवि और गीतकार मोती बीए के जिक्र के बगैर अधूरी है। उनके गीत भोजपुरी सिनेमा की धड़कन बन आज भी उसी लय के साथ धड़क रहे हैं। जो रटकाव वाली रचनाएं हैं उनमें वे रसको घोल देते थे।

मन के रस झनझन देने वाली मिठास और माटी की सोंधी खुशबू बिखेरने की क्षमता है उनके गीतों में। उनका फलक इतना विराट है कि समूचा भोजपुरी परिवेश ही झंकृत हो उठता है। गीत से उन्होंने पंजाबी, संस्कृत और अंग्रेजी भाषाओं में भी लिखे पर उनकी आत्मा तो भोजपुरी गीतों में ही बसती थी। वे एक साथ कुशल अध्यापक, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी और पत्रकार भी थे। सभी भूमिकाओं में विशेष। प्रख्यात भोजपुरी अभिनेता रविकिशन ने कहा कि मोती बीए के योगदान को भुलाया नहीं जा सकता। भोजपुरी सिनेमा उनका ऋणी है। मोती बीए हिन्दी फिल्मों में भोजपुरी गीतों के प्रवर्तक थे। उन्हें बोल मानिनी कोकिल और शिखर कृष्ण अभिनीत फिल्म 'नदिया के पार' के अमर गीतकार के रूप में जानता है तो कोई भोजपुरी में सनेट और हाइकू के प्रथम प्रयोगकर्ता के रूप में। भोजपुरी को विश्व स्तर पर प्रतिष्ठित करने में मोती बीए का महान योगदान भुलाया नहीं जा सकता है। उन्होंने पचास से अधिक फिल्मों में गीत लिखे। दिलीप कुमार और कामिनी कौशल जैसे चोटी के कलाकारों को अपने भोजपुरी गीतों पर थिरकने के लिए बाध्य किया। लता मंगेशकर मोती जी को बहुत सम्मान देती थीं। नदिया के पार हिन्दी फिल्म में उनके गीत को अपनी आवाज दी।

1948 की इस फिल्म में मोती बीए के भोजपुरी के आठ गीत थे। यह पहली बार हुआ था कि कोई हिन्दी फिल्म भोजपुरी भाषी के रूप पर हिट हुई थी। फिल्म एक कदम में उन्होंने दो गीत लिखे। इस फिल्म की 'काटे न कटे रे मोरा दिनवा' यह पहला भोजपुरी गीत था जो किसी पहली हिन्दी फिल्म में लिखा गया। हिन्दी फिल्मों में भोजपुरी गीतों को लिखने का श्रेय मोती बीए को ही जाता है। 1984 में 'ठकुराइन', 'गजब भइले राम', 1987 में 'चम्म चमेली' भोजपुरी फिल्म के लिए गीत लिखा। 'गजब भइले राम में' तो मोती बीए ने अपने अभिनय कला का परिचय भी दिया।

भोजपुरी सिनेमा के 50 साल

● मोती जी का ऋणी है भोजपुरी सिनेमा : रविकिशन

मोती बीए के कालजयी गीत

बलिया। मोती बीए कलाकार थे। पंचतंत्र अर्थ सिनेमा तथा अर्थ के निर्देशक रविंद्र दवे तथा साहित्यकार रामजीत सिंह जैसे गीतकारों की जमात में कलाकार आये। एक बार मोती ने मोती जी पर उनकी नजर पड़ी और फिल्मों में गीत लिखने का मौका दिया। मोती बीए 1944 से 1945 लाहौर में रहे और पंचतंत्र अर्थ सिनेमा की बन रही फिल्म कैसे कहूं के लिए पांच गीत लिखे जो बाद में हिट हुए। बाद में मुन्ना आ गये और सुन्दरा तथा भक्त ध्रुव फिल्म के लिए तीन तीन गीत लिखे। कैसे कहूं के गीत आओ हम आज चले को कौशल कैसर, सुन्दरा के गीत मैं बिछुरे बिछुरे पुतकारी, मन चार हाथ में अपने को लोग आये व लता मंगेशकर ने आवाज दिया।

1947 में बनी फिल्म साजन के लिए तीन गीत लिखे जिसमें राम बांसुरी तान हमारी धुन मन से दुनिया को गीत दान, मुकेश तथा सहियों ने गाया था। 1948 की हिट फिल्म नदिया के पार आठ गीत मोती बीए के ये अंखियां, अंखियां, कहां चलले हो मैं हूं चली अपने मायके थी, छोड़ लाज मंगेशकर ने गाया। 1949 में सावन, 1949 में राम विवाह, निर्मोही, बीए मोटेकाय, 1950 में किसी की याद, 1951 में सावधान, 1952 में बहादुर, मनता, निर्मल, उर्दू भाषा में बनी प्रोडक्शन निमन की फिल्म इंसान का गीत मोती अंखियां ने सारी मधुर कलाम, जरा अंखियां निकाल कमल की आशा भोसले ने गाया है। लाहौर, मेलमाला, मुन्ना के बाद मोती बीए बंबई तक पहुंच गये। मधुर के एलीस ब्रोडकास्ट के लिए 1953 में बनी फिल्म लाहौरी के लिए हास्य गीत 'बड़ा यार रे जरी से जलीन भाई लिखा।

यह फिल्म सुपरहिट हुई थी। 1984 में बनी भोजपुरी फिल्म ठकुराइन, 'गजब भोजपुरी' तथा 1987 को गजब भइले राम में गीत लिखा। मोती बीए को सच नहीं भाये उसे छोड़ कलम चले आये और शिक्षक बन गये।

कुछ फैक्ट फाइल

- 60 के दशक में शुरू भोजपुरी सिनेमा का कारोबार 700 करोड़ तक पहुंच
- बिहार और यूपी के 60-70 सिनेमा घरों में चल रही फिल्में
- 25000 कलाकार इस क्षेत्र में जुड़े हैं
- हर साल 80 से 100 भोजपुरी फिल्में बन रही हैं
- 50-60 लाख तक पहुंच भोजपुरी अभिनेताओं का परिश्रमिक

1. वर्ष 1980 में फिल्म 'गजब भइले राम' की अभिनेत्री उदय राज की साथ नजर आये। 2. शादी समारोह में मोती बीए ताल ने नाच रहे रविकिशन को शिकार किया। 3. फिल्म 'चम्म चमेली' के गीतों की रिकॉर्डिंग के मौके पर अभिनेता रवि मुकुल, निर्माता [illegible]

दिनाँक 23 दिसम्बर 2013 के समाचार

'नया मीडिया मंच' के बैनर तले पाँच पत्रकारों को मोती बीए सम्मान से नवाजा गया।

पांच पत्रकारों को मोती बीए सम्मान

नया मीडिया मंच की कार्यशाला में मंचासीन अतिथि। जागरण

- मीडिया पर विश्व की निगाह अमिताभ ठाकुर

जागरण संवाददाता, देवरिया : 'नया मीडिया मंच' के बैनर तले शनिवार को जिला पंचायत सभागार में पत्रकार संगोष्ठी के दौरान पांच पत्रकारों को मोती बीए सम्मान से नवाजा गया। सम्मान पाने वालों में देवरिया की माटी से जुड़े वह पत्रकार शामिल हैं, जिन्होंने पत्रकारिता को एक नया आयाम देने की कोशिश की है।

कार्यक्रम को बतौर मुख्य अतिथि संबोधित करते आइपीएस अधिकारी अमिताभ ठाकुर ने कहा कि लोकतंत्र के चौथे स्तंभ कहे जाने वाले मीडिया पर आज समूचे विश्व की निगाह है। ऐसे में पत्रकारों की जिम्मेदारी बढ़ जाती है। विशिष्ट अतिथि डा.श्रीकांत सिंह ने कहा कि बीते कुछ समय में उभर कर पटल पर आए सोशल मीडिया की प्रासंगिकता को नजरंदाज नहीं किया जा सकता।

संगोष्ठी को पंकज झा, यशवंत सिंह, अलका सिंह आदि ने संबोधित किया। मोती बीए सम्मान पाने वालों में डा.सौरभ मालवीय, नवदेश्वर पांडेय, संजय मिश्र, प्रो.जय प्रकाश पाठक व राजीव यादव शामिल रहे।

इस मौके पर अरुण पांडेय, सतीश कुमार सिंह, कपिंद्र मिश्र, रामदास मिश्र, विद्यानंद पांडेय, सुशील सिंह, रामकुमार सिंह, दिलीप मल्ल, उदय प्रताप सिंह, आनंद यादव, विवेक धर द्विवेदी आदि मौजूद रहे। कार्यक्रम की अध्यक्षता रामदेव शुक्ल ने की, जबकि संचालन डा.दिनेश मणि त्रिपाठी ने किया।

मोती बीए के पाँचवे स्मृतिपर्व पर अमर उजाला और राष्ट्रीय सहारा समाचार पत्र की प्रतिक्रिया

-श्रवण कुमार गुप्त की श्रद्धांजलि

भोजपुरी साहित्य के युग प्रवर्तक थे मोती बीए

18 जनवरी को मोती बीए के पांचवें स्मृति पर्व पर विशेष

श्रवण कुमार गुप्त

बरहज। मोती बीए का नाम जेहन में आते ही एक असाधारण प्रतिभा वाले व्यक्ति का चेहरा आंखों के सामने आ जाता है। वे कवि, कलाकार के अलावा स्वाधीनता आंदोलन के सजग सिपाही भी थे।

इनकी साहित्यिक यात्रा जीवन मूल्यों, संघर्षों और उधार रिश्तों को संपादन गाथा रही है। सेमरहुत जैसी कृति का भोजपुरी अनुवाद, शेक्सपियर के सानेट और अब्राहम लिंकन की जीवनी का भोजपुरी में रूपांतरण करने वाले मोती बीए 18 जनवरी 2009 को हमसे दूर चले गए। लेकिन वे हमारे बीच अपनी अमर कृतियों के साथ आज भी जिंदा हैं। मोती बीए एक अगस्त 1919 में तहसील बरहज के बरेजी गांव में पैदा हुए थे। इन्होंने 1941 में एमए, बीटी और साहित्य रत्न की डिग्री हासिल कर शिक्षण जगत से जुड़ गये। इसके बाद साहित्य के क्षेत्र में दस्तक दी। साहित्यिक गतिविधि में हिंदी, भोजपुरी, उर्दू के साथ अनुवाद को भी रचनात्मकता है। इनकी रचना संसार पर गौर किया जाए तो मुख्य रूप से भोजपुरी में सेमर के फूल, मोती के मुक्ताक, बन बन बोले रे कोयलिया, कुलाल संग्रह, हिंदी में अलबोध राह, कवि और कविता, पागल क्रम, क्रम बाजे, आंसू डूबे गीत, हर किनार के फूल, इतिहास का दर्द, गुलमी रसायन के साथ ही उर्दू में रस्के गुहर, किस्का-किस्का शबनम शबनम, लव एंड ब्यूटी जैसी रचनाएं प्रसिद्ध हैं। इसके साथ ही शेक्सपियर के सानेट का हिंदी पद्यमय अनुवाद, अब्राहम लिंकन का भोजपुरी रूपांतरण, मेघदूत का भोजपुरी पद्यानुवाद सहित करीब पचास से अधिक विविध रचनाएं हैं। कई पत्र पत्रिकाओं में आलेख, जीवन वृत्तांत और डायरी के पन्ने भी प्रकाशित हैं। उनका मानना था कि दर्द जितना इलाज उतना हो, मुश्किलें जितनी निकाल उतना हो, जिन्दगी में हम जीवे जितना बंदा परवर नाजाज उतना हो। सरमुख महाकवि और साहित्यिक सम्राट मोती जी को समझ पाने के लिए विशाल कविता संसार के सागर में गहरा गोता लगाना पड़ेगा। मोती बीए हिंदी फिल्मों में भोजपुरी गीतों के प्रवर्तक के रूप जाने जाते हैं। नदिया के पार सहित सैकड़ों फिल्मों में गीतों की रचना की है। आज उनके पांचवें स्मरण

फ्रीडम फाइटर घोषित न होने का मलाल

मोती जी आजादी के आंदोलन में भी जुड़े रहे। [illegible] जेल में [illegible] सिंह के साथ कैद भी रहे। लेकिन जीवन भर उन्हें इसका दर्जा नहीं मिल सका। इसके लिए वे प्रयास किये। उनके छोटे पुत्र अजय कुमार उपाध्याय कहते हैं कि पिता जी कहते थे कि जेल जाने का सिर्फ तो मिलता है लेकिन उस समय सरकारी अधिकारी ने यह कहकर हमेशा टाल दी है कि जेल भी छूटने का सिर्फ नहीं मिलता। इसका मलाल उनको जीवन के अंत समय तक रहा।

- सुपरहिट फिल्म नदिया के पार में लिखे थे गीत

जो गुजर गया वो वक्त हूं मैं...

बरहज (एसएनबी)। भोजपुरी गीतों के अप्रतिम रचनाकार मोती बीए का जीवन संघर्ष से भरा था।। आरंभकाल में वे रात में प्रेस का कार्य करते थे और दिन में अध्यापन जिसके बदले उन्हें एक माह में मात्र 8 रुपये पारिश्रमिक मिलता। लेकिन सृजन के प्रति ललक और साहित्य सेवा की अदम्य इच्छा ने उन्हें सदैव गतिमान बनाये रखा। जब आंख देख पाने में असमर्थ थी, कान की श्रवण शक्ति क्षीण हो रही थी, पांव शरीर के बोझ को ढोने में असमर्थ हो रहे थे तब उस समय भी उनकी रचनाधर्मिता में कमी नहीं आयी। उनकी अन्तिम रचना स्वयं इसकी गवाह है- 'कलम न होती जिन्दा तो, कभी का मर गया होता..... पहुंचने के लिए घर पे, खुदा के घर गया होता'।

मोती बीए की 5वीं पुण्य तिथि

बरेजी में 01 अगस्त 1919 को जन्मे मोती का भोजपुरी के प्रति समर्पण का ही प्रतिफल रहा कि उन्हें भोजपुरी के प्रथम साहित्य अकादमी पुरस्कार से नवाजा गया। 1942 में भारत रक्षा कानून के अन्तर्गत इन्हें जेल भी जाना पड़ा। जिसमे इनके साथ मशहूर साहित्यकार तथा स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी डा. शम्भू नाथ सिंह भी थे। जेल से छूटने पर पंचौली आर्ट्स पिक्चर्स लाहौर के प्रोड्यूसर ने इनकी कविता 'रूप भार से लदी तू चली, झूम उठी तरूओं की डाल-डाल' को सुनकर इन्हें पांच सौ रुपये पारिश्रमिक के रूप में तय करके अपनी कम्पनी में गीतकार के पद पर रख लिया। प्रारम्भ में पांच फिल्में बनी। जिसमे अमर आशा, राजपूतनी, निर्मल, कैसे कहूं तथा सुभद्रा हरण आदि मुख्य रही। एक दशक के बाद सन् 1952 तक सैकड़ों फिल्में बनी। जिसमे रामविवाह, साजन, नदिया के पार तथा वीर घटोत्कच आदि फिल्में काफी लोकप्रियता हासिल की। इसमें सबसे बड़ी उपलब्धि फिल्म नदिया के पार से मिली। जो प्रथम भोजपुरी फिल्म थी लेकिन उसके अधिकांश कलाकार भोजपुरी क्षेत्र से बाहर के थे लेकिन जन्मभूमि और भोजपुरी के प्रति लगाव के चलते मोती बीए सन् 1953 में फिल्मी चकाचौंध को छोड़कर अपनी माटी से जुड़ गये और अध्यापन और साहित्य रचना में जुट गये। उसके बाद इन्होंने एक-एक करके विभिन्न भाषाओं (हिन्दी, अंग्रेजी, भोजपुरी तथा उर्दू) में 90 पुस्तकों की रचना कर डाली।

प्रमुख कृतियों में सेमर के फूल, अब्राहम लिंकन, एक शायर, रस्के गुहर, दर्द-ए-गुहर, लव एण्ड ब्यूटी, प्रतिबिम्बिनी, इतिहास का दर्द है। उत्तर प्रदेश सरकार ने राज्य साहित्यिक पुरस्कार, भोजपुरी साहित्य पर साहित्य अकादमी पुरस्कार दिया। सर्वश्रेष्ठ अध्यापक के रूप में राज्यपाल (गणपति देव तपासे) ने पुरस्कृत किया। इनकी कविताएं विभिन्न विवि.में पढ़ायी जाती है। इन पर शोध कार्य भी हुए है। अध्यापन से सेवानिवृत होने पर इन्होंने पुनः कुछ भोजपुरी फिल्मों में गीतकार का काम किया जिसमे ठकुराईन, चम्पा चमेली और गजब भइले रामा प्रमुख रही। मोती जी के व्यक्तित्व को रेखांकित करती उनकी रचना- 'जो गुजर गये वो वक्त हूं मैं, जो निखर गया वो दरख्त हूं मैं। जो मिटे न मिटाये जबरदस्त हूं मैं, पानी की बूंद कहूं सख्त हूं मैं'।। 18 जनवरी 2009 को उन्होंने शरीर को त्याग दिया लेकिन उनकी रचनाएं आज भी जिन्दा है।

राघव वाणी के सम्पादक सत्य प्रकाश पाण्डेय ने मोती बीए की आत्म कथा को विस्तार से प्रकाशित किया

हि0सा0 राघव वाणी, देवरिया गुरूवार 31 जुलाई से 06 अगस्त 2014 पृष्ठ : 3

मोती बी.ए. की आत्म कथा

फिल्म जगत में पदार्पण

मोती बी.ए. की आत्म कथा एक ऐसे संघर्ष शील व्यक्ति की त्रासदी है जो समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार का शिकार होकर स्वयं स्वतंत्रता संग्राम सेनानी होते हुए भी घोषित नहीं हो पाये। उनकी पूरी त्रासदी तीन खण्डों में क्रमशः उनकी डायरी से प्रस्तुत कर रहे हैं।

प्रस्तुतकर्ता– अंजनी कुमार उपाध्याय

माँ की गोद में हँसते, किलकते, मचलते अबोध शिशु को देखकर यदि कोई प्रसन्न होकर अपनी गोद में ले ले और उसे खेलाने और स्वयं उससे खेलने लगे तो माँ को जरूर कुछ राहत मिल जाती है। इसी प्रकार साहीर ने मुझे काशी की गोद से उठा लिया। टीचर्स ट्रेनिंग का कोर्स

हि0सा0 राघव वाणी, देवरिया गुरूवार 31 जुलाई से 06 अगस्त 2014

भाग 01

समाचार पत्र 'निष्पक्ष भारतदूत' में प्रकाशित मोती बीए पर विशेष समाचार

'हम मारब नजरिया के बान ....'

भोजपुरी फिल्मी गीतों के जनक मोती बी.ए. से मुलाकात

भोजपुरी फिल्मों ने हालांकि कोई नया मानदण्ड स्थापित नहीं किया है लेकिन जितने भी दिन का उसका इतिहास है उसने मिली उपलब्धियां भोजपुरी सिनेमा को एकदम से नकारती नहीं। इन्हीं उपलब्धियों में एक नाम है गीतकार मोती बी.ए. का। भोजपुरी फिल्मी गीतों में जितनी ख्याति उन्होंने अर्जित की है उससे हटकर उनका साहित्यिक योगदान भी कम नहीं रहा है। उन्हें सन् १९८० में राहुल सांकृत्यायन पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है। इस वर्ष १९९२-९३ के लिए मोती को अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन का अध्यक्ष बनाया गया है। लगभग ७२ वर्ष की आयु में भी वे अपनी मधुर वाणी एवं कलम साधना के बल पर आज भी फिल्मी गीतों और साहित्य के लिए उसी दम-खम के साथ जुड़े हुए हैं। प्रस्तुत है उनसे बातचीत के प्रमुख अंश :

सर्वप्रथम आप भोजपुरी फिल्मी गीत कब से लिखना प्रारम्भ किये?

[illegible]

मुस्कराते हुए गीतकार मोती बी.ए.

[illegible]

नरेन्द्र कुमार गुप्त 'बरहनी'

[illegible]

'एक बाबा' फिल्म के लिए मेरा गीत था, [illegible] एक और कारण [illegible] दूसरा गीत था, 'आई रा [illegible]

'नसीब' फिल्म के लिए गीत था, 'तू [illegible] दिन आ तू आयेगा, की [illegible] आयेगा।

'[illegible]' फिल्म के लिए गीत था [illegible]

एक अन्य फिल्म जो उस समय [illegible] फिल्म जिसका [illegible] देश की धन थे। उसमें [illegible] गीत [illegible] अयोध्यापुरी, धन्य यहां की फुलवारी जहां राम ने जन्म लिया था, धन्य [illegible] के नर-नारी।' दूसरा गीत था 'सीता [illegible] मन होले प्रेम के हिंडोलवा'। जिसका 'राम हमारो लखन पियारे'। सीता [illegible] 'चलत धरी धिरे-धिरे राजकुमारी।' पाना 'राम-धर [illegible] बंधाओ।'

१९४४ से १९५१ तक कि [illegible] फिल्मों जिनमें मेरे गीत गाये थे वे 'ऐसे कहूं', 'सुभद्रा', 'राम बाण', 'म [illegible] 'किस्मतिस्तान', 'सिंदूर', 'काला [illegible] के पार', 'चम्पा बगीची', 'कि [illegible] पार', 'कपिला', 'सुरेखा' [illegible] 'जमाना' एवं 'निर्मल' आदि।

अचानक फिल्मी दुनिया से कि [illegible] संस्थान की ओर मुड़ने का क्या का [illegible]

[illegible] 'हिन्दी की [illegible] दूसरा गीत था 'हम [illegible] दूसरे गीत की बोल थी, 'चारों ओर अंधेरा है' जिसका का साहित्य [illegible] के कोरस गीत में 'डिलो-मिलो फुलवारी'।

अब आप के कौन-कौन से गीत किन-किन फिल्मों में हैं?

'[illegible]' फिल्म में मेरा गीत था, 'हम [illegible] तुम्हारे [illegible]। दूसरा [illegible] के [illegible] [illegible] हो। जो काफी पसंद किया [illegible] 'गोकुल के कृष्ण कैसे [illegible] दूसरे गीत की बोल थी, 'चारों ओर अंधेरा है' जिसका का साहित्य [illegible] के कोरस गीत में 'डिलो-मिलो फुलवारी'।

अब आप के कौन-कौन से गीत किन-किन फिल्मों में हैं?

'[illegible]' फिल्म में मेरा गीत था, 'हम [illegible] तुम्हारे [illegible]। दूसरा [illegible] के [illegible] [illegible] हो। जो काफी पसंद किया [illegible]

लाहौर में आप कब तक रहे और बम्बे आने का कारण क्या था?

१९४४ से ४६ तक लाहौर में रह [illegible] आया उसी समय उनके भाई [illegible] से मुलाकात हुई जो प्रफुल्ल पिक्चर्स के संस्थापक, निर्देशक थे तथा 'सुभद्रा' [illegible]

मार्च ५२ में हरा-भरा, भरा-पूरा बम्बे छोड़कर स्वास्थ्य ठीक रहने के कारण अपने गांव चला आया और १९५२ से ८० तक मैं श्री कृष्ण इ० कालेज आरा [illegible] देवरिया में अध्यापक रहा क्योंकि मैं १९४६ तक बी०ए०ब०यू० से बी०ए० अंग्रेजी एवं एम०ए० इतिहास से डिग्री ले ली थी उन दिनों मैं 'संसार' समाचार पत्र में नाम भी आता था जब बाबू राव विष्णु पराड़कर जी सम्पादक [illegible]

भाग 02

समाचार पत्र 'निष्पेक्ष भारतदूत' में प्रकाशित मोती बीए पर विशेष समाचार

से १९८० में अवकाश ग्रहण करने के बाद पुनः मैं बाम्बे गया और सांई राम फिल्म द्वारा निर्मित भोजपुरी फिल्म 'गजब भइले रामा' में अपने चार गीत दिये और पहली बार फिल्म में प्रत्यक्ष भूमिका निभाते हु नायिका पद्मा खन्ना के पिता की भूमिका निभाई। प्रमुख गाने थे, 'चिरई बड़ा जुलूस तू कइल घर में खोता लगउल ना।' दूसरा गीत था, 'ससुरा से नैहर जाइब कंवन मुंह दे खाइब।' तिसरा, 'मह मह महके ले फुलवरिया कहां चललू गुजरिया।' चौथे गाने की बोल थी, 'ऐएन दुनिया एसन लोग राम जी बनवले रहें ना।' गाने तो काफी सराहनीय एवं प्रशंसनीय रहे। कैसेट भी बाजार में धड़लले से बिक रहे है परन्तु दुर्भाग्य वश फाइनेन्सर और निर्माता में झंझट होने के कारण आज भी फिल्म बाजार में नहीं आ सकी।

१९८३ में राजेश फिल्मस् द्वारा निर्मित 'ठकुराइन' फिल्म के लिए चार गाना लिखे जिनमें प्रमुख थे- पहला था, 'आजा मोरे राजा करेजा में समाजा कि तुम बिन निदिया ना लागे।' दूसरा था, 'लामे के लाम पर न जइह परदेशी सइयां।' तिसरा, 'मोरी अरज सुनो महाराज।' चौथा था, 'जवनिया जवनिया के मेले बोई तब नथुनी-झुलनिया के खेल होई।

ऐसे तमाम समाचार पत्र/पत्रिका/स्मारिका है जिन्होनें लम्बे समय तक श्री मोती बीए के कविताओं/लेखों/विशेष लेखकों के, श्री मोती बीए के सन्दर्भ में विचार, प्रस्तुत करते रहें हैं, जिनमें कुछ पत्रिकाओं ने तो इन पर विशेषांक भी निकाला। हम सम्पूर्ण विशेषांक तो प्रस्तुत करने में सक्षम नहीं है, लेकिन विशेषांक का सम्पूर्ण सन्दर्भ देने का प्रयास कर रहें है साथ ही श्री मोती बीए की कुछ कविताएं और लेख भी सम्पादक सम्मान जनक ढंग से प्रस्तुत करते रहें है, इन सभी तथ्यो का हम क्रमबध्य प्रस्तुत कर रहें हैं।

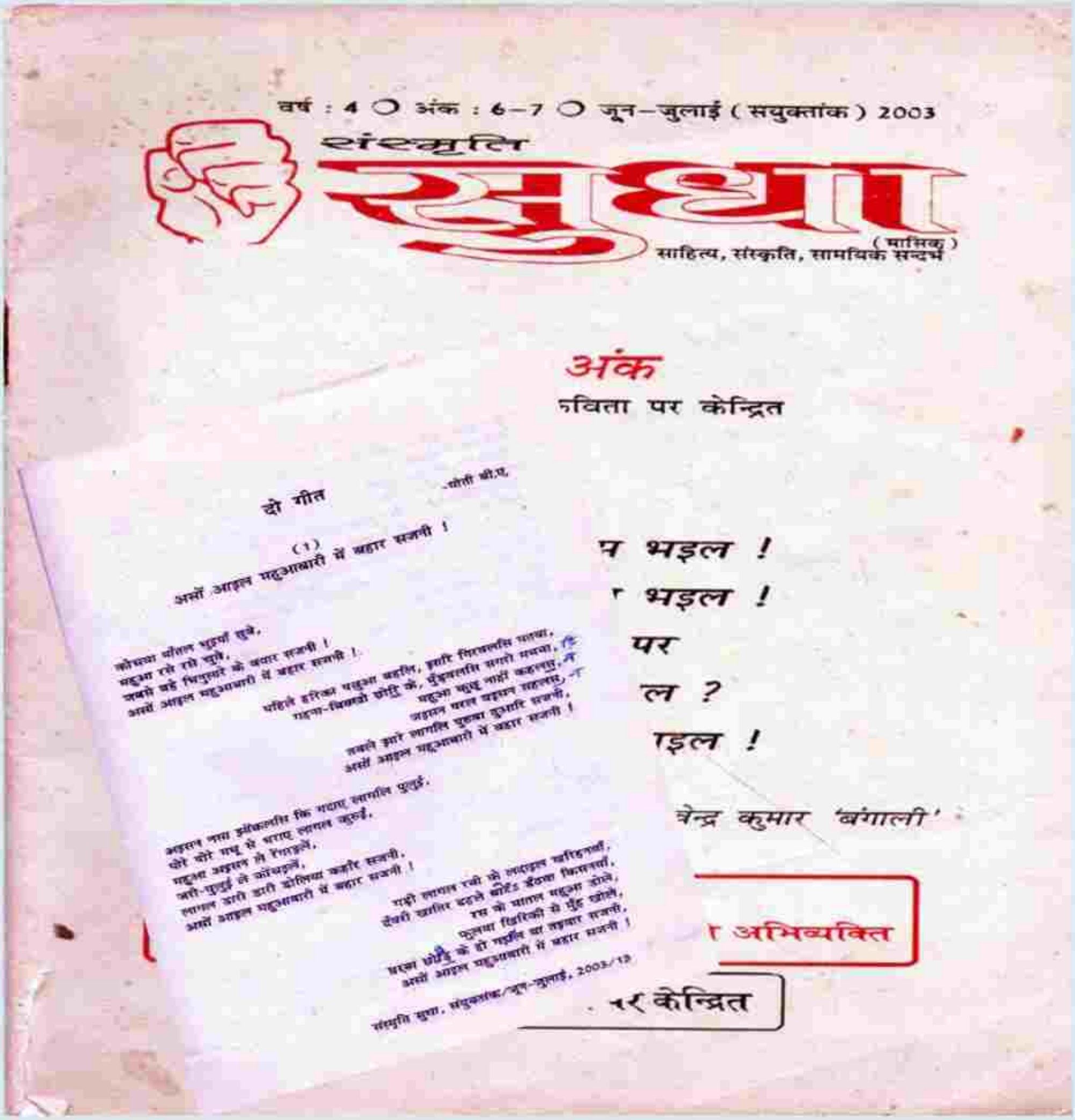

वर्ष : 4 ○ अंक : 6–7 ○ जून–जुलाई (संयुक्तांक) 2003

संस्कृति सुधा (मासिक)

साहित्य, संस्कृति, सामयिक सन्दर्भ

अंक

कविता पर केन्द्रित

दो गीत

(1)

असों आइल महुआबारी में बहार सजनी !

भइल !

भइल !

पर

ल ?

इल !

न्द्र कुमार 'बंगाली'

अभिव्यक्ति

र केन्द्रित

भोजपुरी माटी में श्री मोती बीए के लेख आया करते थे

भोजपुरी माटी

षद क मुख पत्र

नवीनता के आग्रह : समय के मांग

❑ मोती बी० ए

वर्ष-16 अंक-2 फरवरी 93 मूल्य 5/-

साहित्यिक पत्रिका सरयू धारा ने मोती बीए पर विशेषांक निकाला था

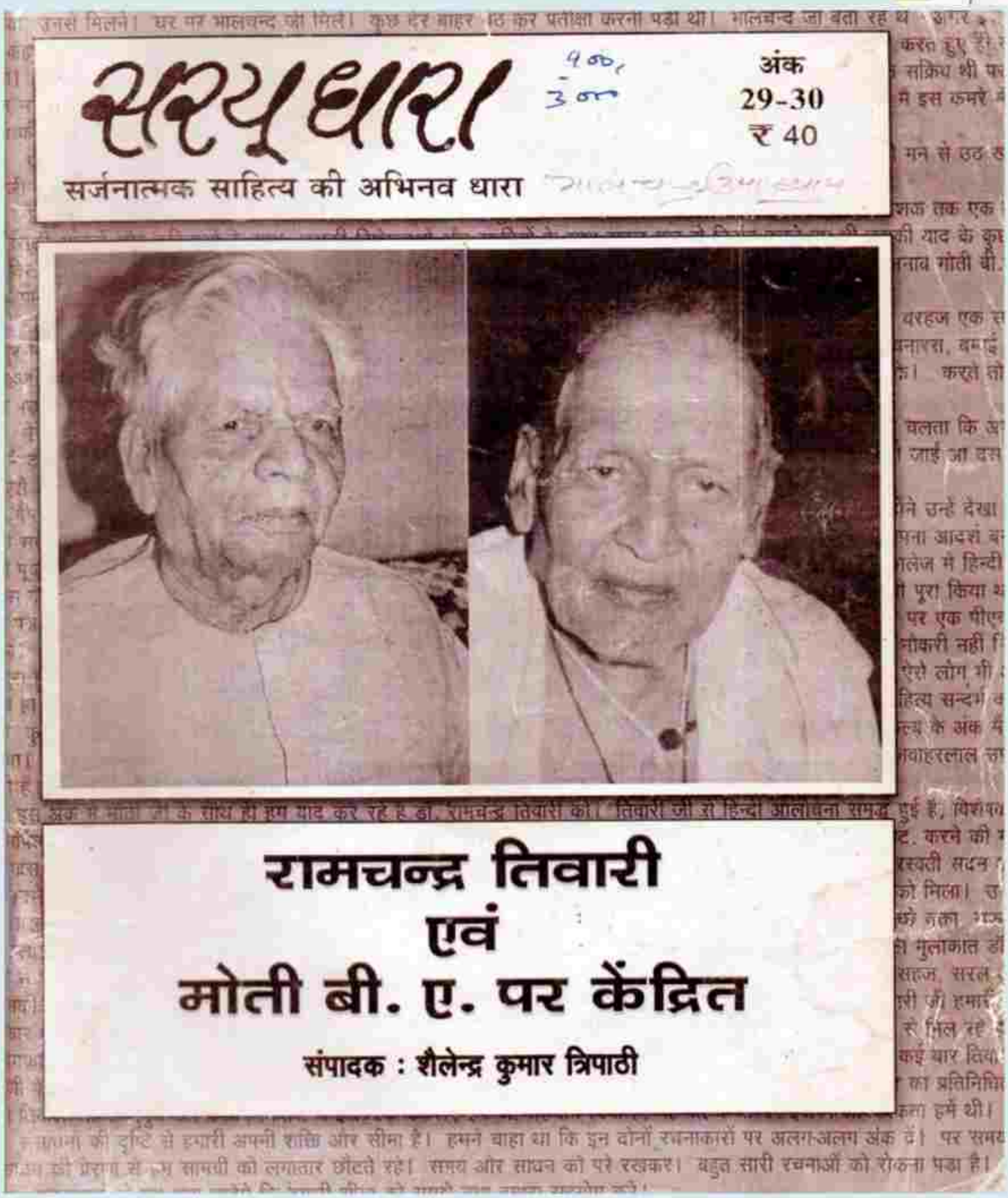

सरयूधारा

सर्जनात्मक साहित्य की अभिनव धारा

अंक 29-30

₹ 40

रामचन्द्र तिवारी एवं मोती बी. ए. पर केंद्रित

संपादक : शैलेन्द्र कुमार त्रिपाठी

सरयू धारा में प्रकाशित मोती बीए की कविता

बादल साँझ

* मोती बी० ए०

घन मत ऐसे चित्र बनाओ
उमड़ घुमड़ घन दल पर दल छा
सर्वोन्नत गिरि सा सज जाता
जिसके अतल देश में
घन शिशुओं का
लघु द्रुम दल लहराता
जिसके एक छोर से चलकर
वह घन
साथ क्षितिज के मिलकर
पर्वत की दीवार बनाता
जिसके बीच

साँझ की लाली
अमृत बूंद की सरि बन आती
पर्वत के नीचे सरवर की
दर्पण छवि,
मेरे मन भाती
झिल मिल झिल मिल
अन्धकार का पट धरती पर छाता
जिसके भीतर
घन घाटी का
दृश्य अपूर्व सुहाता।

घन पर्वत के एक शिखर पर–
बैठी दीप जलाती
बाट जोहती आशा किसकी
नव युवती सी एक तारिका,
ज्योतिर्मय इङ्गित से नभ बाला–
किसको है, कहाँ बुलाती।

पंथ नीड़ का भूला भटका
एक विहग पथ में अकुलाता,
इसकी व्याकुलता से मेरा–
मन करुणा से भर भर आता
जीवन से तटस्थ निर्जन पथ पर–
एकाकी चलता,
जान न पाता
मेरा जीवन दीपक है क्यों जलता।
शुष्क हृदय में
मुझ नीरस पर
व्यर्थ न अमृत बूंद बहाओ,
घन मत ऐसे चित्र बनाओ।

::*

जून 1997 में श्री अशोक द्विवेदी ने अपनी पत्रिका 'पाती' मोती बीए को समर्पित की थी।

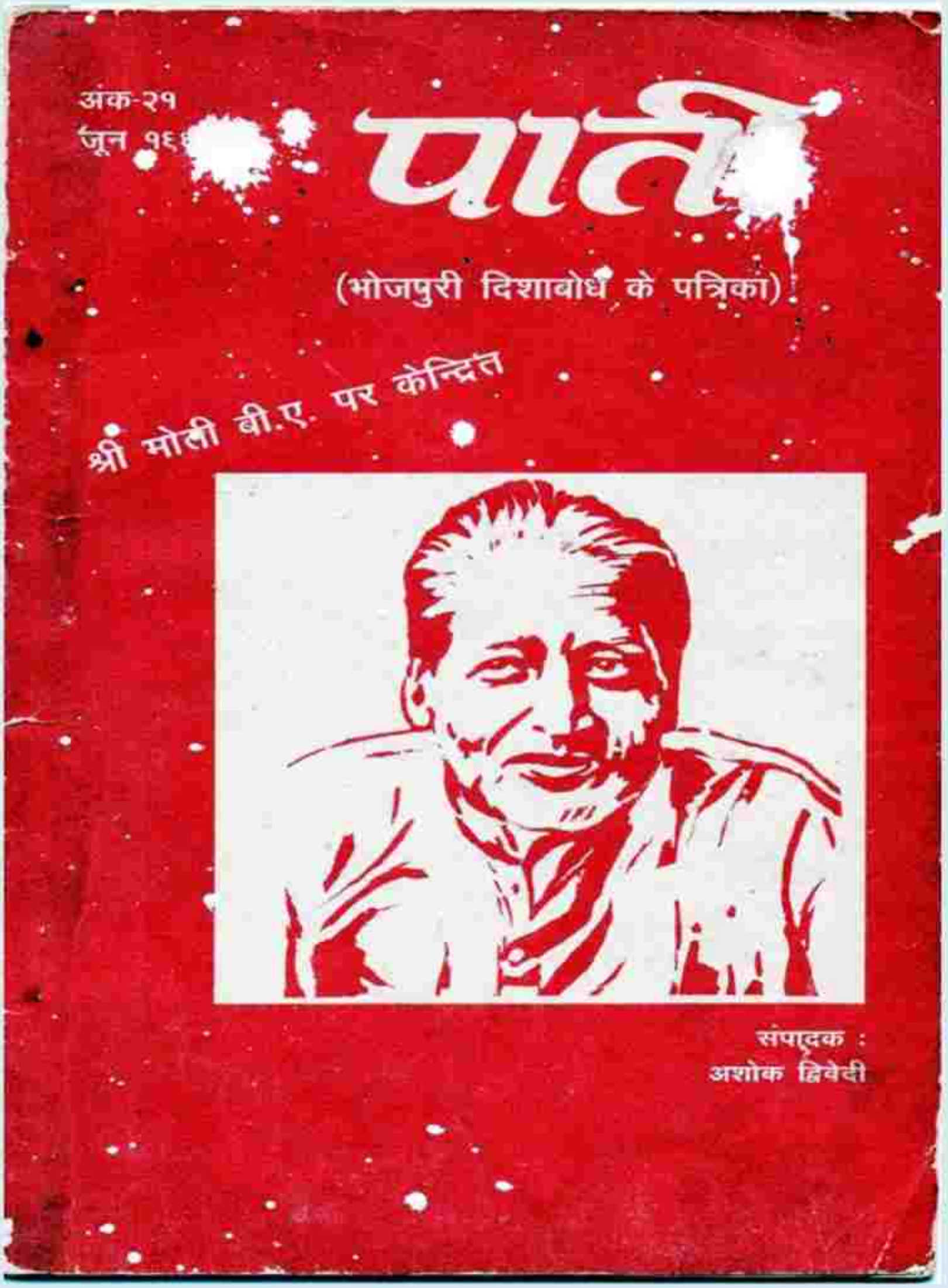

मोती बी.ए. पर अंशुमाली जी के विचार, 'पाती' से

मोती जी के मुक्तक

❑अंशुमाली

डूबि के तूँ समुन्दर में देखेलऽ का
एइजा 'मोती के मुक्तक' के मोती मिलल
केहू मुँह से कहे ना कहे, दिल कहे
कतने अन्हरन के अँखियन में जोति मिलल।

भइया 'मोती के मुक्तक' त आँजन हवे
आँखि में जब परी परपरइबे करी
कठुआइल केहू कहीं केतनो रहे
मोम अइसन कबो करकरइबे करी।

मइल मनवाँ के आपन तनी पोंछि के
जे जे 'मोती के मुक्तक' के जेतने पढ़ी
ओकरा निष्पक्ष होके कहे के पड़ी
दाम 'मोती के मुक्तक' के ओतने चढ़ी।

आँखि के फारि के का निहारऽ तारऽ
हमरा हथवा में मोती के मुक्तक हवे
तोता मैना के ई ना कहानी हवे–
हमरा खातिर ई गीता के पुस्तक हवे।

महादेवी वर्मा और मोती बीए 'सरयू धारा' से

मोती बी० ए०

सब बुझे दीपक जला लूँ--महादेवी

सन् १९३५ में महादेवी जी की कविताओं से परिचित होने का मुझे अवसर मिला। तब मै इन्टर मीडियेड प्रथम वर्ष का छात्र था। महादेवी जी के अनुज श्री मनमोहन वर्मा हम लोगों को अंग्रेजी पढ़ाते थे। मैं उनके निकट सम्पर्क में था। महादेवी जी की तीन काव्य पुस्तकें नीहार, रश्मि और नीरजा उनसे लेकर मैंने पढ़ी. श्री मनमोहन वर्मा को बांसुरी वादन से बहुत प्रेम था महादेवी जी के गीतों को वे बांसुरी की धुन में गाते थे. 'ओ विभावरी' वाला गीत प्रायः सुनाते रहते थे बांसुरी की धुन में। पन्द्रह-सोलह वर्ष के ग्रामीण छात्र के लिये यह संयोग दुर्लभ था। महादेवी जी की कविताओं ने इसी अवस्था में मेरे मन प्राण में अपना घर बना लिया था। मैं भी नीरजा, रश्मि और नीहार के अनेक गीत गाया करता था--

चांदनी का अंग राग
मांग में सजा पराग
रश्मि तार बांध मृदुल
चिकुर भार री। ओ विभावरी (नीरजा)

इन कनक रश्मियों में अथाह
लेता हिलोर तम सिन्धु जाग
बुद बुद से बह चलते अपार
उसमें विहगों के मधुर राग
सौरभ का फैला केश-जाल
करतीं समीर परियां विहार
गीली के सर-मद झूम-झूम
पीले तितली के नव कुमार
मर्मर का मधु संगीत छेड़-
देते हैं हिल पल्लव अजान
चुभते ही तेरा अरुण बान (रश्मि)

× × ×

निशा को धो देता राकेश
चाँदनी में जब अलकें खोल
कली से कहता था मधुमास
बता दो मधु मदिरा का मोल

× ×

मै मतवाली इधर
उधर प्रिय मेरा अलबेला सा है
उर तिमिर मय, घर तिमिर मय
चल सजनि दीपक बार ले
निःश्वासों की नीड़ निशा का
बन जाता जब शयनागार (नीहार)

इण्टर मीडियेट के अध्ययन क्रम में हिन्दी मेरा पाठ्य विषय नहीं था तथापि महादेवी जी की उपरोक्त काव्य पुस्तकों की

मोती बीए पर अमृत महोत्सव

अखिल भारतीय भोजपुरी परिषद्, उत्तर प्रदेश का मुख पत्र

यह प्रति - १५ रूपये

मोती बी.ए.अमृत महोत्सव विशेषांक

भोजपुरी लोक

प्रधान सम्पादक - डॉ० राजेश्वरी शॉडिल्य, अतिथि सम्पादक - डॉ. लारी आज़ाद

(भोजपुरी - हिन्दी की साहित्यिक, सांस्कृतिक एवं वैचारिक मासिकी)

जनवरी-फरवरी - १९९९ (सयुक्तांक), माघ-फागुन - २०५५ विक्रमीय संवत

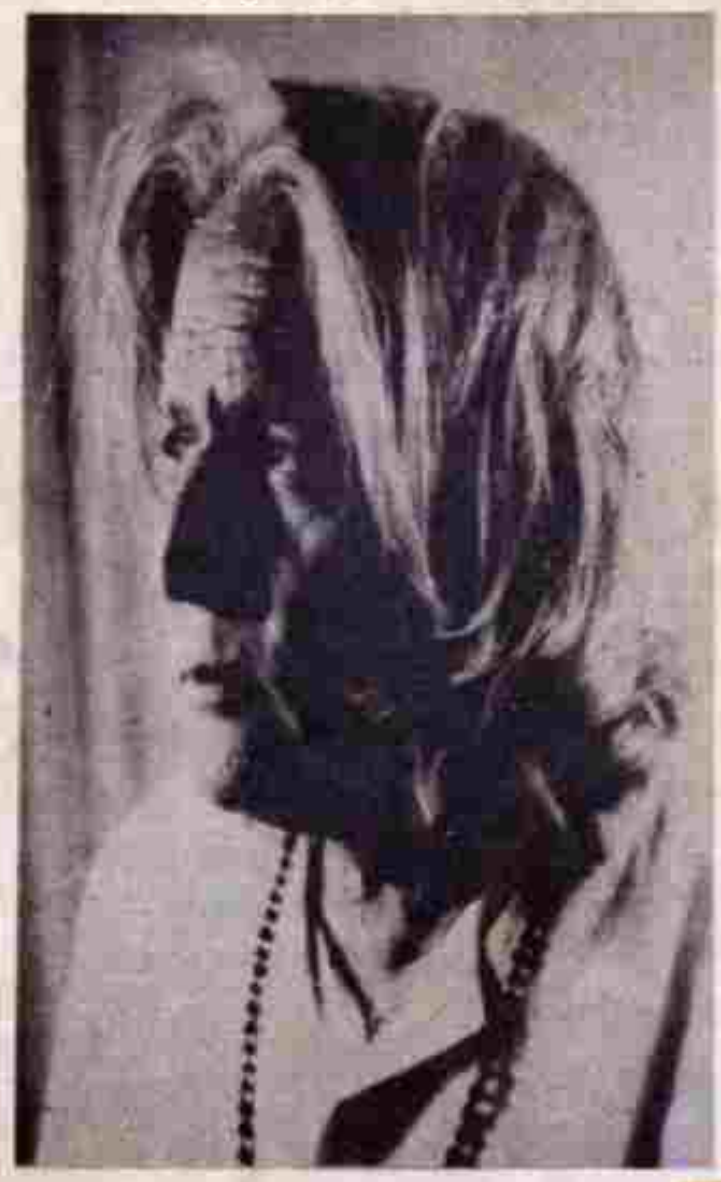

कविवर मोती बी० ए०, जन्म ०१ अगस्त सन् १९

भोजपुरी क्षेत्र की विभूतियाँ — अमृत महोत्सव के अवसर पर

'पूर्वांचल के अनमोल मोती' ; मोती बी. ए.

(८०वीं जयंती एक अगस्त १९९९)

– डॉ. [illegible]
बी. ए., डी. फिल., डी. [illegible]
[illegible] (उ. प्र.) – [illegible]

[illegible]

मोती बी. ए. का पूरा नाम [illegible] है। इनका जन्म एक [illegible] परिवार में [illegible] में हुआ था। [illegible] अपने को [illegible] मानते हैं। इनके पिता का नाम [illegible] उपाध्याय है। बचपन में [illegible], [illegible] तथा बनारस में पढ़कर उच्च शिक्षा-दीक्षा प्राप्त की। बनारस में उच्च शिक्षा प्राप्त करते में मोती जी को कभी कठिनाई झेलनी पड़ी है, जिसका पूरा विवरण देना यहाँ संभव नहीं है। आर्थिक कठिनाई को झेलते हुए आगे चलकर मोती जी ने एम. ए. (हिन्दी) बी. टी., साहित्यरत्न की उपाधि धारण की। इसी दौर में मोती जी के पूर्व [illegible] अवस्था में कविता के बीज अंकुरित हो उठे। मोती जी एक [illegible] हैं, कविवर मोती जी की प्रथम [illegible] 'कविता' [illegible] है। एक [illegible] यह बड़ा सरल हो जाती है:-

[illegible]

[illegible] हिन्दू विश्वविद्यालय के [illegible] में [illegible] मोती जी की भेंट [illegible] हुई। [illegible] विश्वविद्यालय में अध्ययनरत थे। इस [illegible] की प्राप्त मोती जी के अन्य हुआ। बनारस में [illegible] जी को विद्यालय जिसे "सुमन", [illegible] शिव, [illegible] शुक्ल, [illegible] शिव आदि [illegible] कवियों का सानिध्य व सहयोग प्राप्त हुआ। [illegible] रचनाओं से [illegible] मोती जी को [illegible] प्राप्त हुआ। [illegible] कविता [illegible] हुई। एम. ए. की [illegible] करने के आधार से [illegible] रह जाना पड़ा। [illegible] 'सहज-सौरभ' में बी. ए. उपाधि व कविता में [illegible] प्रदान किया कि उन्हें अपना कविता [illegible] ही स्वीकार पड़ा। [illegible] आज तक [illegible] मोती बी. ए. के [illegible] अपना बने रहेंगे।

मोती जी जीवन के प्रारंभ से अन्त तक [illegible] संघर्ष करते चले आ रहे हैं -[illegible] जगह से बदल जगह में [illegible] संघर्ष से है। [illegible] पैतृक जगह की [illegible] को लेकर [illegible] आज भी आप संघर्ष व जीवन संघर्ष का [illegible] इस [illegible] संघर्ष की स्थिति में कविवर मोती जी [illegible] ८० वर्ष [illegible]

पत्रिका 'भोजपुरी साहित्य' में मोती बीए

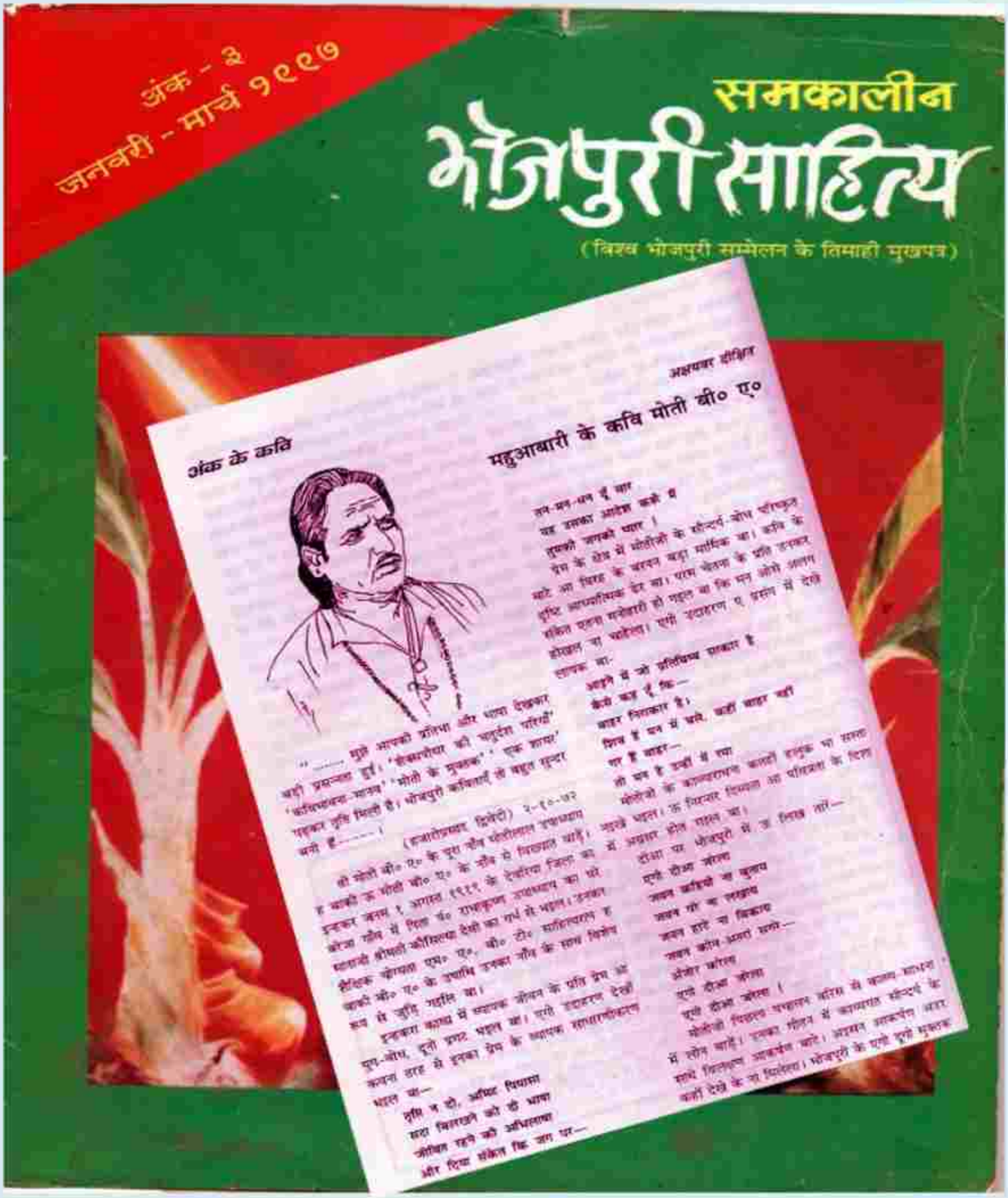

अंक - ३
जनवरी - मार्च १९९७

समकालीन
भोजपुरी साहित्य
(विश्व भोजपुरी सम्मेलन के तिमाही मुखपत्र)

अक्षयवर दीक्षित

अंक के कवि

महुआबारी के कवि मोती बी० ए०

मोती बी० ए० के पूरा नाम मोतीलाल उपाध्याय है। उनका जन्म १ अगस्त १९२९ के देवरिया जिला का में अग्रहार गाँव गाँव में पिता पं० रामकृष्ण उपाध्याय का घर है। माताजी श्रीमती कौशिल्या देवी का गर्भ से भइल। उनका शैक्षिक योग्यता एम० ए०, बी० टी० साहित्यरत्न बाकी बी० ए० के उपाधि उनका नाम के साथ विशेष रूप से जुड़ि गइल बा।

इनका काव्य में व्यापक जीवन के प्रति प्रेम अ पूर्ण-बोध, दृष्टि स्पष्ट भइल बा। एगो उदाहरण देखी कथन तरह से इनका प्रेम के व्यापक साधारणीकरण भइल बा—

तृषि न हो, अधिक पियासा
सदा मिलरहले को हौ भाषा
जीवित रहले की अभिलाषा
और दिया संकेत कि जग पर—

अइसन में जो प्रतिभिन्न व्यवहार है
केवे कइ दूँ कि—
बाहर निराकार है,
शिव है घन में घरे, वही बाहर बही
पर है बाहर—
सो घन है उन्हीं में रमा

मोतीजी के कालजयी कालजी हमुक भा समस्त दीपावली के पर्वपरंपरा के दिशा

दीया पर भोजपुरी में उ लिख ताँ—

एगे दीया जोरल
जवन कोइली ज कुहुय
जवन गाँ ज लहकाय
जवन हारे ना सिकाय
जवन कोन-अन्धरा भगे—
अँजोर जोरल
एगे दीया जोरल
एगे दीया जोरल।

मोतीजी पिछड़ल पन्हासन क्षेत्रन से कलम-साधना में लीन बाँ। उनका गीतन में कालजयी सौन्दर्य के साथे शिल्पगत आकर्षण बाटे। अइसन आकर्षण आज काहीं देखे के ना मिलेला। भोजपुरी के एगो पूरा मुकाम

1969 में मोती बीए ने 'अनन्त ज्योति' का सम्पादन किया

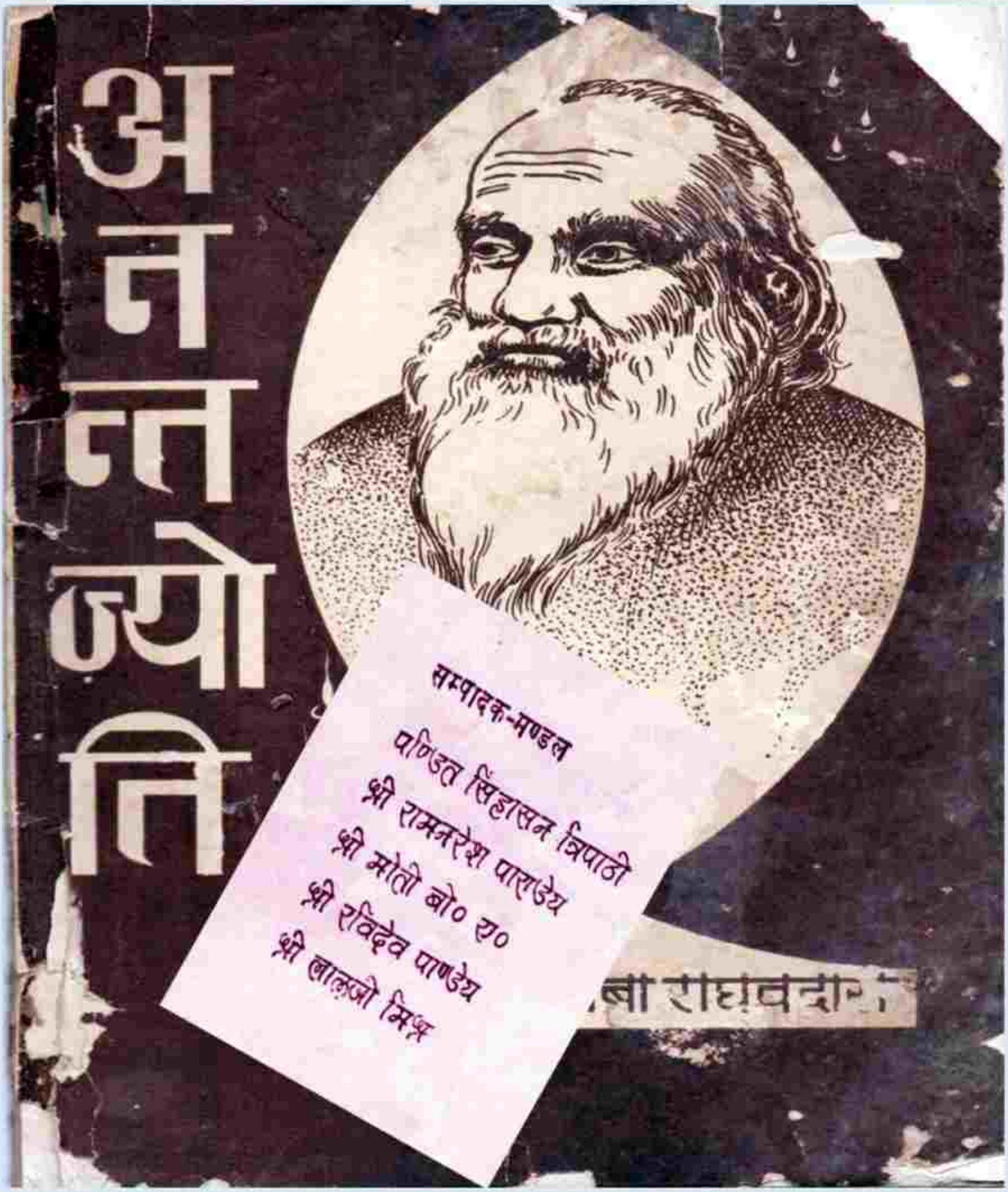

1961 में एस. के. इ. कालेज में प्रथम बार पत्रिका को श्री मोती बीए ने संपादित किया।

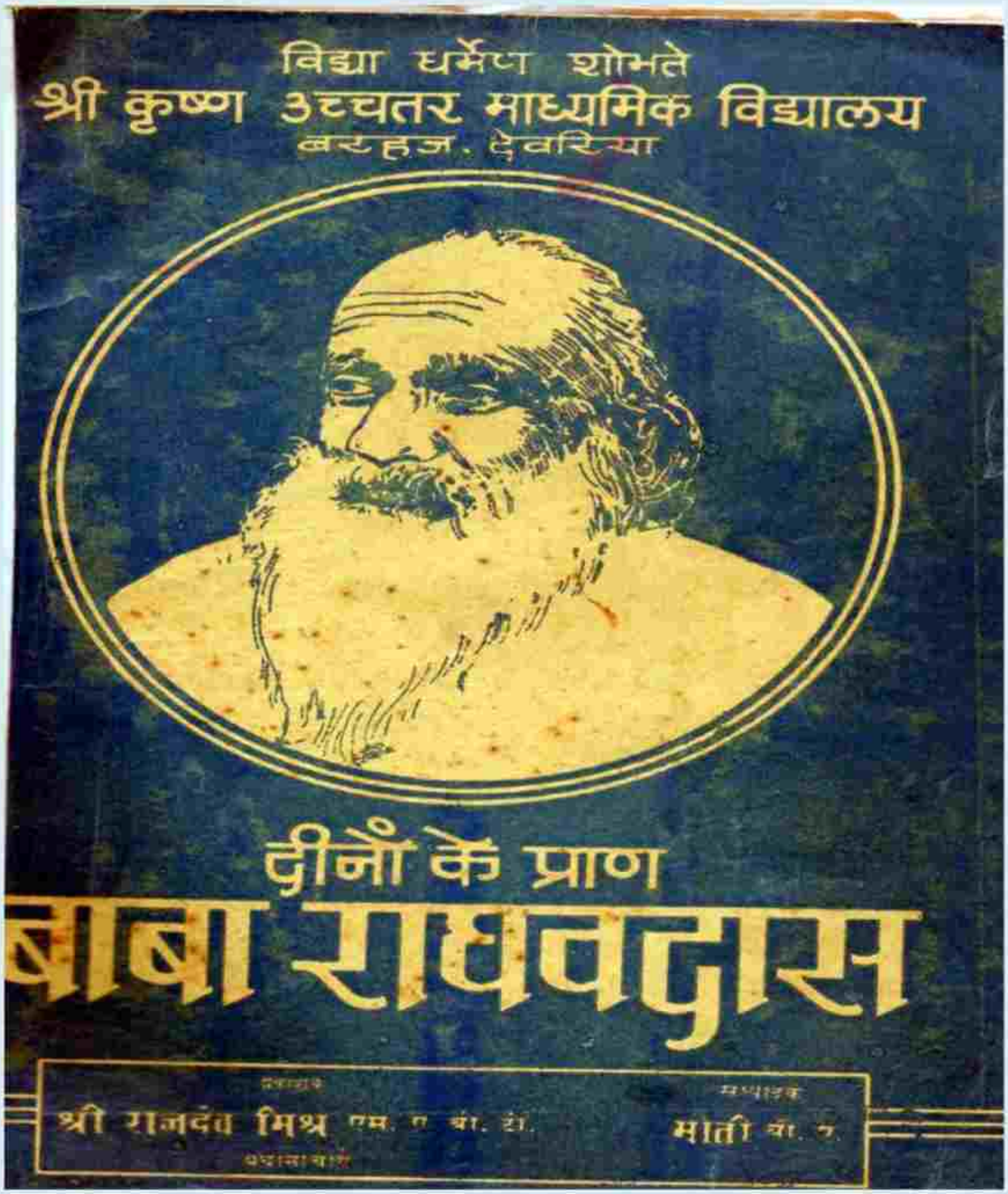

देवरिया के प्रतिनिधि साहित्यकार

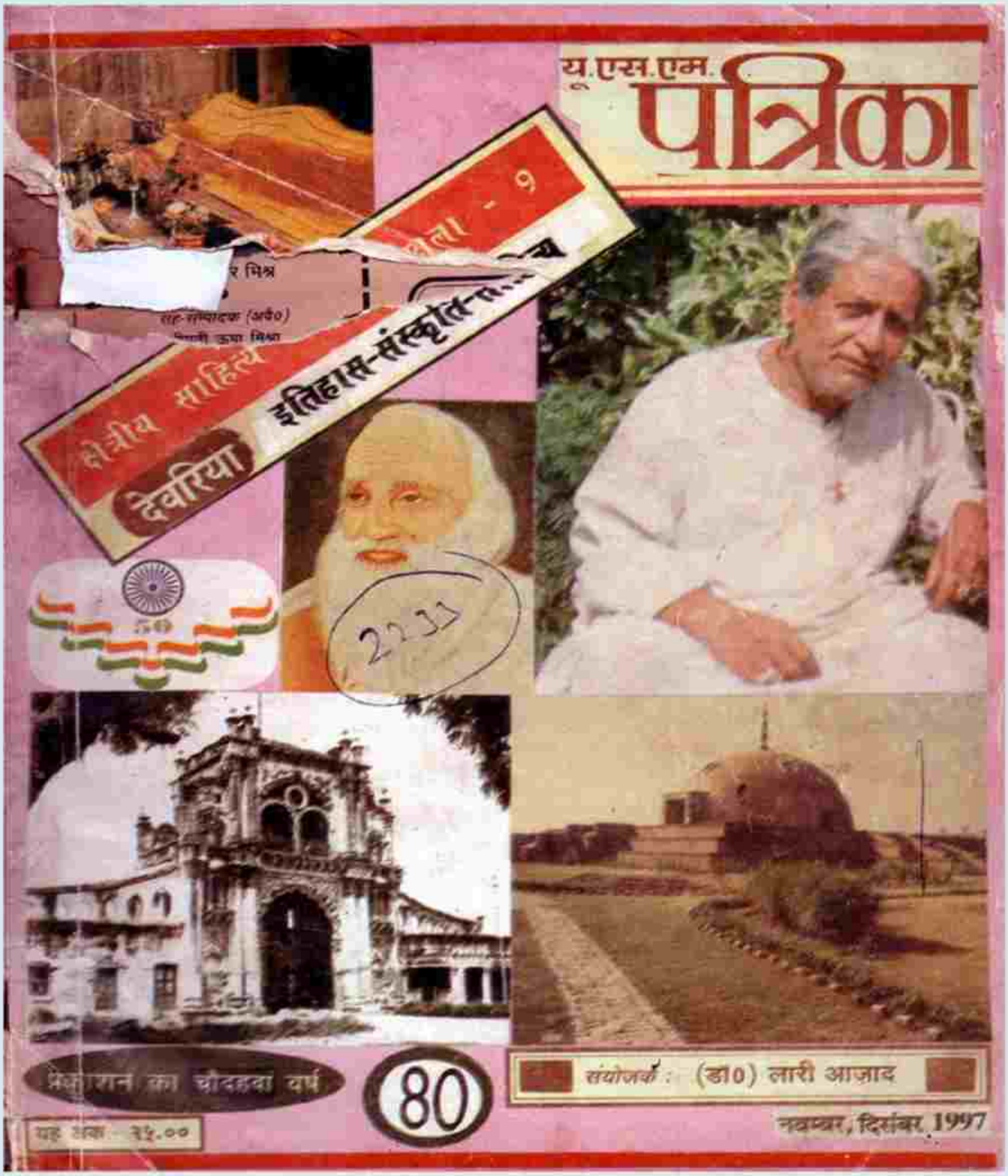

हिन्दी अकादमी हैदराबाद से प्रकाशित 'संकल्प' मोती बीए के नाम समर्पित रहा।

एगो दीआ जरेला

–डॉ. तैयब हुसैन पीड़ित

मोती बी. ए. भले मोतीलाल उपाध्याय होखस, एम. ए., बी. टी. साहित्यरत्न बाकी ऊ विजयेन्द्र स्नातक नियन खाली मोती बी. ए. बाड़न। असल में इहे ऊ डिग्रीह जवना से भारी से भारी प्रतियोगी परीक्षा में आदमी सामिल हो सकेला आ बन सकेला बड़ से बड़ ओहदा के हकदार।

मोती बी. ए. के जो हम एह सन्दर्भ में उनकर साहित्य लेके परखीं त साफ लडकी कि एगो कवि आ–

मृगतृष्णा, कवि और कविता, समिधा, कवि-भावना मानव, अश्वमेघ यज्ञ, आँसू डूबे गीत, बादलिका, पायल छम-छम बाजे, हरसिंगार के फूल, प्रतिबिम्बनी, कुछ गीत कुछ कविता, गीत के चरण, लाहारै की नहर, तिनका-तिनका, शबनम-शबनम, इश्के गुहर, दर्दे गुहर, राशन की दुकान, इतिहास का दर्द, सेमर के फूल, मोती के मुक्तक, बन-बन बोलले कोइलिया, भोजपुरी सॉनेट, तुलसी रसायन, अब्राहम लिंकन (जॉन ड्रिंक वाटर के नाटक), शेक्सपियर के सॉनेट, रावर्ट ब्राउनिंग के 'रबीबेन एजरा', कालिदास के 'मेघ-दूतम' के भोजपुरी पद्यानुवाद; एस. टी. कालरीज के 'दि हारम ऑफ दि एन्सेंट मैरियर', डी. जी. राजदी के 'दि क्लेसेड डेमोजेल' के हिन्दी पद्यानुवाद; अलग से अंग्रेजी में–'लव एण्ड ब्यूटी' सॉनेट के रचना!

यानी हिन्दी, भोजपुरी, अंग्रेजी, उर्दू, संस्कृत तकले के रचनी ससार!

मोती बी. ए. जोएँ सौ बरिसो से ज्यादा

–कुबेरनाथ मिश्र 'विचित्र'

बंगलोर लाहौर बम्बई पिक्चर खूब बनौलें,
हिन्दी उर्दू भोजपुरी अंग्रेजी कविता गौलें।
कृष्णा कालिज बरहज में लरिकन के खूब पढ़ौलें;
टी. वी. अउर रेडियो पर ई रचना खूब सुनौले ॥ १ ॥

सरस्वती की मन्दिर में 'सेमर के फूल' फुलाइल,
'महुआबारी में बहार' इनहीं की भइले आइल।
'प्रतिबिम्बिनी' 'गुहर रश्के' 'राशन दुकान' खोलाइल;
'तुलसीदास' महाकवि पर मरजादित ग्रन्थ रचाइल ॥ २ ॥

तीन पुत्र पुत्री इनिके धरती के शोभा पाने,
पत्नी सरगे चलि गइली ई हरदम हुटुकत बाने।
कवि सम्मेलन मंच बिना इनिकी ना शोभा पावे;
सरस्वती-वन्दन बनावल इनिकार दुनियाँ गावे ॥ ३ ॥

महाकवि कृष्ण कल्पित के फेसबुक आई.डी. से

Krishna Kalpit
20 घंटे ·

फॉलो करें

【नज़्र-ए- आलोकधन्वा पटना】

अगले जनम में अंगिका का कवि बनूँ

अपभ्रंश में लिखूँ
पालि या प्राकृत या डिंगल में

संस्कृत जैसी कूट भाषा तो इन दिनों
दुनिया की सारी सुरक्षा एजेंसियों की मातृभाषा है

उर्दू अब एक उखड़े हुये तंबू का नाम है

राजस्थानी ने तो मुझे
बचपन से ही देश-निकाला दे दिया था

जिसे कोई नहीं समझता
मैं उस भाषा में कविता लिखना चाहता हूँ

अगर मेरे पुण्य पर्याप्त हों
और दुबारा कवि बनाना हो तो हे ईश्वर
मुझे भोजपुरी का कवि मोती बीए बनाना !

#एक_हिंदी_कवि_की_प्रार्थना १.

संस्मृति-सुधा ने मोती बीए पर विशेषांक निकाला था।

वर्ष : 6 ○ अंक 7 ○ जलाई 2005

संस्मृति-सुधा

(मासिक)
साहित्य, संस्कृति, सामयिक सन्दर्भ

मोती बीए अंक

केतना देसवा हमार ई जुझार भइल बा !

कलम सुकुवारि तरुवारि ह हराठी
दूनू में बा नोंक भले होखे दू गो काठी
दूनू के ह जाति एके दूनहू के माटी
दूनू मिलि के मारि में चलावेले सन लाठी
जेतने कलमि चले ओतने तरुवारि चलत बा
केतना देसवा हमार ई जुझार भइल बा !

– मोती बीए

मोती बीए छियासी के

'पाती' में प्रकाशित श्री मोती बीए की कविता

अंक–7, सितम्बर 93

पाती

[भोजपुरी दिशाबोध के पत्रिका]

मोती बी० ए०

कविता और कविकर्म

[किसी गहरी अनुभूति उपजी ही श्रेष्ठ कविता। अनुभूति के माध्यम से [illegible] का उदय होता है। कल्पना, उर्वरभूमि होती है। ऊँचाई की चोटी [illegible] होती, लेकिन इसकी जड़ें अनुभूति की होती हैं। किसी गहरी अनुभूति उपजे ही और उपजी है कल्पना। कविता और कवि कर्म इस अवस्था [illegible] होते। वस्तुनिष्ठता और आत्मा एक तीसरी शक्ति है जिसका [illegible] अनुभूति की गहराई और कल्पना की ऊँचाई से होता है। स्वानुभवता [illegible] है, जिसके अभाव में यह केवल मोटी [illegible] का [illegible], [illegible] में इसकी पूर्ण व्याप्ति है।]

दू

रंग के बांसुरी बजाइलि।
रंग के गीत हम सुनाइलि।

[illegible] के आग का [illegible] हमरे
[illegible] बांसुरी की [illegible] से आइलि।

[illegible] हमके
[illegible] बांसुरी के हम, गवाइलि।

[illegible] के [illegible] के नगर
[illegible] आइले, [illegible] जाइले।

[illegible] मिले आ [illegible] मनही-
[illegible] [illegible] न हम भुलाइलि।

हमरे मन में दुख भइल बाटे।
चोर कवनो पइठ गइल बाटे

कुछ चोरइबो करी त का पाई
दर्द से दिल भरल-पुरल बाटे।

आँखि से लोर गिरि रहल ढर-ढर
फूल कवनो कहीं झरल बाटे।

सुधा ढरकि गइल त का एसे
हमके पीये के जब गरल बाटे।

दर्द दिल के मिटे के जब नइखे
चोर झुठहूँ सगल-बझल बाटे।

● नंदना बाई, बरहज, देवरिया—२७४६०१

"जहाँ लोक भाषाएँ गूँगी और अपाहिज हैं वहाँ शिष्ट भाषाओं को सशक्त देखना सपना मात्र है।"

[illegible]

समकालीन कविता अंक

दिनाँक 30 नवम्बर 2011 के समाचार

आकाशवाणी ने बरहज में कराया था श्री मोती बीए पर कवि सम्मेलन

बीआरडीबीडी पीजी कॉलेज में आकाशवाणी गोरखपुर ने कराया कवि सम्मेलन

भोजपुरी कवि मोती बीए को याद किया कवियों ने, श्रोताओं को झकझोरा

बरहज/कप्तानगंज | हिन्दुस्तान संवाद

भोजपुरी कवि मोती बीए की स्मृति में सोमवार शाम प्रसार भारती आकाशवाणी गोरखपुर ने कवि सम्मेलन का आयोजन किया। कार्यक्रम बीआरडीबीडी पीजी कॉलेज में हुआ। कवि सम्मेलन की शुरुआत सोनभद्र से आए कवि जगदीश पंथी के गीत है महंगा मोती, असान सारन देखीला से की गई। उन्होंने अपने दूसरे गीत रुनुक झुनुक बाजे पायल तोर पछवा, बड़ा नीक लागे नगद तोर गछवा प्रस्तुत किया तो लोग तालियों के अभिवादन के साथ झूम उठे। गोरखपुर के मुकेश श्रीवास्तव ने मन में लिए सवाल

रविन्द्र श्रीवास्तव 'जुगनी', शरद सिंह, देवेन्द्र सक्सेना 'नटखट', तारकेश्वर मिश्र 'राही', गिरीश पंकज, भालचन्द्र उपाध्याय

जगाती चली गई, वे सपने गत रात किसलयी चली गई एवं जहाँ में पर औरत न होती, किसी को जीने की चाहत न होती गीत दिया। सत्यमवदा शर्मा ने तेरी चादर, बनकर खुशबू घर आंगन महकाएगी, शरद सेर अनमोल रुठते को सम्बल दे जाएगी, नन्दन तिवारी इलाहाबादी ने इस दौर की सच्ची कहानी लिख सके तो लिख, जिन्दी है आग पानी लिख सके तो लिख, मुल्ला पण्डित चादरी सब अखाड़े बाज है, लिख सके तो लिख, डा. सुरेश व्यथित ने मन तो सूखे कपड़े सा, मुश्किलों की आंधी टरा, कुंवर नाथ मिश्रित ने बाबा राघवदास के भलाई का देखिया, रामानन्दन रमन ने कफन बांध लो सिर से सुन्दर देश बनेगा एवं अंजना शुक्ला ने हम हो बार बार ऐतबार पर छले गए, चांद भी मिला सूरज की तपन लिए पर लोगों ने खूब तालियां बजाईं। गिरधर करुण ने अमर शहीदों की समाधि के दीपक को जलने दो, शरद सिंह शरद ने मुझे साथ अपनी रखा करो, मुझे तुम अदब से पढ़ा करो। कवि शैलेन्द्र द्विवेदी, अर्जुन सिंह 'चांद', तारकेश्वर मिश्र 'राही', रुक्मा सिंह 'रुक्मा', देवेन्द्र सक्सेना 'नटखट' ने कविताओं का पाठ किया। तारकेश्वर मिश्र, सरोज कुमार पाण्डेय, भालचंद्र उपाध्याय, अरुणेश 'नीरज' ने अपनी रचना सुनाई। अध्यक्षता आकाश पीठाधीश्वर आंजनेय दास एवं संचालन रवीन्द्र श्रीवास्तव 'जुगनी' ने किया। इस अवसर पर पूर्व प्रसार भारती राजनारायण पाठक, अमेन्द्र श्रीवास्तव, डा. सतेन्द्र बहादुर सिंह, डा. ओम प्रकाश शुक्ल, डा. अमरेश सिंह, शम्भू प्रसाद मिश्र, मनोज श्रीवास्तव, तेजबहादुर यादव, विनय मिश्र, राकेश तिवारी, डॉ. एस पी सिंह, प्रदीप, मुन्नी अग्रवाल, प्रेमशंकर पाठक, आदि उपस्थित रहे।

रेडियो पर सुना जाएगा यह कवि सम्मेलन

कवि सम्मेलन के समापन के बाद आकाशवाणी की कार्यक्रम प्रमुख राजश्री बनर्जी ने कहा कि इस आयोजन से मोती जी की स्मृतियां ताजा हो उठी हैं। इस कार्यक्रम की सफलता पर हम अपने केन्द्र की तरफ से सबको आभार देते हैं। जो लोग सम्मेलन में उपस्थित नहीं हो पाए हैं, उन्हें आकाशवाणी के माध्यम से तीन दिसम्बर की रात 9:30 से 11 बजे रात तक रिकार्डिंग कराया गया कार्यक्रम प्रसारित किया जाएगा।

पावन प्यार महकेगा तो चंदन हो जाएगा

गीत प्रस्तुत करते कवि डा. सुरेश व्यथित

श्रोतागण उपस्थित।

मोती बीए स्मृति में कवि सम्मेलन

[illegible] गोरखपुर द्वारा [illegible] मोती बीए की स्मृति में आकाशवाणी गोरखपुर द्वारा कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। देश के जाने माने कवि, गीतकार और शायरों की रचनाओं से ऐसा समां बंधा कि देर रात तक श्रोता गजल गीत की गंगा में गोता लगाते रहे।

कार्यक्रम की शुरुआत [illegible] के पीठाधीश्वर आंजनेय दास जी महाराज, आकाशवाणी के अपर महानिदेशक [illegible] और साहित्यकार डा. अरुणेश नीरज ने मां सरस्वती और बाबा राघवदास के चित्र पर दीप प्रज्वलन कर [illegible] से की। मोती बीए के पुत्र [illegible] उपाध्याय ने सरस्वती वंदना गाकर [illegible] ... प्रस्तुत किया। इसके बाद सोनभद्र से आये कवि जगदीश पंथी ने [illegible] गीत बड़ा नीक लागे नगद तोर गछवा ... के माध्यम से [illegible] संस्कृति का चित्रण किया। मुकेश गोरखपुरी ने [illegible] का चित्रण करता गीत कहने की दुनिया में बहुत बदनाम है औरत, लेकिन दुनिया के लिए इन्सान है औरत ... और मन के लिए उलझाती चली गई, वे सपने सारी रात सिसकते चले गई ... । सत्यमवदा शर्मा ने राजनीति और राजनेताओं पर प्रहार करते करता गीत जाति धर्म की राजनीति करने वालों का कोई निदान होना चाहिए ... । कन्नौज [illegible] की पीड़ा को चित्रित करता गीत कहानी हम कफन [illegible] भाई, दिहलू जनमक के पहिले मिटाई ... । प्रस्तुत कर श्रोताओं को सोचने पर मजबूर कर दिया। डा. सुरेश व्यथित ने मन तो भीगे कपड़े सा मुश्किलों की आंधी टरा, [illegible] ने [illegible] के माध्यम से समाज में [illegible] का चित्रण किया। कुंवरनाथ मिश्रित ने कौन किसको पूछता है इस जमाने में, मांगिया पूरे सड़क पर रात बाने में ... प्रस्तुत कर [illegible] व्यवस्था पर प्रहार किया। रामानन्द रमन ने जब आदमी ही आदमी से [illegible] ... प्रस्तुत किया तो तालियां गूंजी। [illegible] ने प्रेम गीत पावन प्यार अगर महकेगा तो चंदन हो जाएगा ... को भाव पूर्ण प्रस्तुति कर

अमेठी समाचार में प्रकाशित मोती बीए का अद्भुत लेख ।

आना मेरी जान सण्डे के सण्डे!

मोती बी.ए.

‘जनचक्षु’ ने श्री मोती बीए के अनगिनत लेख प्रकाशित किये ।

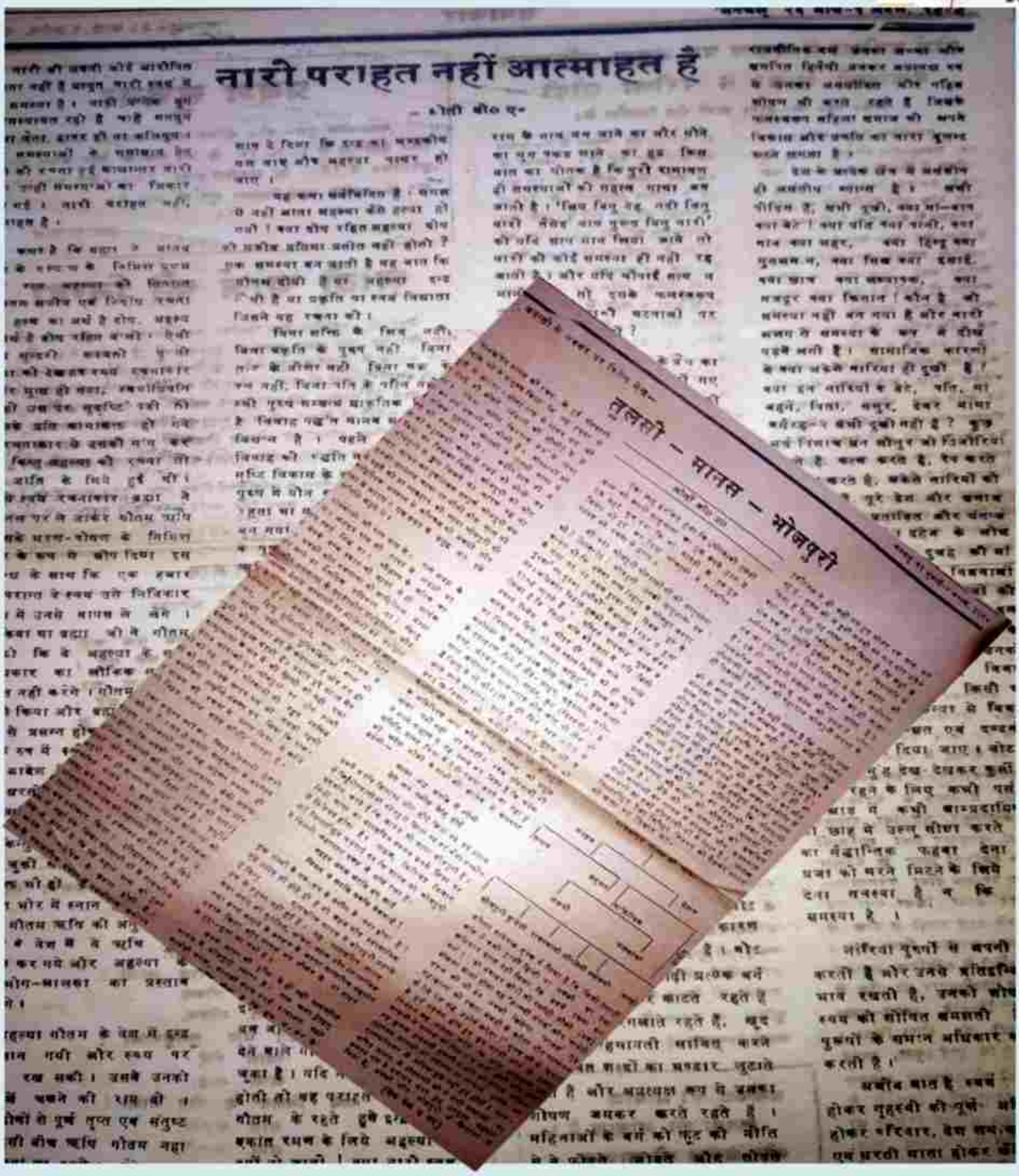

नारी पराहत नहीं आत्माहत है

— मोती बी० ए०

तुलसी — मानस — भोजपुरी

‘युग-वातायन’ ने श्री मोती बीए के अनगिनत लेख प्रकाशित किये।

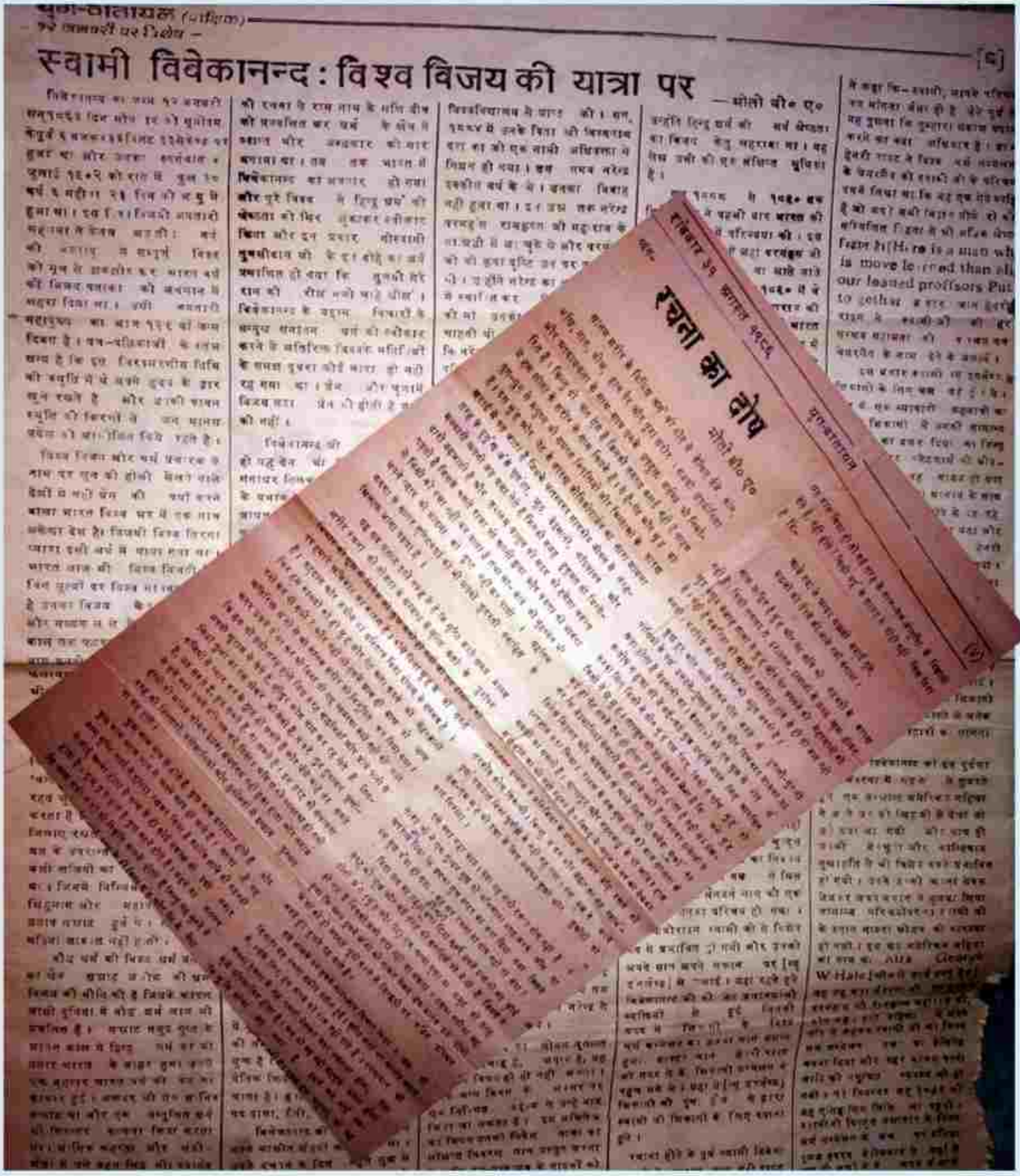

युग-वातायन (वार्षिक)

– १२ जनवरी पर विशेष –

स्वामी विवेकानन्द : विश्व विजय की यात्रा पर

— मोती बी० ए०

[८]

रचना का बोध

मोती बी० ए०

‘गिरिराज’ सप्ताहिक ने श्री मोती बीए के लेख को ससम्मान प्रकाशित करता रहा है।

संगीत के सितारों के अंजुम में एक सितारा: सी. रामचन्द्र

मोती बी. ए.

राष्ट्रभक्ति और भारतीय संस्कृति के महान पुजारी
स्वामी विवेकानंद

डॉ.माता प्रसाद त्रिपाठी का श्री मोती बीए के सन्दर्भ में एक महत्वपूर्ण लेख ।

(समाचार पत्र की जानकारी नहीं।)

नया साहित्य

कविवर श्री मोती बी० ए० की समिधा

पूर्वांचल के सुप्रसिद्ध कवि शीलकार श्री मोती बी० ए० सन् ५२ से ही चित्रकूट में सन्यास लेकर साहित्य-साधनामें प्रवृत्त हैं। इस बीच उनकी उत्कृष्ट रचनायें प्रकाश में आ चुकी हैं। प्रस्तुत लेख में उनकी एक महत्वपूर्ण रचना 'समिधा' के आधार पर कवि की काव्य-दृष्टि पर प्रकाश डाला गया है। अगले किसी अंक में हम उनका विशेष परिचय प्रकाशित करेंगे। सं०

समिधा यज्ञ की पुनरुक्ति हुआ करती है। यहाँ वस्तुतः विचार, शक्ति और काव्य का प्रतिफलन करती है। मुक्तकेता यहाँ [illegible] और कर्ता (व्यापार)—दोनों ही इसी में मूर्त होते हैं। वैदिक यज्ञ और उसके प्रतीक विधान की पूर्णता के लिए विद्वजन 'समिधाओं' की महत्ता उपयोगिता होती है—[illegible] यज्ञ की अन्तर्गत रीति से परिभाषित करने के लिए कवि एक परीक्षण मुद्रित। क्योंकि [illegible] मन्त्र का [illegible] न कहें तो [illegible] विचार, रसमूलक और मतिमूलक ही [illegible] है। [illegible] की [illegible], [illegible] का तन्मिलन, [illegible], [illegible] की विरक्ति, [illegible] का विलीनता, [illegible] की [illegible], [illegible] की [illegible], और [illegible] विरक्ति का

'[illegible]' और 'समिधा के [illegible]' जैसी [illegible] किसी के [illegible] लिख कर [illegible] की [illegible] [illegible] का [illegible] निरूपण ही कवि के स्वाभिमान और [illegible]-निरूपण का परिचायक है।

प्रकृत देख समिधा की समीक्षा

श्री मोती बी० ए०

[illegible] श्री मोती बी० ए० की [illegible] सम्बन्ध बीता [illegible] है। कवि के ही [illegible] [illegible] [illegible]

'कर्म प्रबोध' में मोती बीए की रचना

कर्मेन्द्रियाणि मनसा नियम्यारभतेऽर्जुन । कर्मेन्द्रियैःकर्मयोगमसक्तः स विशिष्यते

दूर संचार : कर्मप्रबोध

दूरभाष : ६४३

कर्म प्रबोध

निर्भीक निष्पक्ष एवं शाश्वत मूल्य की विचारधाराओं का एकमात्र हिन्दी साप्ताहिक

वर्ष २ अंक २८ देवरिया : बुधवार ६ अक्टूबर १९८१ पृष्ठ ४ रजिस्ट्रेशन नं० D.R. 40/17/77/N.T. मूल्य २० पैसे

धर्म-परिवर्तन

मोती बी० ए०

सेण्टीमेण्ट वृत्तियों से जुड़कर विचार सन्धियाँ उत्पन्न करता है। उचित यह है कि सेण्टीमेण्ट को रीजन से जोड़ा जावे और उसके बाद जो मनःस्थिति बने उससे वृत्तियों का सम्पर्क हो।

धर्म साध्य नहीं, किसी वस्तु या किसी तत्व की सही पहचान का एकमात्र साधन है। इस जानकारी के पूर्व धर्म की कोई धारणा बन नहीं पाती। दुर्भाग्य है कि धर्म की यह धारणा बनने के पूर्व ही इसको हम अपनी सेण्टीमेण्ट में स्थिर कर लेते हैं और विभिन्न मानवीय वृत्तियों से टकरा-टकरा कर टूटते-फूटते रहते हैं। इसको कभी राजनीति का हथकण्डा बना लेते हैं, तो कभी समाज का, कभी अर्थ-व्यवस्था से इसे जोड़ते हैं, तो कभी अध्यात्म से। इस प्रकार हम इसको अपनी संस्कृति और जीवन की आत्मा बनाये रहते हैं। परम्परा के खूंटे से बँधकर हम और भी जड़ हो जाते हैं। यह चेतन का अपमान है। प्रत्येक वस्तु अथवा विषय का अपना-अपना स्वभाव होता है। स्वभाव का पदार्थ (पद + अर्थ) निश्चित है, स्वभाव का शब्दार्थ अनिश्चित है। अपनी अर्थवत्ता के कारण ही प्रत्येक वस्तु या विषय पदार्थ कहलाता है। पद का अर्थ चेतन ही कर सकता है। पद का अर्थ ही पद का धर्म है। स्वभाव इसी अर्थ से धर्म का पर्याय बन जाता है। प्रत्येक वस्तु या सत्ता है कि प्रत्येक वस्तु का विषय अपने-अपने धर्म का पालन करता है। चेतन गुण के द्वारा ही निज अर्थ में या पर अर्थ में धर्म के स्वरूप को अर्थात स्वभाव की विशेषता को समझा जा सकता है। मानव के अतिरिक्त अन्य प्राणी बिना चेतन की सहायता के भी सहज रूप में अपने-अपने धर्म का पालन करते हैं अर्थात अपने स्वभावानुसार आचरण करते हैं, किन्तु चेतन प्राणी होने के नाते मनुष्य अपने इस आचरण की व्याख्या करता है। निज पर से धर्म के द्वारा जुड़ कर समाज बन जाता है। धर्म, नीज, पर या समाज को धारण किये रहता है। इसके चलते एक दूसरे से विलग नहीं हो सकता और इसके बिना समाज की कल्पना असम्भव है। धर्म अपने-पराए में भेद नहीं रखता है। धर्म परिवर्तनीय हो ही नहीं सकता। वह सदा सर्वदा अपरिवर्तनीय होता है। निजता, परता या सामाजिकता का अपने धर्म के साथ तादात्म्य सम्बन्ध है। एक को दूसरे से अलग करवाना अकल्पनीय है। जब भी ऐसा किया जायेगा, उसके टूटने की आवाज उसके अस्तित्व के महा विनाश

विकृति उत्पन्न होने लगती है। इसी को धर्म ग्लानि कहते हैं। जो कौरवों की सभा में द्रोपदी के चीरहरण के समय धर्म-धुरन्धरों को हुई थी। धर्मक्षेत्र कुरुक्षेत्र बन गया था और 'मानवाः युयुत्सवः' बन गये थे, एक दूसरे के रक्त के प्यासे। धर्म कन्दरा में छिप गया था। (धर्मस्य तत्वं निहितं गुहायां) जिसकी लाठी उसकी भैंस वाली चमचागीरी धर्म की परिभाषा हो गयी थी। यह सब तादात्म्य भेद की अवस्था का परिणाम हो, जो चित्त को, पर को, समाज को छिन्न-भिन्न कर डालता है।

'सर्व धर्म परित्यज्य मामेकं शरणं व्रज' गीता में श्रीकृष्ण चन्द्रजी महाराज के इस कथन का कि सब धर्म छोड़ कर मेरी शरण में आ जाओ। क्या अभिप्राय है? उस युग में 'सर्व धर्म' कहाँ था? धर्म-ग्लानि भी किस प्रकार की थी? धर्म में भिन्नता नहीं थी। आचरण में विभिन्नता थी। स्वार्थ के चश्मे से प्रत्येक वस्तु की पहचान की जाती थी। वस्तु का अपना स्वरूप पहचान में न आने के कारण लुप्त हो गया था। लोग अपने-अपने स्वार्थ को ही धर्म बनाकर एक दूसरे से जूझ रहे थे। धर्म नहीं एक दूसरे का स्वार्थ आपसे टकरा रहा था। वही 'सर्व धर्म' बन गया था। जिसको छोड़कर श्रीकृष्णचन्द्र जी महाराज लोगों को अपने वास्तविक यथार्थ रूप में आने

थे। धर्म का यही वास्तविक स्वरूप है, जो परिवर्तनीय हो नहीं सकता। लाखों की लकड़ी का जलना सर्वनाश में ही होता है। तादात्म्य सम्बन्ध विघटन की परमावस्था है। अणु-परिमाणु विस्फोट का यही अर्थ है। आत्म नाश अर्थात अणु-विस्फोट धर्मयुग का पर्याय है।

कर्म-प्रबोध

हिन्दी साप्ताहिक

के

चन्दे की दर

आजीवन	::	१००·०० रु०
वार्षिक	::	२५·०० ,,
अर्द्धवार्षिक	::	१२·५० ,,
त्रैमासिक	::	६·२५ ,,
एक प्रति	::	·२० ,,
विशेषांक	::	१·०० ,,

प्रकाशक व्यवस्थापक
कर्म-प्रबोध

समाचार पत्र हिन्दुस्तान 18 जनवरी 2019

झकोरों में पड़ा जीवन तुम्हारा गीत गाता है भंवर का....

बराज | संतोष कुमार उपाध्याय

'झकोरों में पड़ा जीवन तुम्हारा गीत गाता है, भंवर का डर नहीं मुझको तुम्हारी आंख के आगे', 'हम चले लम्बे सफर को अलविदा ऐ दोस्तों, मौज-ए दरिया में बहो तुम अलविदा ऐ दोस्तों', 'तुम न अगर होती तो क्या था, पाक हाथ से गिर जाना था, एक दिन मधुकर पीते-पीते। मुझे एक दिन मर जाना था, आखिर कुछ दिन जीते-जीते', 'असली आइना मधुशाला में बाजार सजाती' आदि समान रचनाओं से कवि मोती बी.ए. ने वैश्विक फलक पर अपनी एक अलग ही पहचान बनाई। उनकी स्वरचित गीत-कविताएं आज भी कवि प्रेमियों के हृदय को झकझोरते हुए उनके गीत व कविताओं को गुनगुनाने पर मजबूर करती हैं।

'अंखियां मिला के अंखियां रेह दिन रतिया, होए न भूले बतिया' व 'मोरी राजा हो ले चल नदिया के पार', 'तुमसे मिल की दुनिया को नजर में लेके जाऊंगा, कोई याद ऐसी निशानी छोड़ के जाऊंगा', 'हवा हू उनसे जाकर कह दे इक दिवाना आया है, तेरी सूरत पे मरने वाला इक परवाना आया है' समेत अन्य स्वरचित गीतों व रचनाओं से कवि मोती बी.ए. ने वैश्विक फलक पर पहचान बनाई। भोजपुरी बोली को पहली बार सेलुलाइड पर उतारने वाले मोती बी.ए. का जन्म एक अगस्त 1919 को बराज मोहल्ले के ग्राम बोरजी के सोंधी मिट्टी में राधाकृष्ण उपाध्याय के घर हुआ था। राधाकृष्ण उपाध्याय के पुत्र मोतीलाल उपाध्याय मोती के नामकरण से कवि मंचों पर खूब धूम मचाते हुए भोजपुरी सिनेमा जगत के नायक रहे। भोजपुरी गीतों को फिल्मी दुनिया में प्रतिष्ठित करने वाले पहले शख्स को दुनिया में मोती बी.ए. के नाम से ही पहचान मिली। उन्हीं से उन्होंने अपने परिचय में लिखा है 'कहने को नाम ए, बी.टी, साहित्य रत्न सरकार, लेकिन पहली ही दिखी पर दुनिया में बदनाम'। कवि मोती बी.ए. श्रीकृष्ण इण्टर कॉलेज आजमगढ़ बराज में शिक्षक थे रहे। उनको आठवें अध्यापक, भोजपुरी रत्न, काव्य सम्मान, साहित्य अकादमी, सरयू रत्न का सम्मान एवं पुरस्कार भी मिल चुका है। उन्होंने आकाशवाणी, आज, संसार, आर्यावर्त आदि समाचार-पत्रों से जुड़ पाठकरीता क्षेत्र में भी नाम रोशन किया था।

पुण्यतिथि पर विशेष

- श्री मोती बी.ए. गीतों व रचनाओं से अब भूले हैं हम उनका पहचान
- साहित्य प्रेमियों को आज भी गुनगुनाने पर मजबूर करती है उनकी रचनाएं

मोती बी.ए. की पुरानी फोटो

अविस्मरणीय छवि छोड़ चले गए

नायक व कवि: अस्सी से अधिक फिल्मों में गीत लिखने वाले मोती बी.ए. 1947 में किशोर साहू की फिल्म 'नदिया के पार' जो अभिनेता दिलीप कुमार व अभिनेत्री कामिनी कौशल को लेकर बनाई गई थी, उसमें मोती जी ने सबसे पहले भोजपुरी गीत 'कठवा के नइया, बनइहें रे मलहवा, नदिया के पार दे उतार' देकर भोजपुरी बोली को सेलुलाइड पर लाने वाले प्रथम व्यक्ति थे। इसी फिल्म में उनकी एक गजल खासी चर्चित हुई थी, जिसका बोल था 'हमको तुम्हारा ही आसरा, तुम हमारे हो न हो...।' 'हमको तुम्हारा ही आसरा, तुम हमारे हो न हो' व 'हे चंद्रवदन, पंडा की किरन, तुम किसका चित्र बनाती हो' आदि गजलें खासी चर्चित रहीं। इसके अलावा फिल्म सजन, कैसे कहूं, राजपूत, राम विवाह, गजब भइले राम, वीर घटोत्कच जैसी फिल्मों में अभिनय के साथ अन्य 60 फिल्मों में गीत भी लिखे। उनका जीवन गीत सफर में ही डूबता-उतराता रहा। तभी तो उन्होंने लिखा है 'आंसुओं के पार से गाकर मुझे किसने पुकार, गीत जीवन का सहारा।' अपनी अविस्मरणीय छवि छोड़ 90 वर्ष की अवस्था में 18 जनवरी 2009 को परलोक सिधार गए।

आज मोती पुण्यतिथि: मोती बी.ए. वेलफेयर सोसाइटी के तत्वावधान में 18 जनवरी को दिन में एक बजे से कवि मोती बी.ए. की 10 वीं पुण्यतिथि कस्बा स्थित लक्ष्मी निवास में मनाई जाएगी। यह जानकारी सोसाइटी अध्यक्ष भालचंद, उपाध्यक्ष अंजनी उपाध्याय ने दी।

नायक व कवि मोती बी.ए. को श्रद्धा से किया याद

बराज। हिन्दुस्तान संवाद

भोजपुरी सिनेमा के नायक व महान कवि मोती बी.ए. की 10 वीं पुण्यतिथि शुक्रवार को नंदना वार्ड पश्चिमी स्थित उनके निवास स्थान पर मनाई गई। इस दौरान प्रबुद्धजनों ने मोती बी.ए. के चित्र पर श्रद्धा से पुष्प अर्पित किया। वक्ताओं ने उनकी रचनाओं को दुहराते हुए सिद्दत से याद किया।

मुख्य अतिथि पं. विनय मिश्र ने उनकी रचनाओं को दुहराते हुए कहा कि महान कवि मोती बी.ए. के योगदान को भुलाया नहीं जा सकता है। विशिष्ट अतिथि डा. प्रसन्नी सिंह ने कहा कि अपनी विविध रचनाओं से उन्होंने वैश्विक फलक पर एक अलग ही पहचान बनाई। कांग्रेस नेता अनिल निषाद ने कहा कि मोती बी.ए. ने स्वरचित रचनाओं व गीतों से बराज का नाम रोशन किया है।

पुण्यतिथी

- मोती बी.ए. की 10 वीं पुण्यतिथि पर आयोजित हुआ कार्यक्रम
- वक्ताओं ने उनकी रचनाओं को दुहराते हुए श्रद्धा से किया याद

सामाजिक कार्यकर्त्री सावित्री राय, रामविलास प्रजापति, राकेश श्रीवास्तव, कार्तीनाथ कुशवाहा, राकेश पाण्डेय, मुजफ्फर हुसैन मंसूरी, भालचंद उपाध्याय, कलाकार अंदू तिवारी 'भोजपुरिया', रामजी यादव, रमेश तिवारी अंजान, डा संकर्षण मिश्र ने अपना विचार रखा।

इस दौरान वक्ताओं ने मोती बी.ए. की रचनाओं को दुहराते हुए श्रद्धा सुमन अर्पित किया। संचालन अंजनी कुमार उपाध्याय ने की। यहां डा. कृष्णमोहन रावत, सूर्यनाथ सिंह, साहिल, अर्पित, सतेन्द्र, ब्रजकिशोर, राजकुमार यादव, इरफान, सुधीर निषाद, आकाश, अभिषेक, विवेकानंद पाण्डेय, संजय तिवारी समेत अन्य लोग रहे।

शुक्रवार को कस्बा स्थित मोती बी.ए. के निवास स्थान पर प्रबुद्धजनों ने महान कवि मोती बी.ए. के चित्र पर श्रद्धा सुमन अर्पित किया। • हिन्दुस्तान

समाचार पत्र अमर उजाला 02 अगस्त 2018

'रुपहले पर्दे पर मोती बीए ने भोजपुरी का बढ़ाया था मान'

बरहज में जयंती पर आयोजित किया गया कविता पाठ

अमर उजाला ब्यूरो

बरहज। भोजपुरी फिल्मों में गीत लिखकर और रुपहले पर्दे पर अभिनय करने वाले मोती बीए ने अनगिनत गीतों की रचना की है। आज भी लोग उनकी रचना मृगतृष्णा से नाचत बाटे नाम रे.. हिरन बा पियासा...जैसे आदि गीत गुनगुनाते हैं।

अपनी रचनाओं की बदौलत ही वह पूर्वांचल और बरहज का नाम बॉलीवुड तक में चमका आए। यह बातें बुधवार को मोती बीए की 99 वीं जयंती पर कार्यक्रम के मुख्य अतिथि संगत पीठ के पीठाधीश्वर महंथ परमेश्वर दास ने कहीं। इसके पूर्व उनके चित्र पर माल्यार्पण के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ।

मोती बीए के छोटे पुत्र अंजनी उपाध्याय ने उनकी रचना असो आइल महुआबारी में बहार सजनी.., एगो दिया जरेला जउन कइहो न बुताय.., जेठ की दुपहरी में रेत क बा असरा.. आदि रचनाएं प्रस्तुत किया।

बरहज के नंदना पश्चिमी वार्ड में मोती बीए की जयंती पर श्रद्धासुमन अर्पित करते गणमान्य। अमर उजाला

कार्यक्रम में रामेश्वर प्रसाद यादव, रमेश तिवारी अंजान, जितेन्द्र भारत, डॉ.संकर्षण मिश्र, रामजी यादव, चिंतामणि साहनी, भालचंद, डॉ.एसपी सिंह, अमरेन्द्र गप्त ने उनके जीवन पर प्रकाश डाला।

इस दौरान शंभू नाथ सिंह, प्रहलाद यादव, अरविंद त्रिपाठी, कैलाश नाथ, विजय जायसवाल, विपुल विक्रम राय, साहिल अंसारी, अभिषेक उपाध्याय, श्याम नारायण आदि उपस्थित रहे।

समाचार पत्र अमर उजाला 19 जनवरी 2019

भोजपुरी सम्राट मोती बीए की शुक्रवार को पुण्यतिथि मनाई गई।

'भोजपुरी सम्राट माने जाते थे मोती बीए'

बरहज। नगर के नंदना पश्चिमी वार्ड में भोजपुरी के सम्राट कहे जाने वाले मोती बीए की पुण्यतिथि मनाई गई। शुक्रवार को उनके पैतृक आवास पर आयोजित पुण्यतिथि में सर्वप्रथम सभी ने उनके चित्र पर दीप प्रज्ज्वलित कर श्रद्धासुमन अर्पित किया। सभी ने उनके आदर्शों को आत्मसात करते हुए उनकी कविताओं और गीतों पर प्रकाश डाला। उनके कनिष्ठ पुत्र अंजनी उपाध्याय ने कहा कि दिलीप कुमार और वैजयंती माला अभिनीत नदिया के पार फिल्म में मोती बीए के लिखे गीत आज भी उनकी याद ताजा करता है। अनिल निषाद, विनय मिश्र, राकेश पांडेय, सावित्री राय, काशीनाथ कुशवाहा, एसपी सिंह, राकेश आदि ने संबोधित किया।

समाचार पत्र अमर उजाला 02 अगस्त 2018

श्रद्धांजलि लोगों ने मोती बीए को दी श्रद्धांजलि

मोती बीए की जयंती मनी

बरहज, देवरिया : नंदना पश्चिमी स्थित मोती बीए के निवास स्थान लक्ष्मी निवास पर उनकी 99वीं जन्म दिवस पर श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। जिसमें मुख्य अतिथि संगत पीठ के पीठाधीश्वर महंथ परमेश्वर दास महाराज रहे। विशिष्ट अतिथि कवि रामेश्वर प्रसाद यादव, रमेश तिवारी अंजान व जीतेंद्र भारत रहे।

कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलित कर महाराज जी ने किया। कार्यक्रम के दौरान अतिथियों ने समस्त आगंतुकों द्वारा मोती बीए के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित की गई। वक्ताओं में डा.संकर्षण मिश्र, रामजी यादव, चिंतामणि साहनी, भालचंद्र उपाध्याय, डा.एसपी सिंह, जीतेंद्र भारत, अमरेंद्र गुप्त आदि ने मोतीबीए के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर वृहद प्रकाश डाला। संचालन अंजनी उपाध्याय ने किया।

मोती बीए को श्रद्धांजलि देते लोग • जागरण

कार्यक्रम में शंभूनाथ सिंह, प्रह्लाद यादव, अरविंद त्रिपाठी, कैलाशनाथ तिवारी, विजय कुमार जायसवाल, विपुल विक्रम राय, साहिल अंसारी, अभिषेक उपाध्याय, श्याम नारायण मालवीय आदि मौजूद रहे।

समाचार पत्र राष्ट्रीय सहारा 02 अगस्त 2018

शिद्दत से याद किये गये मोती बीए

बरहज (एसएनबी)। नगर के नन्दना वार्ड पश्चिमी स्थित मोती बीए के लक्ष्मी निवास पर 01 अगस्त बुधवार को मोती बीए की जयन्ती धूमधाम से मनायी गयी। जयन्ती समारोह का शुभारम्भ मुख्य अतिथि प्रधानाचार्य रामेश्वर यादव द्वारा मोती बीए के चित्र पर पुष्प अर्पित कर दीप प्रज्वलित कर किया गया।

जयन्ती समारोह को सम्बोधित करते हुए मुख्य अतिथि श्री यादव ने कहा कि भोजपुरी गीतों के शेक्सपीयर, अप्रतिम रचनाकार भोजपुरी गीत रचना सागर के मोती, भोजपुरी के पुरोधा मोती बीए का व्यक्तिगत जीवन बड़ा ही कठिन था। अध्ययनकाल में ही रात में प्रेस का कार्य करते थे और दिन में अध्ययन करते थे। चिन्तामणि साहनी ने कहा कि सृजन के प्रति ललक और साहित्य सेवा की अदम्य इच्छा ने मोती बीए को सदैव गतिमान बनाये रखा। मोती बीए की समर्पित रचना प्रस्तुत कर कार्यक्रम में शमां बांध दिया। रमेश तिवारी अन्जान ने मोती बीए पर कविता प्रस्तुत करते हुए कहा कि 'गीत गजल अनुवाद के खातिर बदनाम, उनकर मोती बीए नाम" सुनाया। भालचन्द्र उपाध्याय ने मोती बीए की कविता "नावे ले हमरा उ बा सुनी सभे" प्रस्तुत किया तो उपस्थित जनसम मुक्तकंठ से सराहा। शिक्षक रामजी यादव व जितेन्द्र ने श्री बीए के जीवन पर प्रकाश डालते हुए कह तहसील क्षेत्र के बरेजी में 01 अगस्त 1919 को बालक ने जन्म लिया, किसी ने सोचा भी नहीं था वि भोजपुरी जगत का देदीप्यमान नक्षत्र और सशक्त हस बनकर एक दिन पूरे पूर्वांल का नाम अन्तर्राष्ट्रीय स्त रोशन करेगा। भोजपुरी के प्रति उनके समर्पण क प्रतिफल रहा कि उन्हें भोजपुरी के प्रथम साहित्य अक पुरस्कार से नवाजा गया। समारोह को महन्त परमे दास, श्यामनारायण मालवीय, डा. एस.पी.सिंह, अर त्रिपाठी, गुलाब सिंह आदि ने भी सम्बोधित करते हुए उ प्रति श्रद्धासुमन प्रदर्शित की। समारोह में मुख्य रू प्रह्लाद यादव, सुमित त्रिपाठी, अभिषेक उपाध्याय, वि राय, दयाशंकर मल्ल आदि दर्जनों लोग उपस्थित समारोह की अध्यक्षता श्यामनरायण मालवीय ने संचालन अंजनी कुमार उपाध्याय ने किया।

समाचार पत्र हिन्दुस्तान 24 सितम्बर 2018

मोती बीए ने बालीवुड को भोजपुरी से परिचित कराते हुए बनाई थी पहचान, भोजपुरी गीतों को प्रतिष्ठित करने वाले पहले शख्स

भोजपुरी के कवि मोती बीए को नहीं मिला उचित सम्मान

बहराइच | संतोष कुमार उपाध्याय

देवरिया के महान शख्सों में आदर के साथ एक ऐसे महान शख्स का नाम लिया जाता है, जिन्होंने देवरिया ही नहीं बल्कि वैश्विक फलक पर भी अपनी एक अलग पहचान बनाई थी। ऐसे महान शख्स हैं कवि व भोजपुरी चलचित्र जगत के नायक मोती बीए। जिन्होंने वैश्विक फलक पर भोजपुरी भाषा का परचम लहराया था। उनको आज तक वो सम्मान नहीं मिल सका जिसके वो वास्तविक हकदार हैं।

उनके नाम से जनपद ही नहीं बल्कि देश में स्मारक, पार्क, पुस्तकालय, संस्थान व प्रतिमा की स्थापना नहीं होना उनकी उपेक्षा को दर्शा रहा है। वो जादूगर जिसने बालीवुड को भोजपुरी से परिचय कराते अपनी कालजयी रचनाओं से जनपद व देश का नाम एक बड़े पटल पर स्थापित करने का कार्य किया है। ऐसे शलाका पुरुष को उचित स्थान व सम्मान नहीं मिलना दुर्भाग्य की ही बात है।

कुछ नई पीढ़ी जानती है तो कुछ हैं अनभिज्ञ

घोसेन में रहने वाले नई पीढ़ी के मनमोहन, कुंज बिहारी, ब्रजेश, रमाशंकर, एसराज उपाध्याय, ब्रज उपाध्याय, घनश्याम, रविंदर, सौरभ, अवधेश तो मोती बीए के बारे में कुछ जानते भी हैं। लेकिन संजय, अजुर, आकाश, पंकज, अभिषेक, शिवाय, अजय, शुभम उनसे अनभिज्ञ हैं।

एक अगस्त 1919 को बहराइच तहसील के ग्राम बरेजी के मोघी मिट्टी में राधाकृष्ण उपाध्याय के पुत्र रूप में जन्मे मोतीलाल उपाध्याय गीतों के माध्यम से कवि मंचों पर अपनी कालजयी रचनाओं से खूब धूम मचा चुके हैं। अस्सी से अधिक फिल्मों के लिए गीत लिख चुके कवि मोती भोजपुरी भाषा को फिल्मी दुनिया में प्रतिष्ठित करने वाले पहले शख्स को दुनिया में मोती बीए के नाम से ही ख्याति मिली। तभी तो उन्होंने अपने परिचय में लिखा है 'कहने को एमए, बीटी, साहित्य रत्न सदनाम, लेकिन पहली ही डिग्री पर दुनिया में बदनाम'।

कवि प्रेमियों के दिलों पर राज करने वाले कवि मोती बी.ए. श्रीकृष्ण इण्टर कॉलेज आजमगढ़ बहराइच में शिक्षक भी रहे। उनको आदर्श अध्यापक, भोजपुरी रत्न, भाषा सम्मान, साहित्य अकादमी, सरयू रत्न का सम्मान एवं अन्य पुरस्कार भी मिल चुका है।

अनेक कवि गोष्ठियों, कवि सम्मेलनों में मंचों से काव्य पाठ एवं साहित्यिक रचनाओं का प्रचार-प्रसार करने वाले कवि मोती अग्रगामी, आज, संसार, आर्यावर्त आदि समाचार-पत्रों से जुड़ पत्रकारिता क्षेत्र में भी नाम रोशन कर चुके हैं। अपनी कालजयी रचनाओं से कवि मंचों पर धूम मचा देने वाले महाकवि मोती बी.ए. ने स्वरचित कविताओं व गीतों से अपनी एक अलग पहचान बनाई।

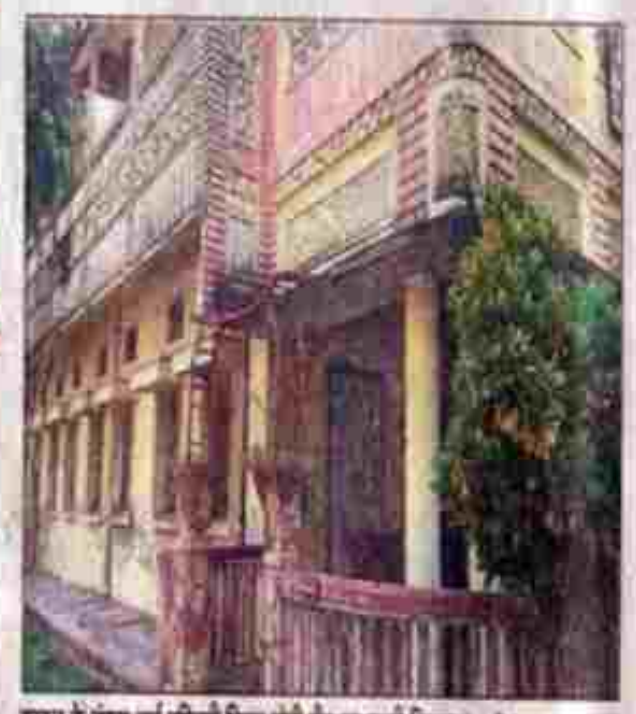

बहराइच के नंदना डॉट फीरोजी स्थित मोती बीए का तल्ली निवास। • हिन्दुस्तान

"पिता मोती बीए के चिंतन कक्ष में उनकी रचनाओं को ग्रंथावली के रूप में प्रकाशित कराते हुए सुरक्षित रखा गया है। उनके दुर्लभ फोटो, हस्त लिखित मूल रचनाएं व अन्य लेख फाइलों में संकलित करते हुए उनकी यादों को सहेजा गया है।

अंजनी उपाध्याय - मोती बीए के कनिष्ठ पुत्र

साहित्य प्रेमियों के दिलों में आज भी हैं मोती बीए

मोती बीए (फाइल फोटो)

भोजपुरी चलचित्र जगत के नायक मोती बीए ने फिल्म नजराना, दैनिक कानू, राजपूत, राम विवाह, गजब भइले राम, वीर छत्रसाल जैसी फिल्मों में अभिनय किया। भोजपुरी बोली को सर्वप्रथम मेलुनाइड पर उकेरते हुए भोजपुरी भाषा का प्रचार किया। उनकी साहित्यिक कविता 'नाव बटे धाम रे, हिरन का पियास, जेठ की दुपहरी में, सेर के बा अनसा, रेंगिया बताई दूर नदी बटे बाग, लमी अंधार दौड़ हिरना, ए उजड़ किनारा', 'है जाए मुझे सो जाने दो, तेरा घुंघरू-घुंघरू जाने', 'कविता से प्रीत लगाई थी, तब कविता ने संग कैसा?', 'जहर का पेड़ उगा है भाई, हमी गाय है हमी कसाई', आज भी साहित्य प्रेमियों की जुबां पर है। उन्होंने संगर के फूल, सावन की फुहार, लाहौर की नार, मधु कृष्ण, मधु कृष्ण ऐसे लगभग कविताओं की रचना कर साहित्य प्रेमियों के दिलों में अपना जगह बनाया। भोजपुरी के उत्थान के लिए अपना जीवन समर्पित करने वाले ऐसे भोजपुरी चलचित्र जगत के नायक आज भी साहित्य प्रेमियों के दिलों में हैं।

मोती बीए के चिंतन कक्ष में सहेजी गई हैं उनकी यादें

मुम्बई से लौटने के बाद जब मोती बीए श्रीकृष्ण इण्टर कॉलेज आजमगढ़ में शिक्षण कार्य करने लगे तो नंदना डॉट फीरोजी में वर्ष 1913 में तल्ली निवास के नाम से एक मकान का निर्माण कराते हुए फीरोजी सम्पर्क रहने लगे। जहां उन्होंने अंतिम सांस भी ली। उनके वंशज आज भी तल्ली निवास स्थित उनके चिंतन कक्ष में उनकी यादों को सहेजे हुए हैं। आलमारियों में उनकी स्वरचित रचनाओं को ग्रंथावली के रूप में प्रकाशित कराते हुए बड़े पुत्र व कवि भास्कर उपाध्याय व छोटे पुत्र शिक्षक अंजनी उपाध्याय सहेज रहे हैं। उनके दुर्लभ चित्र व लगभग लेख आलमारी में सुरक्षित है। चिंतन कक्ष में पहुंचने पर आज भी प्रतीत होता है कि मोती बीए अपने बिस्तर पर बैठ रचनाओं को लिखने में तल्लीन हैं।

समाचार पत्र अमर उजाला और राष्ट्रीय सहारा

19 जनवरी 2018

मोती बीए की पुण्यतिथि मनाई गई

मुख्य अतिथि ने मोती बीए के चित्र पर श्रद्धासुमन अर्पित किए

मोती बीए की पुण्यतिथि पर आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते वक्ता।

अमर उजाला ब्यूरो

बरहज।

भोजपुरी भाषा को देश में फैलाने वाले मोती बीए शिद्दत से याद किए गए। नगर स्थित उनके पैतृक आवास पर पुण्यतिथि मनाई गई। गुरुवार को आयोजित कार्यक्रम में सर्वप्रथम मुख्य अतिथि प्रधानाचार्य रामेश्वर यादव और आगंतुकों ने मोती बीए के चित्र पर श्रद्धासुमन अर्पित किया।

अपने संबोधन में मुख्य अतिथि ने कहा कि मुंबई फिल्म जगत में भोजपुरी की अलख जगाने वाले मोती बीए पहले शख्स थे। जिनके गीत आज भी लोगों के लबों पर हैं। कवि रमेश तिवारी 'अनजान' ने मोती बीए की लिखित कविता कौने खोतवा में लुकइलू..., चिरई बड़ा तू जुलुम कइलू घर में खोतवा लगइलू...प्रस्तुत किया। अध्यक्षता इंद्रजीत उपाध्याय और संचालन अंजनी उपाध्याय ने किया। इस दौरान अंटू तिवारी, जितेंद्र भारत, सुशील उपाध्याय, चिंतामणि साहनी, भालचंद उपाध्याय, विपुल विक्रम राय आदि उपस्थित रहे।

रुपहले पर्दे पर बिखेरी थी भोजपुरी की महक

बरहज। क्षेत्र के बरेजी गांव निवासी राधाकृष्ण उपाध्याय के बेटे मोती बीए द्वारा रुपहले पर्दे पर बिखेरी गई भोजपुरी की महक आज भी लोगों के जेहन में है। उन्होंने फिल्मों में अभिनय के साथ करीब 80 फिल्मों के लिए गीत लिखे थे। 1947 में किशोर साहू की फिल्म 'नदिया के पार' में मोती बीए की लिखित गीत अभिनेता दिलीप कुमार और कामिनी कौशल पर फिल्माया गया था। इसी फिल्म में उनकी गजल हमको तुम्हारा ही आसरा, तुम हमारे हो न हो..., कठवा के नईया बनइह रे मल्लहवा नदिया के पार दे उतार...काफी चर्चित हुई थी। इसके अलावा राजपूत, रामविवाह, गजब भइले रामा, घटोत्कच, साजन, कैसे कहूं आदि फिल्मों में इन्होंने अभिनय के साथ-साथ गीत लिखे थे। उन्होंने आंसुओं के पार से गाकर मुझे किसने पुकारा, गीत जीवन का सहारा, असों आइल महुआबारी में बहार सजनी, मौजे दरिया में बहो तुम अलविदा ऐ दोस्तों आज भी लोगों को झकझोर देता है। इन्होंने 1934-36 में हाईस्कूल बरहज के किंग जार्ज और इंटर गोरखपुर के नाथ बंदावत से पास किया था। जबकि स्नातक बनारस से किया था।

भोजपुरी के सशक्त हस्ताक्षर रहे मोती बीए

9 वीं पुण्य तिथि मनायी गयी

समाचार पत्र हिन्दुस्तान 19,18 जनवरी 2018

वैश्विक फलक पर भोजपुरी भाषा का परचम लहराने वाले महाकवि मोती बी.ए. के योगदान को भुलाया नहीं जा सकता: रामेश्वर

शिद्दत से याद किए गए भोजपुरी के महाकवि मोती बी.ए.

किया याद

बरहज। हिन्दुस्तान संवाद

भोजपुरी के महाकवि मोती बी.ए. की नौवीं पुण्यतिथि गुरुवार को नंदना वार्ड पश्चिमी स्थित उनके निवास स्थान पर मनाई गई। इस दौरान वक्ताओं ने मोती बी.ए. के चित्र पर पुष्प अर्पित कर शिद्दत से याद किया।

मुख्य अतिथि प्रधानाचार्य व कवि रामेश्वर प्रसाद यादव ने कहा कि वैश्विक फलक पर भोजपुरी भाषा का परचम लहराने वाले महाकवि मोती बी.ए. के योगदान को भुलाया नहीं जा सकता है। विशिष्ट अतिथि प्रधानाचार्य व कवि रमेश तिवारी 'अंजान' ने कहा कि अपनी विविध रचनाओं से एक अलग पहचान बनाने वाले मोती बी.ए. ने बरहज का नाम रोशन किया है। विशिष्ट अतिथि कैलाश नाथ तिवारी, कलाकार अंदू तिवारी 'भोजपुरिया', अरविन्द त्रिपाठी, चिंतामणि माहनी ने अपना विचार रखा। अध्यक्षता कर रहे पूर्व प्रवक्ता व कवि इन्द्रजीत उपाध्याय ने कहा कि ऐसे शलाका पुरुष को याद कर आज भी साहित्य प्रेमी अपने को गौरवान्वित महसूस करते हैं। इस दौरान वक्ताओं ने मोती बी.ए. की रचनाओं को दुहराते हुए श्रद्धा सुमन अर्पित किया। संचालन अंजनी कुमार उपाध्याय ने की। यहां पूर्व प्रवक्ता रामजी यादव, भालचंद उपाध्याय, सुशील उपाध्याय, विजय कुमार जायसवाल, जितेन्द्र भारत, विपुल विक्रम राय, श्याम नारायण मालवीय, दीनानाथ यादव, कुंज बिहारी विश्वकर्मा, करन विश्वकर्मा, विजय प्रकाश तिवारी, रत्नेश पाण्डेय, अभिषेक उपाध्याय समेत अन्य लोग रहे।

पुण्यतिथि

- मोती बी.ए. की नौवीं पुण्यतिथि पर आयोजित हुआ कार्यक्रम
- वक्ताओं ने उनकी रचनाओं को दुहराते हुए श्रद्धा से किया याद

गुरुवार को कस्बा स्थित मोती बी.ए. के निवास स्थान पर प्रबुद्धजनों ने महाकवि मोती बी.ए. के चित्र पर श्रद्धा सुमन अर्पित किए • हिन्दुस्तान

हर लब पे गम का अफसाना, कहने की तमन्ना...

बरहज | संतोष कुमार उपाध्याय

वर्ष 1935 में अपनी प्रथम कविता 'रे मोहि घूंघट का पट खोल, है मेरा उद्विग्न हृदय सुनने को तेरा बोल...' से कवि जगत में अपनी दमदार उपस्थिति दर्ज करा कवि मंचों पर धूम मचा देने वाले महाकवि मोती बी.ए. भोजपुरी गीतों को फिल्मी दुनिया में प्रतिष्ठित करने वाले पहले शख्स हैं। उन्होंने 'पंगु, बधिर, अर्द्धांध, मूक हूं, पीर कलेजे दबी एक हूं। काने को हूं एक हकाई, टुकड़े-टुकड़े, टूक-टूक हूं।', 'हर सुख में है शबनम के कतरे, हर आंख में आंसू की बूंदें। हर लब पे गम का अफसाना, कहने की तमन्ना कौन करे।' रचनाओं के माध्यम से ही उन्होंने एक अलग पहचान बनाते हुए बरहज क्षेत्र का नाम भी रोशन किया।

मोती बी.ए. की पुण्यतिथि पर विशेष

- वर्ष-1935 में अपनी प्रथम कविता से कवि जगत में दर्ज कराई थी उपस्थिति
- भोजपुरी सिनेमा के महानायक रह चुके हैं कवि मोती बी.ए.
- 80 से अधिक फिल्मों में लिखे थे गीत

एक अगस्त-1919 को बरहज तहसील के ग्राम बरेजी के मोती मिट्टी में राधाकृष्ण उपाध्याय के पुत्र रूप में जन्मे मोतीलाल उपाध्याय को दुनिया में मोती बी.ए. के नाम से ही ख्याति मिली। तभी तो उन्होंने अपने परिचय में लिखा है कि 'कहने को एम.ए., बी.टी., साहित्य रत्न सदस्य, लेकिन पहली थी डिग्री पर दुनिया में बदनाम'। वर्ष 1934 में हाईस्कूल की शिक्षा बरहज के किंग जार्ज कॉलेज (हर्ष चंद), 1936 में नाथ पंचायत इण्टरमीडिएट कालेज गोरखपुर से इण्टर तथा 1939 में स्नातक की शिक्षा काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से प्राप्त की। शिक्षा ग्रहण करने के बाद पत्रकारिता से जुड़ कर आज भी साहित्य प्रेमी अपने को गौरवान्वित महसूस करते हैं। इस दौरान वक्ताओं ने मोती बी.ए. की रचनाओं को दुहराते हुए श्रद्धा सुमन अर्पित किया। संचालन अंजनी कुमार उपाध्याय ने की। यहां पूर्व प्रवक्ता रामजी यादव, भालचंद उपाध्याय, सुशील उपाध्याय, विजय कुमार जायसवाल, जितेन्द्र भारत, विपुल विक्रम राय, श्याम नारायण मालवीय, दीनानाथ यादव, कुंज बिहारी विश्वकर्मा, करन विश्वकर्मा, विजय प्रकाश तिवारी, रत्नेश पाण्डेय, अभिषेक उपाध्याय समेत अन्य लोग रहे।

फिल्मों में अभिनय के साथ खूब लिखे हैं गीत: अस्सी से अधिक फिल्मों में गीत लिखने वाले मोती बी. ए. 1947 में किशोर साहू की फिल्म 'नदिया के पार' जो अभिनेता दिलीप कुमार व अभिनेत्री कामिनी कौशल को लेकर बनाई गई थी, उसमें मोती जी ने सबसे पहले भोजपुरी गीत 'कठवा के नइया, बनवले रे मलहवा, नदिया के पार दे उतार' देकर भोजपुरी बोली को मेलुलाइड पर लाने वाले प्रथम व्यक्ति थे। इसी फिल्म में उनकी एक गजल छाती चर्चित हुई थी, जिसका बोल था 'हमको तुम्हारा ही आसरा, तुम हमारे हो न हो...।' इसके अलावा फिल्म साजन, कैसे कहूं, राजपूत, राम विवाह, गजब भइले राम, चोर पटोकवा जैसी फिल्मों में अभिनय के साथ अन्य 80 फिल्मों में गीत भी लिखे। उनका जीवन गीत सागर में ही डूबता-उतराता रहा। तभी तो उन्होंने लिखा है 'आंसुओं के पार से आकर मुझे किसने पुकारा, गीत जीवन का सहारा।' अपनी अविस्मरणीय छवि छोड़ 90 वर्ष की अवस्था में 18 जनवरी 2009 को परलोक सिधार गए।

सम्पदा अगस्त, 2020

श्री मोती बीए के समाचार को सम्मानजनक स्थान देने के लिए समाचार पत्र अमर उजाला के जिला प्रतिनिधि, स्थानीय प्रतिनिधि और अमर उजाला परिवार का सम्पदा न्यूज एवं श्री मोती बीए ट्रस्ट हृदय से आभारी है।

जयंती पर याद किए गए मोती बीए

संवाद न्यूज एजेंसी

बरहज। नगर के नंदना पश्चिमी वार्ड स्थित आवास पर शनिवार को मोती बीए की 101वीं जयंती मनाई गई। 1940 के दशक में रुपहले पर्दे पर उन्होंने भोजपुरी की अलख जगाया था। जयंती पर वक्ताओं ने कहा कि मोती बीए के लिखे गीत और कविताएं आज भी उनकी यादें ताजा करती हैं। जयंती के अवसर पर मोती बीए के चित्र पर पुष्पार्चन कर दीप प्रज्वलित किया। कोरोना संकट में मास्क और सोशल डिस्टेंसिंग के बीच कार्यक्रम के पहले दिन राम संकीर्तन, कथा आदि का आयोजन हुआ। पुत्र भालचंद उपाध्याय ने कहा कि बड़े पर्दे पर उनके दर्जनों गीत हिट हुए हैं। उनकी कविताएं आज भी पढ़ी जाती हैं। इस दौरान अंजनी उपाध्याय, देवाशीष उपाध्याय, वर्तिका उपाध्याय, अरविंद त्रिपाठी, रामविलास प्रजापति, रमेश तिवारी अंजान आदि उपस्थित रहे।

साहित्य अकादमी से सम्मानित हैं मोती : सनन-सनन बहे रे पुरवइया...गीत 1970-80 के दशक काफी चर्चा में था। इसका प्रसारण करीब 20 मिनट तक विविध भारती पर किया गया था। मोती बीए शिक्षक होने के साथ सफल गीतकार और कवि थे। उन्हें साहित्य अकादमी की ओर सम्मानित किया गया था। वे फिल्मी जगत के नामचीन हस्तियों में रहे। हिंदी, भोजपुरी फिल्मों में उनके लिखे गीत आज भी

बरहज नंदना पश्चिमी वार्ड में मोती बीए की जयंती पर पुष्पार्चन करते गणमान्य। अमर उजाला

लोग गुनगुनाते हैं। उन्हें 1942 में मुंबई के फिल्मीस्तान और लाहौर के पंचोली आर्टस में फिल्मों में गीत लिखने का मौका मिला था। 1948 में पहली भोजपुरी फिल्म नदिया के पार में उन्होंने मोरे राजा हो ले चलअ नदिया के पार..., दिल ले के भागा..., बजरिया में अइहो...सहित 13 गीतों की रचना की। जिसे दिलीप कुमार-कौशल कामिनी ने अभिनीत किया। रामचंद्र ने अपने सुरों से सजाया था।

मोती बीए ने 1952 में हिंदी फिल्म राजपूत में पहला जोगिया लिखा था। जिसे हसन लाल-भगत राम ने संगीत दिया था। गायक रफीक और गायिका शमशाद बेगम थीं। 1980 में राज्यपाल गणपति राव देवजी तपासे ने सर्वश्रेष्ठ शिक्षक पुरस्कार से मोती बीए को सम्मानित किया था। वह कई पत्र, पत्रिकाओं में सह-संपादन का कार्य किए।

थैंक्स, अमर उजाला समाचार पत्र

दिनाँक 01 अगस्त 2011 के समाचार

मोती बीए एक यशस्वी-मनस्वी साहित्यकार

दैनिक जागरण, वाराणसी मण्डल

मोती बी0ए0 एक यशस्वी—मनस्वी साहित्यकार

दिनाँक 04 अगस्त 2012 के समाचार

समाचार पत्र दैनिक जागरण, वाराणसी मण्डल

मुख्य दैनिक 4 अगस्त 2012 (6)

भोजपुरी संघ द्वारा मोती बीए की 94वीं जयंती सम्पन्न

वाराणसी। उत्तर प्रदेश भोजपुरी संघ द्वारा मंगलवार को मैदागिन स्थित जैन मंदिर में प्रख्यात गीतकार, साहित्यकार, पत्रकार और शिक्षक मोती बीए की 94वीं जयंती मनायी गयी। इस अवसर पर भोजपुरी आर्गनाइजेशन के महासचिव अपूर्व नारायण तिवारी ने मोती बीए के असाधारण व्यक्तित्व व कृतित्व के बारे में बताते हुए कहा कि वे हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी व भोजपुरी में 50 से ज्यादा किताबें लिखी हैं। जिनमें गद्य व पद्य दोनों शामिल हैं। 1939 में प्रख्यात क्रांतिकारी शचीन्द्रनाथ सान्याल के अखबार 'अग्रगामी' में बनारस में मोती बीए ने सम्पादकीय सहायक के रूप में कार्य किया। फिर आज आर्यावर्त व 'संसार' अखबार में कार्य किया। पत्रकारिता के साथ बीएचयू से एमए व हिन्दी साहित्य सम्मेलन से बीटी साहित्य रत्न किया। 1944 में अंग्रेजी हुकूमत द्वारा भारत रक्षा कानून के तहत गिरफ्तार हुए तथा बेतगंज थाना व शिवपुर जेल में बंद रहे। मोती बीए को फिल्मी दुनिया का पहला भोजपुरी गीतकार माना जाता है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता जितेन्द्र नाथ सिंह 'जीत' ने, संचालन महासचिव अपूर्व नारायण तिवारी तथा आभार शिवशंकर सिंह द्वारा किया गया। उपस्थित लोगों में राजेन्द्र गुप्ता, शिवशंकर सिंह, आनंद प्रकाश तिवारी, डा प्रेमशंकर पाण्डेय, प्रबोध मिश्रा, बच्चेलाल, आरसी त्रिपाठी, विभूति नारायण सिंह, अजय सिंह आदि प्रमुख थे।

दिनाँक 02 अगस्त 2012 के समाचार

समाचार पत्र राष्ट्रीय सहारा, वाराणसी मण्डल

राष्ट्रीय सहारा — वाराणसी

www.samaylive.com

वाराणसी बृहस्पतिवार 2 अगस्त 2012

भोजपुरी गीतकार मोतीलाल की जयंती मनी

वाराणसी (एसएनबी)। उत्तर प्रदेश भोजपुरी संघ ने बुधवार को भोजपुरी के प्रख्यात गीतकार व साहित्यकार मोतीलाल उपाध्याय की 94वीं जयंती मनायी। इस अवसर पर प्रख्यात गीतकार को श्रद्धांजलि दी गयी। मैदागिन स्थित जैन मंदिर में आयोजित इस कार्यक्रम में भोजपुरी संघ के महासचिव अपूर्व नारायण तिवारी ने कहा कि भारतीय सिनेमा के पहले भोजपुरी गीतकार मोतीलाल ने 1948 में आयी भोजपुरी फिल्म नदिया के पार के गीत लिखे थे। फिल्म में दिलीप कुमार व कामिनी कौशल ने मुख्य भूमिका निभायी थी। मोतीलाल ने 50 से ज्यादा भोजपुरी फिल्मों के गीत लिखे हैं। इनमें साजन, सिन्दूर, इन्द्रासन, मिस्टर एंड मिसेज, बंबई, काफिला, चम्पा-चमेली, विवाह, रामायण, ममता आदि फिल्में थीं। उन्होंने कहा कि श्री उपाध्याय भोजपुरी के अलावा हिन्दी, अंग्रेजी व उर्दू के गीतकार के साथ एक शिक्षक भी थे। उन्होंने पत्रकार के रूप में भी काम किया तथा 1944 में अंग्रेजी हुकूमत ने गिरफ्तार किया था। इनके साहित्य का मूल्यांकन न होना दुख का विषय है। इनकी रचनाओं पर भी आज शोध हो रहा है। इस अवसर पर जितेन्द्र नाथ सिंह, शिवशंकर सिंह, राजेश्वर त्रिपाठी, जियालाल, डा. प्रेमशंकर, राजेन्द्र गुप्ता, प्रबोध मिश्रा, विभूति नारायण, आनंद प्रकाश, प्रवीण कुमार आदि मौजूद थे।

दिनाँक 04 अगस्त 2012 के समाचार

काशीवार्ता वाराणसी मण्डल समाचार पत्र की प्रतिक्रिया

काशीवार्ता (वाराणसी) 4 अगस्त 2012

गीतकार को दी श्रद्धांजलि

समाचार पत्र दैनिक जागरण, वाराणसी मण्डल

गीतकार मोती बीए की मनाई जयंती

वाराणसी: भारतीय सिनेमा के प्रथम भोजपुरी गीतकार मोतीलाल उपाध्याय उर्फ मोती बीए की बुधवार को मैदागिन जैन मंदिर में जयंती मनाई गई। उत्तर प्रदेश भोजपुरी संघ के महासचिव अपूर्व नारा तिवारी ने उनके व्यक्तित्व पर प्रकाश डाल

दिनाँक 02 अगस्त 2012 के समाचार

समाचार 'जनसंदेश टाइम्स' और 'चेतना विचारधारा' की प्रतिक्रिया

जनसंदेश टाइम्स

वाराणसी, गुरुवार, 2 अगस्त 2012

जयंती पर याद किए गये गीतकार मोती

वाराणसी। उत्तर प्रदेश भो की ओर से प्रसिद्ध गीतका और शिक्षक मोतीलाल उपा बीए' की 94वीं जयंती जयंती समारोह का अ को मैदागिन स्थि जैन संघ के महासचि तिवारी ने मोती के व्यक्तित्व व कृतित्व पर प्र हुए कहा कि हिंदी, उर्दू, भोजपुरी में गद्य व पद्य की उन्हे ज्यादा किताबें लिखीं इस मौक आनंद प्रकाश तिवारी, जितेंद्र ना 'जीत', राजेश्वर त्रिपाठी, राजेंद्र बच्चेलाल, प्रबोध मिश्र, विभुति नारा सिंह, डा. प्रेम शंकर पाण्डेय व अ सिंह आदि लोग मौजूद थे। संवाद

चेतना विचारधारा

जयंती पर याद किए गए मोतीलाल बीए

वाराणसी। विश्व भोजपुरी सम्मेलन के राष्ट्रीय सचिवालय में प्रख्यात गीतकार, साहित्यकार अध्यापक रहे मोतीलाल उपाध्याय की ९४वीं जयंती मनाई गई। रामनग स्थित रामबाग में हुए इस कार्य में विश्व भोजपुरी सम्मेलन के समन्वयक अरुण ने ने क के हिन्दी, भाषा में हि

दिनाँक 02 अगस्त 2011 के समाचार

समाचार पत्र राष्ट्रीय सहारा, वाराणसी मण्डल

राष्ट्रीय सहारा
वाराणसी। मंगलवार • 2 अगस्त • 2011

स्वाभिमानी रचनाकार थे मोती बाबू

जयंती समारोह में शिरकत करते विशिष्ठजन। *फोटो: एसएनबी*

वाराणसी (एसएनबी)। उत्तर प्रदेश भोजपुरी संघ के तत्वावधान में मंसाराम स्थित मोहनलाल मौर्या स्मृति सभागार में गीतकार-रचनाकार मोती बीए की 43वीं जयंती धूमधाम से मनायी गयी।

भोजपुरी आर्गनाजेशन के महासचिव अपूर्व नरायण तिवारी ने कहा कि मोती बाबू ने हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी तथा भोजपुरी आदि भाषाओं में कम से कम पचास पुस्तकें लिखी है। उन्होंने कहा कि मोती बीए फिल्मी दुनिया के पहले भोजपुरी गीत माने जाते हैं। पं. हरिराम द्विवेदी ने कहा कि मोती बाबू क्रांतिकारी स्वभाव तथा स्वाभिमानी मिजाज के रचनाकार थे। मोती बाबू के लिखित गीत, गजल तथा नज्मों को आज भी लोग गुनगुनाते हैं।

जयंती समारोह में राजेन्द्र गुप्त, मारकण्डेय द्विवेदी, शिवशंकर सिंह, चन्द्रकान्त सिंह, जितेन्द्र नाथ जीत, शमीम गाजीपुरी, लाल चन्द गुप्त, रमेश चन्द्र तिवारी, राजकुमार मौर्या, पुरूषोत्तम मिश्र, बच्चे लाल गौड़, भोला नाथ तिवारी आदि मौजूद रहे।

दिनाँक 02 अगस्त 2011 के समाचार

समाचार पत्र हिन्दुस्तान और सन्मार्ग, वाराणसी के समाचार

• वाराणसी • मंगलवार • 02 अगस्त 2011 हिन्दुस्तान

याद किये गये मोती बीए

वाराणसी। उत्तर प्रदेश भोजपुरी संघ की तरफ से मंसाराम फाटक (चेतगंज) स्थित एक सभागार में सोमवार को आयोजित जयंती समारोह में वक्ताओं ने भोजपुरी गीतकार मोती बीए के व्यक्तित्व-कृतित्व का बखान किया। अध्यक्षता पं. हरिराम द्विवेदी ने की।

सन्मार्ग

शिक्षक मोती लाल उपाध्याय की मनायी गयी जयन्ती

वाराणसी,४ अगस्त। उत्तर प्रदेश भोजपुरी संघ द्वारा कल मनसाराम स्थित मोहन लाल मौर्या स्मृति सभागार में प्रख्यात गीतकार, साहित्यकार, पत्रकार और शिक्षक मोती लाल उपाध्याय की ९३ वीं जयन्ती मनायी गयी। विषय प्रवर्तन करते हुए वर्ल्ड भोजपुरी आर्गनाइजेशन महासचिव अपूर्व नारायण तिवारी, (बनारसी बाबू) ने स्वर्गीय मोती लाल जी के असाधारण व्यक्तित्व व कृतित्व के बारे में बताया। कार्यक्रम की अध्यक्षता पंडित हरिराम द्विवेदी ने की तथा संचालन संघ के महासचिव अपूर्व नारायण तिवारी व आभार राजेन्द्र गुप्त द्वारा किया गया।

दिनाँक 03 अगस्त 2011 के समाचार

समाचार पत्र दैनिक मान्यवर और युनाइटेड भारत, वाराणसी के समाचार

दैनिक मान्यवर

मनायी गयी मोती बी. ए. की 93वीं जयन्ती

वाराणसी। उत्तर प्रदेश भोजपुरी संघ द्वारा सोमवार को मसांराम स्थित मोहनलाल मौर्या स्मृति सभागार में प्रख्यात गीतकार, साहित्यकार, पत्रकार और शिक्षक मोतीलाल उपाध्याय (मोती बी. ए) की 93वी जयन्ती मनायी गयी। विषय प्रवर्तन करते हुये वर्ल्ड भोजपुरी आर्गनाइजेशन (डब्लू बी ओ) के महासचिव– अपूर्व नारायण तिवारी (बनारसी बाबू) ने श्रद्धेय मोती बी. ए. के असाधारण व्यक्तित्व व कृतित्व बारे मे बताया कि हिन्दी, उर्दू अंग्रेजी व भोजपुरी सीखे चार भाषाओ मे इन्होने 50 से ज्यादा किताबें लिखी हैं। जिनमे गद्य व पद्य दोनो शामिल हैं। अन्य वक्ताओं ने मोती बी. ए. को श्रद्धान्जली देते उनके जुझारू क्रान्तिकारी स्वाभिमानी मिजाज, अदभूत सरल व्यक्ति व कृतित्व को याद करते हुए नगन किया। पहले सत्र के कार्यक्रम की अध्यक्षता प0 हरिराम द्विवेदी ने की, संचालन महासचिव अपूर्व नारायण तिवारी तथा आभार राजेन्द्र ग्रप्त द्वारा किया गया। मोती बी. ए. का साहित्य वैश्विक स्तर पर आज भी स्थापित है। इस मौके पर प0 हरिराम द्विवेदी, प0 मारकण्डेय त्रिवेदी , शिवशंकर सिंह, [illegible] तिवारी, कुवर सिंह कुवंर आदि लोग उपस्थित रहें।

युनाइटेड भारत, इलाहाबाद, 03 अगस्त 2011

भोजपुरी साहित्यकार मोती बीए की मनायी गयी जयंती

वाराणसी। उत्तर प्रदेश भोजपुरी संघ द्वारा भोजपुरी के मूर्धन्य विद्वान मोती बीए की 93 वी जयंती मनायी गयी जिसमें कवियों एवं साहित्यकारों ने उनके द्वारा भोजपुरी साहित्य में दिये गये योगदान को याद किया। कार्यक्रम का आयोजन मंसाराम स्थित मोहनलाल मौर्या स्मृति सभागार में किया गया। इस अवसर पर अपूर्व नारायण तिवारी(बनारसी बाबू) ने श्रद्धेय मोती बीए के असाधारण व्यक्तित्वऔर कृतित्व के बारे में बताया।उन्होंने कहा कि उनका हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू और भोजपुरी पर समान अधिकार था।

उन्होंने इन भाषाओं में लगभग ५० रचनाएं की है।मोती बीए को फिल्मी दुनिया का पहला भोजपुरी गीतकार माना जाता है। उनके द्वारा नदिया के पार , रामबाण, गजब भइले रामा, देवरा-भउजइया,ठकुराइन जैसी सैकड़ो फिल्मों में गीत लिखे और गाया भी। कार्यक्रम में हरिराम द्विवेदी, राजेन्द्र गुप्त, श्रीकृष्ण तिवारी, जितेन्द्र नाथ जीत सहित अनेक लोग मौजूद रहे।

03 अगस्त 2011 के समाचार

समाचार पत्र स्वतंत्र चेतना और जनमुख, वाराणसी के समाचार

स्वतंत्र चेतना 3
वाराणसी, बुधवार, 03 अगस्त 2011

मोती बी.ए. की 93वीं जयंती सम्पन्न

वाराणसी। उ.प्र. भोजपुरी संघ ने कल मंसाराम स्थित मोहनलाल मौर्या स्मृति सभागार में प्रख्यात गीतकार, साहित्यकार, पत्रकार और शिक्षक मोतीलाल उपाध्याय 'मोती बी.ए.' की 93वीं जयंती मनायी गयी। विषय प्रवर्तन करते हुए वर्ल्ड भोजपुरी आर्गनाइजेशन के महासचिव अपूर्व नारायण तिवारी बनारसी बाबू ने श्रद्धेय मोती बी ए को असाधारण व्यक्तित्व व कृतित्व के बारे में बताया कि हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी व भोजपुरी सरीखे चार भाषाओं में इन्होंने पचास से ज्यादा किताबें लिखी हैं, जिनमें गद्य व पद्य दोनों शामिल हैं।

1939 में प्रख्यात क्रांतिकारी सचीन्द्रनाथ सान्याल के अखबार 'अग्रगामी' में बनारस में मोती बीए ने संपादकीय सहायक रूप में कार्य किया फिर आज आर्यावर्त व संसार अखबार में कार्य किया। फिल्मी दुनिया के शिखर पर रहकर भी मोती बीए द्वारा अपने गांव बरहज देवरिया वापस लौटकर 1952 से 1980 तक अध्यापन कार्य करना इतिहास की अपूर्व विरलतम घटना रही। यह एक क्रांतिकारी, स्वाभिमानी व भोजपुरिया खाटी स्वभाव ही था जिसने ऐश्वर्य-माया को ठुकरा दिया [illegible] फिल्मी दुनिया में रिदम का राजा कहा जाता था। इस दौरान उपस्थित प्रमुख लोगों में पं. हरिराम द्विवेदी, पं. मारकण्डेय त्रिवेदी, शिवशंकर सिंह, चन्द्रकांत सिंह, जितेन्द्र नाथ, पं. श्रीकृष्ण तिवारी, शमीम गाजीपुरी, लालचंद गुप्त, रमेश चन्द्र तिवारी आदि उपस्थित रहे।

04 अगस्त 2011 के समाचार

जनमुख दैनिक 4 अगस्त 2011 (4)

मोती बी.ए. की 93वीं जयंती मनायी गयी

वाराणसी। उप्र भोजपुरी संघ द्वारा मंसाराम स्थित मोहनलाल मौर्या स्मृति सभागार में प्रख्यात गीतकार, साहित्यकार, पत्रकार और शिक्षक मोतीलाल उपाध्याय की 93वीं जयंती मनायी गयी।

इस अवसर पर वक्ताओं ने उनके असाधारण व्यक्तित्व व कृतित्व की चर्चा करते हुए कहा वे हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी व भोजपुरी भाषा में 50 से ज्यादा किताबें लिखी जिनमें गद्य व पद्य दोनों शामिल है। जो आज भी तमाम विश्वविद्यालयों में पढ़ाए जा रहे हैं। 1939 में प्रख्यात क्रान्तिकारी शचीन्द्रनाथ सान्याल के अखबार अग्रगामी में सम्पादकीय सहायक के रूप में कार्य किया फिर आज, आर्यावत व संसार अखबार में कार्य किया। उन्हें फिल्मी दुनिया का पहला भोजपुरी गीतकार माना जाता है। उन्होंने 50 से अधिक पिक्चरों में गीत लिखे। वे दुनिया के शिखर पर रहकर भी अपने गांव बरहज (देवरिया) वापस लौटकर 1952 से 1980 तक अध्यापन कार्य किये। आपको फिल्मी दुनिया में रिदम का राजा कहा [illegible] था। उनकी मित्र मंडली में डा [illegible] सिंह, डा स्वामीनाथ गाजी[illegible] पुत्र प्रेमचंद सरीखे [illegible]

वक्ताओं ने उन्हें साहित्य जगत का युग पुरुष बताते हुए उन[illegible] जन्मजात क्रांतिकारी, स्वाभिमानी [illegible] कर नमन किया। कार[illegible] की अध्यक्षता पं. हरिराम द्विवेदी ने की, संचालन महासचिव अप[illegible] नारायण तिवारी (अ[illegible]) [illegible] राजेन्द्र गुप्त द्वारा किया।

उपस्थित प्रमु[illegible] पं. हरिराम द्विवेदी, पं [illegible] शिवशंकर सिंह [illegible] 'जीत' [illegible] गाजीपुरी, [illegible]वारी, कुंवर [illegible] रहे।

वाराणसी से समाचार पत्र गाण्डीव की रिपोर्ट

गांडीव

भोजपुरी के पहले गीतकार थे मोती बीए

काशी। प्रख्यात गीतकार, साहित्यकार, पत्रकार एवं शिक्षक मोती लाल उपाध्याय (मोती बीए) की जयंती का सोमवार को उत्तरप्रदेश भोजपुरी संघ के तत्वावधान में मंशाराम स्थित मोहन लाल स्मृति सभागार में मनायी गयी। इस अवसर पर वर्ल्ड भोजपुरी आर्गनाइजेशन के महासचिव अपूर्व नारायण तिवारी ने मोती बीए के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि मोती बीए ने हिंदी,उर्दू, अंग्रेजी व भोजपुरी में साहित्य सृजन करते हुए गद्य एवं पद्य दोनों विधाओं में 50से ज्यादा

जयंती पर संगोष्ठी, कवि गोष्ठी सम्पन्न

किताबें लिखी,जिनमें लतिका, मोती के गीत, हर सिंगार के फूल,कोइलिया, दर्दे गुलर आदि प्रमुख हैं, जिन्हें आज तमाम विश्व विद्यालयों में पढ़ाया जा रहा है। उन्होंने एक पत्रकार के रुप में अग्रगामी आज आर्यावर्त,संसार आदि पत्रों में अपनी सेवायें दी। मोती बीए को भोजपुरी का पहला गीतकार माना जाता है। उन्होंने 50 से ज्यादा फिल्मों में गीत लिखे जिनमें नदिया के पार, मिस्टर एंड मिसेज बंबई, साजन,सिंदूर आदि प्रमुख हैं। उन्होंने शेक्सपीयर, बर्ड्स बर्थ, अब्राहम लिंकन के साहित्यों का भोजपुरी में अनुवाद भी किया। बहुमुखी प्रतिभा के धनी होकर भी मोती बीए ने वापस अपने गांव लौटकर लंबे समय तक अध्यापन कार्य किया। श्री तिवारी ने बताया कि अपने विरल स्वभाव के कारण उन्होंने ऐश्वर्य, माया ठुकरा दिया। साहित्य में इतना योगदान होने के बावजूद इतिहास द्वारा इनका सही मूल्यांकन आज तक नहीं हुआ। यह अत्यंत विषाद का विषय है। आयोजन में अन्य वक्ताओं ने भी मोती बीए के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का स्मरण कर उन्हें श्रद्धांजलि दी तथा उन्हें युगपुरुष की संज्ञा दी। कार्यक्रम के प्रथम सत्र में हुई गोष्ठी में शिव शंकर सिंह, चंद्रकांत सिंह, जितेंद्रनाथ मिश्र, कुंवर सिंह, रमेशचंद्र के साथ ही सैकड़ों अन्य लोग भी उपस्थित रहे। दूसरे सत्र में काव्य गोष्ठी का आयोजन किया गया। कवि गोष्ठी में राजेंद्र गुप्ता, शिव शंकर सिंह, चंद्रकांत सिंह, कृष्ण तिवारी, पं0 हरिराम द्विवेदी ने ऋतु गीत,कजरी, सोहर, गजल, गीत सुनाकर श्रोताओं को रस विभोर कर दिया। कार्यक्रम की अध्यक्षता हरिराम द्विवेदी ने की तथा संचालन अपूर्व नारायण तिवारी ने किया। कार्यक्रम के अंत में आभार व्यक्त करते हुए पं0 कृष्ण तिवारी ने बताया कि मोती बीए पर आज भी शोध हो रहे हैं।

वर्ल्ड भोजपुरी आर्गनाइजेशन के तत्वावधान में सुप्रसिद्ध गीतकार मोती बीए की जयंती पर आयोजित कार्यक्रम में अपूर्व नारायण तिवारी, पं.हरिराम द्विवेदी,पं.श्रीकृष्ण तिवारी।

समाचार पत्र जागरूक एक्सप्रेस, वाराणसी की रिपोर्ट

जागरूक एक्सप्रेस | जागरूक काशी

मोती बी.ए. की ९३वीं जयंती सम्पन्न

वाराणसी। उत्तर प्रदेश भोजपुरी संघ द्वारा १ अगस्त को मंसाराम स्थित मोहनलाल स्मृति सभागार में प्रख्यात गीतकार, साहित्यकार, पत्रकार और शिक्षक मोतीलाल उपाध्याय (मोती बी.ए.) की ९३वीं जयंती मनायी गयी। विषय प्रवर्तन करते हुये वर्ल्ड भोजपुरी आर्गनाजेशन के महासचिव अपूर्व नारायण तिवारी (बनारसी बाबूद्ध ने श्रद्धेय मोती बी.ए. को असाधारण व्यक्तित्व व कृतित्व के बारे में बताया कि हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी व भोजपुरी सरीखे चार भाषाओं में इन्होंने ५० (पचास) से ज्यादा किताबें लिखी है जिनमें गद्य व पद्य दोनों शामिल है। १९३९ में प्रख्यात क्रांतिकारी शचीन्द्रनाथ सान्याल के अखबार अग्रगामी में बनारस में मोती बी.ए. ने सम्पादकीय सहायक रूप में कार्य किया फिर आज, आर्यवर्त व संसार अखबार में कार्य किया।

अन्य वक्ताओं ने मोती बी.ए. को श्रद्धांजलि देते उनके जुझारू क्रांतिकारी, स्वाभिमानी मिजाज, अदभूत सरल व्यक्तित्व व कृतित्व के याद करते हुये नमन किया तथा उनके गीत, गजलों, नज्मों को स्मरण किया तथा साहित्य जगत के युग पुरुष को समाज का आदर्श बताया। पहले सत्र के कार्यक्रम की अध्यक्षता पं. हरिराम द्विवेदी ने की, संचालन महासचिव अपूर्व नारायण तिवारी (बनारसी बाबू) तथा आभार राजेन्द्र गुप्त द्वारा किया गया। मोती बी.ए. का साहित्य वैश्विक स्तर पर आज भी स्थापित है।

उक्त अवसर पर पं.हरिराम द्विवेदी, पं. मारकण्डेय त्रिवेदी, शिवशंकर सिंह, चन्द्रकांत सिंह, जितेन्द्र नाथ 'जीत', पं. श्री कृष्ण तिवारी, शमीम गाजीपुरी, लालचन्द्र गुप्त, रमेश चन्द्र तिवारी, कुवर सिंह कुंवर, राजेश चौबे, ब्रह्म प्रकाश श्रीवास्तव प्रकाश पाण्डेय, प्रबोध मिश्र, बीएन त्रिपाठी, राजकुमार मौर्या, पुरूषोत्तम मिश्र, सतीश, राजकुमार गुप्ता आदि उपस्थित रहे।

दिनाँक 02 अगस्त 2013 के समाचार

समाचार पत्र जनवार्ता और राष्ट्रीय सहारा, वाराणसी के समाचार

जनवार्ता | 3 वाराणसी, शुक्रवार, 2 अगस्त 2013

सिनेमा जगत के पहले भोजपुरी गीतकार रहे मोतीबीए

वाराणसी। उप्र भोजपुरी संघ द्वारा गुरूवार नीलकालेज, मलदहिया में देश के लब्ध बहुभाषी साहित्यकार, पत्रकार, शिक्षक रहे प. मोतीबीए की 95वीं जयंती सोल्लास मनायी गयी। वक्ताओं ने उनके असाधारण व्यक्तित्व व कृतित्व को नमन करते साहित्य जगत व फिल्म जगत में उनके योगदान को बताया। मुख्य अतिथि रूप में बोलते आगरा के पं. शीतनाथ चौबे ने कहा कि भारतीय सिनेमा के पहले भोजपुरी गीतकार रहे मोती बीए ने पचास से ज्यादा फिल्मों में गीत लिखे हैं। जिनमें नदिया के पार, साजन, सिन्दूर, काफिला, रिमझिम, ठकुराइन, चंपा चमेली, सुभद्रा इत्यादि उल्लेखनीय रही है। उन्हें रिद्म का राजा कहा जाता था। अध्यक्षता कर रहे अपूर्व नारायण तिवारी ने बताया कि बहुभाषी मोतीबीए ने पचास से ज्यादा साहित्यिक कृतियां रची है; जो हिंदी, उर्दू, अंग्रेजी व भोजपुरी भाषा में साहित्य की अनमोल धरोहर बन गयी है।

8 राष्ट्रीय सहारा www.s

संक्षिप्त खबर

मोती बीए की मनी 95वीं जयंती

उत्तर प्रदेश भोजपुरी संघ द्वारा नीलकाटेज कालोनी, मलदहिया में बृहस्पतिवार को देश के अप्रतिम बहुभाषी रचनाकार, गीतकार, पत्रकार व शिक्षक रहे पं. मोतीलाल उपाध्याय (मोती बीए) की 95वीं जयंती सोल्लास मनायी गयी। इस मौके पर मुख्य अतिथि पं. शंभूनाथ चौबे ने उनके असाधारण व्यक्तित्व व कृतित्व को नमन किया।

दिनाँक 02 अगस्त 2013 के समाचार

समाचार पत्र युनाइटेड भारत और हिन्दुस्तान की इलाहाबाद, वाराणसी से रिपोर्ट

युनाइटेड भारत, इलाहाबाद, 02 अगस्त 2013

मोती बीए की ९५वीं जयंती मनी

वाराणसी । गीतगार पत्रकार मोती बीए की ९५वीं जयंती गुरूवार को उत्तर प्रदेश भोजपुरी संघ के तत्वावधान में मलदहिया नील काटेज में मनायी गयी । इस दौरान वक्ताओं ने कहाकि सिनेमा जगत के पहले भोजपुरी गीतकार मोती बीए ने अपने असाधारण प्रतिभा से साहित्य एवं फिल्म जगत में उल्लेखनीय योगदान दिया । इसमें मुख्य रूप से अपूर्व नारायण तिवारी जितेन्द्र नाथ जीत डा. आनद तिवारी गोपाल सिंह अंजू त्रिपाठी हरि सेवक आदि शामिल थे ।

हिन्

या

वा
सा
ज
कि
के
हूं।
कि
मल
मल

हिन्दुस्तान वाराणसी • शुक्रवार • 02 अगस्त 2013 06

याद किये गये मोती बीए

वाराणसी। प्रथम भोजपुरी गीतकार, सहित्यकार व शिक्षक मोती बीए की 95वीं जयंती पर उनके गीत गा कर उन्हें याद किया। 'पागल सा मैं घूम रहा हूं, जगती के कण-कण को अपना समझ के चूम रहा हूं।' 'तनी अउरी दाउर हिरना, पा जाइब किनारा।' 'कटवा के नइया बनइहेरे मलहवा' गा कर भोजपुरी बयार बहा दी। मलदहिया स्थित नीलकॉटिज कालोनी में आयोजित जयंती समारोह में शभूंनाथ चौबे, अपूर्व नारायण तिवारी, डॉ. आनंद प्रकाश तिवारी, जितेंद्रनाथ सिंह, गोपाल सिंह, शिवशंकर सिंह आदि थे। निसं

दिनाँक 3 अगस्त 2013 के समाचार

समाचार पत्र काशीवार्ता और जनमुख, वाराणसी के समाचार

काशीवार्ता (वाराणसी) 3 अगस्त

गीतकार की जंयती मनायी

वाराणसी। उ.प्र. भोजपुरी संघ द्वारा नीलकाटेज मलदहिया में देश के लब्ध बहुभाषी साहित्यकार, पत्रकार, शिक्षक पं. मोतीवीर की ९५वीं जयंती सोल्सास मनायी गयी। वक्ताओं ने उंसके असाधारण व्यक्तित्व व कृतित्व को नमन करते हुये साहित्य जगत व फिल्म जगत में उनके योगदान को बताया। मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए आगरा के पं. शंभूनाथ चौबे ने कहा कि भारतीय सिनेमा के पहले भोजपुरी गीतकार रहे मोती बीए ने ५० से ज्यादा फिल्मों में गीत लिखे हैं। कार्यक्रम की अध्यक्षता अपूर्व नारायण तिवारी, आभार जितेन्द्र नाथ सिंह ने किया। इसमें प्रमुख लोगों में गोपाल सिंह, राजेन्द्रनाथ सिंह, पं. हरिसेवक द्विवेदी, शिवशंकर सिंह आदि लोग शामिल थे।

जनमुख दैनिक 3 अगस्त 2013 (6)

मोती बीए की 95वीं जयंती मनाई गई

वाराणसी। उत्तर प्रदेश भोजपुरी संघ द्वारा नीलकाटेज कालोनी, मलदहिया, बृहस्पतिवार को देश बहुभाषी रचनाक पत्रकार व मोतीलाल उ की 95वीं मनायी गयी। अतिथि पं उनके

दिनाँक 07 अगस्त 2013 के समाचार

समाचार पत्र गाण्डीव, वाराणसी की रिपोर्ट

गाण्डीव

(वाराणसी) बुधवार, 7 अगस्त 2013 3

कई विषयों के प्रकांड विद्वान थे गीतकार मोती बी.ए.

काशी। उ.प्र. भोजपुरी संघ द्वारा नीलकाटेज मलदहिया में भोजपुरी माटी के अनमोल रत्न व फिल्मी गीतकार मोती बी.ए. की 95वीं जयंती मनायी गई। इस अवसर पर वक्ताओं ने बहुभाषी रचनाकार, गीतकार, क्रांतिकारी पत्रकार और आदर्श शिक्षक रहे मोती बी.ए. के असाधारण व्यक्तित्व और कृतित्व को नमन करते हुए उनकी सहजता, सरलता, सादगी और खांटी स्वाभिमानी स्वभाव को

95 वें जयंती पर विविध कार्यक्रम संपन्न

याद किया। मुख्य अतिथि आगरा से आए शंभूनाथ चौबे ने कहा कि 1948 में दिलीप कुमार, कामिनी कौशल द्वारा अभिनीत 'नदिया के पार' में पहली बार भोजपुरी गानों का इस्तेमाल हुआ था जो मोती बी.ए. द्वारा लिखे गये थे। उन्होंने 50से ज्यादा फिल्मों में गाने लिखे जिनमें साजन, काफिला, ममता, सुभद्रा विवाह, हिप-हिप हुर्रे, रिमझिम, चंपा चमेली, सिंदूर, मिस्टर एंड मिसेज मुंबई आदि उल्लेखनीय है। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए अपूर्व नारायण तिवारी ने कहा कि मोती बी.ए. का वाराणसी से गहरा रिश्ता था। एक साहित्यकार के रुप में मोती बी.ए. ने अब्राहम लिंकन, शेक्सपीयर, सानेट्स का भोजपुरी में अनुवाद किया। उनकी 50से अधिक साहित्यिक कृतियां भारतीय साहित्य की अनमोल धरोहर है। वह कई विषयों के प्रकांड विद्वान थे। गोष्ठी के पश्चात मोती बी.ए. की स्मृति में जितेन्द्रनाथ 'जीत' की अध्यक्षता में संपन्न काव्य गोष्ठी में राजेन्द्र गुप्त, दिलीप, बनारसी बाबू, आनंद तिवारी, हरिसेवक द्विवेदी आदि ने काव्य पाठ किया। संपूर्ण कार्यक्रम का संचालन डा.आनंद प्रकाश तिवारी व धन्यवाद प्रकाश जितेन्द्र नाथ सिंह 'जीत' ने किया। शंभूनाथ चौबे को अंगवस्त्रम भेंट कर सम्मानित किया गया। कार्यक्रम में हरिसेवक द्विवेदी, राजेन्द्र गुप्त, संजय भट्टाचार्य, एस.बी. त्रिपाठी, श्रीमती अंजू त्रिपाठी, पवन, बच्चेलाल आदि शामिल थे।

दिनाँक 02 अगस्त 2013 के समाचार

समाचार पत्र स्वतन्त्र चेतना, वाराणसी मण्डल की रिपोर्ट

स्वतंत्र चेतना

वाराणसी, शुक्रवार, 02 अगस्त, 2013

जयंती धूमधाम से मनी

वाराणसी। उ.प्र. भोजपुरी संघ द्वारा आज नीलकण्ठ मुलदहिया में देश के लब्ध बहुभाषी साहित्यकार, पत्रकार, शिक्षक रहे पं. मोती बीए की 95वीं जयंती सोल्लास मनायी गयी। वक्ताओं ने उनके असाधारण व्यक्तित्व व कृतित्व को नमन करते साहित्य जगत व फिल्म जगत में उनके योगदान को बताया। मुख्य अतिथि आगरा के पं. शंभूनाथ चौबे ने कहा कि भारतीय सिनेमा के पहले भोजपुरी गीतकार रहे मोती बीए ने 50 से ज्यादा फिल्मों में गीत लिखें हैं। जिनमें नदिया के पार, साजन, सिन्दूर, काफिला, रिमझिम, ठकुराइन, चंपा चमेली, सुभद्रा आदि उल्लेखनीय रही है। अध्यक्षता अपूर्व नारायण तिवारी ने किया। संचालन डा. आनंद प्रकाश तिवारी, आभार जितेन्द्र नाथ सिंह ने किया। इस दौरान गोपाल सिंह, राजेन्द्र गुप्त, हरिसेवक द्विवेदी, शिवशंकर सिंह, अंजू त्रिपाठी, पवन, राशि भूषण

दिनाँक 21 अक्टूबर 2005 के समाचार

समाचार पत्र दैनिक जागरण की प्रतिक्रिया

शुक्रवार, 21

व्यक्तित्व

मोती बी.ए.
एक असाधारण प्रतिभा

कवि होना ही किसी व्यक्ति की असाधारण क्षमता का प्रतीक है। पर कवि का व्यक्तित्व बहुआयामी हो तो उसे अद्भुत क्षमता का बना देता है ऐसे नामों में मोती बी.ए. एक ऐसा नाम है जो हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू और भोजपुरी में समान रूप से कविता करते आये हैं। अंग्रेजी के प्रवक्ता रह चुके मोती बी.ए. वैसे तो एम.ए. पास हैं पर जिस जमाने में बी.ए. की डिग्री एक सम्मान का द्योतक थी और बाबू श्यामसुन्दर दास, उपन्यास सम्राट प्रेमचंद अपने नाम के आगे बी.ए. लिखा करते थे। मोती जी ने इसी तरह की प्रेरणा पाकर अपने नाम के साथ बी.ए. जोड़ा। छोटा नाम बी.ए. जुड़ जाने के बाद भारी लगने लगा। पहली अगस्त 1919 को उत्तर प्रदेश के देवरिया जिले में बरेजी गाँव में जन्मे मोती चंद्र उपाध्याय ने एम.ए.बी.टी. साहित्य रत्न की शिक्षा प्राप्त कर 1939 से 1943 तक अग्रगामी, आज, संसार और आर्यावर्त जैसे दैनिक पत्रों के संपादकीय विभाग में काम किया। 1944 से 1952 तक मोती जी पंचोली आर्ट पिक्चर लाहौर प्रकाश पिक्चर मुम्बई और फिल्मिस्तान लिमिटेड मुम्बई में गीतकार के पद पर रहे। प्रकाश पिक्चर्स की फिल्म 'भक्त ध्रुव' के गीत मोती जी ने लिखे थे। फिल्मिस्तान की फिल्म 'नदिया के पार' के सभी गीत मोती जी के लिखे थे। दिलीप कुमार और कामिनी कौशल की यह फिल्म खूब चली। मोती जी आकाशवाणी मुम्बई, प्रयाग और लखनऊ में कलाकार रहे। 1943 में भारत रक्षा कानून के तहत सेंट्रल जेल वाराणसी में नजर बंद भी रहे। 1952 से श्री कृष्ण इण्टर कालेज बरहज (देवरिया) में इतिहास, तर्क शास्त्र और अंग्रेजी के प्रवक्ता रहे। सेवा निवृति के बाद फिलहाल बरहज में नंदना बाई स्थित अपने मकान में ही जीवन के अंतिम चरण को व्यतीत कर रहे हैं। वाराणसी में अक्सर मोती जी से भेंट होती थी। मोती जी अनेक संस्मरण सुनाते। फिल्म नदिया के पार के एक गीत में उन्होंने भोजपुरी का 'विरहा' उतार दिया। मुम्बई के गायक समझ नहीं पाते थे कि यह क्या है। मोती जी ने कहा मैंने तब गाया-

कटवा के नइया बनहिये रे मलहवा
नदिया के पार दे उतार
छपक-छपक चले तोरी नइया रे मलहवा
आई पुरवाई के बहार

और यह गीत तब एक नया रूप ले कर परदे पर आया और काफी लोकप्रिय हुआ। हिन्दी के प्रख्यात कवि डा. शम्भु नाथ सिंह अपना प्रसिद्ध गीत 'समय की शिला पर' सुनाते थे तो मोती जी उन्हीं के साथ भोजपुरी का गीत महुवावारी सुनाते थे। शम्भु नाथ जी ने कहा था इस क्षेत्र के दो कवियों चंद्र शेखर मिश्र और मोती बी.ए. में यह क्षमता है कि कोई कवि ना आए तब भी मंच से श्रोताओं को रात भर बांधे रह सकते हैं। 'सेमर के फूल' और 'मृग तृष्णा' मोती जी की प्रसिद्ध कविताएं हैं। शेक्सपियर के सोनेट्स का अनुवाद भोजपुरी में मोती जी ने किया। अनेक अंग्रेजी कविताओं का हिन्दी काव्यानुवाद भी उन्होंने किया जिनमें अब्राहम लिंकन प्रसिद्ध हैं। मोती जी की अंग्रेजी कविताओं का संकलन 'ब्यूटी इन वेल' प्रकाशित हुआ। 'लव एण्ड ब्यूटी' नाम से दूसरा संकलन भी छपा।

'दर्द-ए गुहार' मोती जी की उर्दू गजलों का संग्रह है। मोती जी कहते हैं मेरे दादा जी उर्दू दां थे। उर्दू अदब पर उनका इल्मी और अमली हक था। मुझको भी उन्होंने कुछ ऐसा बनाना चाहा था पर मेरी बदनसीबी ने उनसे कुछ ज्यादा नहीं सीखने दिया।

मोती जी ने लगभग 30 पुस्तकें हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू और भोजपुरी में लिखीं हैं जिसमें अधिकतर कविताएं हैं। 'इतिहास का दर्द' निबंध संग्रह है। 'तिनका-तिनका शबनम' मोती जी द्वारा अपने स्वर्गवासी पत्नी के स्मृति में लिखी गजलों का संकलन है। 'लाहौर की नहर' काव्य पुस्तक में लाहौर के संस्मरण काव्यबद्ध किये गये हैं। मोती जी की कविताओं में जीवन का यथार्थ है। मेघदूत पर मोती जी का एक भोजपुरी में व्यंग्य है। -

पानी बिना जरेला किसानी
बदरा से मांगी हम पानी
देखतनी कवि जी के
केतना गड़बड़ बाड़े
बदरा से पूछताड़े
कहां दिलवर जानी?

इस मुक्तक में उनका यह नया भाव बोध है। मोती जी ने 1980 में अध्यापिकी से अवकाश ग्रहण कर लिया। भोजपुरी फिल्म 'ठकुराइन! चम्पा चमेली' के गीत लिखे। भोजपुरी फिल्म 'गजब भइले रामा' के सारे गीत तो मोती जी ने लिखे ही अभिनय भी किया। इस फिल्म के निर्माण में मोती जी ने अपनी सारी पूंजी लगा दी। मोती जी अत्यंत उत्साहित थे, परन्तु फिल्म जब बनकर प्रदर्शन के लिये तैयार हुई तो भागीदारी को लेकर विवाद खड़ा हो गया तथा मामला न्यायालय में चला गया। यह विवाद आज भी उसी तरह है। इस घटना ने मोती जी को तोड़ कर रख दिया। उसके बाद वे कुछ कार्यक्रमों में दिखे, दूरदर्शन पर भी आये परंतु लगता था जैसे मोती जी की आत्मा पीड़ा में डूब गयी है। धीरे-धीरे उन्होंने चारपाई पकड़ ली। श्रवण शक्ति जवाब दे चुकी है। उनकी पोती उनकी देखरेख करती है। उसी के संकेतों को समझते हैं। उनके छोटे पुत्र भी उनके कान के पास जा कर जोर से बोलते हैं तथा आगत का नाम बताते हैं तो पुरानी यादों में डूबकर वे विह्वल हो जाते हैं।

पहली अगस्त 05 को मोती जी 86 वर्ष के हो गये हैं। ईश्वर उन्हें दीर्घायु करे।

गिरिजाशंकर राय गिरिजेश
बी 10, पत्रकारपुरम, राप्ती नगर, पो. आरोग्य मंदिर, गोरखपुर (उ.प्र.)

23 जनवरी 1999 के समाचार

मोती बीए का नागरिक अभिनंदन समारोह नागरी प्रचारणी सभा के द्वारा समाचार पत्र दैनिक जागरण

देवरिया-कुशीनगर

जन कवि देश-काल की परिधि को भेदने में समर्थ

देवरिया कार्यालय

देवरिया, 22 जनवरी। पूर्वांचल के प्रख्यात गीतकार एवं भोजपुरी कवि मोती बी.ए. का नागरिक अभिनंदन समारोह आज नागरी प्रचारणी सभाकार में कादम्बिनी क्लब एवं स्थानीय लेखक मंच के संयुक्त तत्वावधान में किया गया। समारोह के मुख्य अतिथि बस्ती मंडल के प्रभारी मंत्री प्रेम प्रकाश सिंह थे। अध्यक्षता सांसद देवी प्रसाद सिंह ने किया। इस अवसर पर सांसद मोहन सिंह मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित थे। इस अवसर पर मोती बी.ए. पर आधारित भोजपुरी लोक पत्रिका के एक अंक का विमोचन भी किया गया।

अपने सम्मान समारोह से आत्मविभोर और भाव-विह्वल मोती बी.ए. की आंखों में आंसू आ गये। इस अवसर पर मोती बी.ए. ने कहा कि आज मैं खुशी के मारे फूले नहीं समा रहा हूं। यदि मैं कल ठीक रहते और मैं अपने संबंध में लोगों की बातें सुन सकता तो इतनी खुशी मैं पचा नहीं पाता और खुशी के मारे मर ही जाता। उन्होंने कहा कि आप लोगों ने मुझे जो खुशी दी है, इसके लिए मैं आप सभी का कृतज्ञ हूं। मेरी बातें सम्मान होने वाली नहीं है।

उन्होंने कहा कि आज के जनप्रतिनिधि व्यापारी हो गये हैं। वे जनता की सेवा नहीं व्यापार कर रहे हैं। उन्होंने अपनी एक कविता- 'अब कैसे लाचारी यारो 'अब कैसे लाचारी' सुनाकर लोगों को रोमांचित कर दिया। समारोह में एक क्षण ऐसा भी आया जब भाव विह्वल मोती बी.ए. की आंखों में आंसू टपक पड़े।

इस अवसर पर बस्ती मंडल प्रेम प्रकाश सिंह ने कहा कि मोती बी.ए. की किताब 'मधुकलश' व 'मृगतृष्णा' सिंह सदन में ही नहीं था यह हमारे समाज व राष्ट्र के धरोहर है। अपनी कविताओं के माध्यम से उन्होंने जो चित्रण किया है और जो संदेश दिया है वह बहुत बड़ी बात है। मोती ने भी यह सकते थे परन्तु उन्होंने बनारस में स्थापित होने का प्रयास किया। क्योंकि काशी साहित्य स्थली है। मोती बी.ए. का सम्मान करने वाले सभी लोग बधाई के पात्र हैं।

भोजपुरी लोक की सम्पादक (श्रीमती) डा. राजेश्वरी शांडिल्य ने कहा कि मैं साधुवाद से आई हूं और देवरिया की धरती को प्रणाम करती हूं। मोती बी.ए. की रचनाएं कालजयी हैं। भोजपुरी में मोती बी.ए. का आना वरदान हो गया। राष्ट्रीय स्तर पर भोजपुरी को स्थापित करने में उनका योगदान सर्वोपरि है।

इस अवसर पर नागरी प्रचारणी सभा के पूर्व मंत्री मदनानंद दुबे ने स्वागत भाषण करते हुए मोती बी.ए. की सारी रचनाओं का एक संकलन निकाले जाने पर बल दिया। केसरी आजाद ने कहा कि यदि गोरखपुर का नाम प्रेमचंद और फिराक के नाम से जाना जाता है तो देवरिया को मोती बी.ए. के नाम से जाना जायेगा।

प्रेम काव्य के अध्यक्ष श्री चन्द गोरे ने कहा कि सभा के पथ प्रदर्शक रहे हैं। डा. उपेन्द्र प्रसाद ने कहा कि इस सम्मान के प्रति मैं कवाद की ओर से भी कृतज्ञ हूं। अजय ' बस्ताकर और श्रीकाल शिवारी ने भी अपने विचार मोती बी.ए. के संबंध में रखे। अन्त में नागरी प्रचारणी सभा की मंत्री श्रीमती दुर्गा चन्द्रदेव ने सभी लोगों के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि मोती बी.ए. का सम्मान किया जाये या न किया जाये ये सभी अपने आप में ही सम्मानित हैं।

समारोह का शुभारंभ सरस्वती वन्दना से हुआ जिसे कु. ज्योति शुक्ला और कु. दीपमाला ने 'जय-जय हे मातु भवानी' के बोल के रूप में गाया।

इसके बाद कु. उषा सिंह व उन्नपूर्णा सिंह ने स्वागतगान प्रस्तुत किया। तबले पर बब्बू प्रकाश हारमोनियम, लोक गायक राम प्रकाश बरवा ने इसी क्रम में मान्यवरों, कवियों का सम्मान गया। प्रेम प्रकाश को लोगों आवाज दे, मोहन को सदानंद दुबे ने एवं देवी सिंह को जयप्रकाश ने मान्यवरों किया।

मोती बी.ए. का अभिनंदन करने वालों में प्रकाश, सदानंद दुबे, शंकर गोरे, डा. राजेश्वरी, श्री किशन तिवारी, अजय आकाश, मोहन कुमार त्रिपाठी, कवि आकाश, के सुमन, डा. अंजन जयप्रकाश, शशिप्रभा संजय मिश्र थे।

इस अवसर पर भोजपुरी मासिक पत्रिका सम्पादक डा. राजेश्वरी शांडिल्य को सात भर सम्मानित किया गया। मोती बी.ए. को स्मृति मोहन सिंह के द्वारा प्रदान किया गया। इसके बी.ए. को माला ओढ़ा कर सम्मानित किया। राष्ट्रीय मंत्री प्रेम प्रकाश जी ने मोती बी.ए. आधारित भोजपुरी लोक पत्रिका के विमोचन विमोचन किया। देवी सिंह सांसद के हाथों प्रचारणी सभा की ओर से एक प्रशस्ति पत्र भी बी.ए. को प्रदान किया गया। इस अवसर पर गायक राम प्रकाश सिंह ने अपने टीम के साथ बी.ए. का गीत 'तनि अंखी दइ दिहल पर किनल मुरुख।'

इस अवसर पर श्रीमती प्रेम प्रकाश शुक्ला, रवेन्द्र नाथ सिंह, कुमार नाथ मिश्र 'निर्मल', अनिल कुमार रंग, संजय मिश्र, कादम्बिनी के संयोजक मोहन कुमार त्रिपाठी, उमेश गुप्ता, राजेश्वर शिवकुमार, अवनीश कुमार मिश्र, जगन्नाथ श्रीवास्तव, नंद लाल कलंगोर, दुर्गा चन्द्रदेव, शिवकुमार पांडे, पंकज अग्रवाल, प्रकाश आदि सहित सैकड़ों गणमान्य व सम्मानित उपस्थित थे।

कार्यक्रम का संचालन महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय के प्रवक्ता दिवाकर प्रसाद मिश्र किया।

प्रख्यात भोजपुरी कवि मोती बी.ए. का नागरिक अभिनंदन किया गया। फोटो-जागरण

❑ भोजपुरी कवि मोती बी.ए. का नागरिक अभिनंदन

और मोती बी.ए. की आंख से आंसू टपके

देवरिया, 22 जनवरी। और भाव विह्वल मोती बी.ए. की आंखें नम हो डबडबा गयीं...। पूरा सभा गया। स्तब्धता छा गयी। अपने के बीच सम्मानित होने का सुख उन्हें आत्मविभोर में ले गया। संयोजकों के बार प्रयत्न रोके और भावनाएं आंसू बनकर टपक पड़ीं।

वर्षों बाद, विशाल काव्य मोती बी.ए. के सम्मान में कोई आयोजन किया गया था। आयोजकों और साहित्य जगत के मठाधीशों की नजर में जान-पहचान औझल किये गये मोती बी.ए. अपने कादम्बिनी क्लब एवं स्थानीय लेखक मंच के सम्मेलन में आये।

उन्हें सम्मानित किया गया, तथा उनकी प्रशंसा के शब्द कहे गये। पर, बाहर मोती बी.ए. के लिए शब्द शक्तियों का कोई महत्व नहीं था।

वह सुन नहीं सकते थे। बुढ़ापा और बीमारी ने इस महान कवि को बहरा कर दिया है। मोती बी.ए. के लिए अब संकेतों का ही अर्थ रह गया है।

इसीलिए सम्मान समारोह में अपने लोगों को देख वह भावुक हो गये। इसी भावुकता में आंखें डबडबा गयीं। सम्मान समारोह का यह एक क्षण भारी था। मोती के आंसू संकेतों में ही सब कुछ कह गये...।

दिनाँक 23 जनवरी 1999 के समाचार

मोती बीए किसी भाषा के मोहताज नहीं : मोहन सिंह

समाचार पत्र हिन्दुस्तान

मोती बीए किसी भाषा के मोहताज नहीं : मोहन सिंह

हिन्दुस्तान संवाद

देवरिया, 22 जनवरी। समाजवादी पार्टी के वरिष्ठ नेता एवं सांसद मोहन सिंह ने कहा है कि किसी गद्य, कविता व पद्य की प्रमुख विशेषता यह होती है कि उसका एक अंश पढ़ने या सुनने के बाद उसे आगे पढ़ने और सुनने की जिज्ञासा उत्पन्न हो। मोती बी.ए. के साहित्य की यही सबसे बड़ी विशेषता है तथा यही उनकी लोकप्रियता है।

श्री सिंह स्थानीय नगरी प्रचारिणी सभागार में भोजपुरी लोक (मोती बी.ए. अंक) का विमोचन अवसर पर आयोजित समारोह में मुख्य वक्ता के रूप में बोल रहे थे। पुस्तिका का विमोचन प्रदेश के कारागार राज्य मंत्री प्रेम प्रकाश सिंह किया। अखिल भारतीय भोजपुरी परिषद द्वारा प्रकाशित इस पत्रिका का सम्पादन डा. राजेश्वरी साहित्य ने तथा अतिथि सम्पादन डा. लारी आजाद ने किया। समारोह का आयोजन कार्टम्बिनी क्लब के सहयोग से किया गया था। कार्यक्रम की अध्यक्षता राज्य सभा सदस्य देवी प्रसाद सिंह ने किया। समारोह में कारागार राज्य मंत्री प्रेम प्रकाश सिंह ने मोती बी.ए. को शाल एवं नारियल प्रदान कर सम्मानित किया। इस अवसर पर मोती बी.ए. ने अपनी भोजपुरी कविता 'टानिक एक दवा हिना या खाब किनार' गाकर सुनाया।

समारोह में सांसद मोहन सिंह ने मोती बी.ए. को कविताओं के अंशों, अपने साक्षात्कार में एक अध्यायक रूप में उनकी द्वारा बताये गये बातों एवं विभिन्न प्रसंगों का उल्लेख करते हुए बहुत मार्मिक भाषण दिया। इस दरम्यान श्री सिंह कई बार भावुक भी हुए तथा उनका गला भर आया। उन्होंने कहा कि मोती बी.ए. साहित्य जगत में जो उखाड़ेबाजी एवं धड़ेबाजी चल रही है उससे सदैव दूर रहे तथा अपने आप को उस अखाड़े में नहीं बांधा। अगर मोती बी.ए. इस अखाड़े में बंधकर रहते तो आज जिसने भी नाम बड़े साहित्यकारों के रूप में लिये जाते हैं उनमें से किसी से भी नीचे उनका नाम नहीं होता।

उन्होंने कहा कि आज नोबेल पुरस्कार के लिए भी लोग के किसी स्तर में चढ़ाकर पूरे विश्व में वहां बैठकर लाबिंग करनी पड़ती है परन्तु मोती बी.ए. ने साहित्य जगत की अखाड़ेबाजी एवं धड़ेबाजी से दूर रह कर कभी लाबिंग नहीं की। उनकी रचनाएं किसी भी बड़े रचनाकार से कम नहीं है। यदि उन्होंने लाबिंग की होती तो सम्भवतः उन्हें हम आज पुरस्कारों से अलंकृत विभिन्न विशेषणों के साथ सम्बोधित करते। जहां तक मैं जानता हूं मोती बी.ए. ने भोजपुरी में बहुत कम कविताएं लिखी हैं। वे किसी विधा से बंधकर नहीं रहे। किसी भाषा के मोहताज नहीं रहे। मेकबेथ के सानेट का हिन्दी में उन्होंने जैसे हूबहू अनुवाद किया है, शायद ही किसी भाषा में वैसा अनुवाद हो।

सांसद श्री सिंह ने कहा कि संवेदना जिसमें कवि प्रभावित होता है, वह हर जगह मोती बी.ए. में दिखायी देती है और यही कारण है कि उनकी कविता काल से परे होकर हर काल में आने वाली शाश्वत रूप में स्थित है। इनके लिखे साहित्य हजारों वर्ष जीवित रहेंगे तथा समाज इनकी रचना को पढ़ने के लिए बाध्य रहेगा। हम आज इनके दैहिक शरीर का सम्मान नहीं कर रहे हैं बल्कि इनकी रचना इनके साहित्य का सम्मान कर रहे हैं। हमारी ईश्वर से प्रार्थना है कि ये शतायु होंवे।

मुख्य अतिथि कारागार राज्य मंत्री प्रेम प्रकाश सिंह ने कहा कि यह जनपद स्वतंत्रता आंदोलन सहित तमाम लड़ाइयों में सदैव अग्रणी रहा है। इस भूमि पर प्रतिभाओं की कमी नहीं रही है। इस क्षेत्र में एक से एक विभूतियां पैदा हुई जो विश्व में अपना और जनपद का नाम रोशन कर रही हैं। हमारा यह दुर्भाग्य है कि हम अपने क्षेत्र की प्रतिभाओं का सही रूप में आदर नहीं कर पाते या उनका प्रचार प्रसार नहीं कर पाते हैं। ये विभूतियां हमारे समाज एवं राष्ट्र की धरोहर है, हमें इन्हें सहेजकर रखना चाहिए। मोती बी.ए. की एक कविता 'भगवान' को मैंने कानों दिनों पढ़ने पढ़ी थी। मुझे यह लगा कि यह कविता मनुष्य के आत्मबल में वृद्धि करती है तथा यह संदेश देती है कि यदि आप दौड़ में हैं प्रथम में है, तो किनारा अवश्य मिलेगा।

बाबा राघवदास पी.जी. स्नातकोत्तर महाविद्यालय के राजनीति शास्त्र विभाग के अध्यक्ष डा. उमेश प्रसाद ने कहा कि मोती बी.ए. मूलतः भोजपुरी के कवि नहीं है। उन्होंने उर्दू, हिन्दी, अंग्रेजी में रचना की। उनका प्रारम्भिक जीवन पत्रकार का था तथा उसी समय अपना कवि जीवन भी प्रारम्भ किया। 1942 में स्वतंत्रता आंदोलन में जेल गये, फिल्मों में भी काम किया। यदि हम विश्लेषण करें तो भोजपुरी इनका अंतिम पड़ाव है। भोजपुरी की सीमा में बांधकर इनका मूल्यांकन सम्भव नहीं है।

कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे राज्य सभा सदस्य देवी प्रसाद सिंह ने प्रशस्ति पत्र पढ़ा तथा उसे मोती बी.ए. को प्रदान किया। इस अवसर पर उन्होंने कहा कि एक कवि के रूप में इनका मूल्यांकन करना हमारे लिए सम्भव नहीं है। हमें इसके लोकोत्तर संवेदना लेनी चाहिए।

इसके पूर्व कार्यक्रम के प्रारम्भ में ज्योति शुक्ला, एवं कुमारी दीप्ति ने राम प्रकाश सिंह के निर्देशन में सरस्वती वंदना तथा उमा सिंह एवं अन्नपूर्णा सिंह ने स्वागत गान प्रस्तुत किया। इस अवसर पर राजेश्वरी साहित्य ने भोजपुरी में लिखा अपना वक्तव्य पढ़ा। कार्यक्रम कार्यचालन राजकीय महिला स्नातकोत्तर महाविद्यालय के प्रवक्ता दिवाकर तिवारी ने किया। कार्यक्रम के अंत में राम प्रकाश सिंह ने मोती बी.ए. की भोजपुरी की रचना को गाकर सुनाया।

कार्यक्रम में डा. लारी आजाद, अवध जयमंगल, संत विनोबा स्नातकोत्तर महाविद्यालय के अंग्रेजी के पूर्व विभागाध्यक्ष सतानन्द दुबे, प्रधानाचार्य ओमदत्त गौरे, डा. राजेश्वरी साहित्य, श्रीविलास तिवारी, कार्टम्बिनी क्लब के संयोजक महेन्द्र त्रिपाठी, अवध अग्रवाल, प्रवक्ता के.सी. शुक्ल, हरिनाथ प्रसाद, डा. रमेश जयमंगल ने मोती बी.ए. का माल्यार्पण कर स्वागत किया। कारागार राज्य मंत्री प्रेम प्रकाश सिंह एवं सांसद मोहन सिंह ने मोती बी.ए. को फूल माला

दिनाँक 03 मई 2009 के समाचार

मोती बीए के निधन पर समाचार पत्र जनसत्ता की प्रतिक्रिया

जो भोजपुरी के मोती थे

स्मृति

इकबाल रिजवी

भोजपुरी फिल्म 'गजब भइले रामा' में मोती बीए

आजादी से पहले उन्होंने एमए कर लिया था, लेकिन कविता के मंच पर अपनी क्रांतिकारी रचनाओं की वजह से वे तब देश भर में चर्चित हो गए जब उन्होंने बीए किया था। तभी से उनके नाम के आगे 'बीए' ऐसा जुड़ा कि वे हमेशा मोती बीए के नाम से ही जाने गए। वे मोती बीए ही थे जिन्होंने हिंदी सिनेमा में भोजपुरी की सर्वप्रथम जय-जयकार करायी। हिंदी, उर्दू, अंग्रेजी और भोजपुरी पर समान अधिकार रखने वाला और भोजपुरी के शेक्सपियर के नाम से याद किया जाने वाला यह गीतकार लंबी गुमनामी के बाद चुपके से सबको छोड़ कर चला गया।

मोती लाल बीए का पूरा नाम मोती लाल उपाध्याय था। उनका जन्म उत्तर प्रदेश के देवरिया जिले के बरेजी गांव में एक अगस्त 1919 को हुआ। बचपन से ही कविता में उनकी दिलचस्पी बढ़ने लगी। वे मनपसंद कविताओं को जबानी याद कर लेते थे। फिर उन्होंने खुद कविताएं लिखनी शुरू कर दीं। उनकी पढ़ाई वाराणसी में हुई। सोलह साल की उम्र में पहली बार उनकी कविता दैनिक आज में प्रकाशित हुई जिसके बोल थे- बिछुड़ा दो ना अनमोल - अरि रात घूंघट के पट खोल...। जब उन्होंने बीए किया तब तक वे कवि सम्मेलनों में एक गीतकार के रूप में पहचान बना चुके थे। उन्होंने अपने नाम के आगे बीए लगाना शुरू कर दिया। उस समय आजादी की जंग जोरों पर थी। अंग्रेजों के खिलाफ पूरे देश में माहौल बहुत गर्म था। मोती जी भोजपुरी भाषा में क्रांतिकारी गीत लिख-लिखकर लोगों को सुनाया करते थे। उसी दौर का उनका एक गीत था:

> भोजपुरियन के हे भइया का समझेला
> छुलि के आवा अखाड़ा लड़ा दिहें सा
> तोहरी चरखा पढ़वले में का धईल बा
> तोहके सगरी पहाड़ा पढ़ा दिये सा

धीरे मोती की सक्रियता कलम के [illegible] विचारों [illegible]

भरते कई बार जेल भी जाना पड़ा। 1943 में वे दो महीने की सजा काटकर जेल से रिहा किए गए। फिर उन्होंने टीचर्स ट्रेनिंग कालेज वाराणसी में दाखिला ले लिया। इसी दौरान जनवरी 1944 में वाराणसी में हुए एक कवि सम्मेलन में पंचोली आर्ट पिक्चर संस्था के निर्देशक रवि दवे ने उन्हें सुना। मोती का गीत 'रूप भार से लदी हू चलें' उन्हें बहुत पसंद आया और उन्होंने मोती को फिल्मों में गीत लिखने के लिए निमंत्रण दिया। लेकिन मोती अचानक मिले इस निमंत्रण को फौरन स्वीकार नहीं पाए और साहित्य रचना में ही जुटे रहे। 1945 में वे फिर गिरफ्तार कर लिए गए। उन्हें वाराणसी सेंट्रल जेल में भारत रक्षा कानून के तहत नजरबंद कर दिया गया। लेकिन पहले की ही तरह कुछ हफ्तों बाद उन्हें रिहा कर दिया गया।

मोती जी पत्रकारिता और साहित्य से ही जुड़े रहना चाहते थे। फिल्मों में जाना उनकी प्राथमिकता कभी नहीं रही। फिर भी जेल से रिहाई के बाद रोजगार की तलाश में उन्हें रवि दवे का फिल्मों में गीत लिखने का निमंत्रण फिर याद आया। मोती जी ने लाहौर का रुख किया जहां पंचोली आर्ट पिक्चर संस्था थी। उनकी मुलाकात [illegible] जी से [illegible] संगीतकार पं. अमरनाथ। इस फिल्म में मोती ने पांच गीत लिखे। शेष गीत डी एन मधोक ने लिखे। इसके बाद आई किशोर साहू निर्देशित और दिलीप कुमार अभिनीत फिल्म 'नदिया के पार' (1948) जिसमें सात गीत मोती बीए ने लिखे। इस फिल्म के गीतों की सारे देश में धूम मच गई। खास कर इसका एक गीत 'मोरे राजा हो ले चल नदिया के पार' मोती बीए की पहचान बन गया। पहली बार किसी गीतकार ने हिंदी फिल्मों में भोजपुरी को प्रमुखता से स्थान दिया था।

'नदिया के पार' के बाद मोती जी की व्यस्तताएं बढ़ गईं। उन्होंने कई फिल्मों में गीत लिखे। उनकी चर्चित फिल्में रही- सुभद्रा (1946), भक्त ध्रुव (1947), सुरेखा हरण (1947), सिंदूर (1947), साजन (1947), रामबान (1948), राम विवाह (1949), और ममता (1952)। साजन में लिखा उनका एक गीत 'हमको तुम्हारा है आसरा तुम हमारे हो न हो' अपने समय में काफी लोकप्रिय रहा।

मोती बीए को फिल्मों में काम की कमी नहीं थी। उनके लिखे गीतों को शांता आप्टे, शमशाद बेगम, गीता दत्त, लता मंगेशकर, मोहम्मद रफी, मन्ना डे, और ललिता देवलकर जैसे गायकों ने स्वर [illegible] ने रचा [illegible]

घर लौट जाएंगे। फिर [illegible] हुआ। 1952 में मुंबई से लौटकर वे देवरिया के श्रीकृष्ण इंटरमीडियेट कॉलेज में इतिहास के प्रवक्ता के रूप में पढ़ाने लगे। मुंबई में रहने के दौरान उनकी अंतिम फिल्म ममता थी। कुछ सालों बाद जब चरित्र अभिनेता नजीर हुसेन, सुजीत कुमार और कुछ दूसरे कलाकारों ने भोजपुरी फिल्मों के निर्माण की गति को तेज किया तो मोती बीए फिर याद किए गए। मोती जी ने कई भोजपुरी फिल्मों- ई हमार जनाना (1963), ठकुराइन (1984), गजब भइले राम (1984), चंदा चमेली (1985), ममता आदि में गीत लिखे। 1984 में प्रदर्शित 'गजब भइले रामा' में उन्होंने अभिनय भी किया। यह आखिरी फिल्म थी जिससे मोती जी किसी रूप में जुड़े।

देवरिया में अध्यापन के दौरान मोती जी साहित्य सृजन में लगे रहे। उन्होंने शेक्सपियर के सानेट्स का हिंदी सानेट्स की शैली में ही अनुवाद किया। कालिदास के संस्कृत में लिखे मेघदूत का भोजपुरी में अनुवाद किया। इसके अलावा हिंदी में बीस पुस्तकें और उर्दू में शायरी तीन संग्रह रुके गुहर, दर्दे गुहर और [illegible] शायर की रचना की। उन्होंने भोजपुरी में भी काव्य रचना की और पांच [illegible] सृजित किए। उनकी करीब चार पुस्तकें अभी अप्रकाशित हैं। अध्यापन से [illegible] निवृत्त होने के बाद मोती बीए [illegible] गीतकार गुमनामी के अंधेरों में खोता [illegible] गया। मोती बीए को कई सम्मान [illegible] लेकिन भोजपुरी के विद्वान के रूप [illegible] उनका मूल्यांकन कभी नहीं हुआ। [illegible] पुत्र भाल चंद्र उपाध्याय उनकी कृतियों [illegible] सहेज कर रखने का काम तो करते [illegible] लेकिन वे अपने पिता को स्वतंत्रता [illegible] का दर्जा दिलाने में नाकाम रहे।

शोहरत, सम्मान और अपनी [illegible] काम- सब कुछ मोती बीए को [illegible] लेकिन नौकरशाही ने अंत तक [illegible] स्वतंत्रता सेनानी का दर्जा नहीं [illegible] हालांकि इस बात का जिक्र [illegible] स्वतंत्रता सेनानी और साहित्यकार [illegible] समय पर करते रहे कि मोती [illegible] उनकी क्रांतिकारी गतिविधियों की [illegible] कई बार अंग्रेजी शासन ने गिरफ्तार [illegible] जेल भेजा। फिर भी उन्हें जेल [illegible] का रिकार्ड आजाद हिंदुस्तान [illegible] नौकरशाही को नहीं मिल पाया।

पिछले कुछ सालों से मोती [illegible] बोलने की ताकत खत्म हो गई [illegible] [illegible] न रही। [illegible] जेल उनकी [illegible] वे अपने [illegible] नहीं बन सका।

समाचार पत्र 'आज' गोरखपुर संस्करण की प्रतिक्रिया

मोती बी.ए. को साहित्य अकादमी पुरस्कार दिये जानेकी खबरसे अभिभूत हैं भोजपुरिया लोग

(आज समाचार सेवा)

बैतालपुर (देवरिया)। क्षेत्रीय भाषाओं एवं साहित्यकारोंको सम्मानित एवं प्रोत्साहित करनेके क्रममें साहित्य अकादमीने भोजपुरी में 'प्रथम साहित्य अकादमी पुरस्कार' से मोती बी.ए. को सम्मानित करनेका निर्णय लेकर भोजपुरी भाषा-भाषियोंका दिल जीत लिया है। मोती बी.ए. को दिये जानेवाले इस पुरस्कार पर हर एक की प्रतिक्रियाका समान थी कि उचित व्यक्तिका चयन किया गया है। इस पुरस्कारमें सम्मानित किये जानेवाले व्यक्तिको ४० हजार रुपये दिये जानेकी व्यवस्था की गयी है।

मोती बी.ए. देवरिया जनपदके बरेजी गांव के निवासी हैं। आज वह ८१ वर्षके हैं। जब वह सोलह-सत्रह वर्षके बालक रहे तभी उनमें काव्य सृजनके बीज अंकुरित हो गये। इन पंक्तियोंको लिखकर मोती जीने अपने बचपनमें ही कवि बननेका संकेत दे दिया था-

'आरि सखि घूंघट के पट खोल...' मोती बी.ए. ने दर्जन भर मौलिक कृतियोंको तो उपजाया ही अंग्रेजी, संस्कृत और उर्दूके सुपरिचित काव्य ग्रंथोंका हिन्दी और भोजपुरी भाषा और साहित्यमें गेय अनुवाद किया। इस श्रृंखलामें शेक्सपीयरके सानेट्सका हिन्दी पद्य-अनुवाद, कवि भावना- मानव, प्रतिबिम्बनी, अश्वमेध यज्ञ, समिधा (गीतांजलि पर), कवि और कविता, मृगतृष्णा, बादलबाजे, बादलिका, ओस डूबे गीत, हरसिंगारके फूल, सेमरके फूल, मोती के मुक्तक, मेघदूत, तुलसी- रामायण, राजनकी दुकान, दर्द गुहार, मांझीकी पुकार, गंवीसे राजघाट उल्लेखनीय हैं।

मोती बी.ए. ने भोजपुरी और हिन्दी फिल्मी गीतोंसे चलचित्र जगतमें भी अपना स्थान बनाया। १९४४ में फिल्म 'कैसे कहूं' के लिए गीत लिखकर काफी चर्चित हो गये। सुभद्रा, भक्त ध्रुव, एक कदम, साजन, नदिया के पार (१९४८), ठकुराइन, चम्पा चमेली आदि फिल्मोंके लिए गीत लिखकर मोती जी ने भोजपुरी और हिन्दीको प्रतिष्ठा दिलाई।

मोती जी की जो रचनाएं आज हर एक की जुबानपर है उनका जिक्र करना उचित होगा-

नाचत बाटे घाम रे हिरन बा पियासा
जेठ की दुपहरिया में रेत के बा आसा
रेतिया बतावे दूर नाहिं बाटे धारा
तनीं अउरी दउड़ हिरना पा जाइबा किनारा।

xx xxx xxx xx

जवने खूंटका बहरुआ बन्हा गइल बा
हुमचवला से का फरियाये के बा
तरि के फेंक दिहलस ता का हो गइल
फेनू एही में ओकरा बन्हाये के बा

xx xxx xxx xx

तूरि के फेंकि द चाहें मीस मल तोहरे
खातिर करेजवा डहकते रही
चाहे आन्ही बहे चाहे बिजली गिरे
फूल हउ त बगइचा महकबे करी।

अगो भाइल महुआवारी में बहार मजनी
कोचवा मातल, भुंइया छुपे महुआरमके चुवे
जब बहे भिनुसार क बयार मजनी....

xx xxx xxx xx

रउरा मालिक हईं, रउरा राजा हईं
रउरा गोड़े क हमनी का जूता हईं

xx xxx xxx xx

स्वतंत्रता आंदोलनके दौरान भी मोती जी ने अपने राष्ट्रधर्मका निर्वाह किया। सन् १९४३ में राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलनमें सक्रिय प्रतिभाग करनेके कारण वाराणसी सेंट्रल जेल में १५ दिनकी सजा भुगती। वह जन्मजात पत्रकार हैं। राष्ट्रीय आंदोलनके सूत्रधार वाराणसीसे प्रकाशित दैनिक 'आज' के वह स्तंभ लेखक रहे और दैनिक 'आज' के मुख पृष्ठपर उन दिनों मोती जी की रचनाओंके अंश छपते रहे।

८० वर्षीय मोती बी.ए. जी को १९७३-७४ में उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा उनकी महत्वपूर्ण कृति 'समिधा' पर निराला पुरस्कार से नवाजा गया। उ.प्र. हिन्दी संस्थानने उन्हें 'राज्य साहित्यिक पुरस्कार' प्रदान किया। प्रदेश सरकारने उन्हें १९७८ में 'आदर्श अध्यापक पुरस्कार' प्रदान किया। भोजपुरी भाषा-साहित्यके संरक्षण संवर्द्धनमें उल्लेखनीय योगदान के लिए उ.प्र. हिन्दी संस्थान द्वारा मोती जी को 'राहुल सांस्कृत्यायन पुरस्कार' से अभिसिंचित किया गया है। जैसे-जैसे मोती जी के कृतित्वकी गहराइयोंका पता चलता गया साहित्यिक सांस्कृतिक संस्थाएं उन्हें सम्मानित करती जातीं। १९९२ में हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयागने अपने वार्षिक अलंकरण समारोहमें पूर्वांचलके इस तुलसीको 'भोजपुरी रत्न अलंकरण' सम्मानसे नवाजा। यह क्रम आगे भी जारी रहा। १९९३ में अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य परिषदने उन्हें 'कविरत्न' सम्मान दिया। १९९३ के बादसे वह आजतक और कहा जाय तो अंतिम सांस लेनेतक मोती जी सम्मानित होंगे।

पर, मोती बी.ए. जी भोजपुरी भाषा-साहित्यके तुलसीदास हैं। इस तुलसीके रामायण (उनकी कृतियां) को संरक्षण, संवर्द्धन करते हुए जन जनमें भोजपुरी भाषा और साहित्यको सम्मान दिलाना सबसे बड़ी आवश्यकता दिखाई दे रही है। प्रसिद्ध संस्कृत विद्वान पं. पाताद्दीनके अनुसार भोजपुरीमें पहला साहित्य अकादमी पुरस्कार मोती बी.ए. जी को देना पूर्वांचलकी माटीका सम्मान है। साहित्यकार डा. अरुणेश नीरन कहते हैं कि मोती जीके विराट साहित्यिक व्यक्तित्वके समक्ष बड़ासे बड़ा सम्मान-पुरस्कार छोटा लगने लगा है। डा. नीरनका सुझाव है कि मोती बी.ए. जी की अप्रतीम साहित्यिक साधनाको देखते हुए उनके नामका संस्थान खोला जाना चाहिये जो भोजपुरीके उन्नयन प्रचार-प्रसारका प्रयास करे।

भारत सरकार 'साहित्य अकादमी' द्वारा जारी श्री मोती बीए पर एक प्रपत्र

मोती बी.ए. का जन्म 1919 में उत्तर प्रदेश के देवरिया ज़िले के बरेजी नामक गाँव में हुआ। आपने एम.ए., बी.टी. एवं साहित्य रत्न की उपाधियाँ प्राप्त कीं। भोजपुरी और हिन्दी के अतिरिक्त आपको अंग्रेज़ी और उर्दू का भी अच्छा ज्ञान है। 1939 से 43 तक आपने बनारस में *अग्रगामी, आज, संसार* और *आर्यावर्त* के सम्पादकीय विभाग में काम किया। ब्रिटिश शासन का विरोध करने के कारण आपको 1943 में 'भारत रक्षा कानून' के अंतर्गत बनारस के सेंट्रल जेल में नजरबंद किया गया। 1944 से 52 तक आप पंचोली आर्ट पिक्चर्स, लाहौर, प्रकाश पिक्चर्स, बंबई और फ़िल्मिस्तान लिमिटेड, बंबई में गीतकार के पद पर रहे। 1952 से 80 तक श्रीकृष्ण इंटरमीडिएट कालेज, बरहज में आपने अध्यापन किया और वहीं से सेवानिवृत्त हुए। आपने एक दर्जन से अधिक मौलिक कृतियों के सृजन के साथ लगभग आधा दर्जन अंग्रेज़ी और संस्कृत काव्य ग्रंथों का भोजपुरी और हिन्दी में पद्यमय रूपान्तरण किया है। आपकी मौलिक हिन्दी रचनाओं में *प्रतिबिम्बिनी, अश्वमेध यज्ञ, समिधा, कवि और कविता, मधुतृष्णा, बादलिका, आँसू डूबे गीत, हर सिंगार के फूल* (सभी काव्य), *इतिहास का दर्द* (निबंध संग्रह) और *भोजपुरी रचनाओं में समर के फूल* (गीत संग्रह), *भोजपुरी सॉनेट,* और *बन-बन बोलेले कोइलिया* (लोक संगीतिका संग्रह) शामिल हैं। मोती बी.ए. ने कालिदास कृत *मेघदूत* का भोजपुरी पद्यानुवाद और जॉन ड्रिंकवाटर की अंग्रेज़ी नाट्यकृति *अब्राहम लिंकन* का भोजपुरी रूपांतर किया है। आपकी साहित्यिक सेवाओं के लिए आपको शिक्षा विभाग, उत्तर प्रदेश के साहित्यिक पुरस्कार, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान के राहुल सांकृत्यायन पुरस्कार, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग के 'भोजपुरी रत्न अलंकरण' विश्व भोजपुरी सम्मेलन के 'सेतु सम्मान' और महावीर प्रसार केडिया हिन्दी साहित्य एवं संस्कृति संस्थान, देवरिया के 'आनंद सम्मान' से अलंकृत किया जा चुका है।

भोजपुरी भाषा और साहित्य के क्षेत्र में योगदान के लिए श्री मोती बी.ए. को भाषा सम्मान अर्पित करते हुए साहित्य अकादेमी गौरव का अनुभव कर रही है।

Born in 1919, in Bareji Village, Dist. Deoria, Uttar Pradesh, Moti B.A. is an MA, BT and Sahitya Ratan. He knows Hindi, English and Urdu. He was associated with the editorial departments of *Agrami, Aaj Sansar* and *Aryavrat* in Benares from 1939 to 1943. In 1943 under the Indian Security Act he was put under house-arrest in Benares Central Jail. He joined the Shrikrishana Intermediate College, Barhaj, in 1952 as a lecturer and retired from there in 1980. He has more than a dozen original works in Bhogpuri and half-a-dozen books translated from English and Sanskrit into Bhojpuri. His published works include *Pratibimbini, Ashvamedh Yag, Samidha, Kavi aur Kavita, Madhutrishna, Badlika, Ansu Dube Geet, Har Singar Ke Phool* (all poetry collections in Hindi); *Itihas ka Dard* (essay collection in Hindi); *Samer Ke Phool* (Geet Collections), and *Ban Ban Bole Koeliya* (folksongs) —all in Bhojpuri. Among his well-known translated works are Kalidasa's *Meghdoot* and John Drinkwater's English play, *Abraham Lincoln* in Bhojpuri. He has also published works in English and Urdu which include, *Rashke Guhar, Dard-e-Guhar* and *Ek Shayar; Love and Beauty* and *Beauty in Will*. Moti B.A. has received many awards including U.P. Education Department award, Rahul Sankritayan Puraskar by U.P. Hindi Sansthan, Bhojpuri Ratan Alankaran, U.P. Kavi Ratan Upadhi, Srutikriti Samman, Setu Sanman and others.

Sahitya Akademi feels honoured to confer the Bhasha Sammaan on Sri Moti B.A. for his unique contribution to Bhojpuri language and literature.

21 दिसम्बर 2010 का समाचार

पर्यटन निदेशालय ने भोजपुरी फिल्म सिटी के निर्माण की भूमिका में श्री मोती बीए को याद रखा

सनिवार, 21 दिसम्बर 2010 गोरखपुर | हिन्दुस्तान | 7

गीडा में बसाएँगे खूबसूरत भोजपुरी फिल्म सिटी !

पर्यटन निदेशालय ने गीडा से माँगी 110 एकड़ जमीन, 50 एकड़ में तैयार होगी भोजपुरी फिल्म सिटी तो 60 एकड़ में बनेगा फिल्म ट्रेनिंग इंस्टीट्यूट

दीपक तिवारी

गोरखपुर

गोरखपुर में भोजपुरी फिल्मों के लिए अच्छा वातावरण है। पहले भी इन क्षेत्र में फिल्मों की शूटिंग हो चुकी है। ऐसे में यहाँ फिल्म सिटी और ट्रेनिंग इन्स्टीट्यूट बनने से यहाँ के शिल्पकारों को रोजगार मिलेगा

मीनल मौर्य, जाइंट मजिस्ट्रेट फिल्म सिटी के चेयरपर्सन

फिल्म सिटी बनने से कलाकारों की शूटिंग के साथ ही रोजगार को भी रफ्तार मिलेगी।

निदेशालय ने भोजपुरी फिल्म सिटी के लिए माँगी जमीन

■ डॉक्टर शरीफ, कमिश्नर, डिप्टी कलेक्टर, पुलिस अधीक्षक और निदेशक पर्यटन ने भोजपुरी फिल्मों का बनने के लिए गोरखपुर के माहौल को बेहतर बताया है। उन्होंने कहा कि भोजपुरी फिल्मों के बनने से यहाँ के शिल्पकारों को रोजगार मिलेगा। इसके साथ ही फिल्म की शूटिंग में क्षेत्रीय कलाकारों को भी मौका मिलेगा।

1946 में बनी फिल्म नदिया के पार पहली फिल्म

■ भोजपुरी सिनेमाजगत में 1946 में बनी फिल्म नदिया के पार पहली फिल्म मानी जाती है। इसके बाद से भोजपुरी फिल्मों की शूटिंग देश के अलग-अलग जिलों और अंतिम गोरखपुर शूटिंग सम्मेलन के पूर्व अध्यक्ष श्री मोती बी.ए. ने भी अपना योगदान दिया है। श्री मोती बी.ए. ने भोजपुरी फिल्म 'आजादी के दिवाने' की शूटिंग गोरखपुर में करवाई थी। इसके बाद भोजपुरी फिल्म 'आजकल' में भोजपुरी गीत गाकर भोजपुरी फिल्म 'आजादी के दिवाने' की शूटिंग गोरखपुर में करवाने में अहम भूमिका निभाई थी।

23 जनवरी 1999 का समाचार

समाचार पत्र हिन्दुस्तान

मुझको सुनने-गाने की प्यास है : मोती बीए

हिन्दुस्तान संवाद

देवरिया, 22 जनवरी। 'भोजपुरी लोक मोती बी.ए.' पुस्तिका के विमोचन अवसर पर उपस्थित कवि मोती बी.ए. वर्तमान व्यवस्था से काफी क्षुब्ध दिखे। आवाज पर उम्र का असर हावी था। बातों-बातों में कभी संस्मरण सुनाते तो कभी कविता। व्यवस्था एवं राजनीति से दूर रहने की हर सम्भव कोशिश, पर न चाहकर भी व्यथा बाहर आ ही जाती थी। बोले - मेरी कविता की प्रशंसा सभी ने की। अपना पेट भर लेते हैं। मैं किसी से पुरस्कार नहीं मांगता पर आपका फर्ज भी कुछ सोचने का है।

श्री मोती बी.ए. का नागरिक अभिनन्दन नागरी प्रचारिणी सभागार में किया गया। इस अवसर पर 'भोजपुरी लोक मोती बी.ए.' पुस्तिका का विमोचन खाद्योद्योग राज्य मंत्री प्रेम प्रकाश सिंह ने किया। समारोह में मोती बी.ए. ने भी अपने विचार रखे। उम्र के असर से लड़खड़ाती आवाज में कुछ समझ में आता तो कुछ फंस कर रह जाता। वे बोले - मुझको खाने-पीने की प्यास नहीं है। मुझको सुनने गाने की प्यास है। लोगों को सुनना है तो सुने, नहीं तो जाइये। बीच-बीच में समय-समय पर सुनायी गयी अपनी कविताओं एवं संस्मरणों को सुनाते हुए वे अटल बिहारी वाजपेयी, चरण सिंह, मोहसिना किदवई एवं चन्द्रशेखर का भी जिक्र करते हैं। उनके द्वारा अपनी कविताओं की प्रशंसा करने की बात भी कहते हैं, पर इसी बीच बोल उठते हैं - मैं किसी से पुरस्कार नहीं मांगता हूं, न चाहता हूं। जिसे देना हो दे, लेकिन मैं खरी बात कहूंगा। कविता की प्रशंसा तो सभी करते हैं। अटल ने मेरी कविता लिखकर अपने पास मंगायी। पर अब वे नहीं सोच पायेंगे। कौन कहता है सोचें....।

बीच में अपनी कविता - 'रंगमंच पर दृश्य बदल दो अब फैली गहरी, अब कैसी लाचारी यारो अगब कैसी लाचारी....।' सुनाते हैं। फिर बोल उठते हैं - 'कविता की प्रशंसा तो सभी करते हैं। अपना पेट भर भी लेते हैं, पर किसी से मांगा नहीं है, लेकिन कुछ आपका भी फर्ज सोचने का है। मेरा नाम लेने वाला तो मर गया। उग्रसेन था जो विधान सभा संसद में मेरा नाम लेकर मेरी पंक्तियां कहता था।' समारोह में अपनी प्रशंसा किये जाने पर भी वे कुछ कहने से नहीं चूकते। मुंह से हंसी निकलती है। कटाक्ष था या कुछ और पर लगा यही कि उपेक्षा की एक पीड़ा थी उन बातों में।

वे बोले - 'बड़ा खुश किस्मत हूं कि मेरे कान काम नहीं कर रहे हैं। आपने जितनी प्रशंसा की है मैं पागल हो जाता हूं।'

इस प्रकार की बातों एवं संस्मरणों का एक लम्बा सिलसिला सा चलता है और अन्त में अपनी कविता 'तनि अउर दउरी हिरना या जइब किनारा...' सुनाते हैं। समारोह भी समाप्त हो गया और सम्भवतः गुमनामी में मोती बी.ए. खो जाय। कोई समारोह फिर हो सम्मान की औपचारिकता पूरी हो पर कब तक....।

21 मई 2002 का समाचार

प्रथम भोजपुरी साहित्य अकादमी पुरस्कार की घोषणा पर सम्पूर्ण भारत में छपा समाचार

भोजपुरी में पहला साहित्य अकादमी पुरस्कार से मोती बीए अलंकृत

सांस्कृतिक संवाददाता, नई दिल्ली

21 मई

विभिन्न 22 भारतीय भाषाओं के साहित्य संवर्द्धन में योगदान देने एवं साहित्यकारों को अवार्ड देने के साथ साथ अब साहित्य अकादमी ने ऐसी क्षेत्रीय भाषाओं के साहित्य को भी प्रोत्साहन देने की योजना बनाई है जो अपने में खासी समृद्ध हैं और जिन्हें अभी तक अकादमी की मान्यता नहीं मिल पाई है। सम्मानित होने वाले साहित्यकारों को 40 हजार रूपए की राशि एवं ताम्र पत्र प्रदान किया जाएगा।

भोजपुरी भाषा के साहित्यकार का नाम तय करने के लिए गठित तीन सदस्यीय समिति में विश्व भोजपुरी सम्मेलन के समायोजक डा.प्रभुनाथ सिंह, कवि डा.विपू सूदन प्रसाद श्रीवास्तव तथा डा.केदारनाथ सिंह को शामिल किया गया था। समिति ने भोजपुरी के पहले साहित्य अकादमी अवार्ड के लिए चयन किया मोती बीए का।

80 वर्षीय मोती बीए हिन्दी, अंग्रेजी, उर्दू तथा भोजपुरी में समान रूप से लिखते रहे हैं।

इसके अलावा श्री मोती ने 50 से अधिक भोजपुरी व हिन्दी फिल्मों के लिए गीत भी लिखे हैं। यूपी के देवरिया जिले में बरहज के रहने वाले श्री मोती को भोजपुरी साहित्य में अमूल्य योगदान के लिए इससे पूर्व भी अनेक पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं। जानकारी के अनुसार श्री मोती को यह सम्मान अगस्त माह में आयोजित होने वाले एक समारोह में दिया जाएगा।

दिनाँक 01 अगस्त 2020 के समाचार

जन्म दिवस पर विशेष | फिल्म थी नदिया के पार, हीरोइन कामिनी कौशल और हीरो थे दिलीप कुमार

बॉलीवुड में जिससे चमकी भोजपुरी, उस 'मोती' को भूल गए

नवीन त्रिपाठी ● देवरिया

पुरानी नदिया के पार फिल्म के हीरो दिलीप कुमार। फिल्म खूब चली और उसका भोजपुरी गीत भी। लिखने वाले थे, देवरिया के मोतीलाल उपाध्याय उर्फ मोती बीए। बुजुर्ग पीढ़ी तो जानती ही नहीं है कि मोती बीए कौन है, कम ही लोग यह भी जानते होंगे मोती बीए ही ने फिल्म उद्योग को पहला भोजपुरी गीत दिया था। गीत था, 'कठवा के नइया बनइहें रे मलहवा'। उन्होंने कई भोजपुरी गीत लिखे, लेकिन जिस मोती ने फिल्मों में भोजपुरी को चमकाया, उसके घर देवरिया में ही लोग उसे भुला बैठे। स्मारक बना न मूर्ति लगी। तब के साहित्यकार भी उन्हें जान पाए थे, तभी आचार्य रामचंद्र शुक्ल, पं हजारी प्रसाद द्विवेदी, डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय ने कहा था, साहित्य संसार ने मोती बीए के कवि-कर्म का उचित मूल्यांकन नहीं किया।

कवि मोती बीए, अध्यापक शिक्षक मोतीलाल : मोतीलाल उपाध्याय का जन्म एक अगस्त 1919 को देवरिया के बरहज के बरनी गांव में हुआ था। पत्र रघुकृष्ण उपाध्याय और कौशल्या देवी की तीन संतानों में दूसरे नंबर के थे। बरहज में हाईस्कूल व गोरखपुर से इंटर पास करने के बाद काशी हिंदू विश्वविद्यालय से 1938 में बीए किया। साहित्यरत्न की डिग्री ली लेकिन उस समय के मंचीय कवियों में उन्हें के बीए होने के कारण मंच पर उन्हें मोती बीए कहा जाने लगा। वह ऐसे रचनाकार थे, जिन्हें फिल्मी तड़क भड़क पसंद नहीं थी। 1950 में मुंबई से लौट आए। 1952 में श्रीकृष्ण इंटर कॉलेज बरहज में शिक्षक बने। 1978 में आदर्श शिक्षक और वर्ष 2002 में साहित्य अकादमी भाषा सम्मान पाया।

मोती बीए ● फाइल फोटो

> मोती बीए भोजपुरी के योद्धा और महान कवि थे। उनका प्रतिमा लगनी चाहिए और स्मारक बनना चाहिए। किसी जनप्रतिनिधि ने इस पर ध्यान नहीं दिया।
> **अरुणेश नीरज**

> भोजपुरी रचनाकार मोती बीए को कभी नहीं भूल सकते। इसी इलाके में उनका स्मारक बनाने अथवा प्रतिमा लगवाने की कोशिश होगी। **कमलेश पासवान, सांसद, बांसगांव**

> मोती बीए स्वतंत्रता की लड़ाई में अंग्रेजों के खिलाफ जोरदार ढंग से आवाज उठाई, गीतों के माध्यम से लोगों को जागरूक करते रहे

महादेवी के लेखन से थे प्रभावित : मोती बीए महादेवी वर्मा से प्रभावित थे। उनके गीतों की प्रेरणा से लतिका, बाटलिका, सामिया, प्रतिबिम्बिनी और अनेति आदि रचनाएं लिखीं। बाटलिका से महादेवी वर्मा काफी प्रभावित हुई थी। मोती बीए मिश्र जी ने राष्ट्रीय स्तर पर पहचान बनाई। भोजपुरी को स्थापित किया। उनका स्मारक और प्रतिमा का न होना अफसोसजनक है।
भालचंद उपाध्याय, मोती बीए के पुत्र

> मोती बीए को भूलने का सवाल ही नहीं है। उनका स्मारक बनवाने के लिए सरकार से अनुरोध करूंगा।
> **सुरेश तिवारी, जिलाधिकारी बरहज**

जो लिखे, भोजपुरी के साथ उर्दू व अंग्रेजी पर भी पकड़ थी। उनके तीन अंग्रेजी और पांच उर्दू काव्य संग्रह भी प्रकाशित हुए थे। उन्होंने कीट्स और कॉलरिज के काव्य संग्रह और शेक्सपियर के 109 सानेट्स का पद्यानुवाद भी किया है।

60 से अधिक फिल्मों में गीत लिखे : मुंबई में रहकर मोती बीए ने 60 से अधिक हिंदी व भोजपुरी फिल्मों के लिए गीत लिखे। नदिया के पार के साथ सिंदूर, साजन, सुरक्षा हरण, किसी की याद, कलकिला, राम विवाह, मजबूर भइले राम आदि फिल्मों में भी मोती के गीत हिट हुए।

* * * * * * * * * *

बहुत पहले बाबा राघवदास पर श्री मोती बीए की कविता को समाचार पत्रों ने छापा था।

तपसी त्यागी राघवदास

मोती बी.ए.

तपसी त्यागी राघवदास
जन जनुमनी राघवदास
जाकी जनी मोती माय,
धन धैयागी राघवदास।

सीधा भाव सरल था
जन जन का दुःख जानता था
स्वयंसेवक बन विपदा की
घड़ी में साथ देता था।

जो जन जन जाता था
जो जन जन गाता था
जनहित हेतु देश
जन के लिए जीता था।

धिन धिन तपसी राघवदास
धन धन त्यागी राघवदास
धन धन मोती
जननी जनी राघवदास।

अपनी पूंजी से जीता था
पूंजी से दुःख जानता था
मातृभूमि की सेवा में
तपसी त्याग जाता था।

प्रभु जनता का सेवा था

बापू प्रिय अनुयायी था
संत विनोबा के दल में
ऐसा एक अकेला था।

निर्भीक निश्छल राघवदास
निर्भय अविचलित राघवदास
गीता की भाषा जैसा
पावन उज्ज्वल राघवदास
तपसी त्यागी....।

विद्यालय बनवाता था
मदरसा भी चलवाता था
कहीं कोढ़ियों को खाना
कुआँ भी खुदवाता था।

उद्योगी पुरुषार्थी था
निःस्वार्थी परमार्थी था
सबको ज्ञान सिखाता था
किन्तु स्वयं विद्यार्थी था।

सच्चा सेवक राघवदास
सत्य सुधारक राघवदास
सबके हृदयों का स्वामी
जग का शिक्षक राघवदास
तपसी त्यागी.....।

101वीं जयंती पर याद किये गये मोती बीए

बरहज। मोती बीए की 101वीं जयन्ती 3 अगस्त सोमवार को समारोह पूर्वक मनायी गयी। सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करते हुए उपस्थित लोगों ने मोती बीए के चित्र पर माल्यार्पण कर श्रद्धासुमन अर्पित किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सेवानिवृत शिक्षक रामविलास प्रजापति व एसके पाण्डेय ने अपने सम्बोधन में कहा कि मोती बीए ने पूर्वांचल में पहली बार भोजपुरी फिल्म का निर्माण किया। हिन्दी, उर्दू और भोजपुरी पर समान अधिकार रखने वाले मोती बीए भोजपुरी के शेक्सपीयर के नाम से भी जाने जाते थे। उन्होंने सिनेमा को माध्यम बनाकर भोजपुरी को एक मुकाम दिया। अरविन्द त्रिपाठी ने कहा कि उनकी रचनाएं भोजपुरी समाज की थाती है। उनके साहित्य को हम सभी को पहुंचाने के लिए संकल्प लेना होगा। कार्यक्रम का शुभारम्भ मोती बीए की पुस्तक सेमर के फूल और वन वन बोलेले कोयलिया का नेट पुस्तक के रूप में लोड कर मुख्य अतिथि द्वारा दीप प्रज्वलन और माल्यार्पण कर किया गया। समारोह को भालचन्द उपाध्याय, डा. एसपी सिंह, सत्यप्रकाश पाण्डेय, मुजफ्फर हुसैन मंसूरी, राकेश श्रीवास्तव, सूर्यनाथ सिंह ने भी अपने विचार व्यक्त किये। इस दौरान विवेकानन्द पाण्डेय, मु0 एहसान, सुशील उपाध्याय, प्रह्लाद यादव, अभिषेक आदि उपस्थित रहे।

हिन्दुस्तान के स्थानीय प्रमुख सहित समस्त हिन्दुस्तान परिवार को इस न्यूज के लिये बधाई।

एक निवेदन के साथ-

श्री अरुणेश जी लगभग 30 वर्ष श्री मोती बीए से छोटे हैं। नदिया के पार 1948 में प्रदर्शित हुई। उस समय श्री अरुणेश जी का कोई अस्तित्व नहीं था। श्री मोती बीए जी 29 वर्ष के थे। वो रोते नहीं थे। उनकी रचनायें आग उगलती थीं। प्रमाण के लिये 'राशन की दूकान' की प्रति आप देख सकते हैं।

कवि मोती बीए की जन्मशती पर राजकीय इंटर कालेज में हुआ आयोजन

'नदिया के पार' देख रोए थे मोती बीए : डॉ. अरुणेश

कार्यक्रम

- गोरखपुर के दीनदयाल उपाध्याय टाउनशिप में फिल्म देखते हुए निर्माता भरने लगे थे मोती बीए
- जिला गोरखपुरी लोक के प्रख्यात अरुणेश जी ने व्यक्त किए अनुभव

युगों तक याद किए जाएंगे मोती बी.ए.

डेढ़ दर्जन क

श्रद्धेय डॉ अरुणेश जी से निवेदन है कि दिवंगत आत्मा को ठेस लगाने वाले वक्तव्य न दें।

हिन्दुस्तान के प्रतिनिधि को पुनः बधाई।

-अंजनी उपाध्याय

पुत्र-श्री मोती बीए

अमर उजाला के स्थानीय प्रमुख सहित समस्त अमर उजाला परिवार को सम्पदा न्यूज और मोती बीए के परिवार और उनके शुभ चिन्तकों की ओर से इस न्यूज के लिये बधाई।

5

हिंदी और भोजपुरी कविता के 'मोती' हैं मोती बीए

राजकीय इंटर कॉलेज सभागार में हुआ भोजपुरी कवि मोती बीए का जन्मशती समारोह, रचनाओं से उन्हें याद किया गया

मोती क माला निराला हवे...

Thank You Amar Ujaala

www.sampadanews.in/barhaj email-editorsampada@sampadanews.in

दैनिक जागरण के स्थानीय प्रमुख सहित समस्त दैनिक जागरण परिवार को सम्पदा न्यूज और मोती बीए के परिवार और उनके शुभ चिन्तकों की ओर से इस न्यूज के लिये बधाई।

मोती बीए की जयंती पर आयोजित कार्यक्रम में उपस्थित छात्र • जागरण

कार्यक्रम को संबोधित करते साहित्यकार डा. अरुणेश नीरन • जागरण

माटी के सच्चे रचनाकार थे मोती बीए

सौवीं जयंती पर विविध कार्यक्रमों के साथ किए गए याद, वक्ताओं ने रखे अपने विचार

जागरण संवाददाता, देवरिया: भोजपुरी के यशस्वी हस्ताक्षर अभिनेता व गीतकार मोती बीए की जन्मशती पर गुरुवार को राजकीय इंटर कालेज में एक ही मोती चमके कितना कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में वक्ताओं ने मोती बीए को माटी का सच्चा रचनाकार बताया।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए प्रधानाचार्य प्रदीप कुमार शर्मा ने कहा कि पूर्वांचल से पहली बार 'फिल्म और इल्म' के बीच एक पुल का निर्माण जिन्होंने किया, वह मोती बीए ही थे। इतना ही नहीं मंच के माध्यम से क्लास और मास दोनों से ही उन्होंने संपर्क बनाया। अध्यक्षीय संबोधन में साहित्यकार डा. अरुणेश नीरन ने कहा कि मोती बीए ने हिंदी सिनेमा में भोजपुरी की सर्वप्रथम धाक जमाई।

जन्मशती समारोह

- भोजपुरी साहित्य को हमेशा खलती रहेगी उनकी कमी
- हिंदी, उर्दू, अंग्रेजी और भोजपुरी पर समान अधिकार रखते थे वह

हिंदी, उर्दू, अंग्रेजी और भोजपुरी पर समान अधिकार रखने वाले मोती भोजपुरी के शेक्सपियर के नाम से भी जाने जाते हैं। उन्होंने अंग्रेजी कविताओं का अनुवाद हिंदी व भोजपुरी में किया। डा. भूपेंद्र कुमार मिश्र ने कहा कि मोती बीए की भोजपुरी साहित्यिक कविता 'महुआबारी' आज भी पूर्वांचल में जन-जन की जुबान पर है। नागरी प्रचारिणी के मंत्री इंद्र कुमार दीक्षित ने कहा कि भोजपुरी साहित्य को उनकी कमी हमेशा खलती रहेगी। संचालन योगेंद्रनाथ मिश्र ने किया।

इस दौरान नागरी प्रचारिणी के अध्यक्ष परमेश्वर जोशी, डा. डीपी तिवारी, डा. प्रेमशीला शुक्ल, संजय कानोडिया, महाकाव्य शर्मा, भुवनेश्वर मिश्र, गोविंद सिंह, दयानंद मिश्र आदि मौजूद रहे।

अपनी रचनाओं से आज भी जिंदा है मोती बीए : महेंद्रनाथ

बरहज, देवरिया: मोती बीए की जयंती उनके पैतृक आवास नंदना वार्ड में समारोह पूर्वक मनाई गई। वक्ताओं ने उन्हें भोजपुरी बोली को देश, विदेश में सिनेमा, साहित्य के माध्यम से पहुंचाने वाला बताया।

उनके रचनाओं को शोध का विषय बताया। लोगों ने भोजपुरी को आठवीं अनुसूची में शामिल करने की मांग की।

साहित्यकार डा. महेंद्रनाथ पांडेय ने कहा कि मोती बीए बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। विषम परिस्थितियों में भोजपुरी साहित्य का सृजन किया। उन्होंने सिनेमा को माध्यम बना भोजपुरी को मुकाम दिया। उनकी रचनाएं भोजपुरिया समाज की थाती है। रामेश्वर यादव ने कहा कि उनके साहित्य को जन-जन तक पहुंचाने का संकल्प लेना होगा। रमेश तिवारी अंजान ने उन्हें महान रचनाकार बताते हुए कहा कि उनकी रचनाओं में गांव गरीब की पीड़ा से लेकर सत्ता की आलोचना की झलक दिखती है। कार्यक्रम में जितेंद्र भारत, डा. एसपी सिंह, विकास विश्वकर्मा, अरविंद त्रिपाठी, अनिल निषाद, काशीनाथ कुशवाहा, रामविलास प्रजापति, विजय नेता ने भी विचार रखे। संचालन अंजनी उपाध्याय ने किया।

थैंक्यू दैनिक जागरण

www.sampadanews.in/barhaj email-editorsampada@sampadanews.in

राष्ट्रीय सहारा के स्थानीय प्रमुख सहित समस्त राष्ट्रीय सहारा परिवार को सम्पदा न्यूज और मोती बीए के परिवार और उनके शुभ चिन्तकों की ओर से इस न्यूज के लिये बधाई।

5

मोती बीए : भोजपुरी के अनमोल रत्न

सुभाषग्राम में मनी मोती बीए की बरसी जयन्ती

थैंक्यू राष्ट्रीय सहारा

www.sampadanews.in/barhaj email-editorsampada@sampadanews.in

श्री मोती बीए के समाचार को शानदार रूप में प्रस्तुत कर उनके मूर्ति के लिये जोरदार पहल पर सम्पदा परिवार और श्री मोती बीए ट्रस्ट दैनिक जागरण परिवार और जिला प्रतिनिधि श्री महेन्द्र त्रिपाठी और स्थानीय प्रतिनिधि का स्वागत करता है।

जन्म दिवस पर विशेष

बॉलीवुड में जिससे चमकी भोजपुरी, उस 'मोती' को भूल गए

मोती बीए — [illegible]

[illegible]

मोती बीए की रचनाएं शोध का विषय

जासं, बराज, देवरिया: साहित्यकार, कवि मोती बीए की 101वीं जयंती पर सोमवार को साहित्यकारों, कवियों, सामाजिक कार्यकर्ताओं ने उनके चित्र पर दीप प्रज्ज्वलित कर पुष्पांजलि अर्पित की। इसमें शारीरिक दूरी का अनुपालन किया गया।

मुख्य अतिथि राम विलास प्रजापति ने उन्हें महान लेखक, कवि, साहित्यकार बताते हुए कहा कि उनकी रचनाएं शोध का विषय है। उनकी रचनाओं, कृतियों को सहेजने की जरूरत है। उन्होंने भौतिकता को आध्यात्म से जोड़ने का काम किया। इनकी कविताएं लोकभावनाओं पर आधारित हैं और तत्कालीन समाज का बोध कराती हैं।

विशिष्ट अतिथि डॉ एसपी सिंह, अरविंद कुमार त्रिपाठी, सत्य प्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि मोती बीए की रचनाएं समाज को समेटे हैं। मुजफ्फर हुसैन मंसूरी ने मोती वंदना की। उनके नाम पर संग्रहालय, पुस्तकालय की स्थापना होनी चाहिए। सुभाष चन्द्र मिश्र, अभयानंद तिवारी, अरविंद पाल, राकेश श्रीवास्तव व ब्रिज तिवारी ने भी विचार व्यक्त किए। अध्यक्षता भाल चन्द उपाध्याय व संचालन अंजनी उपाध्याय ने किया। इसीक्रम में मोती बीए की दो कृतियों सेमर के फूल व बन बन बोलेली कोयलिया के नए संस्करण के रूप में नेट पुस्तक का विमोचन किया गया। मोती बीए फिल्म सेवा ट्रस्ट द्वारा आयोजित कार्यक्रम में बच्चों की मुस्कान, राष्ट्र की शान... शासन के निर्देश पर बाल प्रतिभागियों फैजान अंसारी, जिशान एवं आयान को सम्मानित किया गया।

थैंक्स, दैनिक जागरण समाचार पत्र

श्री मोती बीए के समाचार को शानदार रूप में प्रस्तुत करने के लिये संपदा परिवार और श्री मोती बीए ट्रस्ट स्वतन्त्र चेतना परिवार, जिला प्रतिनिधि और स्थानीय प्रतिनिधि का स्वागत करता है।

भोजपुरी का दूसरा नाम है मोतीबीए–प्रजापति

प्रतिनिधी बरहज देवरिया। उपनगर के नन्दन वार्ड पश्चिमी में सोमवार को मोती बीए की तीन दिवसीय जयंती मनायी गयी। कार्यक्रम का शुभारंभ मोती बीए के चित्र पर मुख्य अतिथि द्वारा दीप प्रज्वलन एवं माल्यार्पण के साथ प्रारम्भ हुआ। मोती बीए के इस जयंती समारोह में भावनाओं की सीमा टूट गयी। सोशल डिस्टेंस का पालन करते हुए कार्यक्रम को शुभारंभ किया।

मुख्य अतिथि समाजसेवी राम बिलास प्रजापति ने कहा कि भारत में भोजपुरी मोती बीए से जानी जाती है। यह भी कहना उचित है कि मोती बीए ही भोजपुरी है और भोजपुरी ही मोती बीए है। उन्होंने भौतिकता को अध्यात्म से जोड़ने का काम किया। इनकी कविताएं लोकभावनाओं पर आधारित हैं और तत्कालीन समाज का बोध कराती हैं इसीलिए कहा जाता है कि साहित्य समाज का दर्पण होता है।

मुजफ्फर हुसैन मसूरी ने मोती बीए पर कविता सुनाई तुम कलम के मोती थे, तुम कलम के ज्योति थे। अरविन्द त्रिपाठी ने स्वतंत्रता संग्राम सेनानी न होने के मलाल को दर्शाया। भाल चंद्र उपाध्याय ने कविता गीत अधूरा है को सुनाया। सत्य प्रकाश पाण्डे ने सेमर के फूल कविता को सुनाया। एस के पाडेय ने उनके स्मृतियों को सँजोने का प्रयास पर बल दिया। कार्यक्रम में बाल प्रतिभा अंशान, फैजान, अयान को को सम्मानित प्रशस्ति पत्र से किया गया। श्री मोती बीए की पुस्तक, सेमर के फूल और बन बन बोले ले कोयलिया, का नेट पुस्तक के रूप में सर्वत्र उपलब्धता के लिए डाउनलोड कर उसका उद्घाटन किया गया।

कार्यक्रम में रवीन्द्र पाल, सूर्यनाथ सिंह, मु एहसान, विवेकानन्द पाण्डे, प्रह्लाद यादव, सुशील उपाध्याय, साहिल, अभिषेक, राकेश श्रीवास्तव, उपस्थित रहे। संचालन अंजनी उपाध्याय ने किया।

थैंक्स, स्वतन्त्र चेतना समाचार पत्र

श्री मोती बीए के समाचार को सम्मानजनक स्थान देने के लिए समाचार पत्र राष्ट्रीय सहारा के जिला प्रतिनिधि, स्थानीय प्रतिनिधि और राष्ट्रीय सहारा परिवार का सम्पदा न्यूज एवं श्री मोती बीए ट्रस्ट हृदय से आभारी है।

101वीं जयंती पर याद किये गये मोती बीए

बरहज। मोती बीए की 101वीं जयन्ती 3 अगस्त सोमवार को समारोह पूर्वक मनायी गयी। सोशल डिस्टेंसिंग का पालन करते हुए उपस्थित लोगों ने मोती बीए के चित्र पर माल्यार्पण कर श्रद्धासुमन अर्पित किया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सेवानिवृत शिक्षक रामविलास प्रजापति व एसके पाण्डेय ने अपने सम्बोधन में कहा कि मोती बीए ने पूर्वांचल में पहली बार भोजपुरी फिल्म का निर्माण किया। हिन्दी, ऊर्दू और भोजपुरी पर समान अधिकार रखने वाले मोती बीए भोजपुरी के शेक्सपीयर के नाम से भी जाने जाते थे। उन्होंने सिनेमा को माध्यम बनाकर भोजपुरी को एक मुकाम दिया। अरविन्द त्रिपाठी ने कहा कि उनकी रचनाएं भोजपुरी समाज की थाती है। उनके साहित्य को हम सभी को पहुंचाने के लिए संकल्प लेना होगा। कार्यक्रम का शुभारम्भ मोती बीए की पुस्तक सेमर के फूल और वन वन बोलेले कोयलियां का नेट पुस्तक के रूप में लोड कर मुख्य अतिथि द्वारा दीप प्रज्वलन और माल्यार्पण कर किया गया। समारोह को भालचन्द उपाध्याय, डा. एसपी सिंह, सत्यप्रकाश पाण्डेय, मुजफ्फर हुसैन मंसूरी, राकेश श्रीवास्तव, सूर्यनाथ सिंह ने भी अपने विचार व्यक्त किये। इस दौरान विवेकानन्द पाण्डेय, मु0 एहसान, सुशील उपाध्याय, प्रह्लाद यादव, अभिषेक आदि उपस्थित रहे।

थैंक्स, राष्ट्रीय सहारा समाचार पत्र

श्री मोती बीए जयंती समारोह 101 पर आयोजित कार्यक्रम को दैनिक समाचार पत्र ने सम्मान जनक रूप से प्रस्तुत किया है, इसके लिये आज परिवार जिला ब्यूरो और स्थानीय प्रतिनिधि का सम्पदा परिवार आभारी है। श्री मोती बीए 1942 में समाचार पत्र आज में सहायक सम्पादक के रूप में कार्य किये थे।

जयंती पर याद किए गये भोजपुरी के महानायक मोती बीए

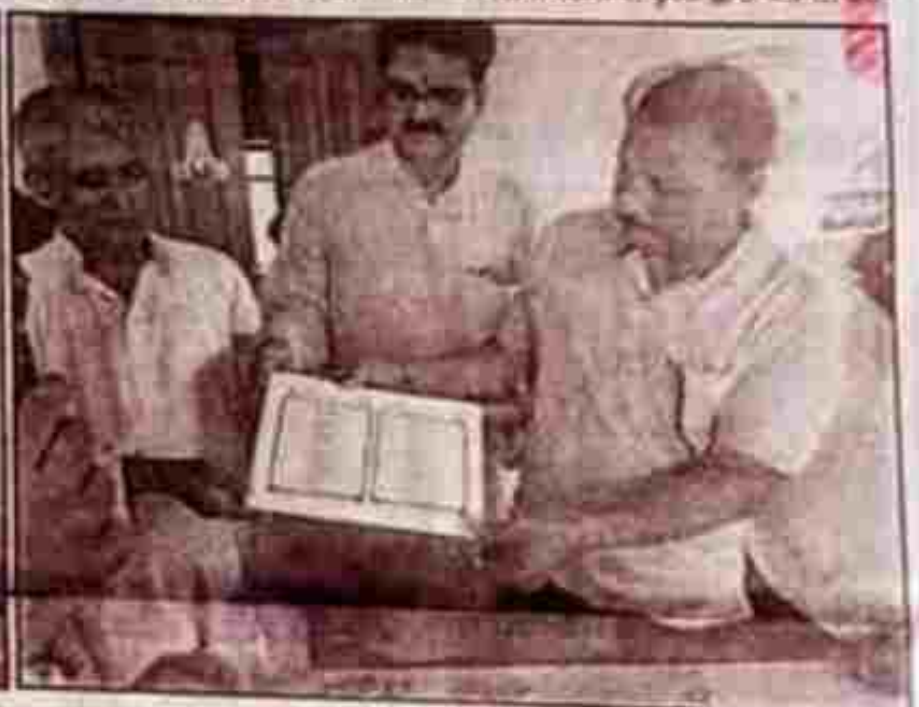

अध्यक्षता बाल चन्द्र उपाध्याय व संचालन अंजनी उपाध्याय ने किया। मुख्य अतिथि की प्रजापति ने उन्हें महान लेखक, कवि, साहित्यकार बताते हुए कहाकि उनकी रचनाएं शोध का विषय है। उनकी रचनाओं, कृतियों को सहेजने की जरूरत है। जिससे कि आने वाली पीढ़ी उनको पढ़ और जान सके। भारत में भोजपुरी मोती बीए से जानी जाती है। मोती बीए ही भोजपुरी है और भोजपुरी ही मोती बीए है। इन्होंने जो काम किया उनकी कविताएं लोक भावनाओं पर आधारित है और तत्कालीन समाज का बोध कराती है।

विशिष्ट अतिथि डॉ एसपी सिंह, अरविंद कुमार त्रिपाठी, ने कहाकि मोती बीए की रचनाएं समग्रता को समेटे है। उन्होंने भोजपुरी को राष्ट्रीय फलक पर पहचान दिलाई। उनके जाने के बाद उनकी स्मृतियों, रचनाओं को सहेजने का कार्य नहीं हो सका है। मुजफ्फर हुसैन मंसूरी आज मोती बीए की रचनाओं को सहेजने की जरूरत है।

पुस्तकें पढ़ी जान सके इसके लिए संग्रहालय, पुस्तकालय उनके नाम पर बने। सुभाष चन्द्र मिश्र, अभयानंद तिवारी, अरविंद पाल राकेश कौशलाव व प्रिंस तिवारी ने भी संबोधन किया। इसीक्रम में मोती बीए की दो कृतियों **सेमर के फूल व बन बन बोलेले कोयलिया** को नए संस्करण के रूप में नेट पुस्तक का विमोचन कराया गया। मोती

कार्यक्रम में बच्चों की मुस्कान, **राष्ट्र की शान**..... शासन के निर्देश पर आए प्रतिभागियों वैष्णव अंसारी, विकास एवं अयान को प्रशस्ति पत्र व अंगवस्त्र देकर सम्मानित किया गया।

संचालन अंजनी उपाध्याय ने किया। इस दौरान प्रह्लाद यादव, सूर्य नाथ सिंह, सर्जिका उपाध्याय, देवाशीष उपाध्याय आदि उपस्थित रहे।

थैंक्यू आज समाचार पत्र

श्री मोती बीए की जयन्ती 1 अगस्त 2017 के अवसर पर दैनिक समाचार पत्र हिन्दुस्तान द्वारा समाचार को प्रमुखता से अपने कालम में स्थान देने के लिए

मोती बीए का जन्म दिवस मनाया गया

बरहज। हिन्दुस्तान संवाद

मोती बीए के चित्र पर पुष्प अर्पित कर जन्म दिवस मनाते प्रबुद्धजन। • हिन्दुस्तान

भोजपुरी सिनेमा के महानायक व महाकवि मोती बीए का जन्म दिवस मंगलवार को नंदना वार्ड स्थित लक्ष्मी निवास में मनाया गया। वक्ताओं ने काव्य पाठ सुनाते हुए मोती बीए को श्रद्धा सुमन अर्पित किया। प्रबुद्धजनों ने उनके चित्र पर पुष्प अर्पित कर सादगी से याद किया।

प्रधानाचार्य व कवि रामेश्वर प्रसाद यादव ने मोती बीए की रचना 'आधा बल्टी पानी से नहा लिहली धनिया', कवि रमेश तिवारी 'अंजान' ने 'करता गीत-गजल खासे दुनिया में बदनाम, उनकर मोती बीए नाम', कवि सरोज पाण्डेय ने 'सेमर के फूल पर फिदा सुगना', कवि भालचंद उपाध्याय ने 'हमरों दुवारे भुलाके जो आइल ' व सुशील उपाध्याय ने 'चढ़ी के आउ रे दुश्मनवा' समेत विविध काव्य पाठ सुनाया। कांग्रेस नेता विजय कुमार गुप्त ने कहा कि कवि मंचों पर धूम मचा देने वाले महाकवि मोती बीए भोजपुरी गीतों को फिल्मी दुनिया में प्रतिष्ठित करने वाले पहले शख्स हैं। अस्सी से अधिक फिल्मों में गीत लिखने वाले मोती बीए ने भोजपुरी बोली को सेलुलाइड पर लाने का कार्य किया। डॉ आरपी तिवारी ने कहा कि मोती बीए का गीत जनमानस में आज भी काफी चर्चित है। संचालन अंजनी उपाध्याय ने की।

सम्पदा परिवार
आपका स्वागत करता है।

श्री मोती बीए की जयन्ती 1 अगस्त 2017 के अवसर पर दैनिक समाचार पत्र जागरण द्वारा समाचार को प्रमुखता से अपने कालम में स्थान देने के लिए

जयंती पर विशेष | अपने ऊपर कभी हावी नहीं होने दिया फिल्मी रंग

भोजपुरी के शेक्सपियर मोती बीए

विवेकानंद मिश्र • देवरिया

मोती बीए को सम्मान देने के लिए सरकार ने शुरू किया भोजपुरी सम्मान, मोती के गीत छायावादोत्तर है

हिंदी, उर्दू, अंग्रेजी और भोजपुरी पर समान अधिकार रखने वाला और भोजपुरी के शेक्सपियर के नाम से याद किए जाने वाले मोती बीए भारतीय सिनेमा के उन हस्तियों में से एक हैं जिन्होंने अपनी सादगी और मिट्टी की खुशबू को संगीत के जरिये दुनिया में स्थापित किया। अपनी रचनाओं एवं अभिनय से जो मुकाम हासिल किया वह विरले को ही मिलता है। भारत सरकार ने भोजपुरी भाषा को महत्व देने का कार्य मोती बीए के कारण ही किया। साहित्य अकादमी का प्रथम भोजपुरी सम्मान मोती बीए को ही मिला। भोजपुरी के महानायक

मोती बीए की फाइल फोटो

मोती लाल उपाध्याय उर्फ मोती बी.ए. का जन्म एक अगस्त 1919 में बरहज तहसील क्षेत्र के ग्राम बरेजी में हुआ था। मोती बी.ए. भारतीय सिनेमा के उन हस्तियों में एक हैं जिन्होंने अपनी सादगी और मिट्टी की खुशबू को संगीत के जरिये दुनिया में स्थापित किया। अपनी रचनाओं एवं अभिनय से जो मुकाम हासिल किया वह विरले को ही मिलता है। शिक्षा ग्रहण करने के बाद मोती बी.ए. पत्रकारिता से जुड़ गए और अग्रगामी, आज, आर्यावर्त समाचार पत्रों के संपादकीय विभाग में कार्य किया। राष्ट्रीय विचारों के चलते सर्वोदय आंदोलन से जुड़ गए। 1942 में उन्हें भारत रक्षा कानून के तहत त्रिलोचन शास्त्री व स्वामीनाथ सिंह के साथ जेल जाना पड़ा। प्रमुख गीत था-झंडा तिरंगा लहराए अपने देश में, हां-हां रे अपने देश में..। मोती के अधिकांश गीत छायावादोत्तर गीतकाव्य [illegible] पर विचरण करते हैं।

माटी से जुड़ी लोक भाषा भोजपुरी के लिए मोती बी.ए. ने कुछ उठा नहीं रखा। 1947 में आई अवधी/हिंदी फिल्म नदिया के पार में भोजपुरी गीत लिखकर फिल्मों में भोजपुरी को स्थापित किया। 1950 में आई हिंदी फिल्म राजपूत के लिए इन्होंने होली गीत लिखा जो काफी प्रचलित हुआ। तनि अउरी दउर हिरना पा जइब किनारा.., एहि के कहानी हम सबके सुनवली मुसुकेल झुठहूं निराश.., जीवन की प्याली अधरों ने छूते ही छूते टूट गई..,मिल गए धूलि के जो मधु कण बस उन्हें उठाता लाया हूं.., जैसी इनकी सैकड़ों रचनाएं हिंदी, भोजपुरी में छायावाद, रहस्यवाद के साथ जीवन में सफलता की प्रेरणास्रोत बन गई।

सम्पदा परिवार आपका स्वागत करता है।

www.sampadanews.in/barhaj email-editorsampada@sampadanews.in

www.sampadanews.in SCMV

मोती बीए माटी के सच्चे रचनाकार

मोती बीए के चित्र पर पुष्पांजलि करते लोग • जागरण

जयंती

- मोती बीए ने क्लास और मास दोनों से बेहतर समन्वय बनाया
- मोती बीए ने हिंदी सिनेमा में भोजपुरी की सर्वप्रथम धाक जमाई

जागरण संवाददाता, देवरिया: भोजपुरी के सशक्त हस्ताक्षर अभिनेता व गीतकार मोती बीए की जयंती मंगलवार को नंदना वार्ड पश्चिम स्थित मोती विला पर समारोह पूर्वक मनाई गई। वक्ताओं ने उन्हें माटी का मजबूत रचनाकार बताया।

कार्यक्रम को संबोधित करते हुए प्रधानाचार्य रमेश तिवारी अंजान ने कहा कि पूर्वांचल से पहली बार 'फिल्म और इल्म' के बीच एक पुल का निर्माण जिन्होंने किया, वह मोती बीए ही थे। इतना ही नहीं मंच के माध्यम से क्लास और मास दोनों से ही उन्होंने संपर्क बनाया। उनके नाम के आगे बीए ऐसा जुड़ा कि वे हमेशा मोती बीए के नाम से ही जाने गए। कवि रामेश्वर यादव ने कहा कि मोती बीए ने हिंदी सिनेमा में भोजपुरी की सर्वप्रथम धाक जमाई। हिंदी, उर्दू, अंग्रेजी और भोजपुरी पर समान अधिकार रखने वाले मोती भोजपुरी के शेक्सपियर के नाम से भी जाने जाते हैं। शेक्सपियर की सॉनेट का अनुवाद उन्होंने भोजपुरी में किया। विजय नेता व राधारमण पांडेय ने कहा कि मोती बीए की भोजपुरी साहित्यिक कविता 'महुआबारी' आज भी पूर्वांचल में जन-जन की जुबान पर है। मोती नाम का दीपक अपनी चमक से साहित्य जगत को रोशन किया। जितेन्द्र कुमार भारत ने कहा कि मोती बीए ने भोजपुरी को राष्ट्रीय स्तर पर स्थापित किया। भोजपुरी साहित्य को उनकी कमी हमेशा खलती रहेगी। संचालन भालचंद उपाध्याय ने किया।

इस दौरान पीएन तिवारी, सरोज पांडेय, चिंतामणि साहनी, शंभूनाथ सिंह, अंजनी कुमार उपाध्याय, सुशील उपाध्याय, संजय तिवारी, विपुल राय, यशराज जायसवाल, विनय पांडेय, प्रहलाद यादव, दयाशंकर मल्ल आदि मौजूद रहे।

श्री मोती बीए की जयन्ती 1 अगस्त 2017 के अवसर पर दैनिक समाचार पत्र जागरण द्वारा समाचार को प्रमुखता से अपने कालम में स्थान देने के लिए सम्पदा परिवार आपका स्वागत करता है।

श्री मोती बीए की जयन्ती 1 अगस्त 2017 के अवसर पर दैनिक समाचार पत्र न्यूज फॉक्स द्वारा समाचार को प्रमुखता से अपने कालम में स्थान देने के लिए सम्पदा परिवार आपका स्वागत करता है।

मोती बीए की मनाई गई जयंती

मोती बीए के चित्र पर पुष्प अर्पित करते अतिथिगण।

न्यूज फॉक्स न्यूज

बरहज। मंगलवार को मोती बीए का लक्ष्मी निवास, नंदना बार्ड पश्चिमी बरहज में जयंती मनाई गई। इस अवसर पर उपस्थित अतिथियों ने मोती बीए की रचनाओं पर प्रकाश डालते हुए उनके स्थापित आदर्शों से प्रेरणा लेने का संकल्प लिया। मुख्य अतिथि डा. आनंदी तिवारी ने उनके चित्र पर माल्यार्पण कर गोष्ठी कार्यक्रम का शुभारंभ किया।

गोष्ठी में रमेश तिवारी अंजान ने मोती बीए पर अपनी प्रिय कविता गीत सजल अनुवादन के खातिर बदनाम उनकर मोती बीए नाम सुनाया। भालचंद उपाध्याय ने मोती बीए की कविता नावे से हमरा आधार का सुनी सबे सुनाया। सुशील कुमार उपाध्याय ने मोती की कविता चढि के आक रे दुश्मनवा अब दोनावन बानी जा, खा ल पी ले खूब मोटा ले, तोहके हने के हथियार अब पिजावत बानी जा को सुनाया और बताया कि इस गीत को पाकिस्तान के 1965 में आक्रमण के समय लिखा गया था। जितेन्द्र भारत ने मोती बीए के स्वतंत्रता संग्राम सेनानी वाले केश को दबाने के विरोध में शासन से कार्रवाई करने के लिए जोर दिया। कार्यक्रम का संचालन अंजनी कुमार उपाध्याय ने किया। चिंतामणि साहनी, विजय नेता, राधा रमण पाण्डेय ने श्रद्धांजलि अर्पित की। इस अवसर पर विजय पाण्डेय, प्रह्लाद यादव, संजय तिवारी, संजय पाण्डेय, जगदीश जायसवाल, साहिल, सुमित त्रिपाठी, अभिषेक उपाध्याय, विकी राय, कुंज बिहारी, पप्पू मौजूद रहे।

पत्रकार को मातृ शोक

भिंगारी बाजार। क्षेत्र के भिंगारी बाजार निवासी पत्रकार सत्येंद्र प्रताप शाही की माता चम्पा देवी का बुधवार को सुबह निधन हो गया, वह 100 वर्ष की थी। उनके निधन पर पत्रकार मकसूद अहमद भोपतपुरी, डा. अजय बरनवाल, शोएब अहमद, डा. अभय प्रताप, विपुल तिवारी, मनोज भारती, रोशन शाही, मोहित शुक्ल, विजय सिंह, गणवेंद्र पांडेय, डा. राजेश [illegible] आजाद आदि पत्रकारों ने शोक व्यक्त की है।

श्री मोती बीए की जयन्ती 1 अगस्त 2017 के अवसर पर
दैनिक समाचार पत्र अमर उजाला द्वारा समाचार
को प्रमुखता से अपने कालम में
स्थान देने के लिए

खास खबर सुपर हिट भोजपुरी फिल्म 'नदिया के पार' में गीत लिखे थे मोती बीए ने

हम चले लंबे सफर को अलविदा ए दोस्तों

सच्चिदानंद पांडेय

बरहज।

हम चले लंबे सफर को अलविदा ए दोस्तों, मौज ए दुनिया में बाटे तुम अलविदा ए दोस्तों..., अमरे अदीत खुशआबादी में बहार सजवनी, एगो दीक्ष जोरता जवन कहीले न भुलान जवन चीज न लवहान..., मूल तुम्हरा से नाजवन बाटे गाम रे हिरन का निशान, नेह की दुकानी में रेत के घा अलब... और यह रस के सवार जोड़ी के मिलेल ले खुद कड़ाही के साथ सहजोरल... इसाँद भोजपुरी अस्मिता और मोती के जीए बचाने गई पर धमाल मचा देने वाले भारत के 'मोतीलाल बीए' भोजपुरी का मान बढ़ाये चाले पहले हस्ता हैं। उन्होंने

मोती बीए (फाइल फोटो)

1944 से 52 तक बिहारी दुनिया के करीब 80 फिल्मों में भोजपुरी गीत लिखा है। लखनीत क्षेत्र के कोरी गांव निवासी स्व. राधाकृष्ण उपाध्याय और कौशल्या देवी के तीन संतानों में दूसरे नंबर के बेटे

मोती बीए की जयंती पर विशेष

मोतीलाल बीए का जन्म एक अगस्त-1919 को हुआ था। गांव से प्रारंभिक शिक्षा के बाद 1934 में नगर के किंग जार्ज इंटर कॉलेज से हाईस्कूल, 1936 में गोरखपुर से इंटर, 1939 में काशी हिंदू विश्वविद्यालय से स्नातक करने के बाद 1943 तक विभिन्न समाचार पत्रों में पत्रकारिता और संवाददाता विभाग में कार्यरत रहे। 1944-51 तक पॉपुलर आर्ट्स सिनेमा लहेरिया फिल्मीस्तान लिमिटेड बम्बई, प्रकाश पिक्चर्स बम्बई में गीतकार के रूप में नदिया के पार, सजन, सिंदूर, निर्माता, मुमताज आदि फिल्मों के गीत लेखन का कार्य किए हैं। फिल्म जगत में सर्वप्रथम 'नदिया के पार' के सभी गीतों का भोजपुरी में लेखन कार्य किए थे। कटरा के नदया कस्बा मालवाल, मोरे राजा हो ले चल नदिया के पार, सजन फिल्म के प्रसिद्ध गीत तुम हमारे हो न हो आदि गीतों को लोग आज भी गुनगुनाते हैं। भोजपुरी फिल्म गजब भइल राम, चंदा-मामोनी, ठकुराइन आदि फिल्मों में गीत लेखन के साथ अभिनय भी किया है। लेखकों के पत्रों मोतीलाल बीए का साहित्यिक की तरक्की में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। अंग्रेज सरकार ने 1943 में भारत छोड़ आंदोलन के अंतर्गत सेंट्रल जेल में उन्हें नजरबंद किया गया है।

सम्पदा परिवार
आपका
स्वागत करता है।

याद किए गए मोती बीए

बरहज। पूर्वांचल के माटी की सोंधी महक फिल्मी जगत में बिखेरने वाले मोती बीए को लोगों ने शिद्दत से याद किया। 100 वीं जयंती पर आयोजित कार्यक्रम में मोती बीए के मित्र और मुख्य अतिथि डॉ.आरपी त्रिपाठी ने कहा कि मोती बीए स्वाधीनता सेनानी होने के साथ साथ कलम के धनी थे। उनकी लिखी गईं कविताएं और गीत लोग आज भी गुनगुनाते हैं। उन्होंने सर्वप्रथम दिलीप कुमार अभिनीत भोजपुरी फिल्म नदिया के पार के सभी गीत लिखने का कार्य किया। उनकी भोजपुरी पर अच्छी पकड़ होने के कारण भोजपुरी प्रवर्तक भी कहा जाता था। इस अवसर पर कवि रमेश तिवारी अंजान ने अपनी कविता गीत-गगन, अनुवाद की खातिर बदनाम, उनकर मोती बीए नाम सुनाया। ब्यूरो

मोती बीए की जयन्ती
1 अगस्त 2017
के अवसर पर
दैनिक समाचार पत्र
अमर उजाला
द्वारा
समाचार को
अपने
कालम में
स्थान देने के लिए
सम्पदा परिवार
आपका
स्वागत
करता है।

दिनाँक-अगस्त 2005

यह समाचार अधिक बड़ा होने के कारण चार पृष्ठ में प्रस्तुत है।

01

प्रोफ़ाइल

मृगतृष्णा सरीखे मुहावरे को तोड़ने और महुआबारी में बहार की बयार बहाने वाले कवि

मोती बी.ए. की जीवनबारी से बहार के विलुप्त होने की दारुण कथा

मोती बी.ए.

देवरिया में दो कवि ऐसे हुए जिन्होंने अपनी कविता में दो मशहूर मुहावरों को बड़ी खूबसूरती से तोड़ा। देवेंद्र कुमार ने अंगूर खट्टे हैं जैसे मुहावरे को तोड़ा। और एक गीत में लिखा कि, 'तावे से जल भुन कर कहती है रोटी / अंगूर नहीं खट्टे छलांग लगी छोटी।' दूसरे कवि हैं मोती बी.ए.। मोती बी.ए. ने मृगतृष्णा जैसे मुहावरे को तोड़ा। 'रेतवा बतावे नाई दूर बाड़ै धारा तनी अउरी दउरा हिरना पा जइबा किनारा' जैसे गीत लिख कर मृगतृष्णा जैसे मुश्किल मुहावरे को तोड़ने और आइना दिखाने वाले कवि मोती बी.ए. आज की तारीख में खुद मुश्किल में हैं। नदिया के पार सरीखी फ़िल्मों का उनका ग्लैमर गुम हो गया है। स्मृति दोष और ज़िंदगी के बीच झूलते मोती बी.ए. व्यवस्था की भी मार खाते-खाते एक दारुण कथा बन गए हैं। ऐसी दारुण कथा जिसे वह खुद भी बांच नहीं सकते। असों आइल महुआबारी में बहार सजनी सरीखे गीत लिखने, कवि सम्मेलनों में उसे झूम कर गाने वाले मोती बी.ए. की जीवनबारी से बहार की बयार कहीं विलुप्त हो गई है। कैसे विलुप्त हो गई यह बहार की बयार इसकी दारुण कथा यहां बांच रहे हैं राजीव दत्त पांडेय

महुआबारी के कवि के रूप में ख्यात भोजपुरी के पितृ पुरुष मोती लाल उपाध्याय उर्फ मोती बी.ए. अपने जीवन के उत्तरार्ध में उपेक्षा के शिकार हैं। हालांकि भोजपुरी को प्रतिष्ठित और समृद्ध बनाने के लिए दर्जनों साहित्यिक-सांस्कृतिक संस्थाएं अपनी दुकान चला रही हैं। आए दिन भोजपुरी के कलाकारों-साहित्यकारों को सम्मानित किया जा रहा है, पर देवरिया जनपद के बरेजी ग्राम के नंदना वार्ड (पश्चिम) स्थित लक्ष्मी निवास में मोती बी.ए. गुमनामी का जीवन जी रहे हैं। पिछले कई वर्षों से अचलरथ बड़े मोती बी.ए. 'स्मृति लोप' के शिकार हैं। दस सदस्यों का कुनबा उनकी छोटी सी पेंशन के सहारे है। उनकी नतिनी माडवी उदास मन से कहती है, 'अच्छा है बाबा की स्मृति चली गई। हमेशा लोगों से घिरे रहने वाले बाबा ये तनहाई और उपेक्षा सह नहीं पाते।'

सुख-दुख की साथी : अपनी नतिनी माडवी के साथ मोती बी.ए.

भोजपुरी साहित्य-गीतों के क्षेत्र में प्रतिमान स्थापित करने वाले लोगों की चर्चा की जाए तो मोती बी.ए. अगली कतार में खड़े दिखते हैं। मोती बी.ए. से ही इस स्वस्थ परंपरा की शुरुआत होती है। समूचे भोजपुरी काव्य के केंद्रीय व्यक्तित्व के रूप में उनका स्थान अन्यतम है। पूर्वांचल के जिस इलाके में भोजपुरी फिल्मों या भोजपुरी गीतों के 'बूम' के बीच सुनहरे कल की इबारतें लिखी जा रही हैं, वहीं भोजपुरी सिनेमा इतिहास में गीतों के पितृ पुरुष वृद्धावस्था में उपेक्षा का दंश झेल रहे हैं।

2001 में साहित्य अकादमी के 'भाषा सम्मान' से सम्मानित 86 वर्षीय 'महुआबारी के कवि' मोती बी.ए. ने अपनी रचनाधर्मिता को स्वर हालांकि खड़ी बोली से दिया लेकिन जल्द ही भोजपुरी की अभिव्यक्ति क्षमता को उन्होंने पहचान लिया। उसके बाद तो वे भोजपुरी के ही हो कर रह गए। जब छायावादी कविताओं का कुछ पसरा था मोती बी.ए. को सब कुछ अपारदर्शी दिख रहा था, जिससे उत्पन्न बेचैनी ने उन्हें चेतन सत्ता को देखने के लिए प्रेरित किया। 'अरी सखि घूंघट के पट खोल / है मेरा उद्विग्न हृदय सुनने को तेरा बोल / कली अभी प्रस्फुटित नहीं है / मंद समीरण डोल रही है / रस परागयुत राग सुरभि बिखरा देना अनमोल /'

किशोर अवस्था की रंगीनियों के बीच घूंघट के पट खुलने लगे। उनकी कच्ची लेखनी का अनुभव संसार विस्तार लेने लगा। 'सजनि, यह आह्वान तेरा / मान में कुछ खो न बैठे, आज आकुल प्रान तेरा / वेदना में चेतना खो, अचल मूर्छित सा पड़ा जो / श्रृंग उर से फूट निकला, एक कल-कल गान तेरा। सजनि यह आह्वान तेरा।' लेकिन एक छोटे से अनुभव ने उन्हें यथार्थ के नजदीक ला दिया। सोंधी माटी की खुशबू, महुआबारी में महुआ के सुंदरता, खेतों में भरी दुपहरिया में पायल बजाती सांवर मजूरिनों ने उन्हें आकर्षित किया। उनकी पीड़ा तकलीफ को उभारने के लिए उन्होंने भोजपुरी को माध्यम बनाया और उनकी लेखनी रचने लगी। 'कबले रही अन्हरिया झोरले, कबले सपना रोई / कबले सूतल रही कमलिनी, भोर न ताले होई / सुकवा बड़ी देर से जगल, दूब सीति मुंह धोई / ज्ञानी जागल हवें मगर ई दुनिया कबले सोई!' भीड़ से अलग अपने अस्तित्व, पहचान के संकट से जूझते लोग विकास की सही आवाज से भाग रहे थे। मोती बी.ए. ने इस संकट को पहचाना। आत्मचेतना की संवेदनात्मक प्रतिक्रिया को अभिव्यक्ति से जोड़ कर देखने की कोशिश में व्यक्ति की सूख चुकी रसवत्ता ने मोती बी.ए. को झकझोरा। अपने सवालों का खुद जवाब देते हैं। 'जब ले प्रेम न उपजी हिय में भोर न तबले होई / सुकवा झूलत रही अकास दूबि न मोती पोई।' श्रद्धा के मुरझाए फूल के कारण आदमी विवेक शून्यता का शिकार हो चला है। लिहाजा आस्था के धरातल पर टूटन पैदा होगी ही भाव शून्यता को भी विस्तार मिलेगा। 'भाव के सुगना मारल

अपनी सजावटी की मनोकिल : अपनी निवास के अपने कमरे में मोती बी.ए.

जाई. बुद्धि के हाथी जूझी / प्रेम के धोखा दीहल जाई. नीति-अनीति न बूझी / जबले नाही फुलाई राम जी. सरधा के सुमनवा कि तबले नाही ना /'

मोती बी.ए. ने गांव की आत्मा को पहचाना। गांव के कोने-अतरे में छिपे सौंदर्य को उन्होंने अपनी रचना प्रक्रिया से जोड़ कर देखा। रीति-रिवाज, स्थिति, अभाव, प्रकृति के चित्र उनकी रचनाओं 'महुआरी में', खेतवा के हरवा, कटिया के सुतार, आव-आव बेला, भंदई दंयात बा, निझरि गइल अमवां सरीखी कविताओं में मिलता है। गांव के गरीब किसान के लिए महुआ ही किशमिश-अनार है। तभी तो उन्होंने लिखा। 'महुआ बैल प्रेम से खावें / गाड़ी खींचे, जोत बनावे / इ गरीबन के किशमिश अनार सजनी /' शरद ऋतु शहर में भी आती है लेकिन गांव में उसका रूप-रंग इतर ही दिखता है। गर्मी की तपिश से तपती धरती की छाती पर किसान हल चला रहा है तो कहीं सेमर के फूल की रूई धुनी जा रही है।

हिंदी-उर्दू में मुक्तक लिखे ही भोजपुरी में भी उन्होंने ढेरों मुक्तक लिखे। कछारवासियों की तकलीफ और बेचैनी उन की कविताओं में यूं दिखती है। 'चाहे रो या गाय ठठा के हंस / जवन होखे के बा तवन होखबे करी / जिंदगी चढ़ि गइल बाटे जब दांव पर / चाहे अइबे करी चाहे जइबे करी / जवने खूंटा बछरुवा बन्हा गइल बा / हमचवला से का फरियाये के बा / तूरि के फेंकि दिहलसि त का हो गइल / फेनु ओही में ओकरा बन्हाए के बा /'

मोती बी.ए. का पूरा नाम मोतीलाल उपाध्याय है, लेकिन उन्हें मोती बी.ए. नाम से ही जाना-पहचाना जाता है। एक अगस्त, 1919 में देवरिया जिले के बरेजी गांव में पिता पंडित राधाकृष्ण उपाध्याय और माता श्रीमती कौसिल्या देवी के गर्भ से पैदा हुए। उन्होंने एम.ए., बी.एड. व साहित्यरत्न की उपाधि हासिल की। प्रेम के क्षेत्र में मोती जी के परिष्कृत सौंदर्य का बोध मिलता है साथ ही विरह का मार्मिक वर्णन। मसलन 'आइने में जो प्रतिबिंब साकार है / कैसे कह दूं कि - बाहर निराकार है / शिव है मन में बसे, कहीं बाहर नहीं / गर है बाहर - तो मन है उन्हीं में रमा /' उनके मुक्तक में निरपेक्ष सत्य भी दिखता है जिसमें आम आदमी के संघर्ष भी झलकते हैं। 'तूरि के फेंकि दऽ चाहे मीसऽ मत / तोहरे खातिर करेजा ढंहकते रही / चाहे आन्ही बही चाहे बिजुली गिरो / फूल हऽ तऽ बगइचा महकते रही।' भाषा पर मोती जी का पूरा अधिकार था। भोजपुरी, उर्दू, खड़ी बोली, हिंदी एवं अंगरेजी में गद्य-पद्य लिखने में वे समान रूप से समर्थ थे। मृगतृष्णा, कवि और कविता, समिधा, कवि-भावना, मानव, अश्वमेध यज्ञ, हरसिंगार के फूल, प्रतिबिंबिनी, कुछ गीत कुछ कविता, गति के चरण, लाहौर की नहर, तिनका-तिनका शबनम शबनम, रश्के गुहर, दर्दे गुहर, राशन की दुकान, इतिहास का दर्द (निबंध संग्रह), सेमर के फूल, मोती के मुक्तक, बोलेले कोइलिया, भोजपुरी सानेट, तुलसी रसायन, जान ड्रिंक वाटर रचित नाटक 'अब्राहम लिंकन', महाकवि कालिदास रचित मेघदूत का भोजपुरी अनुवाद (छंद में), महाकवि शेक्सपियर के सानेट का पद्यानुवाद, जयदेव सिंह संपादित हाईस्कूल पोयेट्री का पद्यानुवाद, रबीबेन एजरा (राबर्ट ब्राउनिंग) का गीतमय रूपांतर, एस.टी. कालरिज के काव्य 'दी राइम ऑफ द एन्सेंट मैरिनर' का पद्यानुवाद सहित तमाम पुस्तकें प्रकाशित और अप्रकाशित पड़ी हुई हैं। उत्तर प्रदेश शासन के साहित्यिक पुरस्कार समिति ने उनकी पुस्तक 'समिधा' 1973-74 में पुरस्कृत किया। 1978 में आदर्श अध्यापक के रूप में शिक्षा विभाग ने पुरस्कृत किया। 1989 में उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान ने 'राहुल सांकृत्यायन' पुरस्कार से नवाजा। हरिवंश राय बच्चन ने एक पत्र में लिखा, 'इसने (लेखन) और कुछ किया हो या न किया हो आप को सरल बना दिया है। सरलता बड़ी साधना की देन है। आप को संतुष्ट होना चाहिए।' यही नहीं मोती बी.ए. ने स्वतंत्रता आंदोलन में भी शिरकत की और ब्रिटिश शासन का विरोध करने के कारण 1943 में 'भारत रक्षा कानून' के तहत वाराणसी के सेंट्रल जेल में बंद भी रहे।

प्रेम के क्षेत्र में मोती जी के परिष्कृत सौंदर्य का बोध मिलता है साथ ही विरह का मार्मिक वर्णन।

बावजूद इसके मोती बी.ए. को जो सम्मान मिलना चाहिए था वो नहीं मिला। हालांकि जीवन भर वे इससे इंकार करते

भोजपुरी फिल्म के अभिनेता थी। राजन भइले राजा फिल्म के एक दृश्य में मोती बी.ए. के अभिनेता लाल बाबा

रहे। उनका मानना है कि, 'यश-कामना आ यश-लोलुपता एके बीजु हऽ। लोलुपता कामना के भ्रष्ट कऽ देले।' भोजपुरी को सिनेमा के सेल्यूलाइड पर चमकाने का काम पहले मोती बी.ए. ने किया। 1944 से 52 तक उन्होंने पंचोली आर्ट पिक्चर्स लाहौर, प्रकाश पिक्चर्स बंबई और फिल्मिस्तान लिमिटेड बंबई में गीतकार के पद पर कार्यरत रहे। हिंदी फिल्मों में गीतकार के रूप में आजीविका ढूंढने मुंबई पहुंचे इस कवि ने भोजपुरी के लिए संघर्ष किया। बाद के दौर का भोजपुरी सिनेमा उन्हीं की देन था। 1948-49 में एक फिल्म में उन्होंने लिखा कि, 'काटे ना काटे मोरा दिनवा, गवनवा कब होई/'। फिल्म तो नहीं चली, लेकिन गाना खूब चला। उसी समय फिल्मिस्तान लिमिटेड गोरेगांव में दिलीप कुमार-कामिनी कौशल अभिनीत फिल्म 'नदिया के पार' बनी। जिसके सभी गीत लिखे मोती बी.ए. ने। एक गीत का बोल था, 'कठवा के नइया, बनइले रे मलहवा/ नदिया के पार दे उतार/' फिल्म लोकप्रिय हुई और गीतों की सर्वत्र सराहना। उसके बाद तो उन्होंने तकरीबन पचीस फिल्मों के लिए गीत लिखे। मसलन 'कैसे कहूं, सुभद्रा, भक्त ध्रुव, रामबाण, सुरेखा हरण, इंद्रासन, ममता, काकिला, राम विवाह, किसी की याद, रिमझिम, साजन, सिंदूर, नदिया के पार, गजब भइले रामा, ठकुराईन, चम्पा बगोली।

1952 से 1980 तक श्रीकृष्ण इंटरमीडिएट कॉलेज बरहज में मोती जी ने अध्यापन कार्य किया और वहीं से सेवानिवृत्त भी हो गए। मोती बी.ए. के तीन बेटे हैं। जिसमें जवाहर लाल उपाध्याय सरकारी सेवा में थे, जो सेवानिवृत्त होने के पश्चात गोरखपुर में निवास करते हैं। जब कि मझले पुत्र भाल चंद्र उपाध्याय पिता के नक्शे कदम पर चले और आज भी साहित्य सृजन में संलग्न हैं। सबसे छोटे अंजनी कुमार उपाध्याय रोजगार का जरिया तलाश रहे हैं। पिछले सात साल से 88 वर्षीय मोती बी.ए. बिस्तर पर ही पड़े रहते हैं। कुछ वर्ष पहले 'स्मृति लोप' के शिकार हो जाने के पश्चात तो वृद्धावस्था उनके लिए अभिशाप हो चला है। लेकिन परिजन श्रम और श्रद्धा के साथ उनकी तकलीफ कम करने में जुटे रहते हैं। प्राचीन इतिहास से स्नातकोत्तर कर चुकी उनकी नतिनी मांडवी ही अब बाबा की आंख-कान और हाथ-पैर है। जब-तब मोती बी.ए. उसे पूनीऽ कह कर पुकार उठते हैं। अपनों की उपेक्षा का दंश मोती बी.ए. 'स्मृति लोप' के कारण भले न महसूस कर सके लेकिन उनके परिजनों को बहुत अखरता है। मांडवी कहती है, 'अच्छा है बाबा की स्मृति चली गई। नहीं तो उन्हें अकेलापन और लोगों की उपेक्षा बहुत अखरती।' उनके मझले बेटे भालचंद्र उपाध्याय को साहित्य समाज की उदासीनता ही ज्यादा सालती है। 'पिता जी ने भोजपुरी के साथ खड़ी हिंदी व संस्कृत के क्षेत्र में भी गंभीर साहित्य सृजन किया लेकिन उन पर गंभीरता से विचार ही नहीं किया गया। अंगरेजी की रचनाओं का भोजपुरी में अनुवाद भी बड़ा काम था लेकिन इस पर चर्चा ही नहीं होती।' पूर्वांचल की साहित्यिक सांस्कृतिक संस्थाओं से भी उन्हें उम्मीद थी कि वे मोती बी.ए. की अप्रकाशित रचनाओं के प्रकाशन के लिए सामने आएंगी, पर ऐसा नहीं हुआ। थोड़ा कुरेदने पर भालचंद्र बिफर पड़ते हैं 'मंत्री, अधिकारी, मेला पर्वों पहले खूब आते थे। ढेरों आश्वासन दिए लेकिन आश्वासनों पर अमल नहीं हुआ। उधर भोजपुरी के आज भी चर्चित तमाम गायक उनके गीतों को तोड़-मरोड़ कर गा रहे हैं लेकिन मंच पर उन्हें भूल कर भी याद नहीं करते।'

फिलहाल मोती बी.ए. का पूरा परिवार उनकी पेंशन पर निर्भर है। लंबा परिवार और उसकी जिम्मेदारियां देख भय लगता है। कल मोती बी.ए. आंख बंद कर लेंगे तो उनके आश्रित कहां जाएंगे? मोती बी.ए. के पास बैठी मांडवी 'मृगतृष्णा' की पंक्तियां गुनगुना उठती है, 'रेतवा बतावे नाई दूर बाड़े धारा/ तनि अउरी दउरा हिरना पा जइबा किनारा/ खर पतवार लेके मड़ई छवावे/ मारल-मारल फिरे ए गो जिउवा बेचारा/ तनि अउरी दउरा हिरना पा जइबा किनारा/' ◆

(सहारा समय से साभार)

अपनों की उपेक्षा का दंश मोती बी.ए. 'स्मृति लोप' के कारण भले न महसूस कर सके लेकिन उनके परिजनों को बहुत अखरता है। मांडवी कहती है 'अच्छा है बाबा की स्मृति चली गई।

दिनाँक-जुलाई 2007 (द्वितीय)

कलम आज इनकी जय बोल...

मोती बी0ए0 जी की मुख्य कविताएँ

हिन्दी की नवीन काव्य चेतना, रस-क्षमता, रमणीयता एवं रागात्मिकता से अपना सम्बन्ध विच्छेद कर अति बौद्धिकता की ओर अग्रसर मोती बी0ए0 भारतीय जीवन दर्शन से अनुप्रभावित न होकर पश्चिमी जीवन दर्शन से अक्रान्त है। ऐसे में भोजपुरी के मूर्धन्य कवि के काव्य संकलन की ओर आकर्षित होना प्रत्येक साहित्यी की विवशता है।

पूर्वांचल के देवरिया जनपद में बरहज सरजू नदी के किनारे बसे क्षेत्र में अंग्रेजी राज में जन्में मोती बी0ए0 भोजपुरी की आत्मा कहे जाते हैं। पेशे से शिक्षक मोती जी को ठकुरसोहाती और चाटुकारिता रास नहीं आयी, अध्ययन-अध्यापन उनके जीवन की धरोहर बनी रही।

बरहज बाजार में स्व. प्रधानमंत्री इन्दिरा जी के आगमन के अवसर पर राजनीतिक पैंतीबंदी के संदर्भ में एक मुक्तक द्वारा मंच पर अपने भावों को प्रगट करते हुए उन्होंने कहा।

रउरे बाबू हई रउरे राजा हई।
रउरे गोड़े क हमनी का जूता हई।।
रउरे दारीलें कौरा त खाइले हम।
हमत रउरे दुआरी के कुत्ता हुई।

इस मुक्तक की पहली लाइन भारतीय राजनीति की दुर्व्यवस्था पर करारा प्रहार है। मोती जी पर बाबा राघवदास जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का प्रबल प्रभाव पड़ा है। श्री बी0ए0 ने बाबा के ऊपर भी पंक्तियाँ लिखी है।

तपसी त्यागी राघवदास।
जन अनुरागी राघवदास।।
बानी मानी राघव दास।
पता नहीं क्या खाता था।।
न जाने कब सोता था।
खाली हाथ सदा देखा।।
जाने कैसे जीता था।

मोती जी अगाध प्रकृति प्रेम भी है सलेमपुर के पास ग्राम महुआवारी के महुआनी की यात्रा के समय उन्होंने एक कविता ही लिख डाली।

असो आईल महुआवारी में बहार सजनी
कोचरा मातल भूइयां हुए
महुआ रसे-रसे चुए
जबसे बहे मिनुसारे के बयार सजनी
असो आईल महुआवारी में बहार सजनी

वह मानव प्रेमी भी थे उनका मानव प्रेम उनकी इन पंक्तियों में साफ छलकता है।

'दाल रोटी आ माठा जो मिलल करी
जबले गमछा में भुजा आ भेली रही
तेल सरसों के बुकवा जो लागल करी
अपने किस्मत पर झंखत चमेली रही'।

मोती जी आशिक मिजाजी के कवि भी है। उनकी इस कविता में नायक-नायिका के यथार्थ प्रेम में विश्वास प्रकट किया गया है।

'जो रोमांच होखे न टीसे जिया।
आंखी झूठे लड़वला से का फायदा
प्रान में बांसुरी जो न फूकल करे
ओके अपना बनवला से का फायदा।'

उन्होंने अपनी कविताओं के माध्यम से सामाजिक बुराईयों की भी आलोचना की है।

''हमके दीया जराने के कहत हई
रउरा कही त बिजुलिए बारी लेई
जबन कूकरम अंजोरिया में हो रहल बा
बस चले त एहले न तारी देई।

लोगों की आम विचारधारा यह है कि भोजपुरी जानने बोलने वाला गंवार एवं बुद्धू होता है। लेकिन मोती जी ने अपनी पंक्तियों में इसका घोर विरोध करते हुए भोजपुरियों को खड़ी बोली बोलने वालों एवं अंग्रेजी बोलने वालों से बीस साबित किया।

''भोजपुरिया के हे भईया का कहेलऽऽ
खुलके आवा अखाड़ा लड़ा दीहें सनि
तोहरी घरका पढ़वला में का धईल बा
तोहके सगरे पहाड़ा पढ़ा दिहें सनि

मोती जी में गहन मानव जीवन दर्शन व्याप्त है।

''नाचत बाते गाम रे हिरन बा पियासा
जेठ के दुपहरी में रेत क बा आसा
रेतिया बतावे नहीं दूर बाते धारा
तनी अउरी दउर हिरना पा जइबा किनारा''

मोती जी कर्म के सच्चे पक्षधर हैं। उनको कर्म पर पूर्ण विश्वास था।

''दुनिया में केहुके ना मेहनत बेकार बा
जेही धाई उहे पाई ऐही के बाजार बा
छोड़ सबक कहल सुनल आपन त सहारा
तीन अउरी दउर हिरना पा जइबा किनारा''

उपरोक्त पंक्तियों से स्पष्ट है कि श्री मोती बी0ए0 जी ने भोजपुरी बोली में मानव जीवन से संबंधित सभी पहलुओं पर प्रकाश डाला है।

यथा भारतीय राजनीति की दुर्दशा, प्रकृति प्रेम, रस काव्य, जल, जंगल, जीव, जमीन से लगाव तथा मानव जीवन दर्शन पर प्रभाव डाला है। इनकी भोजपुरी कृति ''सेमर के फूल'' की पंक्तियां हृदय स्पर्शी हैं। इसे पढ़कर सहज ही हम उनके भोजपुरी लगाव को जान पाते हैं।

उनको लिखे अपने एक निजी पत्र में हजारी प्रसाद द्विवेदी जी ने उनकी भोजपुरी पर गहन पकड़ होने की प्रशंसा की है। दूसरी ओर उनको यथा उचित सम्मान न दिये जाने पर दुख प्रकट किया है। अन्त में उनकी एक भोजपुरी पंक्ति को उद्धृत कर रहा हूँ।

''केहू देखल करो केहू सुनल करो
केहू कचनो ला हमरा के जांचल करो
हमके भरे के होखे रंगल हाथ त
हमरी कविता की पानि न झांकल करो''

भोजपुरी में लिखी उनकी ये पंक्तियाँ मानव-जीवन दर्शन का समग्र वर्णन करती है। मोती जी श्री कृष्ण इण्टर कालेज से सेवा निवृत्ति के उपरान्त अपने उम्र के चौथे पन में सरयू के पावन तट पर बसे बरहज में अपनी पावन कुटिया में साधनारत है। मैं उनके चरणों में वन्दन, नमन और अभिनन्दन करता है।

दिनाँक 14 जनवरी 2003 का समाचार

जिलाधिकारी की आत्मीयता देख आंखें छलछला गयी मोती बी.ए.की

निज प्रतिनिधि/बरहंज (देवरिया)

भोजपुरी के पुरोधा एवं 20वीं शताब्दी के भोजपुरी साहित्य के वरिष्ठतम कवि एवं साहित्यकार मोती बी.ए. की गत दिनों अपने निवास स्थानीय नगर नन्दना वार्ड स्थित लक्ष्मी आवास पर जनपद के जिलाधिकारी डा. दीपक कृष्ण वर्मा के आगमन एवं उनकी अपने प्रति आत्मीयता, स्नेह देखकर आंखें छलछला गयीं और उनके प्रेमाश्रु बह चले।

गौरतलब है कि डा. दीपक कृष्ण वर्मा स्वयं साहित्य प्रेमी हैं। श्री वर्मा जनपद में आने के बाद मोती बी.ए. से मिलना चाहते थे। किन्तु प्रशासनिक व्यस्तता के कारण उनसे नहीं मिल पा रहे थे। गत तहसील दिवस पर जिलाधिकारी बरहज आये तो उन्होंने उसी दिन मोती बी.ए. से मिलने की इच्छा जाहिर की। तहसील दिवस की समाप्ति और सरकारी काम काज निबटाने के बाद जिलाधिकारी मोती बी.ए. की आवास लक्ष्मी निवास पर गये। उनके साथ जनपद के पुलिस अधीक्षक डा. संजय एम. तरडे सहित अन्य अधिकारी भी थे।

जब पूरा सरकारी अमला मोती बी.ए. के घर पहुंचा तो उनके मालचन्द उपाध्याय ने अतिथियों को स्वागत किया और मती बी.ए. से सबका परिचय कराये। 82 वर्ष के मोती जी ऊंची आवाज में ही सुन पाते हैं किन्तु उन्होंने सबके आने की खबर पायी तो अपने को रोक नहीं पाये और कहे कि यदि पैरों में जान होती तो मैं आप लोगों से पहले ही मिल चुका होता, आपके दर्शन किये होते। अधिकारियों के आत्मीयता और संवेदना को देखकर मोती जी के प्रेमाश्रु झरने लगे। जिलाधिकारी डा. वर्मा भाव विह्वल हो गये।

दिनाँक 13 जुलाई 2006 का समाचार

समाचार पत्र 'आज'

भोजपुरी के उत्थान की ललक अब भी विद्यमान है मोती बी.ए. में

भोजपुरी गीतों के सागर के अमूल्य मोती हैं मोती बी.ए.

डा. अजय कुमार मिश्र

भोजपुरी की विशिष्ट शैली तथा समृद्ध विरासत का उपयोग कर अनेक मूर्धन्य साहित्यकारों, कवियों तथा रचनाकारों ने राष्ट्रीय तथा अंतराष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्धि पायी है। ऐसे ही रचनाकार व्यक्तित्व के धनी, पूर्वांचल की सोंधी मिट्टी के सपूत, भोजपुरी के शेक्सपीयर के रूप में ख्याति प्राप्त मोती बीए भोजपुरी गीतों के सागर के अमूल्य मोती है। वर्ष २००२ में भोजपुरी के प्रथम साहित्य अकादमी पुरस्कार से सम्मानित मोती जी किसी पहचान के मोहताज नहीं है बल्कि वे भोजपुरी आकाश के दैदीप्यमान नक्षत्र है। ८८ वर्ष की आयु में जब काया शक्ति जवाब दे चुकी है आँखे बहुत कुछ देख पाने में समर्थ नहीं है, पाँव शरीर का भार ढो पाने में अपने को असमर्थ पा रहे है इसके बावजूद रचनाधर्मिता के प्रति मोती जी की ललक कम नहीं हुई है और जैसे ही किसी परिचित को देखते है पूरे मनोयोग से जब गुनगुनाते है तो पुराने दिनों की याद बरबस ही जीवन हो उठती है।भोजपुरी के पुरोधा मोती जी काव्य जगत में अंतिम है जो गीत काव्य के महारथी हैं। ६० से ९० तक कवि सम्मेलनों के दुलार रहे मोती जी भोजपुरी की उपेक्षा तथा भोजपुरी में आयी अश्लीलता से काफी दुखी है। मोती जी जब यह कहते है कि भोजपुरी भाषा एवं संस्कृति एक विशिष्ट जीवन शैली है जिसने जिस मात्रा में इसे आत्मसात किया वह आनन्द मार्ग में उतनी ही गहराई तक डूबता चला गया तो उनके चेहरे का भाव देखते ही बनता है। मोती जी की रचनाओं में रहस्य अध्यात्म रोमांस, विरह, प्रकृतिवर्णन तथा राष्ट्रीयता से लेकर वर्तमान सामाजिक एवं राजनीतिक जीवन की विसंगतियों का सजीव वर्णन है। इसके बावजूद विरोध, घृणा तथा प्रकृति के वे महारथी रचनाकार हैं। प्रकृति की मनोरम उनकी रचनाओं में सर्वत्र दिखायी देती है। मोती जी की अस्वस्थता के चलते भोजपुरी जगत चिंतित है क्योंकि भोजपुरी युग के निर्माता मोती बीए से ढेर सारी अपेक्षाएं है। हम भोजपुरी भाषाभाषियों की हार्दिक इच्छा है कि भोजपुरी गीतों के सागर के अमूल्य मोती शतायु हो ताकि हम अनेक वर्षों तक सनाथ बने रहें।

एक अगस्त १९११ को देवरिया जनपद के कोरंटी गांव में जन्म लेने वाले विद्यानु तथा साहित्य मुर्धा बालक हो आज अपनी सशक्त लेखनी तथा विलक्षण प्रतिभा के बलबूते मोती बीए के नाम से ख्याति लब्ध है। इनके अंदर कवियों के प्रति सहज और स्वाभाविक आकर्षण बाल्यावस्था से ही रहा। जो भी कविता मिल जाती कण्ठस्थ कर लेते तथा हर समय उसे अपनी सुरीली आवाज में गाना करते और यह मानसिकता आज भी सजीव है। उन्हें के शब्दों में 'मन-प्राण की जुड़ाई कोहाई गाने से हो रही थी किसने मुझे कवि बना दिया।' १६ वर्ष की उम्र में प्रथम रचना थी-

अरि सखि घूंघट के पटखोल।
कली अभी प्रस्फुटित नहीं है,
मन भ्रमर घूम रहा है,
इस क्षण दृग खोल-मुखि।
बिखरा दो न अनमोल
अरि सखि घूंघट के पटखोल।

यह हिन्दी दैनिक 'आज' में प्रकाशित हुई थी। इसके बाद तो ऐसी अजस्र धारा बही जो निर्बाध गति से आज तक प्रवाहित हो रही है। सोनी १९११ में ८१ वर्ष 'आज' सोनी [illegible] ने [illegible] तक [illegible] ने सोनी जी का अभिनंदन [illegible] किया। सोनी जी [illegible] हिन्दी और भोजपुरी [illegible] गुणों है। [illegible] है। सोनी के गीत [illegible] के आधार हैं। [illegible] भोजपुरी के [illegible] सोनी जी ने अपने जीवन का ध्येय बनाकर इसके उत्थान का उस समय संकल्प लिया जब भोजपुरी का नाम भोजपुरी क्षेत्र में ही कम लोग जानते और जानते थे। आज भोजपुरी काव्य [illegible] वन्दना बाद भोजपुरी के लाखों [illegible] विषय में जीवन और पीड़ा से संघर्ष का [illegible] है। निकल आँखों से निहारते हुए अचानक अवसाद में घिरकर वह पड़े मोती जी का जन्म उस का अंश स्पष्ट दिख रहा है। हाथ काँप रहे हैं, कानों में सुनने का बल लगभग है, पैर शरीर का भार ढोने में असमर्थ दिख रहे हैं, आँखों से चश्मा लेकर की वस्तु पढ़ना बनकर रह गया है। स्मरण शक्ति काफी हद तक क्षीण हो चुकी है। इसके बावजूद जिस तरह गुजरे की ललक पूर्ववत है। काफी कुरेदने के बावजूद अब वह पूछ रहा कि क्या लिखकर बंद कर दिये है? उन्हें [illegible] कुछ करने में भयभीत [illegible] उन्होंने अपनी पुरानी रचना को दोहराते हुए मनोज सिंह को दिया-

'कलम न होती दिन्दा तो कभी का मर गया होता
पहुँचने के लिए घर पर खुद के घर गया होता'।

जिस तरह अपनी कविताओं में उन्होंने जीवन का यथार्थ चित्रण कर समस्याओं से संघर्ष का जज्बा लोगों में पैदा किया उसी प्रकार व्यावहारिक जीवन में भी पूरी शिद्दत के साथ वे मौत से संघर्षरत है। अपनी आस्था के चलते भोजपुरी के यशस्वी कवि को आज कल नित्यकर्म में भी काफी कठिनाई हो रही है। जब जोर देकर पूछा गया कि आप तो अपने को काफी असहाय पाते होंगे क्योंकि पहले जैसी स्फूर्ति नहीं फिर बिस्तर पर पड़े पड़े तथा कमरे की सीमा में कैद रहने पर उधर नहीं होती तो उन्होंने अपनी सेवा में दिन रात लगी पौत्री को इशारों के माध्यम से अपनी एक रचना बताने का संकेत किया।

'मैं जो रहा हूं अपनी रचनायें, मर रहा हूं अपनी रचना में।
जीवेंगा तो रचना जीएगी, मर जाऊंगा तो रचना मर जायेगी।

अर्थात अभी भी साहित्य सृजन की उत्कृष्ट इच्छा इनमें भरी पड़ी है काफी कमजोर हो चुके मोती जी को इस बात का मलाल है कि उनके घर पर जितने राजनेता प्रशासनिक अधिकारीगण तो बहुत आये किन्तु उनकी अमर कृतियों के संरक्षण को दिशा में कुछ ठोस किसी ने नहीं किया। के बावजूद उनकी उपस्थिति साहित्य के [illegible] आज भी प्रीत [illegible] भी गहरी मोती [illegible] की आँखें [illegible] कुछ [illegible] करने में समर्थ [illegible]। चेहरे पर [illegible] भाव को देखने में ऐसा लगता है मानो [illegible] भी बहुत [illegible] कुछ करना चाहते हैं लेकिन [illegible] जीवन [illegible] भोजपुरी [illegible] साहित्य [illegible] में [illegible] मुस्कान में [illegible] मोती [illegible] भोजपुरी [illegible] में अपने [illegible] से काफी दुखी है तथा उनका विचार है कि ऐसा करके [illegible] प्रसिद्धि तो प्राप्त हो सकती है लेकिन वह भोजपुरी भाषा तथा हमारे आत्मीय लगाव रखने वालों का भला करने वाली रचना नहीं होगी।

बहुआयामी व्यक्तित्व तथा रचना संदर्भ प्रतिष्ठान से बाहर क्यों रहा? यह बात बहुत से साहित्य मुर्धा पाठक आज तक नहीं समझ पाये। उनकी दो दर्जन से अधिक पुस्तकें हैं जो अमूल्य धरोहर है किन्तु उन्हें संग्रहित करने का कोई सार्थक प्रयास हुआ नहीं हो रहा है। -अजय कुमार गुप्त

'महान मोती जी'

गीत कविता के छन्द मोरा मन मकरन्द
सोंधी माटी के सुगन्ध पहिचान मोतीजी
जनमें सरजू किनार पावन नदिया के धार
पवनें जन-जन के प्यार गुणवान मोती जी
महुवा बारी के बहार गोरी सुखवे पथार
महुवा किस मिस अनार कइलें मान मोती जी
माथे चढ़ा दिहलें धूल माथे सेमराके फूल
अपने आश्रम इस्कूल के सम्मान मोतीजी
बनल नदिया के पार धनि लूटेलें बहार
लेके हाथे पतवार कइलें पार मोतीजी
देके हिरना के अनेरा भोजपुरी के नोरा
धूमि के अपने देश-देश बंटले ज्ञान मोती जी बहल
महरज के नाम करें रामेश्वर परनाम
बड़ा नीक रावर नाम हे महान मोती जी।

रामेश्वर प्रसाद यादव प्रधानाचार्य

दिनाँक 1 जुलाई 2008 का समाचार

समाचार पत्र 'राष्ट्रीय सहारा'

मोती बीए का सम्मान

बरहज (देवरिया), 30 जून (एसएनबी)। भोजपुरी के पुरोधा मोती बीए के बरहज स्थित लक्ष्मी आवास पर पहुंचकर राष्ट्रीय सहारा के इकाई प्रबंधक पीयूष बंका ने अंगवस्त्रम प्रदान कर जब उन्हें सम्मानित किया तो अतीत की स्मृतियों में उनकी आंखें भर आयीं और बहुत देर तक मोती जी के पास बैठकर वह अतीत की यादों में खोए रहे। वहीं बैठे मोती जी के द्वितीय पुत्र भालचन्द उपाध्याय से मोती जी के कुशलक्षेम की जानकारी ली।

राष्ट्रीय सहारा के बरहज स्थित तहसील कार्यालय के उद्घाटन अवसर पर बरहज आए श्री बंका अपनी भावनाओं के बेग को रोक नहीं पाए और भोजपुरी के यशस्वी कवि के आवास पर पहुंचकर उन्हें सम्मानित कर उनका स्नेह प्राप्त करने का प्रशंसनीय कार्य कर मोती जी के प्रति अगाध श्रद्धा का प्रदर्शन किया।

यद्यपि 90 वर्षीय मोती जी के पैर शरीर का भार ढोने में असमर्थ हैं, कानों की श्रवण शक्ति एक तरह से जवाब दे चुकी है, आंखों की रोशनी मद्धिम पड़ती जा रही है, इसके बावजूद जैसे ही श्री बंका उनके करीब बैठे, अचलस्थ अवस्था के बावजूद भी मोती जी उठकर बैठ गए और इस उम्र में शारीरिक समस्याओं की व्यथा सुनाने लगे।

यह भावुक दृश्य देखकर वहां उपस्थित राष्ट्रीय सहारा गोरखपुर के ब्यूरो प्रमुख दीप्त भानु डे, सिस्टम इंजीनियर संजय पाठक, सौरभ सिंह, प्रेम चन्द श्रीवास्तव, रमाशंकर राव, अनुज गुप्ता, डा. अजय कुमार मिश्र, सदानंद पाण्डेय, रविन्द्र सिंह आदि भाव विह्वल हो गए।

फोटो : एसएनबी

■ बरहज (देवरिया) : भोजपुरी के पुरोधा मोती बीए को उनके आवास पर अंगवस्त्रम ओढ़ा कर सम्मानित करते राष्ट्रीय सहारा के इकाई प्रबंधक पीयूष बंका।

दिनाँक 23 जुलाई 2006 का समाचार

समाचार पत्र 'आज' में डॉ. महेन्द्रनाथ पाण्डेय का विचार

हमरी कविता के पांतिन में झांकल करो

क्षिर मोती जी का एक मुखड़ा है:

केहू देखल करो, हमरा के झांकल करो।
हमके धरे के होखे रंगल हाथ तऽ
हमरी कविता के पांतिन में झांकल करो॥

'लोग मुझे मेरी रचनाओं के माध्यम से जानें-समझें'' यह हर रचनाकार की आन्तरिक चाह होती है। मोती बी.ए. मूलतः छायावादोत्तर गीत-धारा के सशक्त हस्ताक्षर हैं किन्तु गोपाल सिंह 'नेपाली' रामधारी सिंह दिनकर, की भांति वे गीतकारों-कवियों की मुख्य धारा में गिने नहीं गये। इसका मुख्य कारण, उन कविताओं का समय से प्रकाशित नहीं होना है। 'कब धार से लदी तू चलो'- मोती जी की वह कविता है, जो उन्हें फिल्मिस्तान ले गयी थी। फिल्मों में मोती जी ने हिन्दी के अच्छे गीत लिखे हैं। ''**हमको तुहारा ही आसरा, तुम हमारे हो न हो।**''- जैसा गीत भी मोती जी का ही लिखा हुआ है लेकिन मोती जी का नाम ''**अंखिया मिला के अंखिया गोरे दिन रतिया, न भूले बतिया, भूलेना सुरतिया तोहार**''- ''**मोरे राजा हो ले चलऽ नदिया के पार**'' जैसे गीतों से प्रसिद्ध हुआ। वे

डा. महेन्द्रनाथ पाण्डेय

भोजपुरी में हैं। संभव है कुछ और भी महत्वपूर्ण अनुवाद हों, जिनकी मुझे जानकारी न हो। 'हर सिंगार के फूल' 'इतना सुन्दर गा लेते हो'' ''एक सागर का दुनिया में आना' जैसी उनकी लंबी कविताएं हैं, जिनके पाठ में निर्झर-नाद सा, आनन्द मिलता है। 'समिधा' संग्रह में, उनके प्रार्थना परक अत्यन्त सादगी से भरे हुए गीत हैं। लहरों की छप-छप पर होले होले डोलती ''डोंगी'' जिस पर तरह से हमें उस पार उतारती है, वैसे ही ''समिधा'' के गीत

'वंदना' बहुत ही लोकप्रिय थी। हिन्दी-उर्दू-भोजपुरी और अंग्रेजी में प्रभूत साहित्य रचने वाले मोती की पहचान भोजपुरी की कविताओं के कारण है। मोती का एक और भी सबल-सशक्त स्वरूप है, जिस पर कम लोगों का ध्यान जाता है। मोती ने अंग्रेजी और संस्कृत की महत्वपूर्ण रचनाओं का अत्यन्त सफल अनुवाद किया है। 'शेक्सपीयर के सानेट्स का अनुवाद', 'रबी बेन एजरा' का अनुवाद, 'मेघदूत', का भोजपुरी में अनुवाद, 'क्लेसेड डैमेजल' का अनुवाद, तुलसी दास के साथ जुड़ी हुई किंवदन्तियों का काव्यानुवाद ''तुलसी रसायन'' नाम से,

मोती जी की ये पूर्व लंबे काल खण्ड को अपने में समेटे हुए हैं। रचनाएं यदि सुसंपादित होकर, खण्ड-बद्ध, (बाजार का सामना करते हुए) उपस्थित हों तो शेक्सपीयर के सानेट का उनके द्वारा किया गया अनुवाद, उन पर ठीक से लागू होगा।

फ्राम फेयरेस्ट क्रीचर वी डिजायर द इन्क्रीज।
(शेक्सपीयर)

हमारी कामना सौंदर्य का संसार विकसित हो,
कहीं सौन्दर्य का यह पुष्प मुरझाने नहीं पाये।
अगर परिपक्व होकर किन्तु यदि वह काल
कवलित हो,
सुकोमल पीढ़ियों के ध्यान में बन रंग सा जाये।
(मोती)

इधर कुछ वर्षों से भोजपुरी का परचम अत्यन्त ऊंचाई पर है। एक-से-एक गोपाल, भोजपुरी रूपी गाय के थन के पास, अपनी-अपनी बाल्टियां लेकर दोहन- कार्य में दक्षता पूर्वक सन्नद्ध हैं।

बहुत जल्दी, भोजपुरी को भी, उन जुमलों में बांध दिया गया है, जिन जुमलों में बंध कर, हिन्दी साहित्य में, अगणित द्वीप खण्ड निर्मित हुए हैं। भोजपुरी की समकालीन को चिन्ता में आतुर हैं, हमारे प्रख्यात साहित्यकार परम आचरणहीन महंथ-पुजारी-पंडित-मुल्ला, आचार्य के आचरण पर व्याख्यान दे रहे हैं।

भोजपुरी का कल्याण करने वाली बैठकें, पांच सितारा होटलों में होती हैं। 'करंट मारेले-फरंट मारेले' से लेकर 'मुगड़वा के खाई' जैसी ऊंची? पंक्तियों से भोजपुरी फिल्मे,कैसेट्स भरे पड़े हैं। माफियाओं जैसा आतंक है, कैसेट्स का। आप बहन-बेटी के साथ यात्रा कर रहे हैं तो लज्जित-नमित-शिर से यात्रा कीजिए।

न तो पूर्वांचल में शूटिंग करने वाले फिल्मी कलाकारों को कभी सूझा कि चलो उस मोती बी.ए. को देख आओ जिन्होंने फिल्मों में तब भोजपुरी में लिखा था, जब लोग उर्दू के दबदबे में, हिन्दी में लिखने में हिचकते थे। भोजपुरी कल्याणक बैठकों में पानी की भांति पैसा बहाने से अच्छा है कि मोती बी.ए., रघुवंश, विचित्र, धरीक्षण मिश्र जैसे दर्जनाधिक गम्भीर रचनाकारों की रचनावलियां छाप कर भोजपुरी साहित्य की संपदा को सम्मान किया जाय। अजीब विडम्बना है कि भोजपुरी का कोई भी संजीदा रचनाकार, मीडिया पत्रिका आदि का मालिक नहीं है। मालिक है वे जो 'शरीके सफर न थे।' ऐसे लोगों के हाथ में पत्रिकाएं ए.के. सैंतालिस जैसे हथियार को शक्ल अख्तियार कर चुकी है। ऐसे 'प्रख्यात साहित्यकारों (जो प्रसाद जी के शब्दों में 'उत्सव के परिचारक' से जैसे हैं' से मोती जी का यह निवेदन शायद ही संभले। निवेदन है: ''**नेह भरल रहे, पोर बतिहर रहे/खूबे दीया कऽ छाती फुलाइल रहे/ पीर से हीर जबले-ना जरे लागे/तबले पियवा अन्हारे लुकाइल रहे।**''

मोती की कुछ संकलित पंक्तियां

हर सिंगार के फूल/टू-टू पड़ते झर-झर जाते हैं
तन-मन एक तन-मन सुगन्धि की मदिर लहर
ठे, भर-भर जाते
मेरे प्राण मूल बिज सुख-दुःख/क्षण भर डुबकर जाते
मधु की इस सुषमा के आगे, मैं पद जाता
भूल हर सिंगार के फूल। (१)

मुरकाइ हंसे ओस-बन, बैठक कर फूल की
गोद में।
खेल खेलें किरन औ पवन, मैं बिहसा बाले
मोद में॥ (२)

चांद की चांदनी चाहिए, चांदनी को जहां चाहिए
फैलना खूब करते दोस्तो, किरकी मंजिल कहां
चाहिए। (३)

जबले जूटा बहरुआ सब्य नइल बा, हुम
हवना से का परिआवे के बा।
तूरि के पेंड़ि दिहलस तऽ का हो गइल,
फेरु ओही में ओकरा बढ़वावे के बा॥ (४)

एक नये ढंग से जीवन का अनुभव करना
रूढ़ता अभिव्यक्ति की एक सशक्त शैली
आवश्यक, कारण समुपस्थित नवजीवन-क्रम,
सूरज की बेटियां जवान, चांदनी मैली॥ (५)

कह सकता हूं कि चाहे जितना शोर-हल्ला हो रहा हो भोजपुरी के नाम पर लेकिन भोजपुरी संस्कृति की आत्मा, अंधेरे में ही भटक रही है। ☐

'आज' में 'ग्राम देवता' कऽ प्रकाशन पांच अगस्त से

भोजपुरी साहित्य के स्थापना के कड़ी में भोजपुरी साहित्य में रुचि रखने वाले पाठकन के खातिर 'आज' दैनिक में पांच अगस्त से आचार्य डा. रामदेव शुक्ल के प्रसिद्ध उपन्यास '**ग्राम देवता**' कऽ **धारावाहिक प्रकाशन** प्रारम्भ होई। डा. शुक्ल भोजपुरी बोली अउर भाषा के उत्थान में 'आज' के योगदान के सराहलें, अउर सहर्ष अपने उपन्यास 'ग्राम देवता' के प्रकाशन के अनुमति देहलें। एकरे खातिर डा. शुक्ल के प्रति 'आज' परिवार कृतज्ञ बा। सहृदय पाठक अपने हाकरन से आपन प्रति सुरक्षित करा लें।

राउर सभन कऽ
-रत्नाकर सिंह (स्थानीय सम्पादक) गोरखपुर

किन कारणों से फिल्मी जगत छोड़कर अध्यापक हुए थे, इस पर उनके ही कई बयान हैं किन्तु आश्रम बरहज के इण्टर कालेज में अध्यापन करते मोती बी.ए. को, हमारे जैसे हजारों छात्रों ने (पीढ़ी-दर-पीढ़ी) विद्यालय के 'धर्म-घंटा' में, ''हाईस्कूल पोयट्री का काव्यानुवाद, ''मृग तृष्णा', 'महुआवारी', 'सेमर के फूल', 'रास लीला' जैसी भोजपुरी प्रधान कविताओं का सस्वर-सुमधुर पाठ कराते हुए सुना है। उस समय उनकी 'सरस्वती वंदना' बहुत ही लोकप्रिय थी।

मेरा मोती जी के विपुल साहित्य से निकट का परिचय रहा है। उनकी विपुल साहित्य साधना पर, ''अब्राहम लिंकन'' नामक नाटक में आये हुए प्लैक वर्स का अनुवाद याद किया जा सकता है: अनुवाद है: ''**खेतन-खेतन चरहन-चरहन घूमि घूमि के/ भेंगरइठा-गोरखमुंडी तू बिन लऽ/ तू कुआर के समझलऽका में फेड़न के बेयारी में** हैं। हां सर्त यह है कि उनमें डूबकर आप उन्हें गुनगुनायें।

मोती बी.ए. की कुछ पंक्तियां ही काफी हैं। मोती जी का एक मुखड़ा है:

केहू देखल करो, हमरा के झांकल करो।
हमके धरे के होखे रंगल हाथ तऽ
हमरी कविता के पांतिन में झांकल करो॥

दिनाँक 10 जनवरी 2003 का समाचार

'मोती' से मिलकर भाव विह्वल हुए 'दीपक'

सहारा समाचार
बरहज(देवरिया), 9 जनवरी

भोजपुरी के शेक्सपीयर मोती बी.ए. से जिलाधिकारी डॉ. दीपक कृष्ण वर्मा मिलकर भाव विह्वल हो गये। जिलाधिकारी ने भोजपुरी के पुरोधा मोती बी.ए. को उत्तरीय ओढ़ाकर आशीर्वाद प्राप्त किया। इस मौके पर जिलाधिकारी ने अधीनस्थ अधिकारियों को निर्देश दिया कि वे भोजपुरी के 'मोती' मोती बी.ए. की बराबर देखभाल करते रहे। इस अवसर पर मोती बी.ए. की रचनाओं की प्रस्तुति उनके पुत्र ने की।

जिलाधिकारी ने अधीनस्थ अधिकारियों से कहा- भोजपुरी के 'मोती' मोती बी.ए. की बराबर देखभाल करते रहें

जिलाधिकारी ने अपने सरकारी कार्यक्रम से मुक्त होते ही भोजपुरी के पुरोधा मोती बी.ए. से मिलने की इच्छा व्यक्त की। तब आनन-फानन में उपजिलाधिकारी ने पूर्वांचल की इस विभूति से मिलाने का कार्य किया। अपने घर पर अचानक जिलाधिकारी, पुलिस अधीक्षक डा. विजय एम. तरडे तथा तहसील स्तरीय अधिकारियों को मोजी जी ने देखा तो वे भाव विह्वल हो उठे। बढ़ती उम्र के कारण मोती जी के पांव, आंख तथा कान पूरी तरह तो कार्य नहीं कर रहे हैं। इसके बावजूद आगन्तुक अतिथियों के स्वागत की औपचारिकता में मोती जी अपने सारे दर्द भूल गए।

82 वर्षीय भोजपुरी के विराट व्यक्तित्व को देखकर जिलाधिकारी डॉ. वर्मा भी अभिभूत हो गये और उन्होंने अपने अधीनस्थ अधिकारियों को यह निर्देश दिया कि मोती जी की वे बराबर देखभाल स्वयं करते रहें। यहां उपस्थित लोगों के सीने बरहज के इस 'मोती' के चलते गर्व से फूल गये। इस अवसर पर जिलाधिकारी डॉ. वर्मा ने भोजपुरी का प्रथम साहित्य अकादमी पुरस्कार प्राप्त करने पर मोती जी को हार्दिक बधाई देते हुए उत्तरीय (शाल) ओढ़ाकर उनका आशीर्वाद चाहा। डॉ. वर्मा ने मोती जी की सराहना करते हुए यह अपेक्षा किया कि 'मोती जी का आशीर्वाद अधिकाधिक दिनों तक प्राप्त होता रहे, ये शतायु हों यही भगवान से प्रार्थना है'। अपने प्रति यह लगाव देखकर मोती जी की आंखे छलछला गयीं। इसी समय तहसील के अधिवक्ता सच्चिदानन्द पाण्डेय ने विनम्रतापूर्वक मोती जी की एक रचना उनके द्वितीय पुत्र भालचन्द जी से प्रस्तुत करने का निवेदन किया। फिर क्या था? "निझरि गइले अमवा आई ओ रामा" गीत सुनकर सभी लोग झूम उठे, फिर यह क्रम कुछ देर तक चलता रहा और उपस्थित श्रोता आनन्द सागर में गोता लगाते रहे, पूरा काव्य गोष्ठी का माहौल बन गया। इस अवसर पर उपजिलाधिकारी एस.एस. श्रीवास्तव, तहसीलदार सुरेन्द्र सिंह, रमेश तिवारी अनजान, क्षेत्राधिकारी बरहज, नायब तहसीलदार द्वय, मुख्य चिकित्साधिकारी डा. सतीश चन्द्र पाण्डेय एवं नगरवासी उपस्थित थे।

दिनाँक 7 नवम्बर 2008 का समाचार

राष्ट्रीय सहारा ने अपने 100 वें विशेषांक में 100 विभूतियों का वणर्न किया था।

मजाज्या ने सरदासर इलाके में भी शिक्षा को बढ़ावा देने में अपनी भूमिका निभाई।

मोती बीए

कौन नहीं जानता सरस्वती के इस मानसपुत्र को। जीवन के नब्बे बसंत बीता चुके मोती बीए के होठ अभी भी रचना को लरजते हैं। हिंदी, उर्दू, अंग्रेजी और भोजपुरी पर समान अधिकार रखने वाले मोती बीए को अपनी भाषा (भोजपुरी) व माटी से गहरा लगाव है। भोजपुरी में सॉनेट और हाइकू के प्रथम प्रयोगकर्ता को बरहज मायानगरी मुम्बई से भी बड़ा लगता है तभी तो फिल्म लाइन की चकाचौंध छोड़ मोती अपनी माटी में आ बसे सतत साहित्य साधना हेतु। महुआबारी जैसी अमरकृति के रचयिता के चिरायु होने की कामना।

राजा इनायत अली

दक्षिणांचल में गदर के सूत्रधार। नवाबों की नजाकत से इतर 1857 में इनायत अली ने क्षेत्र की हिंदू-मुस्लिम जनता को संगठित कर अंग्रेजों के खिलाफ हल्ला बोल दिया। कलेक्टर एलीस व उसके ग्यारह सहयोगियों को उन्होंने कालीचौरा के निकट सरय में जल समाधि दिला दी। बौखलाई ब्रिटिश सरकार ने राजा [illegible]

दिनाँक 3 अक्टूबर 2008 का समाचार

समाचार पत्र 'राष्ट्रीय सहारा'

सृजन की ललक अब भी बरकरार

सहारा न्यूज ब्यूरो
बरहज(देवरिया),2 अक्टूबर।

जो निखर गया वो दरख्त हूँ मै, जो गुजर गया वो वक्त हूँ मै।
जो मिटे ना मिटाए जबरदस्त हूँ मै, पानी की बूँद बहुत सख्त हूँ मै।

ये पंक्तियां भोजपुरी के पुरोधा मोती बी0 ए0 जी की नवीनतम रचना से संकलित है जिसके आधार पर 90 वर्षीय मोती जी की रचना धर्मिता दृढ इच्छाशक्ति एवं मजबूत संकल्प का ज्ञान होता है। जीवन के अन्तिम सोपान पर जीवन तथा मौत से जूझ रहे मोती जी आज बरहज नगर के नन्दना पश्चिमी के लक्ष्मी निवास के एक कमरे में कैद होकर रह गये है जहाँ इस समय उनकी आंख, कान तथा जिह्वा के रूप में उनकी होनहार पौत्री माण्डवी दिन रात उनकी सेवा में लगी हुई है। मोती जी का रचना संसार अत्यन्त समृद्ध है। यद्यपि उन्हें प्रसिद्धि भोजपुरी रचनाओं के माध्यम से ही मिली किन्तु हिन्दी तथा अंग्रेजी भाषा में भी उन्होंने खूब लेखनी चलाई है। आज उम्र का असर उन पर स्पष्ट रूप से दिख रहा है, हाँथ काँप रहे है, कानों में सुनने का यंत्र लग गया है, पैर शरीर का भार ढोने में असमर्थ दिख रहे है। आंखों पर चश्मा दिखाने भर को रह गया है फिर भी चिन्तन तथा सृजन के प्रति ललक पूर्ववत है। जैसे ही पूछा गया कि सृजनशीलता, रचनाधर्मिता या लिखना बन्द कर दिए है या चालू है तो चेहरे पर मार्मिक पीड़ा का भाव उभर आता है और बहुत जोर देकर मोती जी कह पाते है कि-

"कलम न होती जिन्दा तो, कभी का मर गया होता।
पहुँचने के लिए घर पर, खुदा के घर गया होता"।।

भोजपुरी के पुरोधा

बहुआयामी व्यक्तित्व तथा रचना सन्दर्भों के बावजूद उनकी उपस्थिति साहित्य के इतिहास से बाहर क्यों रही? यह बात बहुत से लोग आज तक समझ नही पाए। यद्यपि अपनी प्रथम कृति 'लतिका' के सहारे मोती जी ने कविता को समय के साथ नये स्वर तथा सन्दर्भ दिया जिसको 'लतिका' की भूमिका में हरिवंश राय बच्चन ने भी मुक्त कण्ठ से स्वीकार किया। मोती जी की रचनाओं में आशावादिता उनके जुझारूपन की कसौटी है। इसे व्यक्त करते हुए मोती जी ने स्वयं कहा है कि -

मेरा जीवन दीप शिखा सम, जल जाए छू जिसे अंधेरा।
सन्ध्या की निशि पलकों में, लो देखो हंसता सुभग सबेरा।।

मोती जी के गीतों में जीवन परम्परा और संसार को बचाने की अद्भुत क्षमता दिखाई देती है। उनकी पायल छम-छम बाजे नामक कृति से ज्ञात होता है कि गीतों के प्रति किस सीमा तक उनका समर्पण है। जीवन के छलावों तथा भटकावों में अगर कहीं कोई तिनके का सहारा है भी तो वह सिर्फ गीत ही है। मोती जी जब यह कहते है कि- जीवित रहकर सह न सकूँगा, मैं जीवन की पीर।

दुःख जब इतना मन भाएगा,एक दिवस ऐसा आएगा, द्वार खड़ा सुख पछताएगा। उदासीन आंखों में बैठा , मौन बना गम्भीर।।"

अपनी अस्वस्थता के चलते यशस्वी कवि मोती जी को नित्यकर्म में भी इस समय काफी कठिनाई हो रही है फिर भी दुःख से वे दुखित नहीं होते बल्कि कहते है- आंसू नहीं फला करते है, पगले तू काहे रोता है।
जीवन के पहले पीड़ा का, शायद अन्त नही होता है।।

दिनाँक 16 मई 2002

दैनिक जागरण का विशेष गुरूवारीय विशेषांक श्री मोती बीए पर। यह चौदह भागों में प्रस्तुत किया जा रहा है। 01

नई राहें

मोती बी.ए. पर विशेष

दैनिक जागरण
वर्गीकृत
तीर

जागरण
गुरुवारीय

गोरखपुर, 16 मई, 2002

तनी अऊरी दउरऽ हिरना पा जइबा किनारा

जैनेन्द्र मणि त्रिपाठी

मोती बी.ए. की इस रचना को पढ़ने के बाद जगत का मुरझाया हुआ कोई सत्य जानने को शेष नहीं रह जाता। मुख्य बात यह है कि मोती जी की रचनाओं में राष्ट्र, धर्म, सत्य, सत्यानिष्ठा, मानवता और आध्यात्मिकता एक साथ दिखाई पड़ते हैं। उनकी यह मान्यता थी कि हिन्दी, अंग्रेजी, संस्कृत और उर्दू जैसे भाषाओं के माध्यम से हम भी

मोती जी का रचना संसार अद्भुत है। माटी की बोली में अपनी शैली में बड़ी से बड़ी बात कह जाना उनके लिए बहुत आसान है। जीव और ब्रह्म के

रिश्तों को, जीव के विराट सत्ता में मिलन को और भौतिक जगत के अस्तित्व को अपने ढंग से सहज मुक्तकों में उन्होंने कह डाला है। यह सिर्फ उन्हीं के बूते की बात है-

[illegible] विश्वविद्यालय में [illegible] आलेख [illegible] भी [illegible] उपस्थित [illegible] था। [illegible] के [illegible] में [illegible] मोती [illegible] है।

[illegible] प्रक्रम में [illegible] के [illegible] [illegible] और उनकी उपलब्धियों से आप अनभिज्ञ होंगे क्योंकि उनसे जुड़े बहुत से लोग बहुत कुछ लिखते हैं। यह आलेख न तो उनका सम्मान बन पायेगा और न ही उनका परिचय। मेरी दृष्टि जहां तक जाती है मोती जी की रचना 'मृग तृष्णा' से निकला पाना असम्भव लगने लगता है। इस रचना में मोती जी ने जीवन को, मृत्यु को, भौतिक और पारभौतिक जगत को किसी सीमा को लांघा नहीं है और माटी की बोली में अभावों के कोलाहल में उन्होंने वह सब कुछ कह दिया है जो कबीर से पाने और कबीर के बाद तक बड़े-बड़े दार्शनिकों ने बड़े-बड़े संदर्भों के साथ कहने की कोशिश की। मृगतृष्णा की एक-एक पंक्ति का दर्शन है जो भौतिक जगत को पारभौतिक जगत की सीमा तक ले जाता है। वे जीव को ब्रह्म से जोड़कर विराट से साक्षात्कार कराता है। मोती जी इस रचना में भौतिक जगत को इस दोपहरी में देखते हैं कि जब चिलचिलाती धूप में मृग को पानी मानकर प्यासा मृग दौड़ पड़ता है। मोती जी की विराट दार्शनिक दृष्टि है जो दुनिया को मृग के प्यास के साथ दोपहरी के रूप में दिखायी पड़ती है और इसीलिए जीव रूपी मृग को वे थोड़ी और दौड़ लगाने की सलाह देते हैं-

नाचत बाटे घाम रे हिरन का पियासा
जेठ की दुपहरी में रस के का आसा,

मोती जी ने अपनी माटी की बोली को अपने रचना धर्म माना है। उन्होंने अपने सृजन संसार में सारे विश्व भी अपनी माटी से उठाये हैं। माध्यम उन के प्रतिनिधित्व के लिए उन्होंने महुआ को चुना है जो जगत की जागतिक क्रियाओं के लिए जेठ की दुपहरी उन्हें उचित लगी है। कबीर की शैली में जीवन को सेमर के फूल से भी कीमत कम उन्होंने देखने की कोशिश की है-

सब फेड़न से फाके रहे,
इ केतना भारल गुमान बा
सब धरती के झुक-झुक चूमे,
इ छुअत आसमान बा।

यह भी उनकी अलग शैली ही है जिसने मेलजोलपूर्ण के चमकीले संसार में लेकर मंच के अकाबंध तक से अपने आप को किनारे लगा लिया और कर्मभूमि की मिट्टी से आकर चिपक गये। प्रेम और अध्यात्म में मोती जी ने जो भावुक भौतिकता को जीतने की सुन्दर कोशिश की है। वे कहते हैं

प्यार सोना हवे, रूप आगी हवे,
येही दोनों के अजबे कहानी हवे।
प्यार गलेला जेतना बहे आंख से
आंसू ना हइ, सोना के पानी हवे॥

आध्यात्मिक धरातल पर जीव की भौतिक जगत की यात्राओं को बड़े सलीके से सहज ढंग से उन्होंने अपनी माटी की बोली में कह दिया है-

जवने खूंटवा बछरुआ बन्हा गइल बा
हमवकला मे का परियापे के बा,
तुरि के फेंक दिहलस ता का से गइल
फेनू एही में ओकरा बन्हायेके बा।

मोती जी का रचना संसार अद्भुत है। माटी की बोली में अपनी कैसी में बड़ी से

शेष पृष्ठ 7 पर

भोजपुरी के गंध-राग ; मोती जी

अरुणेश नीरन

कवि मोती बी.ए. को देखकर एक विशाल वटवृक्ष का बिंब उभरता है।

बिल्कुल ही मैं सोचता हूं, यह बिंब उनके-से विराट रोड़ जाने है। सघन और छायाओं से समृद्ध। केवल एक व्यक्ति इतना विरलता और बहुआयामी हो सकता है, कब आने वाली पीढ़ियां कभी सोच पायेंगी? वे दूर से देखेंगी और आश्चर्य आश्चर्य से फुटने के बजा सिकर झुका देंगी। हमारे जैसे लोग भाग्यशाली हैं जिनको चारों ओर से वह जीवित आश्चर्य जाने-आने की तरह फैला हुआ एक विशाल वृक्ष की तरह पाते रहा है। जिसकी नसें अर्थवेद की तरह चारों ओर फैली हुई हैं। पहली बी वह सर्वसमाज वर्तमान है जिसमें उनका और भोजपुरी काव्य का सर्वोत्तम भूतकाल समाहित है और भविष्य के अनेक अपनी आंख खोल रहे हैं। वे ऐसे केन्द्र हैं जिसमें भोजपुरी काव्य की समस्त मनोदशाएं, सारे चित्रों, सारी उड़ानें, सारे आंसू और सारी सफलताएं चित्रांकित हैं।

देवरिया में जहां आज जिला पंचायत का भवन खड़ा है वहां पहले एक विशाल मैदान हुआ करता था। वहां सर्कस के खेमे गाड़े उखड़ते थे, प्रदर्शनियां लगती थीं और राष्ट्रीय नेताओं के भाषण होते थे। साल में एक बार विराट प्रदर्शनी लगती थी और एक माह तक चलती थी। उस बार उसमें कवि सम्मेलन का आयोजन हुआ। एक नेता जी ने जिसे कवि सम्मेलन का उद्घाटन करना था, भाषण दिया और स्वतंत्रता का बेला होते हुये कहीं और के लिये प्रस्थान कर गये। उनके बाद मोती जी को कवि सम्मेलन का अध्यक्ष बनाया गया। श्रोताओं ने इस घोषणा का करतल ध्वनि से स्वागत किया। उसी समय मोती जी जोखिम मिश्रक बन चुके थे। 'आज', 'आपोवर्ट', 'सन्मार्ग', 'अग्रगामी', 'संसार' जैसे दैनिक अखबारों के संपादक मण्डल के सदस्य, सुभद्रा, भरत धुर, रामकाव, इन्द्रासन, कांकिता रस विहार, रिमझिम साजन, सिन्दूर नदिया के पार जैसी फिल्मों के लोकप्रिय गीतकार, गीत कवि, छायावादी कवियों जैसे बड़े-बड़े कोरों तक ढूंढते बाद, मिट्टी का कुर्ते-भदरंग और आत्मीय व्यक्तित्व। मोती जी ने कहा कविता सुनाने शुरू की कि श्रोता 'महुआवारी' सुनाने की मांग करने लगे। मोती जी ने तरन्नुम होकर 'महुआवारी' का पाठ शुरू किया। सब एक प्रकाश फैल गया और घुप अंधकार छा गया। उस अंधकार में भी मोती जी धारा प्रवाह काव्य पाठ करते रहे। उस अंधकार में, जीवन में पहली बार मुझे आभास हुआ कि कविता में शक्ति होती है, प्रकाश भी होता है। लगा, जैसे निकलती हुई रोशनी में नहीं बल्कि मोती जी प्रकाश को पान के बीच खड़े होकर काव्य पाठ कर रहे हैं। सभी मंत्रमुग्ध होकर सुन रहे थे। और जब कवि पाठ मिस्ट बाद निकलने आगे तो उसका आभास हो किसी को नहीं हुआ वह आंख मेंदे एक विशाल बादल के टुकड़े की तरह खड़े थे और गंभीर गर्जना के साथ मानवती कंठ से बाहर झर रही थी। जिन कुछ क्षणों में जीवन का अस्तित्व खो जाता और हम शून्य और ज्ञान बनकर आकाश बन जाते हैं, उसमें वह क्षण भी था। मोती की प्रतिभा पर स्वर के छोर चढ़ा

शेष पृष्ठ 6 पर

भोजपुरी में विद्रोह-भाव वर्ग के साहित्यकारों के स्थापित होने तथा नये सिरे से एक नयी पीढ़िया पर साहित्य को स्थापित करने का प्रयास जिस एक व्यक्ति में पूरी गरिमा पाता है वह मोती जी हैं। बेरोजी जोश और बहसन जैसे छोटे कस्बे से चलकर उन्होंने संघर्ष का पूरा रास्ता तय किया और उसी दौरान उनके व्यक्तित्व के आयाम विकसित हुये। उनकी इस सफलता को केवल व्यक्तिगत भोजपुरी काव्य जगत की सफलता मानने से उनके प्रति पूरा न्याय नहीं किया जा सकता। वे सही अर्थों में साधारण में असाधारण के स्थापन के प्रतीक हैं। उनके माध्यम से दबे, उपेक्षित और असाधारण वर्ग ने आत्मगौरव उड़ान भरी। कल्पना के सूर्य को छू लेने की आत्मगौरव उड़ान है यह 'महुआवारी' कविता साधारण में असाधारण की खोज है-

कवि, लेखक, अनुवादक, और अभिनेता के रूप में उनकी कीर्ति चारों ओर फैली हुई थी, 'कटवा के नदिया, कनहरे रे मल्हवरवा, नदिया के पार दे उतार' जैसे गीतों की धूम मची हुई थी और वे जन-जन में जाने जा रहे थे। अध्यक्ष की आसंदी पर बैठते हुये मोती जी को पहली बार मैंने वहीं देखा।

2 गोरखपुर, 16 मई, 2002

गुरुवारीय जागरण

हमरी कविता की पातिन में झांकल करो

डा. आशुतोष कुमार दीक्षित

हिन्दी की नवीन काव्य धारा, रस-भाव, रमणीयता एवं रागात्मकता से अपना सम्बन्ध-विच्छेद कर अति बौद्धिकता की ओर अग्रसर है। यह बौद्धिकता भी भारतीय जीवन दर्शन से अनुप्राणित न होकर पाश्चात्य जीवन दर्शन से आक्रान्त है। ऐसे में भोजपुरी के महादूर कवि के काव्य संकलन की ओर आकृष्ट होना प्रत्येक साहित्यी को विवशता है।

पूर्वांचल के बलिया जनपद के बैरिया गांव में पैदा हुए मोती बी.ए. भोजपुरी की आत्मा हैं। वे न तो लिखक मोती जी की ठकुरसोहाती और चाटुकारिता नहीं आयी। अभावग्रस्त अभावग्रस्त उनके जीवन की परिचय बनी रही।

बनारस घराना में स्व. प्रधानमंत्री इन्दिरा गांधी जी के आगमन के मुअवसर पर राजनीतिक पैंतरेबाजी के संदर्भ में एक मुशायरा मंच पर ही कह डाले।

रहे बाबू हई रहे राजा हई
रहे रोड़ के हमनी का असे आईल
बुरा हुई
रहे डाकेलें कौरा त खाईलें हम
हमर रहे दुआरी क कुत्ता हई

मुशायरा की उपरोक्त पंक्तियां भारतीय राजनीति की दयनीय दशा पर एक करारा प्रहार, आक्रोश है। मोती बी.ए. पर बाबा नागार्जुन जी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व का प्रबल प्रभाव पड़ा है। मोती जी ने बाबा के प्रभाव में कुछ पंक्तियां लिखी हैं-

तकसी त्यागी तपस्वी
का अनुगामी तपस्वी
दानी भोगी तपस्वी
पक्ष नहीं कर सकल था
न जाने कब मोती था
खाली हाथ गया रोक
जाने कैसे जीता था।

मोती जी में गहन प्रकृति प्रेम भी है। सलेमपुर के पास ग्राम महुआबारी के महुआनी की पाछ के उपलक्ष उन्होंने एक कविता ही लिख डाली।

असे आईल महुआबारी में बहार मउरी
कोयल मातल भुरुर हुए
'महुआ सो सो चूए
लखमे बड़े भिनुसारे के बयार मउरी

महुआबारी में बहार मउरी
ये मानव प्रेमी भी थे, उनका मानव प्रेम उनकी इन पंक्तियों में छलकता है।

'दाल रोटी आ नमक जे मिलल करे
जवाने गमछा में भूजा आ भेली रही
तेल मसाले के मुकवा जे लागल करी
अपने किस्मत पर झंझा चमेली रही'

मोती जी रसिक भी हैं। उनकी एक कविता में नायक-नायिका के पवित्र प्रेम में विलक्षण व्यक्त किया गया है।

'जो रोमांच होवे न ठेसे जिया
अंखी छूटे लड़कन से का फायदा
प्रेम में बांसुरी जे न फूकल करे
अंके अपना बसवता से का फायदा'

उन्होंने अपनी कविता में सामाजिक कुरीतियों की भी आलोचना की

'हमके रोज जाने के कहत हई
रात कहीं त बिजुलिया कौंधी लेई
जवन कुकरम अंधेरिया में हो सकत बा
बात बाने त सहाते न रही लेई

आम विचार यह है कि भोजपुरी जानने बोलने वाले गंवार एवं बुद्धू होते हैं लेकिन मोती जी ने अपनी पंक्तियों में इसका खंडन करते हुए भोजपुरियों को खड़ी बोली बोलने वालों एवं अंग्रेजी बोलने वालों से श्रेष्ठ साबित किया। यथा-

'भोजपुरिया के हे भाषा का कांसा
खुलके अवा अखाड़ा लड़ दोनों सनि
तोहरी भाषा पहलवान में का धरल बा
तोहके सामने पछाड़ पड़ा दिहे सनि'

अति भौतिकता जीवन के बुरे प्रभावों को इनकी भोजपुरी पंक्तियों में देखा जा सकता है। मोती जी में गहन मानव जीवन दर्शन व्याप्त है।

"चकला बेलन चम रे हिरन का रियास
जेठ के दुपहरी में सेत क बा आसा
मेरिया बनावे नहीं दूर बाटे धना
सबैं अइसे टउर हिरन पा जाइ किरना
मोती जी कर्म के सच्चे पहचान हैं।

"दुनिया में केहूके न मेहनत केकरा बा
जेही धई उहे धई रोटी के चकार बा
छोड़ सबके कहत सुनत अपन त महल
सबैं अइसे टउर हिरन पा जाइ किरना"

उपरोक्त पंक्तियों के अध्ययन के उपरान्त हम इस निष्कर्ष पर पहुंचते हैं कि श्री मोती जी ने भोजपुरी बोली में मानव जीवन से सम्बद्ध सभी पक्षों पर करारी कुठाराघात किया है।

यह भारतीय राजनीति की दुर्दशा, प्रकृति प्रेम, रस काव्य, जल, जंगल, जीव, जमीन से लगाव तथा भारतीय जीवन दर्शन पर प्रभाव डाला है। इनकी भोजपुरी कृति 'सेमर के फूल' की पंक्तियां इतर गयी हैं। ऐसे पढ़कर साबित हो हम उनके भोजपुरी लगाव व प्रेम को जान सकते हैं।

उनकी लिखी अपने एक लिखे पत्र में डॉक्टर प्रभाकर द्विवेदी जी ने उनकी भोजपुरी पर गहन पकड़ की प्रशंसा की है। दूसरी ओर उनकी पर्याप्त सम्मान न दिये जाने पर दुख व्यक्त किया है। अंत में हम उन्हीं की एक भोजपुरी पंक्ति को उद्धृत कर रहा हूं-

'केहू देखत रहो केहू सुनत रहो
केहू कहतो त हमरा के जोगल रहो
हमके घर के होखे लगत हाथ त
हमरी कविता की पातिन में झांकल करो'

भोजपुरी में लिखी उनकी ये पंक्तियां मानव-जीवन दर्शन का सम्यक वर्णन करती हैं।

सौभाग्य से मोती जी ने मुझे 11 वीं एवं 12 वीं कक्षा में अपने अध्यापन का सुख प्रदान कराया है।

श्रीमोती जी की कृपा दृष्टि कालेज से सेवानिवृत्ति के उपरान्त अपने ग्राम के पैतृक में मन्दु के पास एक बने बंगले में अपनी पावन कुटिया में साधनारत है।

मैं उनके चरणों में वन्दन करता हूं। ❑

मोती बी.ए. अपने दो मुसलों के साथ

'पानी की बूंद, बहुत सख्त हूं मैं'

भालचन्द्र उपाध्याय

फिल्मी गीतों से लेकर, भोजपुरी मुक्तक, रचनाओं, ओमी में अनुवाद और कविता, संस्कृत की रचनाओं का पद्यानुवाद, हिन्दी की दुर्लभ कविताओं और गीतों के मुखड़े से लेकर अनुवाद, कविताओं, उर्दू में साहित्य सापना हाइकु, और गद्य लेखन कुल लगभग 48 पुस्तकों तक का सफर मोती बी.ए. हमारे बिछा जी ने साहब ही नहीं पूरा किया।

जीवन की उठा पटक, भागदौड़, पारिवारिक जिम्मेदारियों का निर्वाहन करते हुए भी रात-रात को कभी 12 बजे, कभी दो बजे और भोर में भी मैंने उन्हें गुनगुनाते और कलम चलाते देखा है। मैंने परेशान होते देखा है, चिंतित देखा है-लेकिन कभी धैर्य खोते नहीं देखा है। परेशानियों में भी गाते रहे-

'भाग्य का दर नहीं मुझको
दुनियां ओज के आगे
लहर पर घर बना लेना
कुहासा गीत गा गा के।
किनारे पर खड़ा कोई
मुझे हौसला बढ़ाता है। झकोरों में पला जीवन-
कुहासा गीत गाता है।।'

बिछा जी ने जो भी लिखा, जब भी लिखा मन से लिख कर नहीं लिखा। महाकवि और साधक को अपनी रचनाओं में विशेष महत्व दिया और इसको बाकायदा गाते हुये लेखन से गंभीरता को नहीं जाने दिया।

मुझे याद है- किसी मंच जी का अचानक ही कवाल आने का कार्यक्रम बन गया और एक संस्था के कुछ विशिष्ट लोगों ने बिछा जी से एक स्वागत गीत लिखने का निवेदन किया। समय बहुत कम था-दबाव भारी था। मोबाइल में ही लिखना पड़ा। उन्होंने लिखा-

'नहीं हम जानते मन्तर है कैसे किया जाता, हृदय की भावनाओं को किसे कैसे दिया जाता
भया है भाव जो उर में उसे कैसे दिखाएं हम
बिना हैं हार फूलों का भाव कैसे बिखाएं हम।'

हमारे गीत के स्वर आप अपने रूप जाते हैं- खुशी ने आगमन को अपने स्वजनों और साहित्य में रहने वाले साहित्यिक लोगों को भी उन्होंने महत्व और सम्मान के लिये प्रेरित किया। चाहे वो कलम जी हो या डा. रति लिखरी पाठी हो, निर्मल जी हो या दिवाकर लिखरी पाठी हो या डा. प्रकाश सिंह यादव हो या रमेश 'अम्बाला' इत्यादि।

मैंने भी जब 'प्रेम क्या है'-द्रौपदी, धनि मंगला माई रे, अमरत आगमन अंबेडकर' लिखा और उन्हें सुनाया तो मुझे भी उन्होंने सही राय दी।

सड़े गले और घटिया कलाम की रचनाएं न तो उन्होंने की और न ही उनकी सराहना की। आजकल के कवि सम्मेलनों में ज्यादा तालियां, चुटकुले और गैर साहित्यिक रचनाओं के पाठ से काफी मर्माहत हैं। इसी लिए इन्होंने काफी पहले से ही मंचों का त्याग कर दिया था। प्रतीकों के माध्यम से अपनी बात कहने का अनोखा फन है बिछा जी में। 'सुनता मेरा के पूरे का एतना स्वादहीन बाटू, सारे जग भुनाइल बाटू हो।' या फिर पर्यावरण नियोजन के महत्व को दर्शाता हुआ गीत 'अपनी दोपहि भर के बाबी जी पोरवा, सबहिन लाने जाए के परी' आदि रचनाएं इसका उदाहरण है।

'निहारि गहिलें आपन, आई हो राम' मुखड़ा से फिल्म जगत के रविन्द्र जैन (गीतकार-संगीतकार) इतना प्रभावित हुए कि उस पर उन्होंने 'एलबम' बनाने का मन बना लिया। ये अलग बात है कि पारिवारिक कारणों से यह काम मुकाम न हो सका।

बहुत लिखा-बहुत किया। अब थक चले हैं। 84 वर्ष की आयु है शरीर साथ नहीं देता है। संत के अभिनंदन समारोह-मिश्र सदन सोहड़

मोती बी.ए. अपने परिवार के साथ

चुके हैं। बैठे-बैठे, सोते-सोते जब उकता होने लगती है तो कागजों अखबार से पर्ची ढूंढते हैं-'जो गुजर गया वो बचा हूं मैं
जो बिछड़ गया वो दरख्त हूं मैं।
जो दबे न दबाए, जो मिटे न मिटाए-
'जनी की बूंद बहुत सख्त हूं मैं।'' ❑

स्वतंत्रता आन्दोलन में जेल भी गये थे मोती बी.ए.

राम विलास प्रजापति

इन्सान की कलम में लगी चोटों पर कब मोती बी.ए. अब बोलने में असमर्थ लगते हैं किन्तु बोलते हैं तो लगते हैं खामोशियां अब भी मुखर हैं भाव के विचार होने की हालत में हैं।

मोती बी.ए. की प्रतिभा बहुमुखी है। व्यक्तित्व अत्यन्त प्रभावशाली। जीवन के हर क्षेत्र में इनकी उपस्थिति प्रोत्साहन एवं सम्मानजनक है। इनके विषय में जब कुछ कहने व लिखने की बात आती है तो इनका व्यापक कृतित्व व व्यक्तित्व दृष्टिपटल पर चमकने लगता है और इसका ओर छोर मालूम नहीं होता। इनके विषय में कहां से शुरू किया जाये, इनके जीवन का कौन सा क्षेत्र ज्यादा महत्वपूर्ण है, हृदय में दृढ़ पैठ कर लेता है। यही वजह है कि मोती जी की साहित्य साधना को कद करते हुए उनको कृति 'सरिता' पर उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा विशेष पुरस्कार प्रदान किया गया। डा. हिन्दी संस्थान से साहित्यकार तथा शिक्षा विभाग द्वारा उन्हें अवधी आचार्य के रूप में अलंकृत किया गया। हिन्दी अकादमी द्वारा बहुत सम्मानपत्र तथा हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग ने आपको 'हीरक कवि' कहकर 'कवि रत्न' की उपाधि से सम्मानित किया। अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य सम्मेलन पटना ने मोती साहब को 'भोजपुरी रत्न' की सम्मान उपाधि प्रदान की।

अपने समकालीन प्रतिष्ठित साहित्यकारों एवं छात्रों को याद करते हुए मोती जी कहते हैं- विश्व संसार को प्रेमचंद, भगवती चरण वर्मा, अमृत लाल नागर, नरेन्द्र शर्मा, उपेन्द्र नाथ अश्क, सुमित्रा नन्दन पंत, हरिवंश राय बच्चन, भगवती प्रसाद वाजपेयी, अख्तर हुसैन रायपुरी, मजाज़ लखनवी, राही मासूम रज़ा, साहिर लुधियानवी, रघुवीर सहाय, कीर्ति आजमी, हरि कृष्ण प्रेमी, गोपाल सिंह नेपाली, अमर अंतर, डा. रा. जब मुझे याद भोजपुरी काव्य मेलों में, कवि के रूप में गीतकार गायक हूं।

सन् 1941 में एम.ए. के अध्ययन में रत एवं साहित्य रत्न की डिग्री हासिल करने के साथ साथ मोती बी.ए. पत्रकारिता में भी जुड़ गये थे तथा दैनिक पत्रों आज, गांडीव एवं आर्यावर्त की अपना सम्पादकीय सहयोग प्रदान करते थे।

साहित्य के प्रतिभा के धनी मोती बी.ए. की कविताएं उस दिनों दैनिक आज (वाराणसी) के मुख्य पृष्ठ पर छपा करती थीं। वाराणसी के साथ हुए विशेष परिचय मुंशी प्रेमचंद, पं. रामचन्द्र शुक्ल, रामनरेश त्रिपाठी, श्यामसुन्दर दास, पं. रमाकान्त पाण्डेय, अमृत राय, पं. महादेव चतुर्वेदी, पं. हजारी प्रसाद द्विवेदी जैसे विशिष्ट साहित्य मनीषियों से हो गया। अब तक आपकी तीन दर्जन से अधिक कृतियां प्रकाशित हो चुकी हैं, जिनमें अनुवाद कृतियां, 14 हिन्दी काव्य संग्रह, 3 गजल संग्रह, 5 भोजपुरी गीत संग्रह, 2 निबंध संग्रह एवं कुछ अप्रकाशित काव्य संग्रह प्रतीक्षा में हैं। अनेक कृतियां प्रकाशन के बाट जोह रही हैं। सन् 1943 में व्यक्तिगत सत्याग्रह आन्दोलन में भाग लेने के कारण वाराणसी सेन्ट्रल जेल में ये एक महीने तक भारत रक्षा कानून के तहत नजरबंद रहे और 15 दिन की हवालात भी काटी। सन्तु स्वातंत्र्य संग्राम का मूल प्रमाण पत्र खो जाने के कारण पेंशन से वंचित हैं। उस समय तकली एवं चरखा कातना उनकी दिनचर्या थी। अध्यापन प्रायः अध्यापक के रूप में प्रायः पेशा ही रहा है फिर भी हौसला बुलन्द है। ❑

गुरुवारीय जागरण

गोरखपुर, 16 मई 2002 3

कभी ख़त्म नहीं होती पानी की तलाश

प्रो. माता प्रसाद तिवारी

दो वर्ष पहले उनका एक काव्यमय पोस्टकार्ड मिला-कविता ऐसी जो किसी भी संवेदनशील पाठक को उकसाए बना दे। असली पार सुकवि के मनोभाव यह कि अकेले तो हैं पर पराजयों शरीर ऐसा जो किसी को भी पाठकपने में दिक्कत का अनुभव करे। यह पोस्टा यह टीस पूर्वांचल के एक यशस्वी कवि श्री मोती बी.ए. की है। तब (दो वर्ष पहले) वे उस के अस्सी पार पर चुके थे। उनका यह कार्ड ढूंढते मैं पिछले कई दिनों से उनकी लम्बी यशस्वी रचना-यात्रा विशेषकर उनसे अपने तीस बत्तीस वर्षों के आत्मीय सम्बन्धों के तुल में खोया रहा। उनका यह (मेरी दृष्टि में अमूल्य) कार्ड मेरी अपनी लाइब्रेरी में गुम है और मैं हूं कि उनके पिछले हिस्से की भांति आकुल व्याकुल -कि दैनिक जागरण के अनुरोध पर इस वयोवृद्ध महाकवि को रेखांकित करूं तो किस तरह?

मोती बी.ए. यह नाम पहले कवि-कोकिल क्षेत्र के काव्य मंचों पर पुनः सन् 1947-52 में हिन्दी फिल्म जगत में चमका तो कवि के अनजाने में न जाने कब हुआ कि वे फिल्मी चकाचौंध छोड़ बाहर, अपने घर आ गये और यहीं के होकर रह गये। कहने की जरूरत नहीं कि सन् 47 के आसपास जन्मी हमारी पीढ़ी के लिए हमारी किशोरावस्था में मोती बी.ए. एक नाम थे- भोजपुरी के कारण आंचलिक ही नहीं अपितु अपने व्यापक कृतित्व के कारण अपनी साहित्यिक पहचान के साथ मैं उनसे पहली बार अपने पिता और उनके प्रिय शिष्य डा. महेन्द्र नाथ चाटर्जी के साथ सन् 1971 में बनारस जाकर मिला। फिर यह मिलनिक्रिया चरमसुख जाने रहा।

दरअसल उनके नाम और कृतित्व के प्रति मेरा पहला आकर्षण आकाशवाणी से प्रसारित होने वाले 'लोक संगीतिकाओं' से जुड़ा। भेंट होने के बाद तो हमारे आत्मीय संवाद में उनकी अनेकानेक रचनाएं जुड़ती गयीं। बहुत कम लोगों को ज्ञात होगा कि मोती बी.ए. पांचवें दशक के आरम्भ में बी.एच.यू. में छोटा कर्मचारी थे। भोजपुरी माटी से सम्यक उनका कवि कर्म उन्हें पत्रकारिता और काव्य मंचों से जोड़ा तो हिन्दी फिल्मों से जुड़कर 'साजन' और 'मंदिर के पार' जैसी सफल फिल्मों के सभी गीत लिखकर उन्होंने अपने नाम मोती बी.ए. को एक आभा प्रदान की हालांकि अन्य कई गंभीर साहित्यकारों की तरह उन्हें भी लाहौर बम्बई की फिल्मी चकाचौंध रास नहीं आयी और वे घर आये अपने घर-आंगन।

कुछ बात ऐसी जरूर थी जो उन्हें धरती से उड़ने के बजाय निरंतर जुड़े रहने को घोर-प्रेरणा देती रही। अपने जिन्दगी के आखिरी मोड़ पर अशक्तावस्था में भी यदि वे कुछ रचते रहने को आकुल हैं तो इसका मतलब साफ है- उनका बेचैन हिरन आज भी मौजूद है। बात जुलाई 1996 की है। मैंने स्व. डा. विट्ठल दास मोदी की अध्यक्षता में उनके एकल काव्य-पाठ का आयोजन किया। उपस्थित साहित्यकारों, पत्रकारों के बीच वे देर रात तक अनवरत अपनी कविताएं लोगों की फरमाइश पर सुनाते रहे। बड़े हो मान थे बल्कि एक दिन बाद भी अखबारों के लिए बातचीत करते रहे।

युवा पत्रकार संजय तिवारी को एक रिपोर्ट अपने- 'कल महुआवारी चलकर शहर में आ गयी' महुआ मन भर झूमा। जो भर मुंहाने रहे। बड़े हो मान थे बल्कि एक दिन बाद भी अखबारों के लिए बातचीत करते रहे।

मोती बी.ए. के साथ लेखक मधुसे बायें

मुझ और खूब लगता कुतरया। फलीभूत यह हाल महुआवारी में ही आयी। शब्द थे। चित्र थे। छोटा थे और रोमक भी। हां, यह गोहे थी लोकमान थी।

मेरे ख्याल से मोती बी.ए. को यह अंतिम अनौपचारिक आत्मीय उपस्थिति थी हमारे महानगर में। एक और सुखद स्मृति कौंधती है। दो साल बाद 20 अगस्त 1998 को। कुछ साहित्यकार, पत्रकार मित्रों के साथ हम गोरे बरहज पहुंचकर कविवर मोती जी को उनके जन्म दिन की याद दिलाने पहुंचे तो यह उनके लिए 'सरप्राइज' था और हमारे लिए 'सरप्राइज'। जी हां, खुल ये हाले हुए कि मोमबत्ती के मद्धम प्रकाश में देर रात तक सुनते रहे और कपड़े का जो बैनर हम ले गये थे उन्हें बहुत दिनों तक भेंट की गयी शाल की तरह ओढ़ लिया करते थे- शायद यह भाव देते कि यह आवरण नहीं, अलंकार है, पुरस्कार से बढ़कर आत्मीयता का, सहज सम्मान का।

एक कवि को और चाहिए भी क्या? शायद यही। लगभग तीन दर्जन कृतियों के प्रणेता मोती बी.ए. की अधिकांश कृतियां काव्य-कृतियां। इस तरह उनकी रचना-यात्रा एक काव्य-यात्रा है। निश्चय ही उनकी अपनी जीवन यात्रा का सत्य।

अपनी कृतियां उन्होंने किस किसी तरह खुद ही प्रकाशित की उन्हें कई बार सरकारी गैर सरकारी पुरस्कार सम्मान मिला। हालांकि उनके लिए सबसे बड़ा पुरस्कार रहा है पांच दशकों तक निरंतर जन मानस के हृदय से जुड़ा हुआ। इसमें भी ज्यादा समय के आस-पास भोजपुरी माटी में मचलने और कुलांचे भरने वाले इस अद्भुत अल्प 'हिरन' के प्रति निष्ठा और चाहत रही है। जिसकी तलाश, पानी की तलाश खत्म नहीं हुई। जो हां, यह महज मृग मरीचिका नहीं।

सन् 1970-72 तक आंखों में डूबे गोरा, चाटनिका फलत छन-छन बाटे, हरसिंगार के फूल, मृगतृष्णा, कवि भावना, मानस कवि और कविता, समिधा और आत्मशोध यह जैसी अनेक गंभीर काव्य कृतियां प्रकाशन में आ चुकी थीं। सन् 1974 में मैंने समिधा पर समीक्षा के बहाने एक लम्बा लेख मोती बी.ए. पर प्रकाशित किया था। मैं तब भी सोचता था और आज भी मेरा कथन है कि अपनी माटी से सम्यक कवि को संवेदना सहित जीवन में अनुराग, प्रेम, उल्लास के स्वर को अनुगुंजित करती है तो उसके स्वाभिमान अथवा व्यापक अर्थों में स्वतंत्र चेतना के विचित आहत होने पर उसके अन्तस को उन्मथित करने वाला झकझोरेगा, विद्रोह का स्वर सम्मोहन करता है। मेरे विचार से इन सबके मूल में है एक टीस, एक दंश, एक प्यास, एक आहत- एक शब्द में कहें तो एक 'आकुलता'।

निश्चय ही आकुलता ही जननी है छंद की। छंद से जुड़े व्यक्ति की चरितार्थता इसी में होती है। मोती बी.ए. के नाम को पहचान बनी। उनकी आरम्भिक दौर की ही एक कविता का एक अंश यहां उद्धृत है- जो मेरे विचार से कवि की उसी अनवरत आकुलता को व्यक्त करने की अद्भुत मिसाल है-

नाचत बाटे घाम रे, हिरन का पियासा।
जेठ की दुपहरी में, रेत का वा अगम।
रेतिया बतावे दूर नाहिं बाटे धारा
तबहीं अउरी दउरा हिरना पा जइबा किनारा।
खर पतवार ले के मड़ई छवावे
दुनियां के संग दुपहरिया बितावे
मारल-मारल फिरे एगो जिउवा बेचारा
तबहीं अउरा दउरा हिरना, पा जइबा किनारा॥

जीवन बीत चला हो तो क्या हुआ, वह दौड़ खत्म नहीं हुई। जारी है। क्योंकि प्यास जारी है। इसलिए तलाश जारी है। हां, कभी खत्म नहीं होती पानी की तलाश। ❑

संवरिया लामे जाये के परी

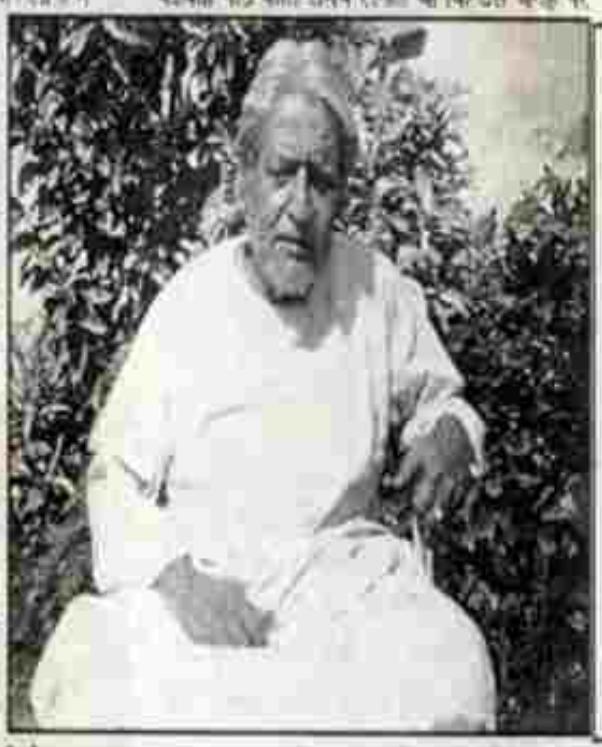

डा. बलवन मिश्र

तब मैं [illegible] कवि सम्मेलन सुनने में बड़ी दिलचस्पी रखता था और निज जी को अनुपति का जोड़ा करके खूब जाना था। तब कविता के समय में आती नहीं थी, लेकिन कवियों एवं कवियित्रियों को देखने का शौक जरूर था। उस समय हाईस्कूल एवं इण्टर कालेजों में साल में एकाध बार कवि सम्मेलन जरूर आयोजित होता था। काफी पहले से समिति कार्यकर्ता घूम-घूम कर चन्दा वसूलते थे और मोटे खर्चों के बाद बची राशि से आने वाले दिनों में बच्चों के लिए छात्र मिल जाती थी और खेल अनुशासित का मार्गदर्शन हो जाता था। एक प्रभाव और पड़ता था। लोगों में एकाध निकल जाते थे जो बाद में लिखने लगते थे (कविता करने लगते थे)। जब वे किसी को अपनी कविता सुनाते थे, मनचाहा बखान तो लोग कहते थे वहीं कवि सम्मेलन में झटके हैं। कवि सम्मेलनों में उन दिनों श्याम नारायण पाण्डेय पीड़ित मय चालसा विकटी, नीरज मुंह फैजाबादी आदि बड़े नामी गिरामी कवि थे। इन्हीं नामों के माटी की महक एवं कमनीयता वाली बाद, खूंटा, पाती, महुआ आदि के सहारे अपनी अमिट छाप छोड़ने वालों में मोती बी.ए. का नाम भी बड़ी श्रद्धा से लिया जाता था।

उन दिनों मुझ जैसे लोग भूमि टाट पर बैठाये जाते थे। एक अदद माइक की व्यवस्था रहती थी। [illegible] बाबू दिवाकर राय [illegible] कुर्ता में अपनी लम्बाई एवं मोटी काया, मोटी एवं सुभाषनी बोली में घोषणा करते थे। तब हम लोग महिमा मात्र दिवाकर बाबू नाम जानते थे। मंच पर कवि लोग जब बैठते थे तो सबसे पीछे उनका परिचय दिया जाता था- फलाने आ गये हैं, फलाने पधार रहे हैं वही हैं। जब कवि सम्मेलन प्रारम्भ हो जाता था तो सत्ता कविताओं पर वाह-वाह की तालियां एवं अस्वर (अनुकम्पा कविताओं) पर हुल्लड़ होता था। किसी-किसी बिस गुरुओं की छुट्टी मैनेजर साहब लगाये रहते थे वे भीड़ को शान्त करते थे। तब लोग आटोग्राफ नहीं लेते थे। उनकी कविताएं ही नोट करते थे। हॉस्टलवा गैस में हवा भरते समय एकाध लाइन छूट जाती थी तो दूसरे दिन किसी से मिलाकर दुरुस्त कर लेते थे। यही कारण था कि नचदेखवा के हाथ में लाठी एवं कवि सम्मेलन में जाने वालों के हाथ में कलम, कैमरा, फावड़ा आवश्यक माना जाता था। लोग कवियों को बड़ी श्रद्धा से देखते थे और मुंह बाये रहते थे कि जैसे दूध को कटोरिया डालकर और लोग लपक लेंगे।

उन्हीं दिनों मधपतिया के एक कवि सम्मेलन में मोती [illegible] पाठ के लिए खड़े हुए तो न मालूम कौन लोग चिल्लाने लगे 'महुआ वाले वाली कविता पढ़िये'। तब अच्छी चीजों को पसन्दगी पर किसी को एतराज नहीं होता था, और कुछ बातों को बिना मना किये लोग नहीं रह पाते थे। यह वह समय था जब लोग खाली बातों से नाते थे और मतलबीपन जैसी चीजें नहीं थीं। मोती बी.ए. ने पढ़ना शुरू किया था-

असों आइल महुआवारी में बहार सजनी
असों महुआ खूब गदराइल ...
जगी से पनघट ले फुलाइल ...।

कविता पाठ करते समय लगता था कि उस जगह पर सचमुच महुआ टपकने लगता था जिसकी कोमलता एवं इस की रक्षा उसमें लगे जीव करते थे। पांच-छैहाल बीत गये यह कविता पढ़े अनपढ़ के बीच दौड़कर छा दी थी। चौतरफा वाह-वाह। यह कविता मैंने भी सुनाई थी, सबने सुनाई थी, क्योंकि महुआ तब सब गांवों में हुआ करता था। पूरी कविता कोहना तक सबको से जाती थी।

मोती बी.ए. ने लोगों को जान कर दिया यह सुनकर कि

अपने खूंटा से बछरू बन्धा गइल बा,
वहि खूंटा तोरवला से का फायदा।

इस कविता को लोगों ने न मालूम कैसे समझा और सब लोग चुपचाप बैठ गये थे। अजनु चार कविताओं की फूटे थी। 'सजिनी हिरना अउरी दउरा पा जइबा किनारा'। लोगों को दिलासा दिया गया था। जैसे हमारे पूर्वजों महुआ आने से नहीं उबरते थे- लपक बनी रहती थी, वैसे मोती जी की कविता से लोगों में लालसा बढ़ती होती जाती थी।

ऐसा नहीं था कि तब कवि सम्मेलनों में समझदार लोग मकान के अलग अलग खण्डों में क्रियाशील पर थे। बहुत कुछ जानने सुनने का अवसर मिला। मोती बी.ए. के विषय में मात्र भोजपुरी के कवि, बम्बई फिल्म नगरी से सम्बन्ध, अध्यात्म, ब्राह्मण, बाहन किसानी, सुन्दर, मुकाम, यह सब मेरी जानकारी थी। धीरे-धीरे बहुत सी नई बातें जानने को मिलीं-

हाले दिल से मेहरबान मत पूछिये
हम तजुर्बात के हैं सताये हुए
यह हंसी है जहर को बुलाई हुई
मैं ठहाके सभी चोट खाये हुए। (ठहके मुहर)
सिरहाने चांद है मुझसे लिपटकर चांदनी सोई
मुझे क्या गम अगर दुनियां में मेरा हो नहीं कोई
महफिल से जनाजा उठ जाये, हमदी की तमन्ना कौन करे

किश्ती को भंवर में कौन मिले, साहिल की तमन्ना कौन करे।

मैंने कहा था कि वे कुछ गम्भीर कविताएं सुनते हैं।

ऐसे लोगों को जान से अच्छी जवानी जायेगी,
मौत से बदतर बुढ़ापा आयेगी।

पसंद आती थी।

बाद के दिनों में जब देवरिया (देवरिया) में नौकरी करनी पड़ी तो कई बार मोती बी.ए. को सुनने उनके घर में जाने का अवसर मिला। संयोग देखिये मोती बी.ए. के प्रिय शिष्य एवं उनको अपना परम आदरणीय मानने वाले दिवाकर जी से सम्पर्क का अवसर मिला। यह योग में संयोग जैसी बात थी। मैं एवं भाई दिवाकर जी एक ही [illegible] कर्मठता कभी एवं गहे पर सोने वालों में कोई फर्क करती है। मर्मता हमारे भौतिक लिखना को दोहरा के पर को चोर देती है। भौगोलिक बंटवारे, नदी जल विवाद, पर्वतों की हरबंदी, हवाओं का रुख, अमीरी एवं गरीबी जैसी चीजें मर्मता के उत्स को रोक नहीं पाती। अगर चीज है तो मानवीय को उन्नति नापने का नापन छोटा पड़ जाता है। देश जब भी थोड़े देर मल्टीकल्चर, पेम्पो, कंसल, क्रैक्स लाइन कुकुर, गुड्डे से बिस होगा, एक न एक दिन होना ही तो उस समय उनके शाश्वत मूल्य उभरेंगे और मोती जी की वाहवाही उनको अपनी साधिनी बनाने में वही सुख देगी जो मां अपने बच्चे को आंचल में देती है। जो सुख बच्चे को बात को घोड़ाना चढ़ने पर मिलता है, वही सुख लोगों को उनकी कविताओं से मिलेगा।

पिछले वर्ष उनके निवास पर मेरी उनसे भेंट हुई थी। मैं भाई मुकेश जी, रविन्द्र पाण्डेय एवं अनुपम जी के साथ उनका आशीर्वाद लेने पहुंचा था। दो रात तक आयोजित, सब उनके परिवार जनों से मिलता रहा। खूब उन्होंने एवं भगवान माण्डवी को खुशी रखे, माण्डवी ने कविताएं सुनाई।

लेखनी के धनी, इस महान विभूति को ठोक में प्रणाम करने का अवसर मिला। मन ही मन मैंने भाई अमित त्रिपाठी के सौजन्य को साधुवाद दिया। लौटते वक्त जो साध मन में थी आज भाई शैलेन्द्र मणि त्रिपाठी के माध्यम से पूर्ण हो रही है। आज भी उस महान आत्मा, परम आदरणीय, मोती बी.ए. को ये पंक्तियां याद रहती हैं-

हुन वालों न हैरान हो
हमको कुछ भी नहीं चाहिए
आंसुओं में अगर जिन्दगी
जिन्दगी बस यही चाहिए।

आज का एवं मरा से बेशक भोजपुरी को दूर दूर तक पताका फहराने वाले मोती बी.ए. के प्रति जो भाव मेरे मन में है, उसको व्यक्त करने वाले शब्दों के अभाव के लिए मैं शर्मिन्दा हूं। जो कुछ बन पड़ा है, मात्र उन्हें प्रणाम करने का एक और प्रयास है। मेरी जिन्दगी में यह पंक्ति बराबर काम आती रहेगी-

जिस्म से कटकर जिस्म तड़पेगा
रूह को रूह से मिला न सका।

इस तरह की तमाम रचनाओं को भाई मुकेश जी ने अपने स्वर में बराबर सुनाते रहे। हमें यह बराबर याद आता रहा कि बड़े लोगों को देखकर मिलकर बहुत सी बातें आपसे स्वयं सीख सकता है पर काम आते समय मैं यह पंक्ति गुनगुनाता रहा-

अपने चल ही भरके बाहों जी गटरिया
संवरिया लामे जाये के परी। ❑

गुरुवारीय जागरण

गोरखपुर, 16 मई, 2002 4

बह चल जीवन दीप लहर पर

दिवाकर प्रसाद तिवारी

बड़ी गहन-दर्दभरा से निकलकर बनारस, मुम्बई, बरेली (बीच में लखनऊ भी) तक फैले विस्तार में कवि-गीतकार मोती बी.ए. ने जीवन को भिन्न-भिन्न कोणों से देखा-परखा-समझा-जिया, छन्दबद्ध कविता से मुक्त छंद तक काव्य की सभी शैलियों-रीतियों-भिन्न विधाओं के प्रयोग के साथ उनकी रचना प्रक्रिया में कितने चित्र-चित्रण, बिम्ब-प्रतिबिम्ब उभारे गये- उनका सबका एक कोलाज बनता गया जिसमें न जाने कितनी छवियां स्पन्दित होती चली गयीं- आज उनका लेखा-जोखा करने बैठता हूं तो उनके सबके साथ स्वयं होकर उनके वास्तविक परिवेश-कथ्य-शिल्प की समीक्षा के अर्थगत बिन्दुओं का समाहार एक चुनौती जैसा लगता है। इस चुनौती यह कि कहीं लेखन-दायित्व से गुजरते हुए सह स्वर, रामनाथ पाठक 'प्रणयी', भोला शंकर व्यास, सूर्य प्रसाद दीक्षित, प्रताप सिंह, कृष्ण गोपाल श्रीवास्तव, रामदेव शुक्ल, अवधेश नीरज, विश्वनाथ प्रसाद तिवारी, माता प्रसाद त्रिपाठी, महेन्द्र नाथ पाण्डेय, शैलेन्द्र त्रिपाठी, भोलानाथ गाहमरी, अशोक द्विवेदी, लारी आजाद जैसे

जीवन की पहली गीत रचना जिसे आज ने मुखरित स्वर दिया था। लहर पर पांव रखकर सागर लांघने की महान आकांक्षा से-बढ़ते आकाश, घूमते दिशायें- तक संघर्ष के दुर्गम पथ की लम्बी कठिन यात्रा में गिर-गिर-उठ-उठ कर कवि ने किन-किन पड़ावों को पार किया- इस लम्बी कहानी के न जाने कितने चक्रवात मोड़ हैं। आर्थिक मोर्चे पर दैन्य की दशा ने युवा कवि को

1939 से 43 तक बनारस में आगामी, आज, संसार और आकाशवाणी के सम्पादकीय विभाग में नौकरी करने पर मजबूर किया। तब वर्धालिस के आन्दोलन की आग ठंडी नहीं हुई थी। ब्रिटिश हुकूमत के विरुद्ध खड़ा होने पर भारत रक्षा कानून के अन्तर्गत उन्हें बनारस के सेन्ट्रल जेल में नजरबन्द होना पड़ा।

कवि सम्मेलनों की ख्याति जब सुनहले भविष्य की कल्पना को तर्कसंगत आकार न दे सकी तो कवि ने फिल्मी दुनिया की राह पकड़ ली- 1944 में। फिर तो 1952 तक लाहौर और मुम्बई में गीतकार के पद पर रहकर 'कठोर कर्तव्य, कन्हैया ने मनाया कि नदिया के पार दे उतार, अखिल मिलन के अँखिया रोये दिन रात', 'हमको तुमसे ही आशा तुम हमारे हो न हो' जैसे अनेक गीत, गजल, कौव्वाली लिखकर मोती बी.ए. ने फिल्मी गीतों को आम आदमी की जुबान पर चढ़ा दिया। ये सभी हिट साबित थे। तब भोजपुरी को फिल्मों में उतारने की कल्पना बहुत दूर थी, लेकिन मोती जी के गीत दर्शकों के कंठहार बन गये। फिल्मी जगत चौंक गया। फिल्मों में भोजपुरी के प्रयोग का श्रेय उन्हें ही है, परन्तु वहां के ठाकुरवाद, भिखारीवाद और इधर पर की लॉबियों ने उन्हें आगे टिकने नहीं दिया। कुछ नामी-गिरामी गीतकारों द्वारा अपने शब्द-शिल्प एवं धुनों की चोरी ने उन्हें आघात भी पहुंचाया लेकिन वहां से मन सर्वथा के लिए नहीं टूटा। 1970 के बाद मोती जी ने एक बार फिर मुम्बई की राह पकड़ी और 'गजब भइले रामा', ठकुराइन तथा एक और फिल्म में गाने लिखे। तथापि फिल्मी दुनिया को यह दूसरी यात्रा भी एक क्षेपक सिद्ध हुई।

अब जीवन की डगर और लम्बी-चौड़ी हो गयी। कवि मोती बी.ए. (एम.ए., बी.टी., साहित्यरत्न), इतिहास, तर्कशास्त्र, अंग्रेजी के प्रवक्ता के रूप में आकाश बनारस के इण्टर कालेज में अध्यापन करते हुए काव्य साधना में लगे जो लगे ही रह गये। 1960 (अवकाश प्राप्ति) तक और उसके बाद भी इधर हाल तक। उनकी अधिकांश रचनायें 1970 के बाद ही त्रिपथगा एवं मिर्जे के बहुत आग्रह के बाद पुनःसरस प्रकाशित हुई। आकाशवाणी और दूरदर्शन ने जब तक उनकी कविताएं एवं लोक गीतिकायें प्रसारित कीं। उत्तर प्रदेश

अपने को अन्तः चक्षु से, कलाम के पन्नों पर उतारते हुए। कभी खुद लिखा था-

'कलम होती न विदा तो कभी का मर गया होता।' हरिवंश राय 'बच्चन', नरेन्द्र शर्मा, बालकृष्ण शर्मा 'नवीन', गोपाल सिंह नेपाली, अमृतराय सिंह, देवेन्द्र कुमार विद्याधर द्विवेदी 'विद्य' जैसे छायावादोत्तर या यों कहें कि आधुनिक हिन्दी कवि-गीतकारों में मोती बी.ए. का कृतित्व उस सेतु की तरह है जो छायावाद एवं प्रगतिवादी सरोकारों काव्य प्रवृत्तियों से जुड़ते हुए, समय के साथ बदलते सन्दर्भों को संवेदना के स्तरों एवं यथार्थ बोध-दर्शन को शब्द रूप देता है। 'समय से लड़ो' लम्बी कविता को सम्पूर्ण संवेदना एक गीत जैसा बिंब बनाती है-

डोल उठी तारों की ताल ताल
बोल उठी कोयल डूबे सवाल
घोल उठी मधुरस पिघले प्रवाल
झूम-झूम लहर गयी
पाषाणी लता की भुजायें विशाल
हो विकल चलीं।

जीवन के पूर्वार्द्ध में कला कवि के लिए आराध्य साध्य है तो काव्य (आओ चलें आज कला की उतारें आरती) और वह सौन्दर्य के एक-एक कण पर मुग्ध है (छवि को एक किरन कब कम है!) किन्तु उत्तरार्द्ध में समय के पाषाण की खुरदुरी जमीन पर कला जीवन पथ का मोहन बनती दिखने लगती है-

ऐसे में आकर तुमने हो दिया मुझे झकझोर।
बदल गया आकार, दिशायें घूम गयीं॥

× × × × × × ×

मूरतों को कलम तूफ़ते हम देख रहे हैं
जिन्दों के ख्वाब टूटते हम देख रहे हैं।

× × × × × × ×

कवियो! आओ, आओ कविताओ! अपना अर्थ कहां खो आयी हो?

× × × × × × ×

आंखों में सागर, कंठ में हलाहल, पेट में
कलानल, जिह्वा में बारूद, हाथ में बन्दूक
मुझे एक बार देखो तो सही।

भाषा और भाव के स्तर पर मोती जी की रचनाओं की एक जातीय पहचान है वह है भाषा के बहुलवादी प्रकाशन-रचना एवं विन्यास- की लम्बी परम्परा खाने भाषाओं। उन्हें अरबी, फारसी, उर्दू की काव्य परम्परा में भी उतना ही लगाव है जितना भोजपुरी और खड़ी बोली में।

खुद की दी हुई यह जिन्दगी निकामत है जिसमें भी अपना नहीं उसकी ही अमानत है

रूह की शक्ल में वह भी इसी में रहता है
जिन्दगी ऐसे जिलाये तो उसे लगता है।

× × × × × × ×

दुनिया में अमन चैन फैले
घर-घर में सुख के दिये जले
जब तक हममें है दम में दम

की रचना-धर्मिता को नजदीक से पहचानने में असीमतो अभिनेय सेतु जैसा है।

1937 से 2002 तक पसरी हुई, प्यार के सहारे (मैं प्यार चाहता हूं-छाप

(संस्कृतायन पुरस्कार से) सम्मानित किया।

अब कवि शिथिलता है। जगीन में आपनी पीठों पर सिमट गये हैं। कान-आंख जवाब दे चुके हैं। जीवित है तो कलम के सहारे, टटोल-टटोल कर,

साहित्य सृजन में निरन्तर का धक्का पाते अपनी ही मातृभाषा में कुंठा है।

शेष पृष्ठ 6 पर

कविवर मोती बी.ए. की प्रमुख कृतियां

शेक्सपीयर के सानेटों का हिन्दी पद्यानुवाद।

काव्य रूपक-'कवि-भावन-मानव'।

स्फुट रचना संग्रह-'कीर्तिध्वनी'।

हिन्दी की नई शैली में रचित कविताएं- 'आत्मगेय पद'।

'समिधा' (गीतांजली)।

गीतधारा-'कवि और कविता'।

तड़पते हुए गीत-'मृगतृष्णा'।

अव्यक्त की तड़पन 'पावस छम-छम जाने'।

पावस की बूंदों और ज्योति मालाओं से घिरे गीत-'बाटिकाएं'।

मजल काम और भोले नयन के गीत-'आंसू डूबे गीत'।

निराला जी को समर्पित खंड बड़ी कविताएं- 'हर सिंगार के फूल'।

भोजपुरी कविता संग्रह- 'सेमर के फूल'

'मोती के मुक्तक'। 150-150 भोजपुरी, हिन्दी तथा उर्दू के मुक्तक।

लोक संगीतिका संग्रह 'बन वन बोले ले कोइलिया'।

'मंजरित' भोजपुरी पद्यानुवाद।

'भोजपुरी सानेट'। 'तुलसी रामायन' भोजपुरी।

व्यंग्य रचना-'राशन की दुकान'।

हिन्दी उर्दू गजल 'दर्द गुहार'।

'मांझी की पुकार' 'प्यार की रुपसी'। अंग्रेजी से हिन्दी पद्यानुवाद।

राजनीतिक कविताओं का संग्रह- 'गंधी से एलबट'।

निबंध संग्रह-'इतिहास का दर्द'।

उर्दू चना-'रुके गुहर'। 'एक शायर' उर्दू नज्म।

'लव एण्ड ज्यूटी' (मोती के सानेट्स) तथा राबर्ट ब्राउनिंग की सर्वश्रेष्ठ कविताओं को गीतमय रूपान्तर- 'रवि बेन एजरा'। ❑

मोती जी को प्राप्त पुरस्कार एवं सम्मान

1973-74 में उत्तर प्रदेश शासन के शिक्षा विभाग द्वारा 'संमिधा' पुस्तक हेतु-'राज्य साहित्यिक पुरस्कार'।

1978 में उप्र राज्य सरकार द्वारा अवार्ड अभ्यागत पुरस्कार।

1984 में उप्र हिन्दी संस्थान लखनऊ द्वारा भोजपुरी की आजीवन सेवा हेतु-'राहुल सांकृत्यायन पुरस्कार'।

1992 में हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग द्वारा 'भोजपुरी रत्न अलंकरण'।

1993 में अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य परिषद उप्र द्वारा 'कवि रत्न उपाधि'।

1998 में विश्व भोजपुरी सम्मेलन-अन्तर्राष्ट्रीय भोजपुरी अभिलेखागार द्वारा भोपाल में 'सप्त सम्मान'।

महावीर प्रसाद केडिया हिन्दी साहित्य एवं संस्कृति संस्थान द्वारा 'अनवट सम्मान'।

मूल से मुकाबला

सुशील कुमार

किसी एक भाषा से दूसरी भाषा में मौलिक साहित्य का अनुवाद बहुत कठिन एक सामान्य कार्य मानता है। अनुवाद तभी सफल तथा सुसंगत होगा जब अनुवादक को दोनों भाषाओं की मौलिक संरचना, साहित्यिक परम्परा एवं भाव सम्पदा की गहन विशद जानकारी हो। कविता का दूसरी कविता में रूपान्तरण तो और अधिक कठिन होता है।

पूर्वांचल के कवि मोती बी.ए. ने एक दर्जन से अधिक मौलिक कृतियों का सृजन तो किया ही है उन्होंने लगभग आधा दर्जन अंग्रेजी और संस्कृत काव्य-ग्रंथों का भोजपुरी और हिन्दी में पद्यमय रूपान्तरण भी किया है। शेक्सपियर के सानेट्स का जब वह अनुवाद कर रहे थे तो उन्होंने शेक्सपियर के काव्य की आत्मा का साक्षात्कार किया। वह शेक्सपियर से एकाकार हुये। उन्होंने लिखा-

"समर्पित शेक्सपियर दोस्त को उसकी कहानी है।"

शेक्सपियर के सानेट्स का अनुवाद पढ़ते समय ऐसा नहीं लगता कि हम कोई अनुवाद पढ़ रहे होते हैं वरन् लगता है हम मोती बी.ए. द्वारा रचित सानेट्स (चतुर्दशपदी) पढ़ रहे हैं। मोती बी.ए. ने स्वयं की अंतिम 'युग्म पंक्ति' का अनुवाद कितना सरल एवं सहज है-

"मधुरतम वस्तु भी दुष्कृत्य से अपकीर्ति-पाती है।

कमलिनी क्यों न हो, सड़ जाय तो दुर्गन्ध आती है। राबर्ट ब्राउनिंग के 'रबी बेन एजरा' के अनुवाद के एकाध छन्द भी बानगी देखें है-

"हम गीत यूं न गायें
यही हसीन दुनिया
आओ गले लगायें
पंछी उड़े गगन में
पर खोल चहचहायें
इसे लुप्तमय कालों में
हम यूं न आजमायें
हम गीत यूं न गायें।"

इसी प्रकार कालरिज के 'एनसीएन्ट मरिनर' जान ड्रिंकवाटर की काव्य कृति अजाब लिंकन और डी.जी. रोसेट की लम्बी सुन्दर अनुवाद कवि ने किया है।

कालिदास के प्रसिद्ध संस्कृत काव्य 'मेघदूत' का यद्यपि अनेक भाषाओं में अनुवाद हो चुका है किन्तु भोजपुरी में पहली बार उसका अनुवाद मोती बी.ए. ने किया। उसे पढ़कर ऐसा लगता है कि कालिदास गंगा के किसी चौपाल में बैठकर अपना मेघदूत सुना रहे हैं। सभी सुनने वाले कवि के विरहीन वियोग से तादात्म्य स्थापित कर रहे हैं। मोती बी.ए. के अनूदित ग्रंथों को पाठकों एवं समालोचकों ने पूरे मन से सराहना की है। ये अनूदित ग्रंथ आज भी प्रासंगिक, स्मरणीय हैं। इनमें मूल जैसी ऋतुता, सरलता और तरलता है। ❑

गुरुवारीय जागरण

गोरखपुर, 16 मई, 2002 5

भोजपुरी के दैदीप्यमान नक्षत्र हैं मोती बी.ए.

डा. अजय कुमार मिश्र

मन में अतीव विस्तार, हृदय में संवेदनशीलता तथा गगन का अवलोकन उपजन करने वाली भाषा है भोजपुरी।

सर्वप्रथम 'भोज' शब्द आर्यों के प्राचीनतम ग्रंथ ऋग्वेद के 10वें मण्डल के 117वें सूक्त के छठें 118वें मंत्र में प्रयुक्त किया गया। ऋग्वेद 'भोज' शब्द साहसी, उद्यमी तथा दानशील लोगों के गुणगान के प्रसंग में अर्थित है। प्राचीन भारत के दो महाकाव्यों में से एक-महाभारत में भी संकेतक अर्थ में इस शब्द का प्रयोग किया गया। लगभग 1450 वर्ष पूर्व संस्कृत के उद्भट विद्वान तथा पराक्रमी शासक भोजराज के समय 'भोज' शब्द एक राज्य के अर्थ में प्रयुक्त हुआ। भोजराज को विदुषी पत्नी भानुमती के नाम पर ही 'भानुमती पिकार' मुहावरा आज भी लोकमानस में प्रचलित है। राजनीतिक तथा धार्मिक कारणों से भोजराज ने काशी की बजाय भोजपुरी में अपनी राजधानी स्थापित कराया।

भोजपुरी भाषा का गौरवशाली अतीत रहा है कि भोजपुरीय क्षेत्र के लोगों ने अपने पराक्रम के साथ-साथ कलम से भी भारतीय इतिहास को नई ऊंचाई प्रदान किया। इस सत्य का आग्रहपूर्ण गोपाल ने भी स्वीकारा है। एक विस्तृत क्षेत्र में निवास करने वाले विशाल जनसमूह द्वारा बोली जाने वाली 'भोजपुरी' अर्थ मागधी प्राकृत की पुत्री है। भक्तिरस तथा गोरक्षकत्व का काम इस भाषा के आदि साहित्यकारों के रूप में लिया जाता है। भोजपुरी भाषा एवं संस्कृति एक विशिष्ट जीवन शैली है जिसने किस काल में इसे आत्मसात किया वह आनन्द सागर में उतरी ही गहराई तक डूबता चला गया।

भोजपुरी की विशिष्ट शैली तथा समृद्ध शिल्पता का उपयोग कर अनेक मूर्धन्य साहित्यकारों, कवियों, रचनाकारों तथा गायकों ने राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्धि पायी है। ऐसे ही सम्मान प्राप्त व्यक्तित्व के धनी भोजपुरी के शेक्सपीयर के रूप में ख्यातिप्राप्त भोजपुरी के पुरोधा मोती बी.ए. किसी परिचय के मोहताज नहीं हैं बल्कि वे भोजपुरी आसमान के देदीप्यमान नक्षत्र हैं।

1 अगस्त 1919 को पूर्वांचल के दो प्रमुख सन्तों पूज्य बाबा राघव दास तथा ब्रह्मलीन योगीराज देवरहा बाबा जी तथा गन्ना के मध्य मोरंग गांव में जन्म लेने वाला विनम्र तथा साहित्य मुखी बालक ही आज अपनी सरलता लेखनी तथा चिन्तनपूर्ण प्रतिभा के बल पर मोती बी.ए. नाम से सम्बोधित होता है। इनके अन्दर साहित्य के प्रति सहज और स्वाभाविक आकर्षण बाल्यावस्था में ही था। जो भी कविता मिल जाती उसे कण्ठस्थ कर लेते तथा हर समय उसे अपनी मुखेनी तथा मीठे आवाज में गाया करते और यह सर्वसिद्धता आज भी सर्वोच्च है। उन्हीं के शब्दों में 'मन-प्राण को चुराई-कोहाई गइले से हो रही थी और कवि बन दिए।' 16 वर्ष की आयु में प्रथम रचना-

अरि मरिछ घूंघट के पटखोल।

हिन्दी दैनिक आज में प्रकाशित हुई। इसके बाद तो ऐसी अजस्र धारा बही जो निर्बाध गति से आज भी जारी है। मोती जी ने 1939 से 43 तक कई समाचार पत्रों से जुड़े रहे।

सामान्यतया मोती जी हिन्दी और भोजपुरी के पुरोधा हैं। अंग्रेजी तथा उर्दू में भी उनसे साधिकार रचनाएं की हैं। वे काव्य जगत में अतीव हैं

अ 1° र

अरि मरिछ घूंघट के पट खोल।

हिन्दी दैनिक आज में प्रकाशित हुई। इसके बाद तो ऐसी अजस्र धारा बही जो निर्बाध गति से आज भी जारी है। मोती जी ने 1939 से 43 तक कई समाचार पत्रों से जुड़े रहे।

सामान्यतया मोती जी हिन्दी और भोजपुरी के पुरोधा हैं। अंग्रेजी तथा उर्दू में भी उनसे साधिकार रचनाएं की हैं। वे काव्य जगत में अतीव हैं

गीतकाव्य के वे महारथी ही हैं। आज भी कवि सम्मेलनों के शृंगार हैं। यद्यपि उन्हें हिन्दी में मुखरित एवं जनप्रसिद्ध कवि एवं गीतकारों का सर्वोच्च रहा तब भोजपुरी के लिए मोती जी ने अपने जीवन के का होम करके इसके उत्थान का उस समय संकल्प लिया जब भोजपुरी का नाम भोजपुरी क्षेत्र में होने कम लोग जानते तथा बोलते थे। आज भोजपुरी काव्य साहित्य किसी भी देशी या विदेशी भाषा साहित्य से कम मौलिक तथा लोकप्रिय नहीं है तथा इसे इस मुकाम पर पहुंचाने में मोती जी का अकथनीय सर्वोच्च स्थान बना रहेगा। हिन्दी साहित्य में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र तथा आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने भाषा के निखार तथा विकास के लिए जो कार्य किया वही कार्य भोजपुरी के लिए मोती जी

सामने रहे। प्रारम्भ से ही फिल्में सूचना, शिक्षा तथा ज्ञान विज्ञान की सशक्त माध्यम रही हैं यही कारण है कि फिल्मों को अन्तर्राष्ट्रीय लोकजीवन की ही एक अकेलीय प्रस्तुति मानी गयी। इसीलिए फिल्मों को न केवल लोकप्रियता मिली बल्कि हम सभी ने उसमें अपने जीवन के विविध रंगों का अक्स भी देखा। स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व ही मोती जी ने फिल्मों के माध्यम से भोजपुरी भाषा तथा साहित्य को जोरदार प्रचार को कल्पना किया। मनीषी सदैव दूरदर्शी होता है तथा दूरगामी परिणामों पर अपनी दृष्टि रखता है। लगभग 55 वर्ष पूर्व फिल्मों में भोजपुरी गीतों का समावेश कर मोती जी ने अपनी इसी दूरदर्शिता का परिचय दिया और उनके सद्प्रयासों का आज सुपरिणाम भी दिखायी दे रहा है कि न केवल भोजपुरी फिल्मों में बल्कि हिन्दी फिल्मों में भी भोजपुरी गीत स्थान पाने लगे हैं। भोजपुरी लोकगीतों के कर्णप्रिय संगीत, धुन तथा लय से भारतीय साहित्य जगत पहले से ही प्रभावित रहा है उसमें मोती जी के सद्प्रयासों ने सोने में सुहागा का कार्य करके भोजपुरी गीतों को शीर्ष पर आसीन कर दिया। जनमानस की भोजपुरी गीतों के प्रति बढ़ते आकर्षण तथा लगाव के कारण ही 1962 में पहली बार विशुद्ध भोजपुरी फिल्म 'गंगा मइया तोहे पियरी चढ़इबो' का निर्माण हुआ जो सुपर हिट फिल्म ने नाम तथा यश भी कमाया किन्तु यह भी आकस्मिक गुणवत्ता प्रभावित होने तथा भोजपुरी फिल्में भी इससे अछूती नहीं रहीं। मोती जी की कविताओं ने भोजपुरी कविता के मिजाज को नये दिशा प्रदान की तथा उसमें उलाहना की जगह विनम्रता, तीखेपन की जगह सहनशीलता तथा कलंकित के स्थान पर सरलता का प्रदुर्भाव हुआ।

मोती जी की रचनाओं में सहज, आत्मज्ञान, गेयता, विरह प्रकृति, वर्णन तथा सहजता से लेकर वर्तमान सामाजिक तथा राजनीतिक जीवन की विसंगतियों का समावेश वर्णित है इसके अलावा विरोध, शृंगार तथा प्रकृति के वे महारथी रचनाकार हैं। प्रकृति की सजीवता उनकी रचनाओं में सर्वत्र दिखायी देती है।

कटवा के नइया बनइहे रे मलहवा, नदिया के पार दे उतार।

मोरे राजा हो ले धन नदिया के पार, मोती बनी हो तुही मोरे प्राण धार।।

संसार की असारता को दृष्टान्त के माध्यम से सहज भाव से प्रस्तुत करने में मोती जी का कोई जोड़ नहीं है। जीवन की सच्चाई तथा संसार की असारता का चित्रण करते हुए मोती जी ने कहा-

सपने जग भुलाइल बाड़ऽ ऽ।

भोजपुरी के दैदीप्यमान नक्षत्र हैं मोती बी.ए.

मनोज तिवारी 'मृदुल'

भोजपुरी अपनी जिस मस्ती के साथ गीत और संगीत की दुनिया में महक रही है उसका समूचा बजूद जिस धरातल में बनता है वह धरातल ऐसा न होता यदि मोती बी.ए. न होते। मेरे जैसे लोग जिनकी समूची प्रतिष्ठा, रोजी, रोटी और स्टारडम भोजपुरी गीतों की बदौलत है यह कुछ भी नहीं हो पाता यदि पांच दशकों तक हिन्दी कविता के मंचों पर महाआयोजन न गाये जाते।

यदि पुरुषों नाविक के पार न बनी होती, यदि चाहिए मुट्ठियों में मोती बी.ए. न होते। वे हमारे लिए वही हैं जो संस्कृत के लिए कालिदास, अंग्रेजी के लिए शेक्सपीयर और हिन्दी के लिए

मन्द समीर छूट गई है,
रस पराग युत राग-सुरभि।
बिखरा दो न अनमोल,

निर्माण किया। लगभग 60 वर्षों से काव्य साधना में लीन मोती जी के गीतों ने काव्यगत सौन्दर्य के साथ-साथ पाठकों तथा श्रोताओं को अपनी तरफ आकर्षित करने की विलक्षण

हमहूं देखनी एगो लुमन फूल फुलाइल बा।
मगर लोगा मोहाइल बा।

शेष पृष्ठ 6 पर

बहुत कुछ कहना चाहते हैं, कह नहीं पाते मोती बी.ए.

मुहम्मद कामिल खां

मोती बी.ए. अब बूढ़े हो चुके हैं। शारीरिक और मानसिक रूप से बुढ़ापा साफ नजर आता है। आपे भी क्यों न-संन्यास आश्रम में प्रवेश कर 84 साल की उम्र पार करने वाले हैं। अपनी साहित्यिक सेवा के माध्यम से संयमित जीवन जीने वाले मोती बी.ए. 81 वर्ष की उम्र तक सक्रिय थे। साहित्य सृजन में उनका योगदान रहा। कविता लिखना और गाना उन्हें प्रिय था। साहित्यिक गोष्ठियों में भाग लेना और बेबाक बोलना उन्हें भाता था। कवि सम्मेलनों और गोष्ठियों में अपनी रचनाओं से श्रोताओं को मंत्र मुग्ध कर वाहवाही लूटना उन्हें अच्छा लगता है और वे ऐसा पहलवान करते थे कि सही मायने में वह साहित्य की सेवा कर रहे हैं। विभिन्न रूप से उनकी सक्रियता से साहित्य जगत में उनके योगदान को भुलाया नहीं जा सकता है।

पिछले तीन वर्षों से मोती बी.ए. बिल्कुल बिस्तर पर पड़ चुके हैं। बीमारियों ने अपनी जकड़ में ले लिया है। उन्हें स्वास्थ्य कारण, खांसी और सांस जैसी बीमारियां उनके नजदीक पहुंच चुकी है। शरीर टूट चुका है। इसके साथ ही अब वह चलने-फिरने में मजबूर हो गये है। सुनने की क्षमता कम हो गयी है। आंखों की रोशनी हल्की पड़ गयी है। यही वजह है कि वह कम बोलते हैं। ऐसा नहीं कि बोलना नहीं चाहते। खूब बोलना चाहते हैं, लेकिन शारीरिक और मानसिक कमजोरी के कारण बोल नहीं पाते। पुरानी यादें अक्सर भूल जाते हैं। याद करने की पूरी कोशिश करते हैं, लेकिन जब याद नहीं कर पाते, तो झल्ला उठते हैं। हालांकि उनकी झल्लाहट में क्रोध नजर नहीं आता, चेहरे पर अफसोस दिखाई देता है। स्वर से न गा पाने का उन्हें काफी दुःख है। हो भी क्यों न-जो अपने गीतों को स्वर लहरी में बिखेर कर खूब प्रशंसा अर्जित करते थे आज वे बैठे मूक से गये हैं। वह कहते हैं-जब मैं गाता था- तब अपने गीतों से दुनिया को वश में किये रहता है।... और अब हम, अब हम, अब हम हैं। बस इतना कहकर चुप हो जाते हैं, क्योंकि कम बोल पाते हैं।

ऐसे समय में वह अक्सर कभी गंभीर मुद्रा में होकर कुछ सोचने लगते हैं, फिर हंसने लगते हैं और कभी-कभी आंखों में आंसू आ जाते हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि वह अपनी पहले और आज की जिंदगी के मकसदों में भरपूर अन्तर महसूस करते हैं। आज कल वे अपनी भव्य कोठी में सन्यास आश्रम के एक बड़े से कमरे में डबल बेड नुमा छोटे पाये की चौकी पर विराजमान रहते हैं या यों कहें आराम फरमा रहे हैं। चौकी पर गुटका के सामान, छोटे-छोटे दो बक्से, और घड़ी आदि रखे हुए हैं। एक अलमारी भी वहां रखा था। कमरे में करीने से रखी हुयी किताबों की लाइब्रेरी है। सम्मान में प्राप्त प्रमाण-पत्र और मेडल हैं।

माता-पिता-पत्नी एवं अन्य परिवार के लोगों के बड़े-बड़े चित्र लगे हुए हैं। पत्नी लक्ष्मी देवी उपाध्याय का 15 मई 1987 को निधन हो चुका है।

मोती बी.ए. आज भी नियमित रूप से प्रतिदिन डायरी लिखते हैं। अखबारों की हेडिंग पढ़ते हैं। परिवार के सदस्यों से वे काफी खुश नजर आते हैं। तीन पुत्रों में दो पुत्रों के परिवार उनके साथ रहते हैं। भाल चंद्र उपाध्याय उन्हें काफी प्रिय लगते हैं, उनकी प्रशंसा करते हैं। वह भी साहित्य में रुचि रखते हैं उनकी कविता मोती जी सुनने लगते हैं। ऐसा लगता है कि उन्होंने पूरे परिवार को एक आदर्श संस्कार प्रदान किया है।

'जागरण' टीम जब पहुंची। तो वे काफी खुश हो गये। हालांकि उनके परिवार के लोगों ने बताया था कि वे अब बोलते नहीं, झल्लाते भी हैं। लेकिन मिलने पर ऐसा कुछ खास महसूस नहीं हुआ। हां, बुढ़ापे का असर था, जो स्वाभाविक था। बातचीत में भरपूर सहयोग दिया मोती जी की पौ.ए. पत्नी पौती कु. मांडवी उपाध्याय ने।

मोती बी.ए. भले ही सन्यास आश्रम अवस्था में चल रहे हैं लेकिन उन्हें अपनी साहित्यिक सेवा, अपनी कलम पर आज भी पूरा विश्वास है तभी तो कहते हैं-

कलम न होती जिन्दा तो, कभी का मर गया होता।
पहुंचने के लिये घर पर, खुदा के घर गया होता॥

वैसे मोती जी को अपने बुढ़ापे से उपजी समस्याओं का आभास है तभी तो वे कहते हैं-

पंगु, बधिर, अपांग, मूक हूं।
पीर कलेजे, दबी हूक हूं।
कहने को हूं एक इकाई।
टुकड़े-टुकड़े टूक टूक हूं। ❑

यद्यपि अपनी माटी को बोली के इस मनीषी से साक्षात्कार का सौभाग्य मुझे नहीं मिल पाया है लेकिन काशी में हर साल मेरी संस्था 'लोकरस' द्वारा दिये जाने वाले भोजपुरी सम्मानों के लिए पिछले साल जब सर्वेक्षण कराया गया तो केवल एक ही नाम सामने आया था और वह था पूज्य मोती बी.ए. जी का। मुझे लगा था कि शायद तब उनसे मुलाकात हो पाती लेकिन मेरी बदकिस्मती थी कि मोती जी का स्वास्थ्य अत्यन्त खराब हो गया और उन्हें काशी नहीं लाया जा सका।

इस साल लोकरस का यह समारोह जागरण गोरखपुर इकाई के साथ मिलकर गोरखपुर में ही सम्पन्न होना है।

सम्भवतः दिसम्बर 2002 में यह आयोजन होगा और मैं उम्मीद करता हूं तथा ईश्वर से प्रार्थना करता हूं कि भोजपुरी साहित्य के इस महारथी को गोरखपुर में बनने वाले लोकरस के मंच पर ला सकूं तथा अपने हाथों से उनके चरण स्पर्श कर सकूं।

मोती जी उस बोली के मनीषी हैं जिस बोली की बदौलत मेरे जैसे लोग दुनिया में स्थापित हो रहे हैं।

ऐसे मनीषी को मैं एक ऐसे दैदीप्यमान नक्षत्र के रूप में देखता हूं जो ध्रुव तारा की तरह भारतीय लोक भाषाओं के साहित्याकाश में सदा चमकता रहेगा।

मैं पूज्यवर के शतायु होने की कामना करता हूं। ❑

गुरुवारीय जागरण

गोरखपुर, 16 मई 2002 6

भोजपुरी के पुरोधा ...

(पृष्ठ चौथे से आगे)

[illegible] के भाषाविज्ञान के अध्यक्ष में ऐसे मनुष्य को लाकर की राख बहुने को प्रेरणा देते हुए भोजी जी कहते हैं-

[illegible]

[illegible]

[illegible] में उनके रचना 'महुआवारी से बहार' तथा 'किई से निर्मी' अतिरिक्त हैं। कलम जहु में उनकी महाकाव्य का चित्रण मानव रूप में महुआवारी में करते हुए उन्होंने कहा-

आसे आइल महुआवारी में बहार सजनी।

कोचाइ मातल, भुइया छुवे, महुआ रसे रसे चुवे।

जइसे कोई भिखुआ के कपार सजनी।

गोकुल विहार को भी महुआ प्रकृति उनकी विशेषता रही है। वे अपने रचना द्वारा संकेत देते हैं कि सत्य-सत्य है उस पर कोई भ्रम नहीं पड़ता है और न ही दौड़ने पोहने से उसकी स्थिति पर कोई असर पड़ता है। जिस प्रकार केवल का टुकड़ा चाहे पर की अलमारी में रहे या कोयले में सदा चमकता रहेगा।

कुरि के पेखि द चाहे पोखर मातल, लोहे खातिर कोयला उसको रही।

चाहे अपने चाहे चाहे किसनी गिरे, पूरन हन पाहुना महकने रही।

पूरा सत्य है कि संघर्षों न तो कम होते हैं और न होंगे। भोजी जी जानते हैं कि आग से उत्पन्न जो निकलेगा वही खरा होगा। अपने मनोदय पुरुषोत्तम बोधन ने भी इसी के माध्यम से उपकृत का कौशल किया। पाप के आगे और नकली होने की चर्चा भी दिन में जाने वाली आग से होती है अपने पाप धोने है तो कम अग्नि। कम की अग्नि में जब पाप कर्मों सभी निकलता है तो आँखों से आँसू के रूप में बाहर आता है।

भोजी जी के सीधे व्यंग्य कम चुटीले नहीं हैं। आजकल की मिट्टान विहीन राजनीति पर राजनीतिक दलों पर कटाक्ष करते हुए उन्होंने लिखा है कि-

कहाँ चली सपना, इस नहीं में छेद था।

चौदह कांग्रेस ने था, पुरुष सोशलिस्ट था।

नाम व गंगोटा एकार टोपिये समेत था।

कांग्रेस लोकसभा में राजा तथा प्रजा पर

भोजपुरी का गंध–राग ...

पृष्ठ 1 से आगे

कर, शक्ति के साथ वे सीधे लोगों के हृदय में प्रवेशित कर रहे थे। मेरे जैसे अज्ञात कुल शील व्यक्ति के लिये वह भोजी जी का पहला साक्षात्कार था, कविता का साक्षात्कार था, उनकी शक्ति और वेग का साक्षात्कार था।

बहुत दिनों बाद मैं आजमगढ़ (कर्मभार में अम्बेडकर नगर) के महाविद्यालय में प्राध्यापक नियुक्त हुआ। मेरे बचपन के मित्र और बाद में उदय प्रताप कालेज के हिन्दी विभाग के अध्यक्ष, डॉ. विश्वनाथ प्रसाद 'पूर्वांचल' नामक एक ग्रंथ निकाल रहे थे जिसमें पूर्वांचल के सभी जिलों का साहित्यिक इतिहास प्रकाशित होना था। मुझसे उन्होंने देवरिया पर लिखने का आदेश दिया। मैंने इनकार कर दिया। वे बनारस से आजमगढ़ पहुँचे और कहा, मैं लेख लेकर जाऊँगा' अब कोई विकल्प नहीं था। मैंने लिखना आरंभ किया और शाम तक लेख पूरा हो गया। विश्वनाथ ने पढ़कर कहा, 'देवरिया की साहित्यिक परंपरा को तुमने केवल छुआ भर है, दो-तिहाई से ज्यादा हिस्से में तो केवल भोजी जी हैं। मैं क्या करूँ? बूँद समाती समुद्र में, सो कब होवे जाय? परन्तु थोड़ी-थोड़ी में भोजी-सागर में गिर पड़ा और विलीन हो गया। केवल सागर दिखाई दे रहा है, बूँदों को कैसे छूँ

भोजी जी ने वह लेख पढ़ा और मेरे आवास देह से पहिचान हुये। मेरे घर आये, मुझे आशीर्वाद दिया और मेरे लेखन को सराहते हुये उसकी भूरी भूरी दी, अपनी किताबों के सेट के रूप में। मेरे अनुरोध पर अपनी प्रसिद्ध कविताएं 'महुआवारी' 'मृगतृष्णा' 'सेमर के फूल' और 'मृग-कस्तूरी' भी सुनाई। कवि के जीवन में ऐसे भी क्षण आते हैं जब वह अपनी सीमाएं तोड़कर लंबी उड़ान भरता है। ऐसे अवसर रोज नहीं आते। इसीलिये जब-जब वह इन अवसरों को जीना चाहता है तब उसके भीतर का मानव अपनी पुरानी सीमाओं को तुच्छ समझता है। उस दिन डूबते सूरज को अपनी में भोजी जी ने अपने का भोग प्रकृत और अध्यात्मक वर्ग ने अपनी उड़ान भरी। चरमता के सूर्य को छू लेने की असीमा उड़ान है यह 'महुआवारी' कविता साक्षात्कार में अभिव्यक्त की गई है-

महुआ खातिर बारी धनिया महुआरि पकावेली

केहू बनिहारे खातिर लाख पर लगावेले

महुआ बेचा प्रेम से खाये

गाड़ी खरीदे लोग बनावे

हूं गरीबन के किसमिस अंगूर सजनी।

आसे आइल महुआवारी में बहार सजनी।

पहाड़ियों की भीड़ आज सड़कों पर भयावह है। किसी में साहस नहीं कि वह सड़क पर खड़े होकर भय से आँख मिलाये। सीधे चलते न चलते हुये भी आँख वालों को डसकर रहे हैं। आगे वाले एक विराट दृश्य के दायरे में विलीन होते जा रहे हैं। इस विशाल पावन यात्रा में थोड़ी-थोड़ी धूप पर लोग नये लगाते जा रहे हैं, पर उनकी कोई नहीं सुनता। वे भला भी समझ में न आने वाली भाषा बोल रहे हैं। लोगों व्यक्तिगत टूटे सपने सम हैं, लेकिन बिलकुल कर एक मय नहीं उभरता, एक स्वप्नवा नहीं बनाती। भोजी जी समाधान करते हैं-

सब-सब दाता से या कहीं अनुमान

हैं सुन लगे आज, कुछ्हीं देखत

एक दिन परिजाई जो पहचान

जिनिये अंगे जाई पीले के लेखन

तो रास्ता क्या है? जेठ की दुपहरी में पहले हिरन का ठिकाना क्या है? पहले है पहाड़ को बुझाने वाला जल का संत? क्या मृगतृष्णा इस वैमानिक में भटका-भटका कर जीवन को समाप्त कर देगी? यह तो पलायन हुआ। तो?

दुनिया में केहूके न मेहनत केहूके

जेही भाई छोड़ पाई गही के नाता का

छोड़ा सबके कहान-सुनान अपने

लड़ सहारा

सबे अपने टनाट दिनके या चाहत

किनारा।

या चोट करने में यह कवि न कहीं कायरता नहीं करते-

क्रोध का मरण आए जाने- धड़ुआ भी तुम्हें याद आने।

× × × × × × ×

रोटी और मेहनत/ जीवनभर के लिए। मन्दबुद्धि आत्मा/ कोलाहली के लिए।

× × × × × × ×

यह मुगल/ मैं नहीं पैगम्बर। यह है रामराज कोलाहल से नहीं।

× × × × × × ×

आदिम पकड़ रथ अवसाद/ रहा हुई इमारतें/ अब अनुशासन पर

× × × × × × ×

रूप- रूप -रूपे अंधु- सौन्दर्य- प्रकाश। और यह मर्म पर है कवि आवश्यकतानुसार।

प्रकृति, ऐन्द्रिक मोहजाल, सौन्दर्य, भक्ति-भाव के आत्मिक आकर्षण- विकर्षण से छूटकर कवि व्यवस्था से असहमति से उपजे आक्रोश को, दंभ कुचले सपाटे सर्वहारा की पीड़ा को भी सृजन का विषय बनाता है।

मंदिर में प्रसाद लिए आ सब खा गये पुजारी अब कैसे लगाएँ भोग, अब कैसी लगाएँ।

× × × × × × ×

कारखानों में घुमरिते आत्मा उदास मलखान

यह है खान की दुकान।

× × × × × × ×

गुण्डागिरी, गुटबन्दियाँ, डाकेती हत्यायें फैला रही हैं देश में किसान सभायें।

× × × × × × ×

पूँजीपति है नया, हुकूमत करता खास भतीजा

देखो दुनिया बेमानी का आलीशान नतीजा।

× × × × × × ×

राममद तबालब/ राजभवन सचिवालय/ राजपथ उपाध्यक्ष/ मालवों रुपये में, यह तब मन्दिर। दौड़ रहे घोड़े ये लिप्सा की दौड़ में। आज है जरूरत-/ एक आत्मशेष रह गये। उनकी कविताओं में

× × × × × × ×

जीवन में भाग है/ और भाग में जीवन/

देख लिजे-/ कि मरे नहीं।

× × × × × × ×

जिसका पानी पड़ा आग पर/ अपना निशान छोड़े।

× × × × × × ×

भाषा किसी देश की/ परिभाषा होती है।

× × × × × × ×

त्याग करने के लिए/ भोगना अवश्यक है।

भोग नहीं तो त्याग नहीं।

× × × × × × ×

चक्रव्यूह पूरा है/ प्रयोग में अधूरा है।

× × × × × × ×

यह के पंडित हुए/ तो क्या/ बिना पढ़े पंडित बनें।

इन सब बातों के बावजूद, सभी रचनाओं की भावित बुनावट, उनकी भाव-भूमि तथा प्रश्न-मण्डल में एक जैसा रस, एक जैसी लय, एक जैसी चमक हो-ऐसा नहीं है, जो कुछ मन में आये, सबको कविता का विषय बना देने पर जो औपचारिकता और शिथिलता आ जाती है, कहीं-कहीं कवि की रचनाओं में भी दिखता है। अतिशय भावुकता में कथ्य कभी पीछे रह जाता है और तर्कशास्त्र के गणितीय समीकरण में भाव कभी-कभी खो सा जाता है। लेकिन-

एक है मोती
चमके किरण।

(कुछ गीत कुछ कविता)

फिर भी निरन्तर, लिखते जाना और उसकी एकाग्रता पर टिके रहना जीवन की सार्थकता और समाज हित के लिए करना तो है ही-स्वयं भू-

समय देगा साथ
तो
मैं फिर लिखूँगा
और
लिखता ही रहूँगा।

(कुछ गीत कुछ कविता)

[illegible]
रहा मौलिक हूँ, रहा मौलिक हूँ।
मैंने पेड़ के हमदर्द का जुल्म हूँ।
मुझ दरिंदों कलम न भोगिले हम।
हम न रहे दुःखों का कुल हूँ।

गोंडे जी की 'रचना की दुकान' नामक रचना भी काफी कारगर है। भोजपुरी साहित्य में गोंडे जी ने अहिंसक आंदोलन को देखते हुए ही कहा गया कि यदि भोजपुरी कविता कहीं से शुरू होती है तो वह गोंडे जी से शुरू होती है। गोंडे जी ने भोजपुरी साहित्य में मात्रात्मक योगदान ही नहीं किया किन्तु उन्हें वह सार्वभौमिक सम्मान भी नहीं मिला जिसके वे वास्तविक हकदार हैं। गोंडे जी ने हिन्दी और उर्दू तथा भोजपुरी में दोनों अभिव्यक्ति में लेखनी की है। मुस्लिम के धनी होने के कारण उनके द्वारा रचित कविताएँ उनके दिल में मानवता के प्रेम का अभाव देती हैं।

उपरान्त होने के बावजूद गोंडे जी को इस बात की चिन्ता सदा बनी रही है कि 'भोजपुरी के विकास के लिए जिस सर्वमान्य तथा रोटी से प्रभाव होना चाहिए वह नहीं हो रहा है उनके अन्तर्मन की पीड़ा उनके चेहरे पर स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है। कवि सम्मेलनों के मिश्र बंधु गोंडे जी की हार्दिक इच्छा है कि भोजपुरी को संविधान की अनुसूची में सम्मिलित किया जाए तथा बनारस तथा दिल्ली की कर्मभूमि बनाकर में भोजपुरी विश्वविद्यालय स्थापित किया जाए। एक ऐसे भोजपुरी शब्दकोश की स्थापना हो जहाँ इस भाषा की दुर्लभ कृतियाँ तथा पाण्डुलिपियाँ अध्ययनार्थ रखी जाएँ जिससे प्रेरणा लेकर कुछ नया प्रतिभावान रचनाकार इस भाषा में रचना करने में किसी प्रकार का संकोच न करें। स्थायी भोजपुरी परिषद तथा समाचार पत्र का प्रकाशन हो। मध्यप्रदेश की तरह उत्तर प्रदेश में भी भोजपुरी अकादमी स्थापित हो और विश्वविद्यालय का संघ प्रकाशित हो अपने भोजपुरी के समग्र विकास के लिए न केवल सिद्धान्त रूप में बल्कि व्यावहारिक रूप में ठोस योजना बना कर उसे क्रियान्वित किया जाए जिससे लोकभाषा में जुड़ी इस भाषा तथा संस्कृति का व्यापक प्रचार प्रसार हो सके।' गोंडे जी की आकांक्षा के साथ भोजपुरी जगत चिन्तित है क्यों कि भोजपुरी पुत्र के चिन्तित गोंडे जी से हर सभा अपेक्षा है। इस भोजपुरी पुत्र भारतीय की हार्दिक इच्छा है कि भोजपुरी के पुरोधा गोंडे जी शतायु हों ताकि हम अनेक वर्षों तक मंचों पर सुनें।

[illegible]
से अपने मोमबत्तों को संदूकों पुनः अपने अपने मोमबत्तों में लौट आये थे। पसीने से भरे उनके चेहरे पर अभी झलक रही थी। थकान और पसीने से भरा ऐसा ऊर्जावान चेहरा जीवन में कब-कब नहीं दिखाई देता। मैं उस क्षण को अपने सौभाग्य का क्षण मानता हूँ।

गोंडे जी की एक प्रसिद्ध कविता है- 'मेमने के फूल'। यह कविता सत्ता के मानस को खोलकर है। मंच के सोने पर बैठे निरीह मालों द्वारा संचालित यह समाज केवल शक्ति की भाषा बोलता और समझता है। कठपुतली के उपनिवेश में रहते हैं हम और उन खिड़कियों को बंद करने में सारा जीवन बिता देते हैं, जहाँ से खुला आकाश दिखाई देता है। कवि स्वयं एक खिड़की होता है लेकिन ये खिड़कियाँ भी शोषण पहरी से बंद कर दी जाती है। मेमने की निरीहता है-

सब पेंदल से पकड़े रहे, हूँ केवल भरत गुमान का

सब धारों के ढुकि-ढुकि चूमे, हूँ सूखा आसमान का

केवल उदासन ओठ तिरछा

अलग बिलगे के बेहाल

अंधेरे बाँसि में तू हमेशा भयभीत बाहर

मगर ज्ञान भुलाहल बाहर हो।

भोजपुरी में मिश्र मधु जी के साहित्यकारों के स्थापित होने तथा नये मिले में एक नयी पीढ़ी का साहित्य को स्थापित करने का प्रयत्न जिस एक व्यक्ति में पूरी गरिमा पाता है वह गोंडे जी हैं। बोरो गांव और बाराज जैसे छोटे कस्बे में जाकर उन्होंने संघर्ष का पूरा रास्ता तय किया और उसी दौरान उनके व्यक्तित्व के आयाम विकसित हुये। उनकी इस संघर्षशीलता को केवल आधुनिक भोजपुरी काव्य पुत्र की संज्ञा मानने से उनके प्रति पूर्ण न्याय नहीं किया जा सकता। वे सही अर्थों में साधारण में असाधारण को स्थापन के प्रतीक हैं। उनके माध्यम से दबे, उपेक्षित या और मंचीय श्रवण उनकी को 'सम्मान सम्मान' (गोंडे जी ने सम्मेलन में भी आवाज का नहीं कविता सुनाई- 'भागुपाय'। प्रदेशों में काव्य पाठ करने वाले गोंडे जी और अब के गोंडे जी में बहुत अन्तर आ गया था। उनका वह दिव्य तेजस्व भी न रह गया था, आवाज भी ढल चुकी थी। उन्होंने उस भाव कविता का पाठ सुना किया, जिसे वे अपनी जवानी में बराबर सुना चुके थे और उसे सुनने का सौभाग्य कम से कम सात आठ बार मुझे प्राप्त हो चुका था। उस दिन न जाने कैसा मन्त्र था न जाने कैसा आकर्षण था। मुझे लगा कि जैसे इस कविता को सुनने की सही घड़ी उसी दिन उपस्थित हुई थी। गोंडे प्रत्येक पाठ विशेषकर काव्य के रूप में गोंडे जी उस दिन जैसे उपयुक्त सिद्ध हुये वे उनके शायद अपने जवानी के दिनों में नहीं हो सकते थे। सम्मेलन समाप्त होने के बाद मनोहर श्याम जोशी ने मुझसे कहा, 'यह कविता लिखने का मुझे मंत्र देना। अभिभूत हूँ।'

पिछले पाँच वर्षों में भोजपुरी के नव साहित्य का निर्माण जिस एक गुरु पर हुआ है, वह गोंडे जी की कलम-पीठ पर ही लिखा है। वे इसलिये इस समय नये लिखने पढ़ने वालों के प्रेरक मजबूती लगते हैं। इसलिये उनके कभी-कभी झलते हुये पुरुषों में हम सबको अपना जनक मिलता है, उनके मंचीय स्वाभिमान में न सही गयी उपलब्धि की लालक कुछ होती है और उनके गीतों में झलकती लिखने सेहम पूरा होती है।

मैंने बात बनारस के बिंब से शुरू की थी। जिसे हम बिम्ब कहते हैं या अवकाश या अनंतिम- जैसे सब मिलकर का या केवल का बनारस की विशेष संज्ञाओं में एकाकार हो गये हैं।

अभी भी मिल जाती है, ऐसा लगता है जैसे टूटे मुखड़े वाले का एक ऐसा विशाल पात्र हमें अपने में खोये हुये, विस्मित हम कभी मुक्त नहीं हो पाते। यह हमारा निर्माण है। यह हमारा सौभाग्य है।

गुरुवारीय जागरण

गोरखपुर, 16 मई 2002 7

काव्य सुधा

उमा सराफ

आँखों के सहारे
टूटी डालियों
के साथ
बिखरे
समय पर
मैं
जीवन वृक्ष में
सिकुड़ ही
गिर गये हैं
मैं
इनसे अपनी डालियाँ
पर सकती हूँ।
बिखरे
प्रतिमा की भाँति
मेरे
दर्दों पाने की
आज
ये मेरे पास हैं
पर
आज बिखरी अपना है
सपना होने पर।

तनी अकरी दउरउ हिरना...

(पृष्ठ एक से आगे)

से बड़े घाट कह जाना उनके लिए बहुत आसान है। जीव और जगत के रिश्ते को, जीव के विराट सत्ता में मिलन को और भौतिक जगत के अस्तित्व को अपने ढंग से सहज मुहावरों में उन्होंने कह डाला है। यह निर्गुन उन्हीं के बूते की बात है-

एगो दीया जोगल जरत कहियो ना बुताय

जरत घी ना लखाय, जरत फाटे न बिकाय।

जरत कोनो अंतरा मगरी अंजोर कीला।

मोती बी.ए. भोजपुरी की पहली में भले ही हिन्दी के गीत में नहीं, अंग्रेजी के साथ ज्ञान से परिपक्व उर्दू और [illegible]

फिल्म जगत में मोती बी.ए. का योगदान

धर्मेन्द्र कुमार पाण्डेय

फिल्म जगत को मोती बी.ए. का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है।

हिन्दी फिल्मों में उन्होंने भोजपुरी गीतों को जहाँ प्रतिष्ठापित किया वहीं भोजपुरी फिल्मों को अपने गीतों व अभिनय से धनी बनाया। मोती बी.ए. चाहते तो मुम्बई में बस सकते थे, लेकिन अपना गाँव- जवार उन्हें बेचैन कर दिया और उन्होंने अपना अंतिम समय सरयू नदी के किनारे बाहज में ही बिताना उचित समझा।

आज भी जब फिल्मों की चर्चा आती है तो उनकी आँखें चमकने लगती हैं। बहुत सी बातें उमड़ने-घुमड़ने लगती हैं। होंठों और आँखों में कई बातें चहल आती हैं। बुढ़ापे के कारण काफी कमजोर होने तथा पूरी बात न कह सकने का दर्द उन्हें बार-बार टीसता है। बातचीत में कहते हैं- तीन -चार साल पहले मिले होते तो सारी बात बताता... गा का सुनाता... कभी पूरी महफिल सजाता था...आज मजबूर हूँ... अपनी इस मजबूरी... लगते इन बेकसों पर मोती बी.ए. कभी रोते हैं तो कभी उनकी आँखें भर जाती हैं। जब उनसे कहा जाता है कि समय से न मिलना यह हम लोगों का दुर्भाग्य है तो मोती बी.ए. हट से कहते हैं कि 'हमारे कौन सौभाग्य का'।

आजादी मिलने के पूर्व मोती बी.ए. उन दिनों कलकत्ता में रहते थे। पंचोली आर्ट पिक्चर लाहौर (अब पाकिस्तान) के निर्देशक सोहन दास तथा सरदार रणजीत सिंह नये कलाकारों व गीतकारों की खोज में कलकत्ता पहुँचे थे। एक कवि गोष्ठी में उनकी नजर मोती बी.ए. पर पड़ी। मोती के 'दिल' वह पहाड़ भोजपुरी गीत पर जो फिल्म पहले हिन्दी फिल्म लिखा गया। सच पूछा जाय तो हिन्दी फिल्मों में भोजपुरी गीतों को लिखने का श्रेय मोती बी.ए. को ही जाता है।

अतः में एक शोध का विषय हो सकता है। भोजपुरी फिल्मों से भी मोती बी.ए. का घनिष्ठ सम्बन्ध रहा। लहराता (1964), गंगवा पहले राम (1964) चम्पा चमेली (1967) भोजपुरी फिल्मों के लिए भी

लम्बी चौड़ी बातें

दिवाकर प्रसाद तिवारी

कहते होती हैं लम्बी चौड़ी बातें
उन लोगों की
जिनकी लम्बाई छाया जैसे
बढ़ती घटती रहती है
चौड़ाई पगडण्डी की तरह होती है
वे गिनते पढ़ते भी
करते हैं लम्बी चौड़ी बातें।
कि उनका कोई सिर नहीं होता
कोई पैर नहीं होता
वे भागते हैं आगे
लम्बी चौड़ी बातों को।
कहीं डूब जाते हैं सपने
इन लम्बी चौड़ी बातों में
डूब जाते हैं विकास के सपने
स्कूल-कालेज, अस्पताल, होटल
बिजली, पानी, दूरसंचार आफिस।
सभी जगह को लम्बी चौड़ी बातों में
कहीं फूलता है दम
कहीं दम तोड़ते हैं मरीज
कहीं टूटते हैं सपने
नौनिहालों, बाल के कलेजों के
कहीं चाटते हैं लम्बी चौड़ी नीत।
दुर्दिन चेहरों की अर्गलिका
पथराई आँखों को देखते
उनके लम्बे चौड़े विज्ञापनों में
कहीं हो जाते हैं गुम
सिगरेट के धुंये के लम्बे चौड़े छल्ले
शराब की भभक छोड़ते लम्बे चौड़े
मुख
किसे धुंधला कर देते हैं
सत्य का आइना
उन पर पोत देते हैं कालिख
उनके लम्बे चौड़े हाथ
आखिर क्यों?

ज़िन्दगी के सांझे

मा-अंतरा चाहु और बिहारनी
सच-झूठ के गठरी लिहले
नैन-भरम के जाली पहरे
[illegible]

रचनाकार हैं जिनके पास हर तरह की चादरें रही हैं लेकिन अपने ओढ़ने बिछाने के लिए उन्हें भोजपुरी चादर ही पसंद आयी। उन्होंने जीवन भर उसे ही ओढ़ा बिछाया है और उनके हर सांस में भोजपुरी एक संकल्प बनकर प्रवेश करती और उच्छ्वसित होती है। वे शत्रु हों, मित्रु हों और माटी की गोदी का यह मनोरोग ऐसे ही चिराग बनकर ज्योतिमान होता रहे। यही हमारी कामना है।

मोती का फुलवा फिल्म में गीत लिखने के लिए हो गया। और वह बाराबंकी से लाहौर पहुंच कर 1944 से 1945 तक रहे। इस दौरान पंचोली आर्ट पिक्चर्स की बन रही फिल्म 'किसे कहूं?' के लिए मोती बी.ए. ने पांच गीत लिखे जो काफी लोकप्रिय हुए।

बाद में मोती बी.ए. मुम्बई आ गये। मुमताज फिल्म के लिए तीन तथा भक्त ध्रुव के लिए तीन गीत लिखे।

फिल्म 'एक कदम' में उन्होंने दो गीत लिखे। इस फिल्म में 'कारे न कारे रे मोरा एक गीत 'हमको तुमसे है आशा, तुम हमसे हो न हो' काफी लोकप्रिय हुआ। 'साजन' फिल्म के निर्देशक जहां किशोर कुमार खुद थे वहीं अशोक कुमार और शोभना समर्थ की जोड़ी थी। 1948 में दिलीप कुमार और कामिनी कौशल की 'नदिया के पार' आयी। उसमें मोती बी.ए. का लिखा गीत 'मोरे राजा हो, ले चलो नदिया के पार' काफी लोकप्रिय हुआ।

मोती बी.ए. ने 50 से अधिक फिल्मों में गीत लिखे। उन गीतों का संग्रह करना अपने आप में एक बड़ा काम है। मोती बी.ए. ने अपनी अभिनय क्षमता का भी परिचय दिया।

मोती बी.ए. द्वारा फिल्म जगत को दिये गये योगदान को एक-दो पन्नों में लिखकर समेटा नहीं जा सकता। सच्चाई तो यह है कि फिल्म जगत को उनके द्वारा दिये गये योगदान पर जब एक पूरी पुस्तक लिखी जाय तब जाकर उनके पूरे कृतित्व को समझा जा सकता है। इसके लिए उनके सुयोग्य विद्यार्थियों को विशेष रूप से प्रयास करने चाहिए। ❑

हिया जिया करे अंधेरे
देख अगर मुझको नहीं
रूठे लोक कलाकार चाहते
माह मिलन नाम अपने
जिंदगी में जिसमति या साहि।
कायरों मुसलों दुः पीड़न के
सिखे एगे, खाय दुखका
फल के लालच खड़तीत बोका
मुसलत जिंदगी दू दिन के
जिंदगी में जिसमति या साहि।

मोती बी.ए.की कविताएं

मेरी कविता

लिख रहा हूं मैं एक कविता
जिसका कोई अर्थ नहीं
फिर लिखते क्यों
निरर्थक कविता
यह प्रश्न तो किसी
बेत से करें
जो खूंटे से बंधा नाद
पर
बांध बांध कर रहा है
किसान समझता है
उसकी कविता
यह प्रश्न किसी गाय से करें
जो अपने बछड़े के लिए
रंभा रही है
बछड़ा समझता है उसकी कविता
शायद मिल जाए ऐसा
कोई किसान
कोई बछड़ा
जो समझे मेरी कविता ❑

कुछ मुद्दे

जिस राज्य में पढ़े लिखे बेकार होंगे
उस राज्य को धिक्कार सौ-सौ बार
कहेंगे
भूखा हुआ इंसान जो
बेमौत मरेगा
वह तख्ता उलटने
के लिए क्या न
करेगा
इन्सानियत में फर्क
जो भी डाल रहे हैं
ऐसी जगह पै जाके
अधर्म काम जा करे
मातम ही मुफलिसी का मगर जाम जो
करें
बेशर्म, वे गैरत हरामखोर, वही है
कहता रहा है साधु मगर चोर वही है
दीनो -ईमान, धर्म की पुकार वही है
मंदार को जीने का कुछ अधिकार नहीं
है ❑

मोती बी.ए. की प्रकाशित रचनायें

हिन्दी-

1-कवि-भावना मानव (काव्य)
2- प्रतिबिम्बिनी (फुटकर कविताओं/ गीतों का संग्रह
3- अश्वमेध यज्ञ (नयी कविता संकलन)
4-समिधा (काव्य)
5- कवि और कविता (काव्य)
6- मधु तृष्णा (काव्य)
7- पायल छम छम बाजे (काव्य)
8- बादलिका (काव्य)
9- आंसू डूबे गीत (गीतों का संकलन)
10- हर सिंगार के फूल (काव्य)
11- गति के चरण (नयी कविता संकलन)
12- कुछ गीत कुछ कविता
13- लाहौर की नहर (काव्य)
14- लाचारी (लम्बी कविता),
15 राशन की दुकान (लम्बी कविता)
16-इतिहास का दर्द (ऐतिहासिक विषयों पर निबंध)
17- आत्म काव्य
18- तुलसी रामायन

भोजपुरी

1-सेमर के फूल (गीतों का संग्रह)
2- मोती के मुक्तक
3- बन बन बोलेले कोइलिया (लोक-संगीतिकाओं का संग्रह)

उर्दू

1-रश्के गुहर
2- तिनका तिनका शबनम शबनम

अंग्रेजी

1- लव एण्ड ब्यूटी

अनुवाद

1- शेक्सपियर के सानेट्स का हिन्दी पद्यमय रूपान्तर
2-अब्राहम लिंकन (जॉन ड्रिंकवाटर की अंग्रेजी नाट्य कृति का भोजपुरी रूपान्तर)
3- हाईस्कूल पोयट्री की कविताओं का हिन्दी रूपान्तर
4- रबी बेन एजरा (रबर्ट ब्राउनिंग की लम्बी कविता का हिन्दी पद्यानुवाद)
5- प्यार की रूपसी (डी.जी. रॉसेटी की लम्बी कविता-क्लेम्ड हेमेजल का हिन्दी पद्यानुवाद)
6- मेघदूत (कालिदास के संस्कृत-काव्य का भोजपुरी पद्यानुवाद)
7- प्राचीन नाविक (कालरिज की लम्बी कविता का हिन्दी पद्यानुवाद)

- इसके अतिरिक्त पत्र-पत्रिकाओं में अनेक लेख, संस्मरण, डायरी के पन्ने साक्षात्कार प्रकाशित है। ❑

दिनाँक 2 जुलाई 2005 का समाचार

समाचार पत्र 'राष्ट्रीय सहारा'

भाग 01

गुमनामी में भोजपुरी के पितृ पुरुष

अपनी नतिनी माण्डवी के साथ मोती बी.ए.

राजीव दत्त पाण्डेय

भोजपुरी साहित्य-गीतों के क्षेत्र में प्रतिमान स्थापित करने वाले लोगों की चर्चा की जाये तो मोती लाल उपाध्याय उर्फ मोती बीए अगली कतार में खड़े दिखते हैं। मोती बीए से ही इस स्वस्थ्य परम्परा की शुरुआत होती है। समूचे भोजपुरी काव्य के केन्द्रीय व्यक्तित्व के रूप में उनका स्थान अन्यतम है। पूर्वांचल के जिस इलाके में भोजपुरी फिल्मों या भोजपुरी गीतों के 'बूम' के बीच सुनहरे कल की इबारतें लिखी जा रही हैं, वहीं भोजपुरी सिनेमा इतिहास में गीतों के पितृ पुरुष वृद्धावस्था में उपेक्षा का दंश झेल रहे हैं।

२००१ में साहित्य अकादमी के 'भाषा सम्मान' से सम्मानित ८६वर्षीय 'महुआबारी के कवि' मोती बीए ने अपनी रचनाधर्मिता को स्वर हालांकि खड़ी बोली से दिया लेकिन जल्द ही भोजपुरी की अभिव्यक्ति क्षमता को उन्होंने पहचान लिया। उसके बाद तो वे भोजपुरी के ही होकर रह गये। जब छायावादी कविताओं का धुंध पसरा था मोती बीए को सब कुछ अपारदर्शी दिख रहा था, जिससे उत्पन्न बेचैनी ने उन्हें सचेतन सत्ता को देखने के लिए प्रेरित किया।'अरी सखि घूंघट के पट खोल/ है मेरा उद्विग्न हृदय सुनने को तेरा बोल/ कली अभी प्रस्फुटित हुई है/ मन्द समीरण डोल रही है/ रवि

अंतुला रणवीर सिंह राणा को लग चुका था लेकिन जिले की निदेशालों को अनुकूल का प्रतिमा प्रेमी के साथ रवाना हो गयी। बेटी की हरकत की भनक गांव वालों को न लगे, इसकी रणवीर सिंह राणा ने पूरी कोशिश की। घटना वाली सुबह प्रतिमा ने गोरखपुर में मुलाकात का उन्होंने उसे घर लौटने के लिए कहा लेकिन उसने इनकार कर दिया। दुःखी मन से घर लौट रहे रणवीर का दर्द तब और बढ़ गया जब गांव के एक व्यक्ति ने प्रतिमा के बारे में रणवीर सिंह राणा से पूछताछ करते हुए उनके प्रेम प्रसंग का उल्लेख किया। बेटी के कदम से पहले ही आहत हो चुके रणवीर सिंह राणा ने बदनामी को देखते हुए कहा कि वह आत्महत्या कर लेगा। मनोचिकित्सक डॉ. रामनरेश के मुताबिक "इस घटना में रणवीर और उनकी पत्नी की मानसिक और पारिवारिक पीड़ा सामने आ रही है। बेटी के कदम लड़खड़ा गये तो उन्हें सही संस्कार से काम लेना चाहिए था। लेकिन खुद पिता और फिर मां ने समस्या का बहादुरी और दृढ़ता से मुकाबला करने के बजाय पलायन का रास्ता चुन लिया।"

२२ जून की सुबह घर के आंगन में बनी छत पर लोहे की राड में रणवीर सिंह राणा, पत्नी सरोज, पुत्री प्रियंका और पुत्र अजय तथा अजित की लाश लटकी मिली। पुलिस को मौके से अमृतधारा नामक कीटनाशक का पैकेट मिला। पुलिस के मुताबिक पत्नी ने मरने से पहले इसका सेवन किया था। शवों के बगल में रखी थाली में अधजली अगरबत्तियां सुलगी पड़ी थीं और गीता की एक प्रति थी। यह माना जा रहा है कि पहले बच्चों ने कीटनाशक लिया होगा और फिर दम्पति ने। इसके बाद रणवीर ने कातिल की भूमिका निभाते हुए सर्वप्रथम के नाम पर छोटी-छोटी से अपने बच्चों के गले में फंदा (रस्सा) लगायी होगी और फिर खुद पत्नी समेत गले में फंदा लगाकर जान दे दी। बताते हैं कि घटना वाली रात्रि अभय और अजित ने बगीचे में आम खाने के बाद घर लौटते समय कहा था "काल रहल जाई तब न खाइल

(शेष पृष्ठ ३० पर)

किसी अवस्था की संवेदनाओं के बीच पुस्तक के पट खुलने लगे। उनकी कलमी लेखनी का अनुभव संसार विस्तार लेने लगा। 'सजनी, एक आह्वान तेरा/ मान में कुछ खो न बैठे, आज आकुल प्राण मेरा/ वेदना में चेतना खो, अचल मूर्च्छित सा रहा जो/ सुप्त उर में फूट निकला, एक अनचल गान तेरा। सजनि एक आह्वान तेरा।' लेकिन एक घोंटे ने अनुभव में उन्हें यथार्थ के नजदीक ला दिया। लोकी माटी की खुशबू,

'महुआबारी के कवि' के रूप में ख्यातिलब्ध भोजपुरी के पितृ पुरुष मोती लाल उपाध्याय उर्फ मोती बीए अपने जीवन के उत्तरार्ध में उपेक्षा के शिकार हैं। आए दिन भोजपुरी के कलाकारों-साहित्यकारों को सम्मानित किया जा रहा है, पर देवरिया के मोती बीए गुमनामी का जीवन जी रहे हैं

महुआबारी में महुआ के बुरादाम, खेतों में भरी दुपहरिया में पानल बजाती सांवर मड़रिनी ने उन्हें आकर्षित किया। उनकी पीड़ा तकलीफ को उभारने के लिए उन्होंने भोजपुरी को माध्यम बनाया और उनकी लेखनी रचने लगी। 'कबले रही अंखरिया झोरले, कबले सन्नद रोई/ कबले बुतल रही बन्सलिया, भोर न ताले होई/ सुकवा बड़ी देर से उगल, दुख नेरिले मुए रोई/ झनी जगल हवे भगर ई दुनिया कबले सोई/' भोर से अलग अपने अस्तित्व, पलायन के संकट से जूझते लोग विकास की सही अवधारणा से भाग रहे थे। मोती बी.ए. ने इस संकट को पहचाना। आकांक्षाओं की संवेदनात्मक प्रतिक्रिया को अभिव्यक्ति से जोड़ कर देखने की कोशिश में व्यक्ति की मूल पूंजी स्वभाव ने मोती बी.ए. को प्रकाशित। अपने सवालों का खुद जवाब देते हैं। 'जब से प्रेम न उगले हिय में भोर न लखले रोई/ सुकवा सूतल रही अकाशे दुनि न मोती रोई।' सत्ता के मूल्यहीन पूंजी के कारण आदमी निरंतर शून्यता का शिकार हो जाता है। निराशा आशा के धरातल पर टूटन पैदा होती है भाव शून्यता को भी विस्तार मिलेगा। 'भाव के सूनल मानल जाई, बुद्धि के सार्थ बूझी/ प्रेम के घोड़ा दौड़ल जाई, गीति-अगीति न बूझी/ जबले मार्ग सुनाई राम जी, साधा के सुनना कि लखले मार्ग ना।'

मोती बी.ए. ने गांव की आत्मा को पहचाना। गांव के कोने-अंतरे में छिपे सौन्दर्य को उन्होंने अपनी रचना प्रक्रिया से जोड़ कर देखा। गीति-चित्रण, लिखित, अभाव, प्रकृति

(शेष पृष्ठ ३० पर)

गुमनामी में भोजपुरी...

(पृष्ठ २१ का शेष)

के लिए उनकी रचनाओं 'मधुशाला में', छोटवा के रगड़, कटिया के सुतार, आज-आज बेला, भंवर देखत बा, निसरि गइल अमवा सरीखी कविताओं में मिलता है। गांव के गरीब किसान के लिए मधुआ ही किसानिया-अनार है। तभी तो उन्होंने लिखा। 'मधुआ बैल प्रेम से खाये/ गाड़ी खींचे, जोत बनाये/ इ गरीबन के किसानिया अनार सजनी/' लगर ऋतु बहार में भी आती है लेकिन गाव में उसका रूप-रंग इतर ही दिखता है। गरमी की विभीषिका से तपती धरती की छाती पर किसान हल चला रहा है तो कहीं सेमर के फूल की लाई भूनी जा रही है।

हिन्दी-उर्दू में मुक्तक लिखे ही भोजपुरी में भी उन्होंने ढेरों मुक्तक लिखे। कठाचालियों की तड़प और बेचैनी उनकी कविताओं में दृष्टिगोचर है। 'चाहे तो पा साथ रहा के हंस/ जलन होखे के बा हवन होखबे करी/ जिन्दगी चाहे गइल काटे जब राव पर/ चाहे आइबे करी चाहे जाइबे करी/ जनले छूटा कालवा बनवा गइल बा/ हमवकला से का कोरियाये के बा/ तूरि के बेड़ि दिहनसि त का हो गइल/ केनु जोड़ी में जोकता बनाये के बा/'

एक अगस्त १९१९ में देवरिया जिले के बरेजी गांव में जन्मे मोती बी.ए. के पिता थे पं. राधाकृष्ण उपाध्याय और माता थीमती कौशल्या देवी। उन्होंने एम. ए., बी. एड. व साहित्यरत्न की उपाधि हासिल की। प्रेम के क्षेत्र में मोती जी के परिष्कृत सौन्दर्य का बोध मिलता है साथ ही विरह का मार्मिक वर्णन। मसलन 'जइबे में जो प्रतिबिम्ब लाकार है/ कैसे कहूं कि बाहर निराकार है/ शिव है मन में बसे, कहीं बाहर नहीं/ गर है बाहर तो मन है उन्हीं में रमा/'। उनके मुक्तक में निरपेक्ष काव्य भी दिखता है। जिसमें आम आदमी के संघर्ष भी झलकते हैं।'तूरि के बेड़ि हऊ चाहे मीनऊ मना,/तोरे छाती करेजा डोकते रही/ चाहे आनी चाहे बिजुली गिरो/फूल हऊ तऊ बन्हवा मोकते रही।' भाषा पर मोती जी को पूरा अधिकार था। भोजपुरी, उर्दू, खड़ी बोली, हिन्दी एवं अंग्रेजी में गद्य-पद्य लिखने में वे समान रूप से समर्थ थे। मृगतृष्णा, कवि और कविता, मलिया, कोठे-माचान, मानव, अन्धमेघ पक्षी, हरसिंगार के फूल, श्रीविनिवेनी, कुछ गीत कुछ कविता, गांव के बरन, लाठी की मार, तिनका-तिनका आचमन आचमन, राके गुड़ा, दई गुड़, रसाल की दुकान, इतिहास का दर्द (निबंध संग्रह),सेमर के फूल, मोती के मुक्तक, बोलते बोहनिया, भोजपुरी सानेट, तुलसी रसायन, जान हिक बाटर रचित नाटक 'अब्राहम लिंकन',महाकवि कालिदास रचित मेघदूत का भोजपुरी अनुवाद(छन्द में), महाकवि शेक्सपीयर के सानेट का पद्यानुवाद, जयदेव सिंह सम्पादित कालिदास ग्रन्थावली का अनुवाद, रवीन्द्र एकान्त(राबर्ट ब्राउनिंग) का गीतमय रूपान्तर, एस.टी.कालरीज के काव्य 'दी राइम आफ द एन्शेंट मैरिनर' का पद्यानुवाद सहित तमाम पुस्तकें प्रकाशित और अप्रकाशित नहीं हुई हैं। उत्तर प्रदेश शासन के साहित्यिक पुरस्कार समिति ने उनकी पुस्तक 'मलिया' १९७३-७४ में पुरस्कृत किया। १९७८ में काशी अध्यापक के रूप में शिक्षा विभाग ने पुरस्कृत किया। १९८९ में उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान ने 'साहित्य साकृत्यायन' पुरस्कार से नवाजा। नेपाल राज बन्धन ने एक पत्र में लिखा 'इतने (लेखन)और कुछ किया हो या न किया आपको महान बना दिया है। सम्मान वहीं सम्मान की देन है। आपको सम्मुख होना चाहिए।' वहीं नहीं मोती बी.ए. ने स्वतंत्रता आन्दोलन में भी शिरकत की और विदेशी शासन का विरोध करने के कारण १९४३ में 'भारत छोड़ आन्दोलन' के तहत बहराइच के सेण्ट्रल जेल में बंद भी रहे।

बावजूद इसके मोती बी.ए. को जो सम्मान मिलना चाहिए था वो नहीं मिला। हालांकि जीवन भर वे इससे इंकार करते रहे। उनका मानना है कि 'यश-कामना का पाश लोमुसता एक बीजु हऽ। लोमुसता कामना के नष्ट कऽ देले।' भोजपुरी को सिनेमा के सेल्युलाइड पर चमकाने का काम पहले मोती बी.ए. ने किया। १९४४ से ५२ तक उन्होंने पंचोली आर्ट पिक्चर लाहौर, प्रकाश पिक्चर्स बम्बई और सिनिस्तान लिमिटेड बम्बई में गीत कार के पद पर कार्यरत रहे। हिंदी फिल्मों में गीतकार के रूप में आजीविका ढूंढने मुम्बई पहुंचे इस कवि ने भोजपुरी के लिए संघर्ष किया। बाद के दौर का भोजपुरी सिनेमा उन्हीं की देन था। १९४८-४९ में एक फिल्म में उन्होंने लिखा कि 'काटे ना कटे मोरा दिनवा, गवनवा कब होई/'। फिल्म तो नहीं बनी लेकिन गाना खूब चला। उसी समय सिनिस्तान लिमिटेड बोरीवली में दिलीप कुमार-कामिनी कौशल अभिनीत फिल्म 'नदिया के पार' बनी। जिसके सभी गीत लिखे मोती बी.ए. ने। एक गीत का बोल था 'कठवा के नइया, बनइहें रे मलाहवा/ नदिया के पार दे उतार/' फिल्म लोकप्रिय हुई और मोती की खूब सराहना। उसके बाद तो उन्होंने तकरीबन पचीस फिल्मों के लिए गीत लिखे। मसलन 'कैसे कहूं, सुनइहा, भला धुव, रामबाण, सुरेखा हरण, इन्द्रासन, ममता, कविता, राम विवाह, किसी की याद, सिंदीना, सावन, सिन्दूर, नदिया के पार, गवन भइले राजा, ठकुराइन, बन्ना बनेली, लाजवा'

१९५२ से १९८० तक गोरखपुर इण्टरमीडिएट कालेज बरहज में मोती जी ने अध्यापन कार्य किया और वहीं से सेवानिवृत्त भी हो गये। मोती बी.ए. के तीन बेटे हैं जिसमें अवधेश लाल उपाध्याय सरकारी सेवा में थे जो सेवानिवृत्त होने के पश्चात गोरखपुर में निवास करते हैं। उपरोक्त बड़ा पुत्र भाल चन्द्र उपाध्याय पिता के नक्शे कदम पर चले और आज भी साहित्य सृजन में संलग्न हैं। सबसे छोटे जेवनी कुमार उपाध्याय रोजगार का जरिया अपना रखे हैं। पिछले साल लगभग ८६ वर्षीय मोती बी.ए. बिस्तर पर ही पड़े रहते हैं। कुछ वर्ष पहले 'स्मृति लोप' के शिकार हो जाने के पश्चात तो वृद्धावस्था उनके लिए अभिशाप हो चला है। लेकिन परिजन प्रेम और श्रद्धा के साथ उनकी तकलीफ कम करने में जुटे रहते हैं। प्राचीन इतिहास में स्नातकोत्तर कर चुकी उनकी पोतनी माधवी ही अब दादा की आंख-कान और हाथ-पैर है। जब-तब मोती बी.ए. उसे पुकार कर बुलाते हैं। अपनों की उपेक्षा का दंश मोती बी.ए. 'स्मृति लोप' के कारण भले न महसूस कर सके लेकिन उनके परिजनों को बहुत अखरता है। माधवी कहती है "अच्छा है दादा की स्मृति चली गयी। नहीं तो उन्हें अकेलापन और लोगों की उपेक्षा बहुत अखरती।" उनके मझले बेटे भालचन्द्र उपाध्याय को साहित्य समाज की उदासीनता ही ज्यादा सालती है 'पिता जी ने भोजपुरी के साथ खड़ी हिन्दी व संस्कृत के क्षेत्र में भी गम्भीर साहित्य सृजन किया लेकिन इस पर गम्भीरता से विचार ही नहीं किया गया। अंग्रेजी की रचनाओं का भोजपुरी में अनुवाद भी बड़ा काम था लेकिन इस पर चर्चा ही नहीं होती।" पूर्वांचल की साहित्यिक सांस्कृतिक संस्थाओं से भी उन्हें उम्मीद थी कि वे मोती बी.ए. की अप्रकाशित रचनाओं के प्रकाशन के लिए सामने आएंगी पर ऐसा नहीं हुआ। थोड़ा कुरेदने पर भालचन्द्र विफर पड़ते हैं "मंत्री, अधिकारी, नेता वर्ष पहले खूब आते थे। वेतन आयोगन दिए लेकिन आयोगनों पर अमल नहीं हुआ। उधर भोजपुरी के आज भी चर्चित हमारे पड़ोस उनके गीतों को गाते-गाते कर गए हैं लेकिन मंच पर उन्हें भूल कर भी याद नहीं करते।" किसान मोती बी.ए. का पूरा परिवार उनकी पेंशन पर निर्भर है। लम्बा परिवार और उनकी जिम्मेदारियां देख भय लगता है। कल मोती बी.ए. आंख बंद कर लेंगे तो उनके अधिकार कहां जायेंगे? मोती बी.ए. के पास बैठी माधवी 'मृगतृष्णा' की पंक्तियां गुनगुना उठती है "नीरज बनावे दुए नहीं छोटे खाय/ तोरे अंगनी दइया हिरना पा जइबे किनाय/ छन जनवा संके माई डरावे/ मासम-मासम फिरे ए मो बिरवा बेचारा/ तोरे अंगनी दइया हिरना पा जइबे किनाय।"

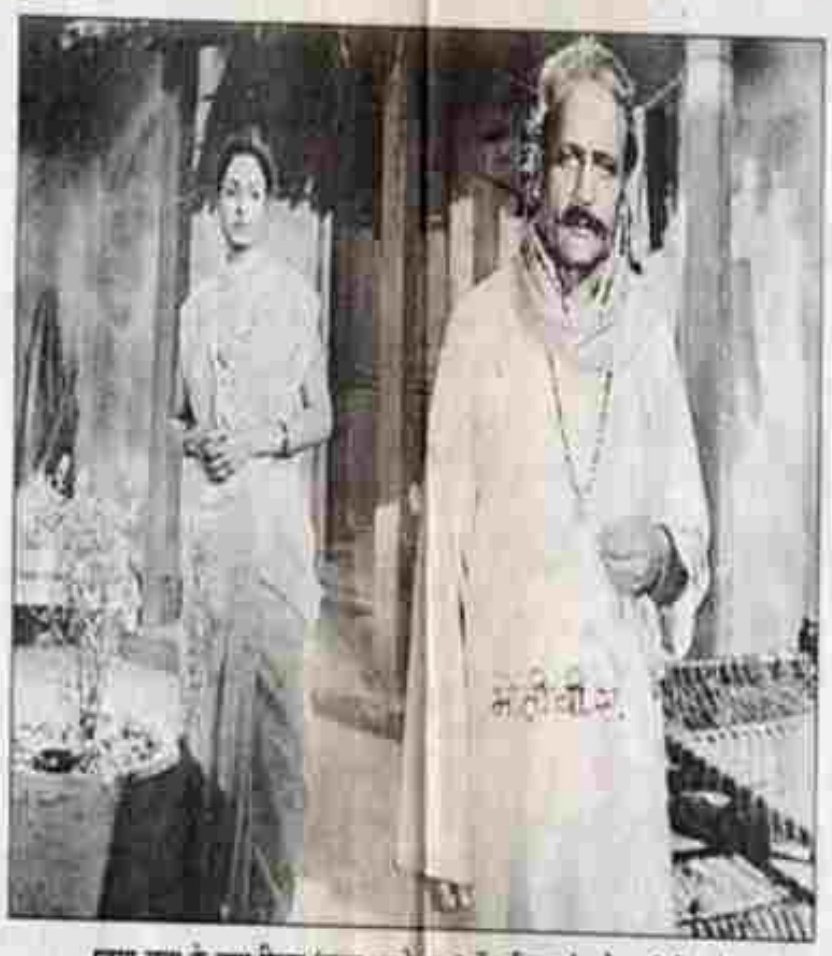

पद्मा खन्ना के साथ फिल्म 'गवन भइले राजा' में अभिनय के जौहर भी दिखाये

कभी यहां सजती थी महफिल अब अकेलापन। फोटो : राजीव

दिनाँक 5 मई 1999 कर समाचार

समाचार पत्र 'गिरिराज-साप्ताहिक,' शिमला

सच्चे संघर्षशील कवि की काव्य-यात्रा

समीक्षा

आग और अनुराग : मोती बी.ए. की प्रतिनिधि कविताएं
सम्पादन : डा. शैलेन्द्र कुमार त्रिपाठी
प्रकाशक : रामकृष्ण प्रकाशन, तिलक चौक, विदिशा (म.प्र.)-461001
मूल्य : दो सौ पच्चीस रुपये।

'आग और अनुराग' एक ऐसे कवि की प्रतिनिधि कविताओ का संकलन है जो अपनी कविताओं के बल पर ही सिने-गीतकार के रूप में अनुबंधित और चर्चित हुए और लौट कर अध्याप-वृत्ति और कवि-कर्म में रत हो गए। यद्यपि मोती लाल उपाध्याय ने बाद में इतिहास विषय में एम.ए. तथा अध्यापन किया किन्तु क्योंकि वह मोती बी.ए. के नाम से चर्चित हो चुके थे इसलिए नाम से जुड़े बी. ए. को नही हटाया। मोती बी.ए., लम्बे अरसे से अस्वस्थ रहने के बावजूद आज भी कवि-कर्म में रत है किन्तु प्रचार के प्रति उदासीन ही रहे हैं और अपनी रचनाओं के ढंग से पुस्तक रूप में लाने के प्रति भी। डा. शैलेन्द्र कुमार त्रिपाठी ने उनकी रचनाओं का चयन और सम्पादन कर श्लाघनीय कार्य किया है।

'आग और अनुराग' में कवि-गीतकार की सन् 1939 से 1994 तक की रचनाओं में से चयनित प्रतिनिधि काव्य-रचनाएं एवं गीत संकलित है सम्पादक ने कवि के कृतित्व को लेकर 38 पृष्ठों में सटीक उद्धरणों के साथ मोती बी.ए. का 'साहित्यिक परिचय' भी दिया है। जैसा कि सम्पादकीय टिप्पणी में कहा गया है:-

"मोती जी हिन्दी के साथ साथ भोजपुरी, उर्दू, अंग्रेजी में भी लिखते है... हिन्दी में मुक्तक लिखने की परम्परा में भी मोती जी आगे रहे है, उनके मुक्तकों पर भी काम किया जा सकता है।" कवि की अंग्रेजी कविताएं और अंग्रेजी कविताओं के हिन्दी अनुवाद भी पुस्तक रूप में आ चुके है। भोजपुरी रंग के कारण फिल्म 'नदिया के पार' में संगीतकार सी. रामचन्द्र के संगीत से श्रृंगारित होकर, उनके गीत आज तक भी लोकप्रिय है।

श्री शैलेन्द्र त्रिपाठी ने कवि की छह दशकीय काव्य-यात्रा में से, जिसमें हजारों गीत-कविताओं का सृजन हुआ है, महत्वपूर्ण मील-स्तम्भ प्रस्तुत किये है। कवि वादों के विवादों में न पड़ते हुए अपने कवि- धर्म का निर्वाह करता रहा है। प्रमुखत: गीतकार के रूप में प्रसिद्ध मोती बी.ए. का कहना भी है:-

"मेरी सांसों पर स्मृतियों के
जलते ज्वाला कण उठते हैं
संयम कर-कर मैं हार गया
इस पथ से गीत न मुड़ते हैं।"

मोती बी.ए. के प्रारम्भिक गीतों में छायावाद का प्रभाव देखा जा सकता है किन्तु वह अनुकरण के रूप में न होकर स्वाभाविक अनुभूति से प्रसूत है और आश्वस्त करता है कि गीत मर नही सकता, युगानुसार उसके कथ्य बदलते रहते है अथवा प्रस्तुति और शिल्प बदलाव ग्रहण करते रहते है। यही कारण है कि स्वतंत्रता-संघर्ष भी मोती बी. ए. के गीतों और कविताओं में मुखर होता रहा है :-

"बेड़ी काटो, जोर लगावो
कुछ तो अपना बल अजमाओ
मौत के घर भी हंसकर जाओ
साज मरण के साज
गूंज उठी बंदी प्राणों में
यह कैसी आवाज!"

रचनाओं के साथ रचना-काल दिया गया है। इससे कवि-गीतकार के क्रमिक विकास को समझने, उसका मूल्यांकन करने में मदद मिलेगी। सन् 1966 में रची उनकी कविता 'गुहाद्वार' का यह अंश देखें-

"प्रबल पराक्रम से शक्ति-संगठन से
था प्रहार किया
खोल दिया गुहाद्वार
सघन तम दर्शन का लक्ष्य तो रहा नहीं
गुहा मध्य दीपदान करने को
महाप्राण चल पड़े
किन्तु हाय, खो गए
गुहा के निविड़ अंधकार में
बुझ गए दीप
ज्योति अंधकार पी गया।"

सन् 1991 में लिखित कविता 'जड़ता से ऊपर' में कवि कहता है-

"प्रशंसा निष्क्रिय/
और भर्त्सना/
जड़ बना देती है/
मुझे उपाधि-ग्रस्त मत करो/
हे मेरे देवता/
स्वयं जड़ता और निष्क्रियता से/
ऊपर उठो/
तुम्हारा उदाहरण ही/
मुझे/
सक्रिय और सचेष्ट बनाएगा/
पक्षधर्मता/
और विरोध की अवस्थाएं/
स्वतः समाप्त हो जाएंगी।

'आग और अनुराग' की कविताएं हिन्दी काव्य-विकास को समझने में भी सहायक होंगी।

मोती बी.ए. निराशा में आशा खोज निकालने वाले कवि है। इस संदर्भ में एक पत्र में लिखी निम्नलिखित पंक्तियां याद आ रही है:-

जहां संघर्ष होता है
वहीं उत्कर्ष होता है
वही सच्चा मनुज जिसको
दुखों में हर्ष होता है।

● **सत्येन् शर्मा**

गिरिराज - साप्ताहिक, शिमला
5 मई, 1999

दिनाँक 17 जुलाई 2005 का समाचार

समाचार पत्र 'युनाइटेड भारत'

भाग 01

सृजन

मोती बी०ए० : माटी से जुड़ा एक कवि

गिरिजाशंकर राय गिरिजेश

किसी कवि के बहुआयामी व्यक्तित्व का स्मरण कराते ही मोती बी.ए. का नाम स्मृति में स्फुरित हो जाता है। मोती बी.ए. एक ऐसा व्यक्तित्व है जो समान रूप से हिन्दी, उर्दू, अंग्रेजी और भोजपुरी में कलम रगड़ कर सकते हैं। मेरे जीवन में अभी कोई ऐसा व्यक्ति नहीं आया है जो इस स्तर की प्रज्ञा का हो। भाषा पर किसी एकाधिकार किये आसन रखना नहीं की जा सकती है। गद्य रचना तो सरल है पर पद्य रचना के लिए आसमान सामने होनी चाहिये। मोती जी ने हिन्दी में जहां गीत लिखे वहीं उर्दू में गजलें लिखीं, अंग्रेजी कविताओं का अनुवाद कविता में जहां किया वहीं अंग्रेजी में 'ब्लाम्नेट्स' भी लिखे। जैसे अधिकतर रचनाएं भोजपुरी में ही इसलिए मोती जी को भोजपुरी के कवि रूप में अधिक जाना जाता है।

मोती जी की रचनाओं को पढ़कर आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने दो अक्टूबर १९७२ के अपने पत्र में लिखा था-'आपकी प्रतिभा और भाषा पर अधिकार देखकर मुझे बड़ी प्रसन्नता हुई। शेक्सपीयर की 'चतुर्दशपदियों' कवि भावक मानस मोती के मुक्तक पढ़कर मुझे बहुत तृप्ति मिली है। भोजपुरी कविताओं से बहुत तृप्ति मिली है। भोजपुरी कविताएं तो बहुत सुन्दर हैं। साधारण [illegible] में गुणीजन की स्मृति को [illegible] गया है। 'बहुआयामी' होने ही कविता है।

अपने अन्दर बहुत पाने में
बहार सजाने
कोयल सरल सुरक्षा [illegible]
बहुत रहे रस घूंटे
जबसे भले मिलुआरे के
बेयार आकर्षी

'युगानुभवा' शेमर के फूल, उनकी बहुचर्चित कविताएं हैं 'दर्दे-ए गुहर' मोती जी के गजलों का संकलन है। भूली हुई भोल में अंग्रेजी कविताओं का संकलन है। अंग्रेजी लिखने उनका अनुदित काव्य ग्रंथों में अंकित है। हिन्दी कविताओं के भी कई संकलन हैं।

जो मैंने कभी सिर झुकाये न होता
मोती जी का जन्म उत्तर प्रदेश के देवरिया जिले के भोजी गांव में पहली अगस्त १९१९ को हुआ था। उनका पूरा नाम मोती चन्द्र उपाध्याय है। एम.ए.बी.टी. साहित्य रत्न करने के बावजूद उन्होंने अपने नाम के आगे बी.ए. लगाया क्योंकि उस समय बी.ए. शिक्षक एक आदरपूर्ण बात थी। बाबूराम सुन्दरराम, उपनाम सवाई देवचन्द थी के पद पर रहे। फिल्मिस्तान की सुपरहिट फिल्म 'जीवन के धार' के सभी 'सावन' के सभी गीत मोती जी ने लिखे थे। प्रकाश पिक्चर्स की फिल्म 'भरत मिलाप' के गीत मोती जी ने लिखे थे। भोजपुरी की सर्वप्रथम फिल्म में रे जाने का श्रेय मोती जी को है। फिल्म जीवन के धार का पहला गीत शुद्ध भोजपुरी 'विरहा' है।

अंधेरा के नइया बाटे रे मलाहवा
जीवन के धार दे उतार
छपक-छपक भाई सीती नइयवा
मलाहवा
आई पुरवाई के बहार
इस गीत को चर्चे पर बेहद खूबसूरत ढंग से फिल्माया गया था। फिल्म के सेवानिवृत्त होने के बाद उन्होंने भोजपुरी फिल्म 'लोकुकाहर', 'बलम परदेसी' के गीत लिखे। भोजपुरी फिल्म 'गजब भइले राम' में इन्होंने गीत ही नहीं लिखा अपितु अभिनय भी किया। यही नहीं फिल्म निर्माण में भी भागीदारी रही। फिल्म बनकर तैयार हुई तो भागीदारी के कुछ मुद्दों को लेकर विवाद हो गया और मामला न्यायालय में चला गया जो आज भी लम्बित है। फिल्म प्रदर्शित नहीं हुई। मोती जी ने जीवन भर की कमाई गंवा दी थी। फिल्म के विवाद में फंसने का असर मोती जी पर इतना पड़ा कि वे टूट से गये। कवि सम्मेलन, आकाशवाणी, दूरदर्शन पर मोती जी दिखे पर वह दृश्य उनको आज तक सालता है। उम्र के अंतिम दौर पर उन्होंने चारपाई पकड़ ली है। अनन्त दर्शन जवाब दे चुकी है। दीखता भी कम है। एक बेटी है जो उनकी भली भांति सेवा है तथा उनकी देखा करती है। छोटे पुत्र भी उनको अपनी बात दिखाकर सुख लेते हैं। पत्नी का स्वर्गवास वर्षों पूर्व हो चुका है।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने अपने पत्र में लिखा था-मुझे इस बात का दुःख है कि आपको जैसा सम्मान मिलना चाहिये नहीं मिला। पर इससे हताश होने की कोई जरूरत नहीं है। वास्तव में मोती जी को इससे कोई हताशा नहीं थी जब तक कलम चली चलाया।

मेरे कई वर्ष उनके साथ गुजरे हैं। आकाशवाणी 'सेमर के फूल' भोजपुरी संसद ने छापा था। मोती जी वहां आते थे। पिछली फरवरी में किसी ने कहा मोती जी की हालत खराब है। कभी भी जा सकते हैं। मैं सकते में आ गया। अगले दिन बरहज पहुंचा। वर्षों के बाद मोती जी सामने थे। ठीक-ठाक थे बीमारी की बात गलत थी। छोटे पुत्र ने मिलाकर मेरा नाम बताया। क्षण भर सोचे फिर हंस दिये। उनकी आंखों में चिह्नता दिखी। पर क्षण भर में वह भर आयी संभवतः अपनी विवशता का स्मरण कर। मैं कुछ देर रहा फिर लौट आया। पहली अगस्त को मोती जी ८६ वर्ष के हो रहे हैं। ईश्वर उन्हें लम्बी उमर दें कि हमें प्रेरणा देते रहें।

भाग 02

तो बहुत तृप्ति मिली है। भोजपुरी कविताएं तो बहुत सुन्दर हैं। साधारण भोजपुरी के कवियों में गालों हो गलत-सही बातों को स्तुति करने की प्रवृत्ति पायी जाती है। आप में कम है। भोजपुरी के माध्यम से उत्तम से उत्तम विचारों और उदात्त भावनाओं का विकास होना चाहिये और परिवर्तन की सही दिशा की ओर सकारात्मक इंगित होना चाहिये। आपकी कविताओं में इसके बीज हैं।'

आचार्य द्विवेदी का कथन मोती जी की सही समीक्षा है। पूर्वी उत्तर प्रदेश के गौरव हिन्दी भोजपुरी के श्रेष्ठ इस सिद्ध कवि का बहुआयामी व्यक्तित्व कितनी ही सीढ़ियों को पार करके शाश्वत विराट सौन्दर्य का सन्देश देते हुए शिव बना हुआ है। वे माटी के कवि हैं। उनकी रचनाओं

'इतिहास का दर्द' उनके निबंधों का संकलन है। मोती जी ने कुल २८ पुस्तकें लिखी हैं जिनमें उनकी कविताएं हैं। 'लाहौर की नहर' पुस्तक में लाहौर की नहर पर एक लम्बी कविता है। उनके मुक्तक श्रोता को सीधे प्रभावित करते हैं यथा

दूर के फेक द चाहे मोम मत
डोरे खातिर करेजा डेराइले रही
चाहे आंधी बरो, चाहे बिजुली गिरो
फूल ह त जवाना महकते रही

'दर्दे गुहर' के गजल में वे कहते हैं-

किसी का अगर फिर दुआया न होता
मजा मुझको जीने का आया न होता
अगर की न होती उसे ये मुहब्बत

अपने नाम के आगे बी.ए. लिखते थे। संभवतः मोती जी इसी से प्रेरित थे। छोटा नाम बी.ए. लगने से गंभीर हो गया। १९३९ से १९४३ तक मोती जी ने आजमी, 'आज का संसार और आर्यावर्त' जैसे दैनिक पत्रों के संपादकीय विभाग में काम किया। १९४३ में भारत के रक्षा कानून के तहत मोती जी वाराणसी की सेण्ट्रल जेल में नजर बंद रहे। १९४२ से १९४४ तक मोती जी पंचोली आर्ट पिक्चर्स लाहौर प्रकाश पिक्चर्स और फिल्मिस्तान लिमिटेड बम्बई में गीतकार होरी दिलीप कुमार और हीरोइन कामिनी कौशल थी। फिल्म सावन की गजल-'तुम हो हमारे हो न हो हमको तुम्हारा ही आसरा...' मोती जी ने लिखी थी। रफी के स्वर में यह गजल आपको जब कभी गूंजती है तो लगता है कि मोती जी ने इसे काफी जीवनाल से लिखी थी। १९५२ से मोती जी श्रीकृष्ण इण्टर कालेज बरहज में इतिहास, तर्कशास्त्र और अंग्रेजी के प्रवक्ता थे। १९८० में वे सेवानिवृत्त हो गये। बरहज बाजार में नन्दना वार्ड स्थित अपने मकान में वे जीवन के अंतिम क्षण गुजार रहे हैं।

मोती जी को अनेक संस्थाओं ने पुरस्कृत किया तथा सम्मानित किया।

दिनाँक 12 जून 2002 का समाचार

समाचार पत्र 'राष्ट्रीय सहारा'

मोती बी.ए.

'ठाट जीवन का वही जो ढह गया है'

मोती बी.ए. के साथ आत्मीय क्षणों में डा. रामेश्वर शुक्ल 'अंचल'

'जरा जीवन का वही
जो ढह गया है, जीवन बह गया है
दिये हैं मैंने जगत के फूल-फल
किया है अपनी प्रभा से चकित चल
पर अचानक वह सकल परिमल प्रात
अब नहीं आती पुलिन पर दिवसभर
स्नात तृण पर बैठने को निरुपमा
कह रही है हृदय पर केवल अमा
मैं अवसित हूँ, यही कवि कह गया है।'

निराला की उपर्युक्त पंक्तियों की गुंजारव वाली कविता 'मोती बी.ए.' की कविता में पहचानता हूँ। कवि अनगढ़ की अंतिम पहचानता है और यही उसकी पहचान कवि लेखक की पहचान बन जाती है। मोती बी.ए. बहुत पहले ही कलकत्ता से लौटकर के पास आकर मुझे मधुशाला का चुके हैं।

'कहता जो नहया कलहुई रे मनमाना
मदिरा जो पार है उतार'

प्राकृतिकियों को भरपूर मिलता है। मेरी अवधारणा है कि जिस क्षेत्र में इतना बड़ा मोती रहा हो, उस क्षेत्र का एकाधिपत्यकि तो मोल मानो जुड़ना और जोड़ने की प्रक्रिया की सीख का भारत की पद-प्रधान संस्कृति का प्रचार-प्रसार किया ही होगा। इसी एकाध लोगों में से जो कविता मोती बी.ए. का भी मान श्रद्धा के साथ लिया जाता है। गाँव शोहरकर बाहरा(यह भी संयोग से साधु के लोग बाग करता) में रम-रम गये कवि मोती बी.ए. जब तक मरणु जान का आयामन किया करते थे(अब अति अस्वास्थ्य के कारण संभव नहीं है) किन्तु हिन्दी खड़ी बोली, भोजपुरी और अंग्रेजी के माध्यम से निज-प्रति मान-मान कर जाते थे। एक समय ऐसा था कि कवि स्थान मोती बी.ए. का लखनी-निवास, कवि पश्चिमी में कवि को कविता को वंदन के लिए स्थान लगी रहती थी, किन्तु इधर यह स्थानीय समाज आज उनकी पुण्य वार देख आने पर वाणी फूला-फूला किसान है जैसे

नहीं चाहते हैं। कई एक तो चाटुकारिता भी उन्हें से गये हैं। आज की कुछ देख चढ़ता था, अब तो मेरा तन केवल देह का काम रह गया है, मेरा हाथ का इशारा आगाह और उड़ने ले जाएगा, लेकिन विश्वास है कि आगामी खड़े लोगों की आवाजों में उनका किनका अवश्य पहुँचा और शायद उनमें लोग पहचान ले यह मरणु की इसी देह में मोती कहाने वाला मोती बी.ए. के देह-नगर किनका है। छोटी गलियों को सुनाया और कहा कि यह सामने पड़ा किसाने पड़ी है लकड़ी, गुड़िया लाखी और चाटी को

सहेजकर मुझको बोटिए आवाजों के साथ दिया, यह कहकर कि कभी कुछ इस पर लिखना। चाटी किसाने कहता: 'तुलसी रामायण, कुछ गीत

कुछ कविता, BEAUTY IN VEIL व महाराणी लक्ष्मीबाई आई है।

इन्हीं रचनाओं के माध्यम से कुछ कह देने कवि की आशा का अनुपालन होगा। 'तुलसी रामायण' जैसा कि नाम से ही अभिव्यंजित हो रहा है यह-

आँसुओं की पीड़ है, आंख में रसायन है
आसरा लिखने को, नाथ का रसायन है

भोजपुरी काव्य संग्रह है। जबकि तुलसी कवि जीवन में विरोधी को पूरी आशा से पालन किया है। इस सामन कवि को लिखने के लिए सम्मुख तुलसी का रसायन जो कवि ने बहुत पहले ही कर लिया था, दिया जा रहा है। दूसरी पुस्तक 'कुछ गीत कुछ कविता' कवि के काव्य-सृजन की प्रेरणा, काव्य प्रक्रिया, काव्य-प्रयोजन और कविता के जन्म के विषय में पर्याप्त प्रकाश डालती है। मैं व्यक्तिगत रूप से कविवर मोती बी.ए. की छायावादी कविताओं को दिल और दाग के बहुत ही निकट पाता हूँ। कविता वैसी जन्मती है प्रसाद से लेकर महादेवी वर्मा तक सभी ने किसी न किसी रूप में आह, वेदना, पीड़ा, टीस, दुःख को ही कविता की जन्मदाती माना है। कविवर मोती बी.ए. भी इसमें सहमत हैं। कहते हैं-

'गाय गाया है, राग गीत है
राग काव्य-रचना करता है
[illegible] लिखता है
[illegible] है।

कवि की मौलिकता उनके मूल से जुड़े रहने में ही है। जब वह मूल से कटा, तभी कवि जीवन से सदा-सदा के लिए हटा। यही कारण है कि सर्जन के विभिन्न क्षेत्रों में दौड़ लगाने के बाद फिर कभी मोती बी.ए. अपनी माटी से अलग नहीं हुए और माटी में माटी को मिलाने के लिए तैयार बैठे हैं-

'कहता जो मूल से मौलिक नहीं जो वह,
कहाँ से अर्थ लगाएगा, जीवन व्यर्थ हो जाएगा।'

तीसरी रचना अंग्रेजी में 'BEAUTY IN VEIL' में कुछ कविताएं संकलित हैं। काफी कविताएं कोमली हैं। 'CANDLE LIGHT' कविता में मोमबत्ती की तरह अपने को पिघलाकर, पूरी तरह से जलकर भी दूसरों को प्रकाश देना चाहता है। चतुरथ में कवि मोती बी.ए. जिजीविषा के कवि हैं। चौथी रचना 'महारानी लक्ष्मीबाई' है। सुभद्रा कुमारी चौहान की कविता 'खूब लड़ी मर्दानी वह तो झाँसी वाली रानी थी' से प्रेरणा लेकर यह काव्य संकलन तैयार गया है। इस रचना को पढ़ने के उपरान्त यह कहना कि मोती बी.ए. जिसकी में प्रभावित नीरव और मस्ती में डूबे रहे केवलमात्र होगी। कवि के जीवन और कार्यों की सीमा नहीं है और यह सर्वांग से अभिनंदन ही गया है-

'इधर कवि की छोटी
टुकड़ी
उधर किसी मस्ताने
इधर पेशवा की गहरी
उधर विदेशी दीवाने
इधर अंग्रेजी
लक्ष्मीबाई
जलती हुई निशानी थी
उधर किसी परवाने
ने
अपने जलते पर
मंडराने
मगर याद आती
मोती की
अब भी हमसे
कहानी
धन्य धन्य हमसे
की रानी
धन्य तुम्हारी कुर्बानी।'

इस विराट कवि की कविता पूरी में संकेत चित्र कवि की नहीं से महाकाव्य को पार करने के समान होगा, जो सर्वथा असंभव ही होगा। कवि ने सुभद्रा कवि आशीर्वाद मिलता रहा है और यह आशीर्वाद चौतरफा पेश कल्याण करेगा इसी सन्देशकाल के साथ इस कवि को जय-जय नमन करते हुए यही कहूंगा कि- यह मोती बहुत चमका, इतना चमका की आकाश की बिजली को भी मुँह देख लेना पड़ा, लेकिन अंधेरे किनारे चमके-

एक है मोती-चमके किनारा।

चलते चलते मैं आदेश हुआ कि कुछ कुछ सुनाऊँ, सुन ली नहीं पा रहा हूँ, सहज देख लीजिये, हो अपनी 'मोह' कविता सुन दी। आशा की आशा कब संभव थी-

'पहला मोह बचपन का
खेलने और खाने का
दूसरा मोह यौवन का
जो जोश जवानी का
तीसरा मोह बुढ़ापे का
अपने साथ ही जाने का
सारी मोह पर
मंडराकर मुझको
हुई [illegible]
[illegible]।'
जाग-जगाई किया
और विदा लिया।

● डा. रामेश्वर शुक्ल 'अंचल'

दिनाँक-जुलाई 2002

पत्रिका 'स्टेट टुडे'

01

स्टेट टुडे

भोजपुरी के पुरोधा : मोती बी०ए०

मन में अजीब मिठास, हृदय में शीतलता तथा गजब का अपनापन उत्पन्न करने वाली भाषा है भोजपुरी। सर्वप्रथम "भोज" शब्द आर्यों के प्राचीनतम ग्रन्थ ऋग्वेद के 10वें मण्डल के 117 में सूक्त के 8वें से 11वें मंत्र में प्रयुक्त किया गया। ऋग्वेद "भोज" शब्द साहसी, पराक्रमी तथा दानशील लोगों के गुणगान के प्रसंग में वर्णित है। प्राचीन भारत के दो महाकाव्यों में से एक महाभारत में भी संज्ञात्मक अर्थ में इस शब्द का प्रयोग किया गया। लगभग 1450 वर्ष पूर्व संस्कृत के उद्भट विद्वान तथा पराक्रमी शासक भोजराज के समय "भोज" शब्द एक राज्य के अर्थ में प्रयुक्त हुआ। भोजराज की विदुषी पत्नी भानुमती के नाम पर ही "भानुमती का पिटारा" मुहावरा आज भी लोकमानस में प्रचलित है। राजनीतिक तथा धार्मिक कारणों से भोजराज ने काशी के बजाए भोजपुर में अपनी राजधानी स्थापित कराया।

भोजपुरी भाषा का गौरवशाली अतीत गवाह है कि भोजपुरिया क्षेत्र के लोगों ने अपने पराक्रम के साथ-साथ कलम से भी भारतीय इतिहास को नई ऊँचाई प्रदान किया। इस सत्य को अब्राहम गीर्यसन ने भी स्वीकारा है। एक विस्तृत क्षेत्र में निवास करने वाले विशाल जनसमूह द्वारा बोली जाने वाली "भोजपुरी" अर्ध मागधी प्राकृत की पुत्री है। भर्तृहरि तथा गोरखनाथ का नाम इस भाषा के आदि साहित्यकारों के रूप में लिया जाता है। यजुर्वेदीय उच्चारण वाली यह भाषा शेरशाह सूरी के दरबार में भी प्रतिष्ठा पाई थी। भोजपुरी भाषा एवं संस्कृति एक विशिष्ट जीवनशैली है जिसने जिस मात्रा में इसे आत्मसात किया वह आनन्द सागर में उतनी ही गहराई तक डूबता चला गया। भोजपुरी की विशिष्ट शैली तथा समृद्ध विरासत का उपयोग कर अनेक मूर्धन्य साहित्यकारों, कवियों, रचनाकारों तथा कलाकारों ने राष्ट्रीय तथा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्धि पायी है। ऐसे ही स्वनामधन्य व्यक्तित्व के धनी भोजपुरी के शेक्सपीयर के रूप में ख्यातिप्राप्त भोजपुरी के पुरोधा मोती बी०ए० किसी पहचान के मोहताज नहीं है बल्कि वे भोजपुरी आकाश के देदीप्यमान नक्षत्र हैं।

01 अगस्त 1919 को पूर्वांचल के दो प्रमुख सन्तों पूज्य साधु दास तथा ब्रह्मलीन योगीराज देवरहा बाबा की तप स्थली के मध्य बरेजी गाँव में जन्म लेने वाला जिज्ञासु तथा साहित्य सुधी बालक ही आज अपनी सशक्त लेखनी तथा विलक्षण प्रतिभा के बल पर मोती बी०ए० नाम से ख्याति लब्ध है। इनके अन्दर कवियों के प्रति सहज और स्वाभाविक आकर्षण बाल्यावस्था से ही था। जो भी कविता मिल जाती उसे कण्ठस्थ कर लेते तथा हर समय उसे अपनी सुरीली तथा मीठी आवाज में गाया करते और यह मानसिकता आज भी सजीव है। उन्हीं के शब्दों में "मन-प्राण की जुड़ाई कोड़ाई गहरे से हो रही थी और कोई अव्यक्त शक्ति स्वतः कविता रचना का बीजारोपण कर रही थी। इसी स्रोत तथा प्रेरणा ने कवि बना दिया। 16 वर्ष की आयु में प्रथम रचना-

अरि सखि घूँघट के पट खोल! कलि अभी प्रस्फुटित नहीं है।

मन्द समीर डोल रही है रस पराग युग राग सुरभि।

बिखरा दो ना अनमोल। अरि सखि घूघट के पट खोल।

हिन्दी दैनिक आज में प्रकाशित हुयी। इसके बाद तो ऐसी अजस्रधारा चली जो निर्बाध गति से आज भी जारी है। मोती जी ने 1939 से 43 तक अग्रगामी, आज, संसार तथा आर्यावर्त समाचार पत्रों के संपादन विभाग में सहायक के रूप में कार्य करते हुए अपनी तीक्ष्ण लेखन दृष्टि से लोगों को लाभान्वित किया। 1943 में ही भारत रक्षा कानून के तहत वाराणसी सेन्ट्रल जेल में बन्द हुए किन्तु आज भी मोती जी को इस बात की कसक है कि पूर्वांचल के नामी गिरामी जनप्रतिनिधियों से व्यक्तिगत निवेदन के बाद भी उन्हें स्वतंत्रता संग्राम सेनानी की सुविधा आज तक नहीं मिल सका।

स्वनाम धन्य मोती जी हिन्दी और भोजपुरी के पुरोधा हैं। अंग्रेजी तथा उर्दू में भी उन्होंने साधिकार रचनाएं की हैं। वे काव्य जगत में अप्रतिम हैं और गीतकाव्य के तो महारथी हैं। आज भी कवि सम्मेलनों के श्रृंगार हैं। यद्यपि जब हिन्दी में मूर्धन्य एवं जगप्रसिद्ध कवि एवं गीतकारों का वर्चस्व रहा तब भोजपुरी के लिए मोती जी ने अपने जीवन का होम करके इसके उत्थान का उस समय संकल्प लिया जब भोजपुरी का नाम भोजपुरी क्षेत्र में ही कम लोग जानते तथा बोलते थे। आज भोजपुरी काव्य साहित्य किसी भी देशी या विदेशी काव्य साहित्य से कम मौलिक तथा लोकप्रिय नहीं है। हिन्दी साहित्य में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र तथा आचार्य महावीर प्रसाद द्विवेदी ने भाषा के निखार तथा स्थिरता के लिए जो कार्य किया वही कार्य भोजपुरी के लिए मोती जी ने किया अर्थात् भोजपुरी साहित्य में इन्होंने एक युग का निर्माण किया। वस्तुतः मोती जी के बहुआयामी व्यक्तित्व में हिमालय की ऊँचाई, पाण्डित्य में समुद्र की गहराई, विचार में गगन की तरह निर्लिप्त विस्तार तथा संकल्प में गंगा की पावनता की छाप है। लगभग 60 वर्षों से काव्य साधना में लीन मोती जी के गीतों में काव्यगत सौन्दर्य के साथ-साथ पाठकों तथा श्रोताओं को अपनी तरफ आकर्षित करने की विलक्षण क्षमता है।

प्रारम्भ से ही फिल्में - सूचना, शिक्षा तथा ज्ञान विज्ञान की सशक्त माध्यम रही है यही कारण है कि फिल्मों को अन्तर्लोगरंजा लोक जीवन की ही एक मंचीय प्रस्तुति मानी

गयी। इसीलिए फिल्मों को न केवल लोकप्रियता मिली बल्कि हम सभी ने उसमें अपने जीवन के विविध रंगों का अक्स भी देखा। स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व ही मोती जी ने फिल्मों के माध्यम से भोजपुरी भाष्य तथा साहित्य की जोरदार प्रचार की कल्पना किया। मनीषी सदैव दूरदर्शी होता है तथा दूरगामी परिणामों पर अपनी दृष्टि रखता है। लगभग 55 वर्ष पूर्व फिल्मों में भोजपुरी गीतों का समावेश कर मोती जी ने अपनी इसी दूरदर्शिता का परिचय दिया और उनके सद्प्रयासों का आज सुपरिणाम भी दिखाई दे रहा है कि न केवल भोजपुरी फिल्मों में बल्कि हिन्दी फिल्मों में भी भोजपुरी गीत स्थान पाने लगे हैं। भोजपुरी लोकगीतों के कर्णप्रिय संगीत, धुन तथा लय से भारतीय साहित्य जगत पहले से ही प्रभावित रहा है। उसमें मोती जी के सद्प्रयासों ने सोने में सुगन्ध का कार्य करके भोजपुरी गीतों को शीर्ष पर आसीन करा दिया। जनमानस की भोजपुरी गीतों के प्रति बढ़ते आकर्षण तथा लगाव के कारण ही 1962 में पहली बार विशुद्ध भोजपुरी फिल्म "गंगा मइया तोहे पियरी चढ़इबों" का निर्माण हुआ जो सुपर हिट फिल्म साबित हुई। इसके बाद तो जैसे भोजपुरी फिल्म बनाने की होड़ लग गयी जिनमें से कुछ फिल्मों ने नाम तथा यश भी कमाया किन्तु यह भी शाश्वत सत्य है कि जब व्यसायिक लाभ के वशीभूत होकर त्वरितगति से कोई कार्य किया जाएगा तो गुणवत्ता प्रभावित होगी तथा भोजपुरी फिल्में भी उससे अछूती नहीं रही। मोती जी की कविताओं ने भोजपुरी कविता के पिंगल शास्त्र को नयी दिशा प्रदान की तथा उसमें ठहराव की जगह विविधता, लौकिकता की जगह शास्त्रीयता तथा कान्यांश के स्थान पर रसज्ञता का प्रादुर्भाव हुआ।

अस्वस्थ होने के बावजूद मोती जी को इस बात की चिन्ता सताए जा रही है कि "भोजपुरी के विकास के लिए जिस मनोयोग तथा तेजी से प्रयास होना चाहिए वह नहीं हो रहा है। उनके अन्तर्मन की पीड़ा उनके चेहरे पर स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है। कवि सम्मेलनों के सिर मौर रहे मोती जी की हार्दिक इच्छा है कि भोजपुरी को संविधान की अनुसूची में सम्मिलित किया जाए तथा बाबा राघव दास की कर्मभूमि बरहज में भोजपुरी विश्वविद्यालय स्थापित किया जाए। एक ऐसे भोजपुरी ग्रन्थालय की स्थापना हो जहां इस भाषा की दुर्लभ कृतियां तथा पाण्डुलिपियां अध्ययनार्थ रखी जाएं जिससे प्रेरणा लेकर युवा तथा प्रतिभावान रचनाकार इस भाषा में रचना करने में किसी प्रकार का संकोच न करें। स्तरीय भोजपुरी पत्रिका तथा समाचार पत्र का प्रकाशन हो। मध्यप्रदेश की तरह उत्तर प्रदेश में भी भोजपुरी अकादमी स्थापित हो और विश्वविद्यालय पाठ्यक्रम में इस भाषा को भी सम्मिलित किया जाए। विलुप्त हो रही भोजपुरी कहावतों का संग्रह प्रकाशित हो अर्थात् भोजपुरी के समग्र विकास के लिए न केवल सिद्धान्त रूप में बल्कि व्यवहारिक रूप से ठोस योजना बनाकर उसे क्रियान्वित किया जाए जिससे लोकमानस से जुड़ी इस भाषा तथा संस्कृति का व्यापक प्रचार–प्रसार हो सके।" मोती जी की अस्वस्थता के चलते भोजपुरी जगत चिन्तित है क्योंकि भोजपुरी युग के निर्माता मोती जी से ढेर सारी अपेक्षाएं हैं। हम भोजपुरी भाषा–भाषियों की हार्दिक इच्छा है कि भोजपुरी के पुरोधा मोती जी शतायु हों ताकि हम अनेक वर्षों तक सनाथ बने रहें।

भोजपुरी भाषा के उत्थान के लिए अपना जीवन समर्पित कर देने वाले कवि, गीतकार, छंदकार, फिल्मकार तथा आदर्श अध्यापक मोती लाल उपाध्याय (मोती बी०ए०) को राष्ट्रीय साहित्य अकादमी द्वारा भोजपुरी भाषा का श्रेष्ठ साहित्यकार मानते हुए "प्रथम साहित्य अकादमी" पुरस्कार देने का निर्णय लिया गया है। यह सम्पूर्ण भोजपुरी भाषा भाषियों के लिए गर्व की बात है। 22 भारतीय भाषाओं के श्रेष्ठ साहित्यकारों को पुरस्कृत करने वाली राष्ट्रीय साहित्य अकादमी ने ऐसी सभी क्षेत्रीय भाषाओं (जिन्हें अभी तक अकादमी

मोती जी की रचनाओं में रहस्य, आध्यात्म, रोमांस, विरह, प्रकृति वर्णन तथा राष्ट्रीयता से लेकर वर्तमान सामाजिक तथा राजनीतिक जीवन की विसंगतियों का सजीव वर्णन है। इसके बावजूद वियोग, श्रृंगार तथा प्रकृति के महारथी रचनाकार हैं। प्रकृति की सजीवता उनकी रचनाओं में सर्वत्र दिखायी देती है।

कठवा के नइया बनइहें रे मलहवा,
नदिया के पार दे उतार।
मोरे राजा हो ले चल नदिया के पार,
मोरी रानी हो तु ही मोरे प्राणधार।।

संसार की असारता को दृष्टान्त के माध्यम से सहज भाव से प्रस्तुत करने में मोती जी का कोई जोड़ नहीं है। जीवन की सच्चाई तथा संसार की असारता का चित्रण करते हुए मोती जी ने कहा

सुगना सेमर के फूले का एतना लपटाइल बाड़ड़।
सगरे ज्ञान भुलाइल बाड़ड़ हो।
हमहुं देखनी एगो एईसन फूल फुलाइल बा।
सगरे लोग मोहाइल बा।

भौतिकता तथा सांसारिकता के भावचक्र में फंसे मनुष्य को लक्ष्य की तरफ बढ़ने की प्रेरणा हेतु हुए मोती जी कहते हैं :–

तनी अउरी दउरड हिरना पा जइबड किनारा।
दउरे ल अनेर तु पहुंचले में देर बा।
बुझिल वचन इ समुझला का फेर बा।

प्रकृति वर्णन में उनकी रचना "महुआवारी में बहार" तथा "चिरई हो चिरई" अद्वितीय हैं। वसन्त ऋतु में छायी मादकता का चित्रण सजीव ढंग से "महुआवारी" में करते हुए उन्होंने कहा –

आसो आइल महुआबारी में बहार सजनी।
कोधवा मातल, भुइया छुवे, महुआ रसे रसे चुये।
जबसे यहे भिनुसार के बयार सजनी।

मोती जी भोजपुरी के मोती हैं जो सदैव चमकते रहेंगे। भोजपुरी के सशस्त हस्ताक्षर मोती जी इधर अस्वस्थ हो गए हैं। जिसका आभास दिलाती हुयी उनकी नवीन रचना है :–

पंगु बधिर अर्धान्ध मूक हूँ, पीर कलेजे दबी हूक हूँ।
कहने को हूँ एक इकाई, टुकड़े–टुकड़े टूक–टूक हूँ।

कानों से कम सुनाई देने लगा है, पाँव शरीर का भार ढोने में असमर्थ हो चले हैं फिर भी रचनाकार की रचनाधर्मिता में कमी नहीं है क्योंकि उन्होंने स्वयं कहा है कि –

कलम न होती जिन्दा तो, कभी का मर गया होता।
पहुंचने के लिए घर पर, खुदा के घर गया होता।

दिनाँक 26 जनवरी 1983 का समाचार

समाचार पत्र 'साप्ताहिक मंगलगढ़'

२६ जनवरी ८३ ★ साप्ताहिक मंगलगढ़ ★

"नदिया के पार–गजब भइले रामा"

फिल्मों में भोजपुरी गीत के प्रथम उद्गाता श्री मोती बी० ए०

– श्री दिवाकर तिवारी

प्रवक्ता, रा. म. वि. चरखारी

फिल्म "नदिया के पार" (१९४८) जिसके गीतकार श्री मोती बी० ए० और संगीत कार सी० रामचन्द्र थे के सभी गीत उस जमाने में भी दर्शकों की जबान पर हंसते - मुकुराते खेलते नजर आते थे । ऐसे गीत जिनमें भावों की तरलता, बोल की मधुरता, अर्थ की मर्मस्पर्शिता तथा संगीत की स्निग्ध भीनी गंध होती है, कभी पुराने नहीं होते, । जब भी हमारी स्मृत–दृष्टि उनकी तरफ मुड़ती है वे भरी पूरी ताजगी के साथ फूलों की हंसी और गंध बिखेरते स्मृति पटल के तार - तार को झंकृत कर देते हैं । नदिया के पार के आठों गीत ऐसे ही हैं, जिन्हें गीत–संगीत की पारखी आंखों ने फिर देखा है, चाहने वालों ने उन्हें हमारे आपके बीच पेशकर सर्वसुलभ बनाया है। हाल ही में उन आठों गीतों रथ पर आरूढ थी, भोजपुरी जैसी आंचलिक भाषा में गीत लिखकर फिल्मों के माध्यम से उसे और उसकी संस्कृति को भारत में स्थापित करने की कल्पना पहले तो दिवा-स्वप्न ही लगी होगी । फिल्म के निर्माता निर्देशक, कलाकार, संगीतकार, सबके लिए यह एक प्रकार से अपनी लागत, परिश्रम और भविष्य के साथ जोखिम उठाना ही था । लेकिन मोती बी०ए० ने यह जोखिम उठाया और उस फिल्म कम्पनी के सभी सम्बन्ध लोगों को इसकी चुनौती के लिए तैयार किया । फिल्म बनी, रिलीज हुई और भोजपुरी के स्वर माधुरी की झंकृति पूरे भारत में गूंज उठी । भोजपुरी की मिठास और उसकी संस्कृति की सरलता, निष्कपटता, लिच्छलता को सभी ने आत्मीयवत अनुभव किया । नदिया होता है । फिल्म के प्रथम गीत (एकल) 'अंखियां मिला के अंखियां" को संगीतकार सी० रामचन्द्र ने सुरीन्दर कौर की आवाज में संगीत बद्ध किया । पंजाबी गायिका सुरीन्दर कौर की आवाज को वे एक सुन्दर आवाज के रूप में पेश करना चाहते थे । उसकी आवाज के प्रत्येक सुर को लहलहा उठने के लिए उन्होंने पूरी सेटिंग दी । यद्यपि शब्दों पर पंजाबी दबाव है तथापि स्वभाविक आरोह–अवरोह तथा स्वर संतुलन में इस गीत में तन्मयता भरकर इसे सुन्दर बना दिया है । दूसरा जो युगल गीत है, यौवन की मस्ती और उल्लास के ताने- बाने को व्यक्त करता है । ललिता देवलकर जो अब श्रीमती सुधीर पड़के हैं । तथा नवयुवक रफी ने इस टाईटिल गीत "मोरे राजा हो, ले चल नदिया के पार" को गाया है । अकार्डिया, हवाई गिटार और पियानो के माहिर प्रयोग ने इस गीत में चार चांद लगा दिया । मुहम्मद रफी जो बाद में गायक सम्राट बनकर अमर हो गए उस समय रफी पर–

दिनाँक 19 सितम्बर 1994 का समाचार

समाचार पत्र 'साप्ताहिक सम्प्रेषण'

भाग 01

'कलम होती न ज़िंदा तो कभी का मर गया होता'

शीतलवाड़ : भोती बी.ए. की ७५वीं सालगिरह पर विशेष

भाग 02

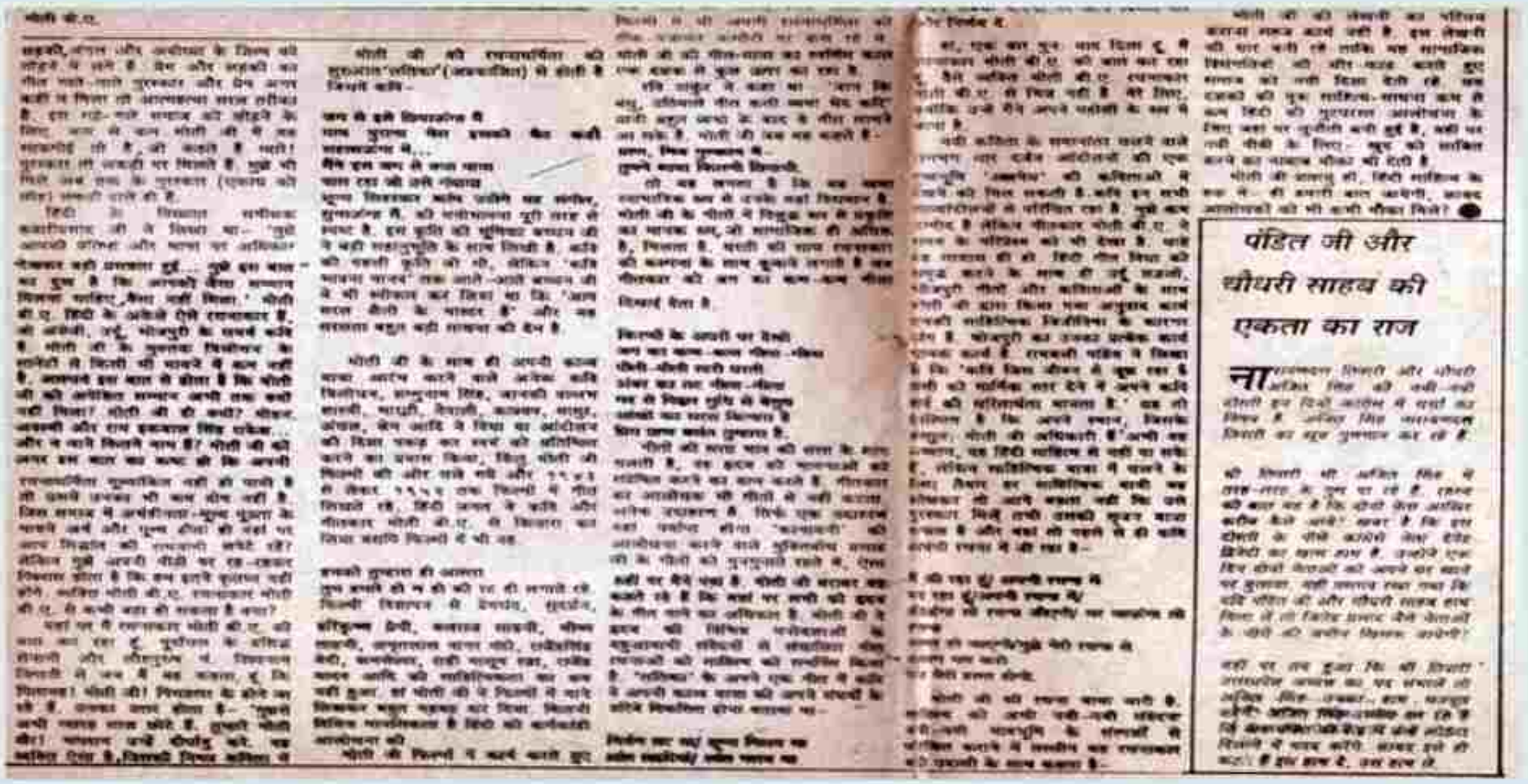

पंडित जी और चौधरी साहब की एकता का राज

दिनाँक 29 अक्टूबर 2007 का समाचार

अमर उजाला, पुरवाई में नर्वदेश्वर पाण्डेय का लेख चार भागों में।

01

विरासत

असों आइल महुआबारी में बहार सजनी...

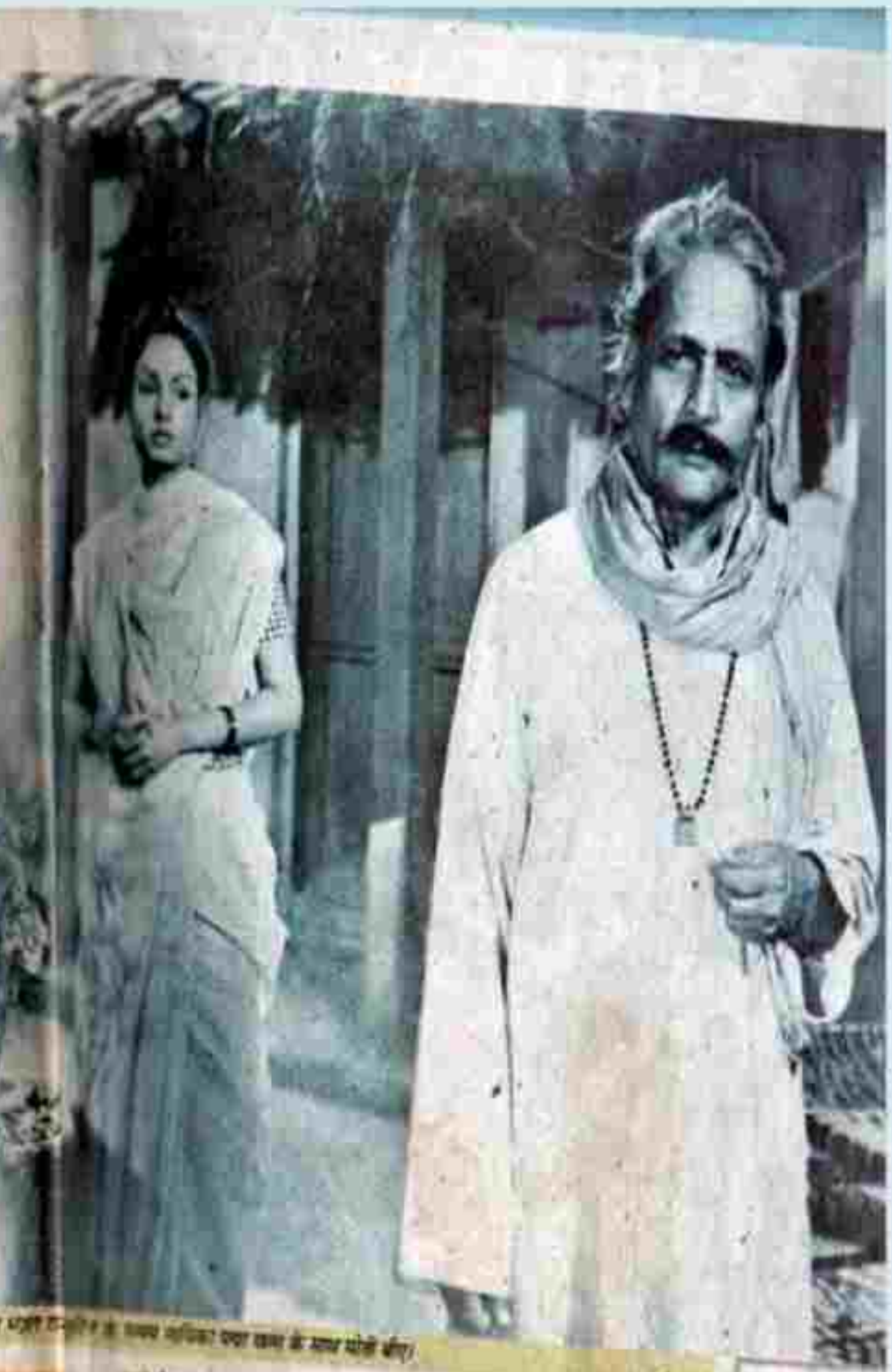

आजादी के तुरंत बाद 1948 में रिलीज हुई ब्लैक एंड व्हाइट फिल्मों के दौर की मशहूर फिल्म *नदिया के पार* (जिसके हीरो ट्रेजडी किंग दिलीप कुमार थे) सहित दर्जनों फिल्मों के गीत लिखे पूर्वांचल की माटी की उपज मोतीलाल उपाध्याय उर्फ मोती बीए ने। इस गीतकार ने फिल्मों से इतर भी काफी कुछ लिखा। बहुमुखी प्रतिभा के धनी मोती बीए ने स्वतंत्रता संग्राम में बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया और जेल भी गए। यह शख्स अपनी उम्र के नौ दशक पूरे करने जा रहा है। क्षेत्र की इस महत्वपूर्ण शख्सीयत पर *नर्वदेश्वर पांडेय* का आलेख।

पूर्वांचल की उपजाऊ माटी के गांव मोतीबी की माटी में जन्मे और पले-बढ़े मोतीलाल उपाध्याय उर्फ मोती बीए ने काम तो हिंदी, अंग्रेजी, उर्दू सभी भाषाओं में किया, लेकिन भोजपुरी में इन्हें विशेष पहचान मिली। अंग्रेजी में लगभग दो दर्जन पुस्तकें और सैकड़ों हिंदी गीत लिखे। यह 'मोती' बड़ी उम्र के कारण फिलहाल सक्रियता के मंचों से खत्म हो चुका है। उनकी अन्य सक्रियताएं भी समाप्त-सी हो चुकी हैं, पर उनके लिखे गीत आज भी आम जनमानस की जुबान पर हैं। यह कहना गलत न होगा कि आज उनकी सफलता उनकी 'कविता' दौर की भेंट हो

काव्यगत सौंदर्य दिलक्षण आकर्षण क मोती की कविता में ही देखा जा सकता

मोहम जैसों ने

03

में कहा है। आपको चिंतन ही पीड़ितों सहारा बनने की क्षमता रखती है।

हमें ताकत कहां मिलती,
अगर होती न कमजोरी
जिसे है चाह सरकार की

चमत्कार मंत्रि संसद से आह्लाद है। भोजपुरी, उर्दू और खड़ी बोली के गद्य-पद्य लिखने की प्रतिभा आप में सम्मान है। आप शतायु और यशस्वी हों।

उदय प्रताप सिंह

अन्याय किया, वह प्रतिकार करने के लिए सीना तानकर खड़े हुए। यहां तक कि आपने जिंदगी को दांव पर चढ़ाने से भी पीछे नहीं हटे। इस भाव को उन्होंने एक मुक्तक में कुछ इस प्रकार से व्यक्त किया,

देश आजाद होने के बाद आजादी की लड़ाई लड़ने वालों के बीच, जब पार्टीबंदी उभरकर सामने आई, तो मोती ने बड़े कष्ट किंतु बेबाकी से लिखा,

कइसे चली नाव,
ई त नइया में छेद बा
पश्चिम कमीसी के बा,
पुरब सोशलिस्ट बा
दक्षिन जनसंघी बाटे,
चारन कम्युनिस्ट बा
लाइन बा लंगोटा एकर टोपिये सफेद बा
कइसे चली नाव ई त नइया में छेद बा

उनकी भोजपुरी साहित्यिक कविता महुआबारी की लाइनें आज भी पूर्वांचल के जन-जन की जुबान पर है, जिसमें कवि ने महुआ के गुण की प्रशंसा करते हुए उसे किशमिश बताया है,

असों आइल महुआबारी में
बहार सजनी
महुआ बीन प्रेम से खाबो
गाड़ी खींचे जोत बनावो

मोती बीए की भोजपुरी साहित्यिक कविता महुआबारी की लाइनें पूर्वांचल में आज भी जन-जन की जुबान पर हैं

'आर्यावर्त' आदि समाचारपत्रों में संपादकीय विभाग में काम किया। आजादी की लड़ाई के दौरान वह नेताजी सुभाषचंद्र बोस से प्रभावित होकर स्वतंत्रता आंदोलन में कूद पड़े। 1944 से 1952 के बीच लगभग एक दशक तक उन्होंने बॉलीवुड में फिल्मों के लिए गीत लिखे।

इसमें कई भोजपुरी गीत बेहद चर्चित रहे, इससे भोजपुरी भाषा का झंडा पूरे देश में बुलंद हुआ।

मोती बीए की पत्नी लक्ष्मी का देहावसान 1988 में हो गया। मोती ने लक्ष्मी की याद में तिनका तिनका शबनम शबनम नामक पुस्तक प्रकाशित की। मोती बीए कवि, अध्यापक, गीतकार, स्वतंत्रता संग्राम सेनानी के अलावा एक अच्छे इंसान भी हैं। रचनाधर्मिता में तो उनका कोई सानी नहीं। जिसने उनकी रचना एक बार सुनी, वह उनका मुरीद हो गया। मोती ने जीवन की तमाम सफलताओं-असफलताओं और सामाजिक यथार्थ को करीब से देखा। वह

बीए के अलावा उर्दू में सफेद गुलाब, दर्द गुलाब जैसी पुस्तकों की रचना करने वाले इस कवि को भोजपुरी की जन जन बोल कोइलिया, अइला महुआबारी में बहार सजनी जैसे गीतों ने जो शोहरत दिलाई, वह अद्वितीय है। अपने गीत लेखन में उन्होंने गांव की आत्मा को पहचाना और उसे स्वर दिलाया। मोती बीए गीतकार ही नहीं, बल्कि स्वतंत्रता संग्राम के सेनानी भी रहे। वह दो बार जेल गए, लेकिन बदले में सरकार ने उन्हें यह सिला दिया कि उन्हें अभी तक स्वतंत्रता सेनानी का दर्जा नहीं दिया गया।

भोजपुरी साहित्य के फलक का यह सितारा, अब जीवन के चौथे पड़ाव पर है। उसे बस एक ही बात का मलाल है कि देश की आजादी के लिए उसने जो संघर्ष किया, समाज ने तो उसे पूरी मान्यता दी, लेकिन सरकार ने उसे स्वतंत्रता सेनानी का दर्जा नहीं दिया। आज पूर्वांचल का

संगीतकार रवींद्र जैन, मध्य में मोती बीए और दाहिने तरफ हेमलता

मोहम्मद रफी जैसों ने दिया सुर

चलचित्र जगत में अपने गीतों को लेकर मोती बीए काफी चर्चित रहे हैं। प्रफुल्ल पिक्चर्स की फिल्म *सुभद्रा*, जो 1946 में रिलीज हुई, में वसंत देसाई के संगीत निर्देशन में लता मंगेशकर और शांता आप्टे ने इनके तीन गीतों को स्वर दिया था, *गोकुल के कृष्ण कैसे बदल गए.. चारों ओर अंधेरा.. और मैं खिली खिली फुलवारी..* थे। प्रकाश पिक्चर्स की *भक्त ध्रुव* 1947 में रिलीज हुई, उसमें इनके दो गीत लिए गए, *प्रभु अपनी झलक दिखाओ..* और *झूलना झूलो मेरे प्यारे ललारे..*। 1948 में इसी बैनर तले *रामबान* रिलीज हुई जिसमें मोती के गीत को शंकर दास ने स्वर दिया, *उठ लखन प्रिय भाई..*। फिल्मिस्तान लिमिटेड के बैनर तले 1947 में *सिंदूर* के लिए *तुम बिन जियरा ना लागे* और *साजन* के लिए *हम बंजारे.., हमको तुम्हारा ही आसरा..*, और *तुम हमारे हो न हो..* को लिया गया, जिसमें पहले दो गानों को गजल सम्राट मोहम्मद रफी ने स्वर दिया था। *नदिया के पार* में *कठवा के नइया बनइहे रे मलहवा नदिया के पार दे उतार.., मोरे राजा हो ले चल नदिया के पार..' अंखियां मिला के अंखियां..' कहां चली हो..'* और *नजरिया में अइह..* सहित छह गीत लिए गए थे। 1949 में प्रेम अदीब की *राम विवाह* में, 1952 में निशात फिल्म की *ममता* के लिए, 1984 में राजेश फिल्म्स की *ठकुराइन*, उसी वर्ष रिलीज हुई श्रीसांई राम की *राजब भइलें रामा* और उसके अगले वर्ष पी.बी. फिल्म की *चंपा चमेली* के लिए मोती बीए ने गीत लिखे। इन सभी फिल्मों में *नदिया के पार* को सबसे ज्यादा सफलता मिली, जिसमें ट्रेजडी किंग दिलीप कुमार ने नायक की भूमिका निभाई थी। इन सबके अलावा *किसी की याद, जख्मी, राजपूतनी* और *निर्मल* नाम की फिल्मों के लिए भी इस गीतकार ने लिखे अपने गीत।

श्रवण कुमार गुप्त

04

दिनाँक 10 अप्रैल 2009 का समाचार

राष्ट्रीय सहारा का विशेषाँक मोती बीए के नाम

पूर्वांचल के गांधी माने जाने वाले बाबा राघव दास की कर्मस्थली व भोजपुरी के पुरोधा मोती बी.ए. की जन्मस्थली है बरहज. यहां से होकर पुण्य सलिला सरयू नदी बहती है. राष्ट्रभक्ति की प्रेरणा देने वाले बिस्मिल की समाधिस्थली भी यहीं है. सच्चे योगी देवरहवा बाबा भी बरहज से जुड़े रहे. इस बार के आजकल में प्रस्तुत है बरहज के विभिन्न आयामों को समेटते हुए डा. अजय कुमार मिश्र का आलेख.

स्व. मोती बी.ए.

बरहज

जहां बहती है पुण्य सलिला

आजकल

पूर्वांचल के गांधी बाबा राघवदास की कर्मस्थली भोजपुरी के पुरोधा

दिनाँक 23 जुलाई 2008 का समाचार

राष्ट्रीय सहारा का 'आजकल' विशेषांक श्री मोती बीए के नाम पर केन्द्रित रहा। यह पाँच भागों में प्रस्तुत किया जा रहा है।

01

हिंदी, उर्दू, अंग्रेजी और भोजपुरी में समान अधिकार के साथ लिखने वाले भोजपुरी के शेक्सपियर के बतौर प्रतिष्ठित मोती बीए को कोई कामिनी कौशल और दिलीप कुमार अभिनीत फिल्म नदिया के पार के अमर गीतकार के रूप में पहचानता है तो कोई भोजपुरी में सॉनेट और हाइकू के प्रथम प्रयोगकर्ता के रूप में. महुआबारी का यह अमर रचयिता उम्र के नब्बे बरस पूरे कर रहा है. इस मौके पर इस यशस्वी रचनाकार पर केन्द्रित है आजकल का यह अंक

राष्ट्रीय
सहारा
आज

अनमोल मोती

कृतित्व

- 1939-43 तक अग्रगामी, आज, सन्मार्ग, संसार और आर्यावर्त के संपादकीय विभाग में सहायक
- 1944-1952 तक पंडेमी आर्ट्स सिनेमा लाहौर, प्रकाश पिक्चर्स मुम्बई और सिनेमाटन लिमिटेड, मुम्बई में गीतकार के पद पर रहे। साजन के लोकप्रिय गाना हमको मुन्ना ही अमरा, तुम हमरे हो न हो तथा नदिया के पार के गीतों के अतिरिक्त रिमझिम, साजन, राम विवाह, इन्द्रासन, सुभद्रा, भक्त ध्रुव, सिंदूर आदि अनेक फिल्मों में गीतों की रचना की। फिल्म-संसार में भोजपुरी के प्रथम प्रवर्तक। शिक्षण से अवकाश प्राप्ति के पश्चात भोजपुरी विषय गाइ भइलें राम, ठकुराइन और चम्पा चमेली में गीत लेखन।

मो

रा मोदन दीपशिखा नाम, जब जाए तू मिले आँख वाले बाल ज्योति-किरण अब 90 वर्ष पूरे कर रहा है। मोती बीए के अधिकांश गीत ब्रजकिशोर गीतिकाव्य की पृष्ठभूमि पर विचरण करते हैं। जिससे मिलने की आशा थी, वह तो पहले ही टूट गयी, जीवन की पहली आशाएँ को, छूते ही छूते टूट गयी, मित गये धूलि में जो मधुकण, बस उन्हें ढूढ़ता रहा हूँ, जो कुछ भी पास आया हूँ।

इस तरह के गीतों के गायक की जो छवि बनती गयी, किसी आलोचकों के केन्द्रोन्मुखी होने के कारण वह नहीं बन पायी। मोती बीए के आगे दर्जन से अधिक गीत संग्रह, लगभग उतने ही कविता संग्रह, उर्दू कविताओं का संग्रह, रसके सुर, अंग्रेजी में सॉनेट्स का संग्रह तथा एक बहुत, अनेक अंग्रेजी कविताओं के अनुवादकार, भोजपुरी कविताओं के अनेक संग्रह समय-समय पर प्रकाशित होते रहे हैं। उनकी चर्चा भी होती रही है, किंतु मोती जी की ये कविताएं सबसे अधिक चर्चा में रहीं जो कवि सम्मेलनों में पढ़ी जाती रही हैं। अकसर अहल अनुभवकारों ने बहार सावनी और कभी अकेले हजरत दिल, या जाओ किसी और मोती बीए

02

03

कृतित्व

■ 1939-43 तक अग्रगामी, आज, सन्मार्ग, संसार और आर्यावर्त के संपादकीय विभाग में सहायक

■ 1944-1952 तक पंचोली आर्ट्स पिक्चर लाहौर, प्रकाश पिक्चर्स मुम्बई और फिल्मिस्तान लिमिटेड, मुम्बई में गीतकार के पद पर रहे। साजन के लोकप्रिय गजल हमको तुम्हारा ही आसरा, तुम हमारे हो न हो तथा नदिया के पार के गीतों के अतिरिक्त रिमझिम, साजन, राम विवाह, इन्द्रासन, सुभद्रा, भक्त ध्रुव, सिंदूर आदि अनेक फिल्मों में गीतों की रचना की। फिल्म-संसार में भोजपुरी के प्रथम प्रवर्तक। शिक्षण से अवकाश प्राप्ति के पश्चात भोजपुरी फिल्म गजब भइलें रामा, ठकुराइन और चम्पा चमेली में गीत लेखन।

■ 1984 में उत्तर प्रदेश हिंदी संस्थान लखनऊ द्वारा भोजपुरी की आजीवन सेवा हेतु राहुल सांकृत्यायन पुरस्कार। 1992 में हिंदी साहित्य सम्मेलन प्रयाग द्वारा भोजपुरी रत्न अलंकरण। 1993 में अखिल भारतीय भोजपुरी साहित्य परिषद उत्तर प्रदेश द्वारा कवि रत्न उपाधि। 1998 में विश्व भोजपुरी सम्मेलन : अंतर्राष्ट्रीय भोजपुरी सचिवालय द्वारा भोपाल में सेतु सम्मान। महावीर प्रसाद केडिया हिंदी साहित्य एवं संस्कृति संस्थान द्वारा आनन्द सम्मान।

लोकधुनों के पैरोकार

मोती जी लोकधुनों के बड़े समर्थक हैं। फिल्म नदिया के पार (पुरानी) का निर्माण फिल्मिस्तान के बैनर पर हो रहा था। फिल्मिस्तान ने उस समय दर्जनों हिट फिल्में दी थी। नागिन, अनारकली उनी फिल्मों में थी। मोतीजी उन दिनों फिल्मिस्तान की फिल्मों में गीत लिखते थे। नदिया के पार के सब गीत उन्होंने ही लिखे। सभी लोक धुनों पर थे। पहला गीत विरहा की धुन पर था। मोती जी कहते थे कि बम्बई में जब विरहा पर लिखा और भोजपुरी में, तो गाने वाले समझ नहीं पाते थे कि यह किस राग में है। उन्होंने गा कर बताया, तब यह मशहूर गीत निकला-

कठवा के नइया बनइहे रे मलहवा
नदिया के पार दे उतार !
छपक-छपक चले तोरी नइया रे मलहवा
आई पुरवाई के बयार !

मोती जी ने जो अगला गीत लिखा, वह भी लोक धुन पर था-

दिल लेके भागा, दगा दे भागा
अइसन बेदरदी से दिल मोरा लागा

तीसरा गीत भी लोक धुन पर था-

मोरे राजा हो! ले चल नदिया के पार।
मोरी रानी हो! तू ही मोरा प्राण अधार।

अमर रचनाए

चाहे रोव भा भाव, ठठा के हंस
जवन होखें के बा, तवन होइबे करी
जिनगी चढ़ि गइल बाटे जब दांव पर
चाहे अइबे करी, चाहे जइबे करी
जवने खूंटा बछरूवा बन्हा गइल बा
हुमचवला से का फरियाये के बा
तूरि के फेंकि दिहलसि त का हो गइल
फेनु ओही में ओकरा बन्हाये के बा
ऊखि झोरी ले हम, धान सोही ले हम
काटि के कोन सेवता, घुमाई ले हम
कइसे राकेट उड़ी, कइसे ऐटम बनी
भूखि लागे जो तोहके खियाई न हम

■ ■

सुगना, सेमर के फूले पर
का एतना लपटाइल बाड़ हो!
सगरे ज्ञान भुलाइल बाड़ हो!
जेकर डाढ़ि पात बेढंग
कवनो रूप , न कवनो रंग
ओकरी झुमका पर तू का,
एतना बउराइल बाड़ हो!
सगरे ज्ञान भुलाइल बाड़ हो!

■ ■

नाचत बाटे घाम रे, हिरना बा पियासा,
जेठ की दुपहरी में रेत के बा आसा,
रेतिया बतावे, दूर नाही बाटे धारा,
तनि अउरी दउरऽ हिरना पा जइबऽ किनारा।
पछुआ लुआठी लेके चारों ओर धावे,
रेतिआ क भउरा बनल देहिंया तपावे,
भीतर बा पियासि ऊपर बरिसेला अंगारा,
तनि अउरी दउरऽ हिरना पा जइबऽ किनारा।

टुकड़े-टुकड़े टूक-टूक हूं

एक संदेशवाहक है। [illegible] मनुष्य के मन का प्रत्येक भाव, प्रत्येक विचार, यहां तक कि [illegible] में भी धर्म की अभिव्यक्ति है। इस प्रकार प्रत्येक कृति का जीवन एक धर्म का जीवन है। [illegible] की यह मान्यता भारतीय [illegible] के सर्वात्मवाद की समीप लगती है। सामूहिक उन्माद में दग्ध आज के विश्व में [illegible] के विचार धर्म के सच्चे स्वरूप को समझने में सहायक हो सकते हैं। मोती जी का अनुवाद कहीं से अनुवाद लगता ही नहीं।

युग-युग जियो खुशी से, दर्शन फको उमर है, बाकर गहे तपाओ

को संवेदना से अभिन्न दिखाई देती है। कवि गंग और तुलसीदास की भेंट में गंग द्वारा तुलसीदास पर व्यंग्य करने के बावजूद जब गंग पर राजकोप होता है तो तुलसीदास घोषणा करते हैं कि जब तक कविता दरबार से निकलकर जनता के बीच में नहीं आएगी, तब तक कवियों की दुर्गति होती ही रहेगी। मोती जी के छंद की शब्दावली और अर्थध्वनि पर विचार कीजिए:

[illegible] बात नहीं थी। [illegible] 'अटल' के पीछे उन्हें [illegible] पड़ा। उनसे 'कदमदस्ती' एक काव्य संग्रह लिखवा दी। उसकी भूमिका स्वयं मोती जी ने अपने लिखी। अटल ने अपने गांव पैना में एक कवि-सम्मेलन का आयोजन किया। मोती जी अध्यक्षता कर रहे थे। एक कवि जो किसी इंटर कालेज का विद्यार्थी था और स्वयं नहीं जानता था कि 'वर्ण एक अक्षर दशा पा लड़का किन्नर' मोती जी की ही रचना है, पढ़ने लगा। कई कवि-मित्रों ने टोकना चाहा परन्तु मोती जी ने रोक दिया। कहने लगे कि अभी यह टूट जायेगा फिर मंचों पर कभी नहीं चढ़ पायेगा। आखिर एक विद्या अंत्याक्षरी भी तो है।

नाटक, संगीत रूपक, लेख, कविताएं तो लिखते ही थे, मंचों पर अभिनय भी करते रहे। बरहज में अपने विद्यालय में छात्रों को नाटक के लिये तैयार करते समय आवश्यकता पड़ने पर स्वयं अभिनय भी करते रहे। भोजपुरी में सानेट और भोजपुरी में हाइकू लिखने की परंपरा का श्रीगणेश आपने किया। उनके हाइकू की बानगी देखें-

1. 'हरकि गिरे अंखिया से लोरी, टूटे मोती के माला'।
2. 'खर पर पानवो, पान कारे पानी, मैले का मालोला।'
3. दीप के बाती, जरे पीला, देखले नाहक का?'
4. बाहर दोल, गाह चढ़वाई, दूध के नदी बहे।'
5. भसके भीगि, छानी पसके, लइका कहां सुताई?'
6. दूध पिवले, है कि लोरि, छाल्हन तोर मरबो।'

अपनी जमीन का पकड़े-पकड़े आसमान छूने की ताकत जिसके पास है वह हैं श्री मोती बी.ए.। ठाठ कबीर में अनाढ़ लोगों से लेकर दिल्ली के अति विशिष्ट लोगों के बीच मंचों पर कविता के माध्यम से तादात्म्य स्थापित कर लेना आज के किसी भी रचनाकार के लिये एक बड़ी चुनौती है। कवि मंडली में जहां आपके साथ जनार्दन पांडे अनुरागी जैसा संत कवि होता था, वहीं गीतकारों के साथ लय के हठयोग दूधनाथ शर्मा रसाल, कुबेर नाथ मिश्र विचित्र, गोदड़ नाथ मिश्र समीक्षा आदि। संभवतः उनकी अंतिम रचना उनके प्रिय गिरिधर कथा के माध्यम से प्राप्त हुई जिसमें वे अपने माध्यम से वृद्धावस्था के दर्द का वर्णन करते हैं-

'पंगु कवि अर्थांध मूक हूं।, पीर कोवे फंसी हूक हूं।, दिखने में हूं एक इकाई, टुकड़े-टुकड़े टूक-टूक हूं।'

अब तो सिर्फ ईश्वर की दया और डाक्टर की दवा का सहारा शेष है। परन्तु स्वाभिमान आज भी वही। बरहज उनके निवास पर जाते समय देवरिया के एक प्रतिष्ठित वकील और साहित्यकार अपने साथ मिठाई लेते गये। बोलने में कठिनाई थी ही पहचानने में भी दिक्कत हो रही थी। मोती जी के हाथ में एक किताब थी जिसमें उनका चित्र छपा था। मोती जी मिठाई लेकर अपने चित्र को खिलाने लगे और कहने लगे-'ल ही मोती लाड़ू खा। अब ई कुनि तुंहई के न खाये के बा।

■ रविन्द्र श्रीवास्तव 'जुगानी'

मंडी का प्रलाप इन्हें भा जाता है।

आज भी उसी कमरे में वृद्धावस्था का अंतिम पहर स्वाभिमान के साथ बिता रहे हैं। स्वयं में एक संस्थान के रूप में स्थापित मोती बी.ए. सिर्फ एक रचनाकार नहीं थे, रचनाकारों की 'कलि' थे। अपने साथ के लोगों में अपनी हनी और सीधा उनकों के बीच न जाने क्या कुछ ऐसा जड़ो थे कि उसे मजबूरन साहित्य ऐसी बनना पड़ता था। अत्यन्त सहजता के साथ जिस प्रकार वे लोगों को प्रभावित कर लेते थे, वह किसी और के

देह की दगाबाजी का दुःख

पूर्वांचल के संत कहे जाने वाले बाबा राघवदास और अध्यात्मिक पुरुष देवरहा बाबा की तपस्थली के बीच स्थित बरहज नगर के निकट पश्चिमी घाटी के लक्ष्मी निवास में भोजपुरी का शेक्सपियर अब जीवन की सांध्य बेला में अपनी स्मृतियों के साथ ही संघर्ष कर रहा है। 90 वर्ष की उम्र यूं भी कम नहीं होती, लेकिन जब शरीर के सारे उपयंत्र अवयव एक-एक करके शरीरों देना बंद कर दें तब? मोती बी.ए. शरीर की इन दगाबाजी से जूझ रहे हैं। वे क्या बोलते हैं, क्या सुनते हैं इसके बारे में घरों से कुछ भी कहना मुश्किल है। उनके पुत्र भालचन्द्र उपाध्याय और पौत्री माधवी ही उनके भाव समझते हैं और उनके मौन को वाणी में बदलते हैं।

जिन हाथों ने कलम के जरिए एक से बढ़कर एक कालजयी रचनाएं दीं। वे हाथ कुछ तरह कांप रहे हैं लेकिन मन में गीत अभी भी लहराते हैं, विचार गगन की तरह निर्बाध विस्तार में चहलकदमी करते हैं। मोती जी से पुरानी कई मुलाकातों में हुई बातें याद आती हैं और यह देखकर तकलीफ होती है कि बेचैनी और विवशता से घिरे अंतिम-बड़ी बात पर विचार करने वाले इस रचनाकार के शब्द न जाने कहां खो गये हैं।

लक्ष्मीनिवास के उस कमरे में वे जीवन-मृत्यु से संघर्ष कर रहे हैं। अस्वस्थता के कारण वे सामान्य दिनचर्या और नित्यकर्म में भी कठिनाई महसूस करते हैं पर मन में अदम्य जिजीविषा है। यह पूछने पर कि अब उनकी शरीर में पहले जैसी स्फूर्ति नहीं रह गयी है वे कैसा महसूस करते हैं, वह पत्नी रचनाकार मांडवी की ओर देखते हैं। मांडवी कहती है बाबाजी कहना चाह रहे हैं-'जो रहा हूं अपने रचना में और मर रहा हूं अपनी रचना में। जिंदगी तो रचना जियेगी, मर गया तो रचना मर जायेगी।'

उनकी इतनी सी गहरी आवाज में मुझे वह पहाड़ साफ झलकती है। देर तक मौन में निहारने के बाद आंखों की कुछ बातें याद आते ही चेहरे पर बच्चों जैसी चमक छलकती है लेकिन तुरत अवरुद्ध हो जाता है। बेबसी फिर चेहरे की चमक को पराजित कर देती है। अनेक सम्मानों से विभूषित इस रचनाकार से मिलने समय-समय पर दर्जनों राजनेता और प्रशासनिक अधिकारी आये लेकिन उनके जीवन बुढ़ापे के संरक्षण की दिशा में किसी ने कुछ नहीं किया। इसका मलाल हर उस शख्स को रोगग्रस्त मोती जी के चेहरे में झलता होगा।

■ डॉ. अजय कुमार मिश्र